महाकाल से प्रार्थना

हे महाकाल! उज्ज्वल भविष्य की रचना के लिए-अपने संकल्पों को पूरा करने के लिए हमें उपयुक्त शक्ति, मनोवृत्ति तथा प्रेरणा दें। हे प्रभो ! हमारे संकल्प पूरे हों। हम सुख-सौभाग्य, श्रेय-पुण्य तथा आपकी कृपा के अधिकारी बनें। आपसे दिव्य अनुदान पाने और उन्हें जन-जन तक पहुँचाने की हमारी पात्रता बढ़ती रहे।

(सामान्य जप के तुलना में अनुष्ठानों से उत्पन्न शक्ति का स्तर तथा परिणाम कहीं अधिक होता है। अधिक श्रम, अधिक समय, अधिक तत्परता, अधिक तपश्चर्या का समावेश होने से गायत्री उपासना में विशिष्टता उत्पन्न हो जाना और उसका प्रभाव परिणाम अधिक ऊँचे स्तर का दीख पड़ना स्वाभाविक है)

☛ नियत दिनों में नियत जप संख्या पूरी करनी होती है, जिसमें सामान्य उपासना की तुलना में अधिक समय लगता है। इसके लिये दिनचर्या में आवश्यक हेर-फेर करके अधिक समय लगाने का प्रबन्ध करना पड़ता है।

☛ अनुष्ठान के दिनों में ब्रह्मचर्य पालन अनिवार्य रूप से आवश्यक होता है।

☛ भोजन में उपवास तत्व का समावेश किसी न किसी रूप में करना ही होता है। साधारण भोजन क्रम नहीं चल सकता। उपवास का स्वरूप-(क) नमक और शक्कर का त्याग-अस्वाद व्रत का पालन, (ख) एक समय भोजन (सेंधा नमक लिया जा सकता है), एक समय दूध, छाछ पर निर्वाह, (ग) शाकाहार, फलाहार, (घ) एक वस्तु खानें की दूसरी लगाने की मात्र दो ही वस्तुओं का उपयोग। जैसे-रोटी-साग, चावल-दाल आदि। थाली में दो से अधिक वस्तुयें न हों।(ङ) अपनी सेवा आप की जाय,(च) भूमि अथवा तखत पर शयन किया जाय, (छ) जहाँ तक हो सके कम वस्त्र पहना जाय ताकि सर्दी-गर्मी का प्रभाव कुछ तो सहन करना ही पड़े। (ज) चमड़े के जूते वर्जित, (झ) बाजारू भोजन ग्रहण न किया जाय, (ञ) पत्नी-माता अथवा पुत्री द्वारा पकाया भोजन लिया जा सकता है, (ट)हजामत अपने हाथों बनाये नाई की सेवा न लें।

☛ जप से पूर्व स्नान और धूले वस्त्र पहनने का नियम है।

☛ उपासना कक्ष पूजा के पात्र हर दिन साफ करने चाहिये।

☛ प्रयोग में आ चुके पूजा-उपचार की वस्तुओं को दुबारा काम में नहीं लाना चाहिए।

☛ आधी जली हुई अगरबत्ती दूसरे दिन प्रयोग में नहीं आनी चाहिए। इसी प्रकार दीपक में बचा हुआ घी या बत्ती, तथा कटोरी में बचा हुआ चन्दन अगले दिन काम में नहीं लाना चाहिए।

☛ अनुष्ठान के दिनों में अग्नि और जल को साक्षी रखा ही जाना चाहिए।

☛ जप करते समय बीच में पेशाब जाना पड़े तो हाथ-पैर धोकर बैठना चाहिए, किन्तु शौच जाना पड़े तो धोती बदलने एवं स्नान करने की आवश्यकता पड़ेगी।

☛ साधना कक्ष में मोजा पहनकर न आयें। हाथ पैर अवश्य धो लें।

आत्मदर्शन का अर्थ है अन्तःकरण में पवित्रता और प्रखरता का समुचित सम्वर्धन। दर्पण पर धूलि जमी हो या उसके भीतर का रंग उतर गया हो तो फिर उसमें मुख दीख पड़ने का सुयोग न बनेगा। जिसने अपने अन्तःक्षेत्र को टटोला नहीं है, उसे धोया संजोया नहीं है, उसके लिये यह कठिन है कि उस गँदले क्षेत्र में ईश्वर का आगमन अवतरण या दिव्य-दर्शन की आशा करे। वस्तुतः आत्मशोधन ही प्रभुदर्शन का एक मात्र उपाय है।

सिंह जब शिकार पर आक्रमण करता है, तो एक क्षण ठहरकर हमला करता है। धनुष पर बाण को चढ़ाकर जब छोड़ा जाता है तो यत्किंचित् रुककर तब बाण छोड़ा जाता है। बन्दूक का घोड़ा दबाने से पहले जरा-सी देर शरीर को साध कर स्थिर कर लिया जाता है, ताकि निशाना ठीक बैठे। इसी प्रकार अभीष्ट उद्‌देश्य की प्राप्ति के लिये पर्याप्त मात्रा में आत्मिक बल एकत्रित करने के लिये कुछ समय आन्तरिक शक्तियों को फुलाया और विकसित किया जाता है, इसी प्रक्रिया का नाम *'पुरश्चरण '* है।

गायत्री मंत्र में हजार परमाणु बमों से अधिक शक्ति है। यदि भारतवासी सामूहिक रूप से इस उपासना को आरम्भ करें तो उससे प्रकट होने वाली शक्ति आक्रमणकारियों के होसले पस्त कर सकती है।

''वृद्ध जटायु रावण को परास्त करने में समर्थ न था, तो भी उसने अनीति होते देख कर चुप बैठना उचित न समजा। भिड़ गया। इसमें उसे प्राण त्यागने पड़े पर हारने पर भी वह विजयी से भी अधिक श्रेयाधिकारी बन गया।''

धोबी का व्यवसाय है- दूसरों के मैले कपड़ो को बटोरना और उन्हें धुले हुए चमकदार वापस करना। सन्त और सुधारक ऊँची किस्म के धोबी हैं।

अपने को समझे। मल-मूत्र की गठरी को अपना आधार न माने। ईश्वर का अंश पंचतत्त्वों की गठरी में इस लिये बंधा है कि इस उपकरण के सहारे वह अपने अभीष्ट प्रयोजनों को पूरा कर सके। लुहार हथौड़ा नहीं हो सकता।

इन्द्रियाँ किसी को नहीं सतातीं, वे तो उपयोगी प्रयोजनो के लिये बने हुये साधन मात्र हैं। उच्छृंखल तो मन है। उसी को समेटो ताकि इन्द्रीयों द्वारा अपनी उच्छृंखलता के लिए बाधित न करें।

''हिन्दु धर्म विश्व धर्म बनेगा और वेद मंत्रो से ब्रह्माण्ड गूँजेगा। भारत विश्व का मार्गदर्शक बनेगा।''

वृक्ष धूप, शीत सहते रहते हैं, पर दूसरो को छाया, लकडी और फल-फूल बिना किसी प्रतिफल की आशा के मनुष्यो से लेकर पशु पक्षियों तक को बाँटते रहते हैं। क्या तुम इतना भी नहीं कर सकते बुद्धिमानी की निशानी उपलब्ध साधन और समय का श्रेष्ठतम उपयोग करना है।

ईश्वर कैसा है और कहाँ है ? इस झंझट मे भले ही न पडो पर यह तो देखो कि तुम्हें किस लिये बनाया और किस तरह जीने के लिये कहा।

महापुरुषों में ही महापुरुष उत्पन्न करने की क्षमता होती है। हाथीयों के समूह में ही हाथी बढ़ते और पलते हैं। मूषक तो कुतरने वाली बिरादरी में ही बढ़ते हैं।

लोग प्रशंसा करते है या निन्दा इसकी चिन्ता छोड़ो। सिर्फ एक बात सोचो कि इमानदारी से जीम्मेदारियाँ पूरी की गईं या नहीं।

दिवास्वप्न न देखो। बिना पंख उड़ाने न भरो। वह करो जा आजकी परिस्थियों में किया जा शकता है।

योगी का वेष बनाने और आवरण धारण करने की आवश्यकता नहीं। श्रेष्ठता को स्वभाव और प्रयास में सम्मिलित करने वाले योगी कहलाते हैं।

योग्यता बढ़ाओ, पात्रता विकसित करो ताकि अभीष्ट वस्तुएँ सरलतापूर्वक मिल सकें। समुद्र के पास नदियाँ बिना बुलाये ही जा पहुँचती है।

जुगुनु जब बैठा रहेगा तो उसकी पूँछ चमकेगी नहीं। उसकी चमक तो चलने के साथ ही दृष्टिगोचर होती है। मनुष्य का व्यक्तित्व उसके द्वारा किये जाने वाले कठोर परिश्रम के साथ ही चमकता है।

नाव स्वयं ही नदी पार नहीं करती। पीठ पर अनेकों को भी लाद कर उतारती है। सन्त अपनी सेवा भावना का उपयोग इसी प्रकार किया करते है।

जो दूसरों के अवगुणों पर जी पा लेता है, वह 'वीर' कहलाता है पर इसे भी अगली श्रेणी का 'महावीर' वह है जिसने अपने आप को जीत लिया।

लोहे की काई लोहे को खा जाती है इसी प्रकार पाप की वासनाएँ मनुष्य को खा जाती है।

तलवार की कीमत म्यान से नहीं बल्कि धार से होती है। इसी प्रकार मनुष्य की कीमत धन से नहीं, सदाचार से आंकी जाती है।

दूसरे की त्रुटियों और बुराइयों को ही न ढूंढ़ते रहो, अपनी ओर भी देखो, जो अपनी बुराइयों सुधारने के लिये प्रयत्नशील है, उसे ही दूसरों की बुराई ढूंढ़ने का अधिकार है।

कठिनाइयां जब आती हैं तो कष्ट देती हैं, पर जब जाती है तो आत्म बल का ऐसा उत्तम पुरष्कार दे जाती हैं जो उन कष्टों दुखों की तुलना में हजारों गुना मूल्यवान होता है।

जो अपने बारे में तुच्छता के विचार रखता है वह सचमुच तुच्छ है और जिसका विश्वास है कि मैं महान हूँ, सचमुच वही महान् है।

परमात्मा जिस पर अत्यन्त प्रसन्न होता है उसे नदी सी दान शीलता, सूर्य सी उदारता और पृथ्वी की सी सहन शीलता प्रदान करता है।

जिस सोने चाँदी के जमा होने में राजा का, अग्निका, जल का, चोर का और अपने सगे सम्बन्धियों तक का भय बढ़ जाता है, भला वह भी कोई धन है ? सच्चा धन तो आत्म ज्ञान है जिसके प्राप्त होते ही मनुष्य दसों दिशाओं से निर्भय हो जाता है।

प्रयत्न से सांसारिक समृद्धि मिलती है, प्रयत्न से आत्मिक सम्पदाऐं मिलती हैं, प्रयत्न से परमात्मा मिलता है, इस लिये प्रयत्न ही प्रधान है।

हमारा कर्त्तव्य है कि हम जिसे सही समझते है, निर्भय होकर करते रहें। जिसे गलत समझते हैं, उसके आगे किसी भी कीमत पर न झुकें।

जब तुम्हारा मन टूटने लगे, तब भी यह आशा रखो कि प्रकाश की कोई किरण कहीं न कहीं से उदय होगी और तुम डुबने न पाओगे, पार लगोगे।

ज्ञान का जितना भाग व्यवहार में लाया जा सके वही सार्थक है, अन्यथा वह गधे पर लदे बोझ के समान है।

हमारा कर्त्तव्य है कि हम जिसे सही समझते है, निर्भय होकर करते रहें। जिसे गलत समझते हैं, उसके आगे किसी भी कीमत पर न झुकें।

नाव स्वयं ही नदी पार नहीं करती। पीठ पर अनेकों को भी लाद कर उतारती है। सन्त अपनी सेवा भावना का उपयोग इसी प्रकार किया करते है।

''कोई अपनी चमड़ी उखाड़ कर भीतर का अंतरंग परखने लगे तो उसे मांस और हड्डियों में एक तत्व उफनता दृष्टिगोचर होगा, वह है असीम प्रेम। हमने जीवन में एक ही उपार्जन किया है प्रेम। एक ही संपदा कमाई है-प्रेम। एक ही रस हमने चखा है वह है प्रेम का।''

''हमारी कितने रातें सिसकते बीती हैं-कितनी बार हम फूट-फूट कर रोये हैं इसे कोई कहाँ जानता है ? लोग हमें संत, सिद्ध, ज्ञानी मानते हैं, कोई लेखक, विद्वान, वक्ता, नेता, समझा हैं। कोई उसे देख सका होता तो उसे मानवीय व्यथा वेदना की अनुभूतियों से करुण कराह से हाहाकार करती एक उद्विग्न आत्मा भर इस हड्डियों के ढ़ाँचे में बैठी बिलखती दिखाई पड़ती है।''(अखण्ड ज्योति मार्च-१९७१)

''जो पाया उसका एक-एक कण हमने उसी प्रयोजन के लिए खर्च किया जिससे शोक संताप की व्यापकता हटाने और संतोष की सांस ले सकने की स्थिति में थोड़ा योगदान मिल सके।''

‘‘नव निर्माण की लाल मशाल में हमने अपने सर्वस्व का तेल टपका कर उसे प्रकाशमान रखा है अब परिजनों की जिम्मेदारी है कि वे उसे जलती रखने के लिए अपने अस्तित्व के सार तत्व को टपकाएँ।’’

‘‘पुरुष की तरह हमारी आकृति ही बनाई है। कोई चमड़ी उघाड़ कर देखे तो भीतर माता का हृदय मिलेगा। जो करुणा, ममता, स्नेह और आत्मीयता से हिमालय की तरह निरंतर गलते रहकर गंगा-यमुना बहाता रहता है।’’

‘‘कोई माता विवशता से अकेली जाती है तो चलते समय अपने बच्चों को दुलार करती बार-बार चूमती, लौट-लौट कर देखती और ममता से भरी गीली आँखें आँचल से पोंछती आगे बढ़ती है। ऐसा ही कुछ उपक्रम अपना भी बन रहा है। सोचते है जिन्हें अधूरा प्यार किया है अब उन्हें भरपूर प्यार कर लें। जिन्हें छाती से नहीं लगाया जिन्हें गोदी में नही खिलाया, जिन्हें पुचकारा-दुलारा नहीं उस कमी को पूरी कर लें।’’

‘‘जिनने समय-समय पर ममता भरा प्यार हमें दिया है। हमारी तुच्छता को भुलाकर जो आदर, सम्मान, श्रद्धा, सद्भाव स्नेह एवं अपनत्व प्रदान किया है उनके लिए क्या कुछ किया जाय समझ में नहीं आता। इच्छा प्रबल है कि अपना हृदय कोई बादल जैसा बना दे और उसमें प्यार का इतना जल भर दे कि जहाँ से एक बूँद स्नेह की मिली हो वहाँ एक प्रहर की वर्षा कर सकने का सुअवसर मिल जाय। यदि संभवव हो सके तो हमारी अभिव्यक्ति उन सभी तक पहुँचे जिनकी सद्भावना किसी रूप में प्राप्त हुई हो। वे उदार सज्जन अनुभव करें कि उनके प्यार को भुलाया नहीं गया। बदला न चुकाया जा सका तो भी अपरिमित कृतज्ञता की भावना लेकर विदा हो रहे हैं। यह कृतज्ञता का ऋणभार तब तक सिर पर उठाए रहेंगे जब तक हमारी सत्ता कहीं बनी रहेगी। प्रत्युपकार प्रतिदान न बन सका हो तो प्रेमी परिजन समझें कि उनकी उदारता को कृतघ्नतापूर्वक भुलाया नहीं गया। हमारा कृतज्ञ मस्तक उनके चरणों में सदा विनम्र और विनयावत रहेगा जिन्होंने हमारे दोष-दुर्गुणों के प्रति घृणा न करके केवल हमारे सद्गुण देखे और सद्भावनापूर्ण स्नेह सम्मान प्रदान किया।’’

‘‘परिजन हमारे लिए भगवान की प्रतिकृति हैं और उनसे अधिकाधिक गहरा प्रेम प्रसंग बनाए रखने की उत्कंठा उमड़ती रहती है। इस वेदना के पीछे भी एक ऐसा दिव्य आनंद झाँकता है इसे भक्तियोग के मर्मज्ञ ही जान सकते है।’’

‘‘ईश्वर भक्ति का अभ्यास हमने गुरु भक्ति की प्रयोगशाला में व्यायामशाला में आरंभ किया और क्रमिक विकास करते हुए प्रभु प्रेम के दंगल में जा पहुँचे। गुरुदेव पर आरोपित हमारी प्रेम साधना प्रकारान्तर से चमत्कारी वरदान बनकर लौटी है।’’

हराम की कमाई खाने वाले,भ्रष्टाचारी बेईमान लोगों के विरुद्ध इतनी तीव्र प्रतिक्रिया उठानी होगी जिसके कारण उन्हें सड़क पर चलना और मुँह दिखाना कठिन हो जाये। जिधर से वे निकलें उधर से ही धिक्कार की आवाजें ही उन्हें सुननी पडें। समाज में उनका उठना-बैठना बन्द हो जाये और नाई, धोबी, दर्जी कोई उनके साथ किसी प्रकार का सहयोग करने के लिए तैयार न हों।

व्यक्तिगत, सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्र में संव्याप्त अगणित दुष्प्रवृत्तियों के विरुद्ध व्यापक परिमाण में संघर्ष आरम्भ किया जाये। इसलिए हर नागरिक को अनाचार के विरुद्ध आरम्भ किये धर्म युद्ध में भाग लेने के लिए आह्वान करना होगा। किसी समय तलवार चलाने वाले और सिर काटने में अग्रणी लोगो को योध्धा कहा जाता था, अब माप दण्ड बदल गया। चारों ओर संव्याप्त आतंक और अनाचार के विरुध्ध संघर्ष में जो जितना साहस दिखा सके और चोट खा सके उसे उतना बड़ा बहादुर माना जायेगा। उस बहादुरी के ऊपर ही शोषण में विहीन समाज की स्थापना संभव हो सकेगी। दुर्बुध्धि से कुत्सा और कुण्ठा से लड सकने में जो लोग समर्थ होंगे उन्हीं का पुरुषार्थ पीड़ित मानवता को त्राण दे सकने का यश संचित कर सकेगा।

हमारी उपासना एक है-समर्पण की, श्रद्धा की। हमने नाले की की तरह से अपने आपको नदी के साथ में मिला दिया है और उसमें मिल जाने की वजह से हमारी हैसियत, हमारी औकात, हमारी शक्ति और हमारा स्वरूप नदी जैसा बन गया है।

उपासना की निष्ठा को जीवन में हमने उसी तरीके से घोलकर रखा है जैसे एक पतिव्रता स्त्री अपने पति के प्रति निष्ठावान रहती है और कहती है-‘सपनेहु आन पुरुष जग नाही।’ आपके पूजा की चौकी पर तो कितने बैठे हुए हैं। ऐसी निष्ठा होती है कोई ? एक से श्रद्धा नहीं बनेगी क्या ? मित्रो! हमारे भीतर श्रद्धा है। हमने एक पल्ला पकड़ लिया है और सारे जीवन भर उसी का पल्ला पकड़े रहेंगे। हमारा प्रियतम कितना अच्छा है। उससे अधिक रूपवान, सौंदर्यवान, दयालु और संपत्तिवान और कोई हो नहीं सकता। हमारा वही सब कुछ है, वही हमारा भगवान् है।

मंत्रो की शक्ति, भगवान की शक्ति उपासना की शक्ति के बारे में जिसमें एक चीज जुड़ी ही रहनी चाहिए और उसका नाम है-चरित्र। दुश्चरित्र आदमी, दुष्ट आदमी, दुराचारी आदमी यह ख्याल करे कि हम यह मंत्र जप करके, माला घुमा करके, पूजा करके किसी देवी-देवता को प्रसन्न करके काबू में ला सकते हैं तो यह बिल्कुल असम्भव है। मेरी जिंदगी का सार यही है चरित्र वाला पक्ष जिसमें मैंने अपने आपको धोबी के तरीके से धोया और धुनिये के तरीके से धुना। धुनिया जैसे थोड़ी रुई को धुन-धुन करके इतनी मोटी बना देता है और धोबी कपड़े को पीट-पीट करके सफेद झक बना देता है, हमने भी अपने चरित्र को उसी प्रकार धोया और भगवान का अनुग्रह पाया। यह उसी का परिणाम है जो आपके सामने है।

कुशल माली बगीचे में खाद पानी के साथ साथ पौधों की काट-छाँट खर पतवार के निष्कासन की व्यवस्था बनाता है। व्यक्तित्व विकास के लिए विकृतियों का परिशोधन और सत्प्रवृत्तियों की स्थापना की दोहरी माली जैसी ही प्रक्रिया अपनानी होती है।

आन्तरिक दुष्प्रवृत्तियों से लेकर प्रकृतिगत विषाणु एवं आस पास विचरने वाले सहज दृष्टि से न दिखने वाले दुष्ट हमारे ऊपर टूट पड़ेगें। उनसे निपटने का साहस तथा उन्हें नष्ट, निरस्त करने की तत्पर क्षमता हमारे अन्दर होनी चाहिए। उसे भी अपना आवश्यक धर्म मानकर चलना चाहिए।

जटायु रावण से लड़कर विजयी न हो सका और न लड़ते समय जीतने की ही आशा की थी फिर भी अनीति को आँखो से देखते रहने और संकट में न पड़ने के भय से चुप रहने की बात उसके गले न उतरी और कायरता और मृत्यु में से एक को चुनने का प्रसंग सामने रहने पर उसने युद्ध में ही मर मिटने की नीति को ही स्वीकार किया।

गाली-गलौज, कर्कश, कटु भाषण, अश्लील मजाक, कामोत्तेजक गीत, निन्दा, चुगली, व्यङ्ग, क्रोध एवं आवेश भरा उच्चारण, वाणी की रुग्णता प्रकट करते हैं। ऐसे शब्द दूसरों के लिए ही मर्मभेदी नहीं होते वरन् अपने लिए भी घातक परिणाम उत्पन्न करते है।

अंत:मन्थन उन्हें खासतौर से बेचैन करता है, जिनमें मानवीय आस्थाएँ अभी भी अपने जीवंत होने का प्रमाण देतीं और कुछ सोचने करने के लिये नोंचती-कचौटती रहती हैं।

जिस भी भले बुरे रास्ते पर चला जाये उस पर साथी-सहयोगी तो मिलते ही रहते हैं। इस दुनियाँ में न भलाई की कमी है, न बुराई की। पसंदगी अपनी, हिम्मत अपनी, सहायता दुनियाँ की।

लोकसेवी नया प्रजनन बंद कर सकें, जितना हो चुका उसी के निर्वाह की बात सोचें तो उतने भर से उन समस्याओं का आधा समाधान हो सकता है जो पर्वत की तरह भारी और विशालकाय दीखती है।

युग संधि के इस पुण्य पर्व पर महाकाल के युग निमंत्रण को स्वीकार करते हुए जागृत आत्माओं को आगे आना चाहिए। अंत:प्रेरणा का अनुसरण करना चाहिए और मानवीय भविष्य का दो टूक फैसला होने की इस निर्णायक बेला में युगपुरुषों जैसा रोल अदा करना चाहिये।

प्रज्ञापुत्रों का चिंतन और चरित्र उत्कृष्ट स्तर का होना चाहिए। उनकी उमंगों में, आकांक्षाओं में , गतिविधियों में, विभूतियों में, प्रशंसाओं में कुछ ऐसी विशेषता होनी चाहिये जिससे दूसरों को प्रेरणा मिले। दीपक की तरह प्रकाशवान रहने और वातावरण में आलोक भरे रहने का गौरव कम नही है। भले ही इसमें संचित संपदा चुकती हो, भले ही जलन सहनी पड़ती हो। ऐसों का अनुकरण न करें, जो शोषण के बल पर फूले फिरते हैं।

उनकी नकल न करें जिनने अनीतिपूर्वक कमाया और दुर्व्यसनों में उड़ाया। बुद्धिमान कहलाना आवश्यक नहीं। चतुरता की दृष्टि से पक्षियों में कौवे को और जानवरों में चीते को प्रमुख गिना जाता है। ऐसे चतुरों और दुस्साहसियों की बिरादरी जेलखानों में बनी रहती है। ओछों की नकल न करें। आदर्शों की स्थापना करते समय श्रेष्ठ, सज्जनों को, उदार महामानवों को ही सामने रखें।

अज्ञान, अंधकार, अनाचार और दुराग्रह के माहौल से निकलकर हमें समुद्र में खड़े स्तंभों की तरह एकाकी खड़े होना चाहिये। भीतर का ईमान, बाहर का भगवान् इन दो को मजबूती से पकड़ें और विवेक तथा औचित्य के दो पग बढ़ाते हुये लक्ष्य की ओर एकाकी आगे बढ़ें तो इसमें ही सच्चा शौर्य, पराक्रम है। भले ही लोग उपहास उड़ाएं या असहयोगी, विरोधी रुख बनाए रहें।

युग परिवर्तन में जिस सतयुग के अवतरण का लक्ष्य है। उसे प्रज्ञा परिजन सर्वप्रथम आत्मसत्ता में अवतरित करें, एक जलता दीपक असंख्यों को जला देता है। इस तथ्य पर विश्वास करें। स्वयं बदले, प्रवाह को पलटें और पराक्रमी युगप्रवर्तकों की अग्रिम पंक्ति में खड़े हों। यही है समय की मांग और आत्मा की पुकार जिसे कोई प्राणवान अनसुनी न करे।

समर्थता को ओजस, मनस्विता को तेजस और जीवन को वर्चस कहते हैं यही हैं वे दिव्य संपदायें, जिनके बदले इस संसार के हाट बाजार से कुछ भी मनचाहा खरीदा जा सकता है।

समय ही जीवन है। जिसने समय का जितना सदुपयोग किया वह उतना ही जिया, इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए एक-एक क्षण को सुनियोजित विधि व्यवस्था में श्रम निरत रखें। आलस्य प्रमाद को पक्का शत्रु समझें और उन्हें पास न फटकने दें। पैनी नजर से देखें कि काम उदास मन से, उपेक्षापूर्वक, मंदगति से तो नहीं हो रहा है ? समुचित तत्परता और स्फूर्ति बरती गई या नहीं ? समय, श्रम और परिपूर्ण मनोयोग से ही काम का स्वरूप निखरता और प्रयोजन पूर्ण होता है।

चोर, उचक्के, व्यसनी, जुआरी भी अपनी बिरादरी निरंतर बढ़ाते रहते हैं । इसका एक ही कारण है कि उनका चरित्र और चिंतन एक होता है। दोनों के मिलन पर ही प्रभावोत्पादक शक्ति का उद्भव होता है। किंतु आदर्शों के क्षेत्र में यही सबसे बड़ी कमी है।

युगशिल्पियों के कंधों पर जो अतिमहत्त्वपूर्ण कार्य है उनमें से प्रमुखता देने योग्य यह है कि वे अपनी प्रचार प्रक्रिया का कारगर शस्त्र अपने साहस एवं विश्वास का लोगों के सामने प्रत्यक्ष प्रमाण प्रस्तुत करें। दूसरों से जो कराना चाहते हैं वह स्वयं कर दिखाएँ।

आत्मज्ञानी दुनियाँ के भारी कष्टों की दशा में हँसता रहेगा और अपनी भुजा उठाकर कष्टों से कहेगा-''जाओ, चले जाओ, जिस अंधकार से तुम उत्पन्न हुए हो, उसी में विलीन हो जाओ।''

कुकर्मों के दुष्परिणाम अदूरदर्शियों को जन्मांधों की तरह नहीं दीख पाते, किंतु जिनके ज्ञानचक्षु खुले हैं,वे सँभलकर पैर रखते हैं और परम लक्ष्य तक पहुँचते हैं।

जो आदमी केवल इंद्रिय-सुखों और शारीरिक वासनाओं की तृप्ति के लिए जीवित है और जिसके जीवन का उद्देश्य खाओ, पीओ,मौज उड़ाओ है, निःसंदेह वह आदमी परमात्मा की इस सुंदर पृथ्वी पर एक कलंक है, भार है, क्योंकि उसमें सभी परमात्मीय गुण होते हुए भी पशु के समान नीच वृत्तियों में फँसा हुआ है।

हमारा असली दुश्मन हमारे अंदर रहता है। वह बड़ा कठोर, बड़ा दुष्ट, बड़ा मायावी, शक्तिमान, चैतन्य और आजीवन द्वेषी है। बाहर के शत्रुओं को विजय करने की अपेक्षा इस आंतरिक शत्रु को विजय करना अति दुःसाध्य है।

कर्मयोगी का हृदय विशाल होना चाहिए। उसमें कुटिलता, नीचता, कृपणता और स्वार्थ बिल्कुल नहीं होना चाहिए,उसे लोभ, काम, क्रोध और अभिमान रहित होना चाहिए।

चन्द्र के पास स्वयं का प्रकाश नहीं है। फिर भी वह दूसरे का तेज उधार लेकर अवनि को आलोकित करता है। सच्चे सेवक को साधन का अभाव कभी नहीं खटकता।

कोमल और सौम्य तत्त्वों को इशारे से समझाकर विवेक एवं तर्क द्वारा औचित्य सुझाकर सन्मार्गगामी बनाया जा सकता है। पर कठोर और दुष्ट तत्त्वों को बदलने के लिए लोहे को आग में तपाकर पिटाई करने वाली लोहार की नीति ही अपनानी पड़ती है।

व्यक्तिगत जीवन में देवशक्ति का अवतरण निःसन्देह एक सृजनात्मक कृत्य है, उसके लिए सद्‌गुणों के अभिवर्धन की साधना निरन्तर करनी पड़ती है पर साथ ही अन्तरंग में छिपे हुए दुर्गुणों से जूझना ही पड़ता है।

आलस्य, प्रमाद, आवेश, असंयम आदि दुर्गुणों के विरूद्ध कड़ा मोर्चा खड़ा करना पड़ता है और पग-पग पर उनसे जूझने के लिए तत्पर रहना पड़ता है। गीता का रहस्यवाद अन्तरंग के इन्ही शत्रुओं को कौरव मानकर अर्जुन रूपी जीव को इनसे लड़ मरने के लिए प्रोत्साहित करता है जिसने अपने से लड़कर विजय पायी वस्तुतः उसे ही सच्चा विजेता कहा जायेगा।

योद्धा दूसरों का सिर काटने वाले को नहीं कहते सच्चे शूरवीर वे हैं जो अपनी पशु प्रवृत्तियों को महामानवों के स्तर तक बदलने में अपने प्रचण्ड पराक्रम का परिचय दे सकें।

आत्मा की पुकार है-उत्कृष्टता की ओर बढ़ने की। परन्तु बहिरंग उलझा रहता है- आकर्षणों, लिप्साओ में। मानवी गरिमा के अनुरूप आदर्शवादिता का मार्ग अपनाने के लिए कुसंस्कारों रूपी कौरवों से महाभारत लड़ना होता है। इस जीवन संग्राम में विजयी मानव ही युगपुरुष कहलाने का श्रेय पाते हैं।

दुष्टता वस्तुतः पहले दर्जे की कायरता का ही नाम है। उसमें जो आतंक दिखता है वह प्रतिरोध के अभाव से ही पनपता है। घर के बच्चें भी जाग पड़े तो बलवान चोर के पैर उखड़ते देर नहीं लगती।

आत्मसुधार में तपस्वी, परिवार निर्माण में मनस्वी और समाज परिवर्तन में तेजस्वी की भूमिका निबाहें। अनीति के वातावरण में मूकदर्शक बनकर न रहें।

शिखा हमारे मस्तिष्क रूपी किले पर गड़ा हुआ धर्म-ध्वजा है। हर भारतीय धर्मानुयायी का मस्तिष्क केवल उच्च विचारणा, विवेकशीलता, उत्कृष्टता एवं आदर्शवादिता का ही केन्द्र रहना चाहिए। उसमें निकृष्ट, ओछे, स्वार्थी, संकीर्ण और अनैतिक आकाँक्षाओं का कोई स्थान नहीं मिलना चाहिए। जिस राजा का किला होता है उसमें उसी की सेना या प्रजा निवास करती है। शत्रु सैनिकों को उसमें एक कदम भी नहीं रखने दिया जाता। उसी प्रकार जिस मस्तिष्क दुर्ग पर भगवती गायत्री की धर्म ध्वजा शिखा के रूप में फहराती है उसके संरक्षकों का आवश्यक कर्त्तव्य है कि दुष्ट मनोविकार को अपने विचार क्षेत्र में प्रवेश न करने दें और अपने गुण, कर्म, स्वभाव की उत्कृष्टता को, सदाचरण को सर्वथा अक्षुण्ण बनाये रखें।

जिन्हें लोकमंगल में रुचि नहीं है और जो जन कल्याण के लिए कुछ कर सकने में अपने आपको अयोग्य असमर्थ मानते हैं उनके लिए यही उचित है कि वेश या वंश के नाम पर दान या भिक्षा लेना तुरन्त बन्द कर दें और सर्व साधारण की तरह श्रम द्वारा आजीविका चलाते हुए अपेन को उच्च वर्ग का प्रतिनिधि होने का दावा तुरन्त रद्द कर दे।

भोग शारीरिक रोग-शोक पैदा करने वाले होते हैं। उसमें इन्द्रियों की दक्षता नष्ट होती है और मनुष्य वृद्धावस्था तथा मृत्यु की ओर अग्रसर होता है। भोगों से जहाँ शारीरिक व्याधियाँ बढ़ती है वहाँ मानसिक चिन्तायें भी बढ़ती है। यह चिन्तायें मनुष्य को बन्धनों से बाँधती है और दुःखी करती है।

जैसे शारीरिक व्यायाम करने से देह पुष्ट होती है वैसे ही मानसिक साधनाओं द्वारा आराधना, उपासना द्वारा मनोबल बढ़ता है और उससे नाना प्रकार की अलौकिक शक्तियाँ प्राप्त होती है।

शांति की स्थिति और आक्रमण की सुरक्षा के लिए क्षात्र धर्म की प्रखरता जन-जन के मन में जीवित एवं जागृत रखी जाती चाहिए। फोड़ा चीरने के समय बालक को कुछ कष्ट सहना पड़ता है; यदि उस अवसर पर दया की जाय तो फोड़ा बढ़ेगा, अंग गलेगा और उसके दया के फल स्वरूप बच्चे को पहले की अपेक्षा अधिक ही संकट का सामना करना पड़ेगा। दुष्टता की जड़ काटनी चाहिए।

असुरता, अवांछनीयता विरोध के अभाव में ही अपना पैर फैलाती है। उत्कृष्टता और देवत्व को परिपोषित करने के लिए अनीति विरोधी रुख अपनाना आवश्यक हो जाता है।

अनाचार पनपने न पाये इसके लिए आवश्यक है कि सर्वत्र सतर्कता का वातावरण बनाये रखा जाये और व्यक्तिगत साहस एवं सामूहिक सहयोग से इतनी प्रबलता बनाये रखी जाय जो अनीति को देखते ही उबल पड़े।

दुष्टता का भवन कच्ची नींव पर खड़ा होता है। प्रत्यक्ष आक्रमण तो वह तभी करती है जब सफलता के सम्बन्ध में पूरा भरोसा होता है अन्यथा जरा सा खटका होते ही सिर पर पैर रखकर उसे भागते ही देखा जाता है। उसका सारा इन्द्रजाल तो छद्‌म पर ही खड़ा और गढ़ा होता है।

कमल पुष्प, सामान्य तालाब में उगने पर भी अपनी पहचान अलग बनाते और दूर से देखने वाले के मन पर भी अपनी प्रफुल्लता की प्रतिक्रिया उत्पन्न करते हैं। अपना स्वरूप एवं स्तर ऐसा ही होना चाहिए।

अवतार की प्रक्रिया एक ही है-जनमानस में अवांछनीयता के प्रति विद्रोह। यही अवतार का वास्तविक स्वरूप है।

ईश्वरीय शक्तियाँ ही एक विचार प्रवाह एवं कार्यप्रवाह के रूप में अवतरित होती हैं, एवं तत्कालीन समाज की समस्याओं का समाधान करती हैं।

इन दिनों पार्थ सारथी की बेचैनी स्पष्ट अनुभव की जा सकती है। अर्जुन को संतप्त और विकल देखकर उसे कितनी बेचैनी है, इसे शायद ही कोई अनुभव कर सके।

पीले कपड़े पहनते हो कि नहीं पर मन को पीला कर लो, सेवा बुद्‌धि का दूसरों के प्रति पीड़ा का, भाव संवेदना का विकास करना ही साधुता को जगाना है।

ईश्वर छोटी मोटी भेंट पूजाओं या गुणगान से प्रसन्न नहीं होता। ऐसी प्रकृति तो क्षुद्र लोगों की होती है। ईश्वर तो न्यायनिष्ठ और विवेकवान है। व्यक्तित्व में आदर्शवादिता का समावेश होने पर जो गरिमा उभरती है, उसी के आधार पर वह प्रसन्न होता और अनुग्रह बरसाता है।

प्रतीक पूजा की अनेक विधियाँ हैं, उन सभी का उद्देश्य एक ही है, मनुष्य के विकारों को हटाकर संस्कारों को उभारकर, दैवी अनुग्रह के अनुकूल बनाना।

साधना से सिद्धि का सिद्धान्त सर्वमान्य है। प्रश्न है साधना किसकी की जाय? उत्तर है जीवन को ही देवता मानकर चला जाय। यह इस हाथ दे, उस हाथ ले का क्रम है। इसी आधार पर आत्म संतोष, लोक सम्मान और देव अनुग्रह जैसे अमूल्य अनुदान प्राप्त होते हैं।

लोभ, मोह और अहंकार के तीन भारी पत्थर जिनने सिर पर लाद रखे हैं, उनके लिए जीवन साधना की लम्बी और ऊँची मंजिल पर चल सकना, चल पड़नाा असम्भव हो जाता है। भले ही कोई कितना ही पूजा पाठ क्यों न करता रहे। जिन्हें तथ्यान्वेषी बनना है, उन्हें इन तीन शत्रुओं से अपना पीछा छुडाना ही चाहिए।

स्वाध्याय से योग की उपासना करे और योग से स्वाध्याय का अभ्यास करें। स्वाध्याय की सम्पत्ति से परमात्मा का साक्षात्कार होता है।

धर्म का उद्देश्य दूसरों को नीतिवान, सदाचारी, कर्त्तव्यपरायण और न्यायनिष्ठ बनाना है। फैली हुई भ्रान्तियों का उन्मूलन करना है। पर वे ही जब मछलियाँ फँसाने के जाल बुनने लगें तो इसके लिए किसे दोष दिया जाय?

लोभ, मोह की हथकड़ी और बेड़ी को, जिसेने आपको मजबूती से जकड़ रखा हे, छोड़िए। थोड़ी ढीला करिये फिर देखिये आपको आगे बढ़ने को मौका मिलता है कि नहीं। श्रेष्ठता की दिशा में, शालीनता की दृष्टि में, महानता की दिशा में एक कदम आगे बढ़ाइए।

उपासना को सफल बनाने के लिए परिष्कृत व्यक्ति का होना नितांत आवश्यक है। परिष्कृत व्यक्ति का मतलब यह है कि आदमी चरित्रवान हो, लोकसेवी हो, सदाचारी हो, संयमी हो, अपने व्यक्तिगत जीवन को श्रेष्ठ और समुन्नत बनाने वाला हो।

गिद्ध खूब ऊँचा उड़ता है पर उसकी नजर लाश पर, हड्डियों पर ही रहती है। जो खाली पंडित हैं, वे सुनने के ही हैं, पर उनकी कंचन-कामिनी पर आसक्ति होती है-गिद्ध की तरह वे सड़ी लाशें ढूँढते हैं। आसक्ति का घर अविद्या के संसार में है। दया-भक्ति-वैराग्य ये विद्या के ऐश्वर्य हैं।

दूसरों को प्रभावित करने के लिए पहले अपने को प्रभावित करना होता है। दूसरों के निर्माण से पहले आत्म-निर्माण की आवश्यकता पड़ती है।

गायत्री ब्राह्मणों की कामधेनु है। अतः जप करने से पहले ब्राह्मण बन। नहीं साहब, ब्राह्मण नहीं बनेंगे, रहेंगे तो हम डाकू और रहेंगे तो हम हत्यारे-कसाई ही, पर २४ हजार का जप करेंगे। तब बेटे इससे क्या हो जायेगा? गन्दे नाले में गंगाजल डालते रहे तो क्या बनेगा? गंगा जी में तू गन्दे नाले को डाल दे तो गंगा जल हो भी सकता है, पर गंदे नाले में लाकर के एक किलो गंगा जल डाल देगा तो क्या सारा का सारा गंदा नाला शुद्ध हो जायेगा?

अध्यात्म मार्ग पर सबसे ज्यादा एक ही चीज की जरुरत है, दूसरी कोई नहीं और उसका नाम है-व्यक्तित्व का परिष्कार। यह शुरुआत है। यह एक साइन्स है। उपासना में मन को अस्त-व्यस्त नहीं जाने देता। उससे कहा जाता है कि हमारा और हमारे भगवान
का संबंध है, आप यहीं रहिए।

जो हविस आपके ऊपर हावी हो गई है। उससे पीछे हटिए, तृष्णाओं से पीछे हटिये और उपासना के उस स्तर पर पहुँचने की कोशिश कीजिए जहाँ कि आपके भीतर से श्रेष्ठता का विकास होता है।

चरित्रवान् व्यक्ति जब विकसित होता है तब उदार हो जाता है, परमार्थ-परायण हो जाता है, लोकसेवी हो जाता है, जनहितकारी हो जाता है और वह अपनी क्षुद्र स्वार्थ, संकीर्णताओं को कम करके लोकहित में, परमार्थ हित में अपने स्वार्थ को देखना शुरू कर देता है।

आत्म-विश्वास बड़ी चीज है। वह रस्सी को साँप और साँप को रस्सी बना सकने में समर्थ है। दूसरे लोगों का साथ न मिले, यह हो सकता है, किन्तु अपने चिंतन, चरित्र और व्यवहार को मनमर्जी के अनुरूप सुधारा-उभारा जा सकता है।

संकल्प-शक्ति की विवेचना करने वाले कहते हैं कि वह चट्टान को भी चटका देती हैं, कठोर को भी नरम बना देती है और उन साधनों को खीचकर बुलाती है, जिनकी आशा अभिलाषा में जहाँ-तहाँ प्यासे कस्तूरी हिरण की तरह मारा-मारा फिरना पड़ता है।

जिससे आत्मगौरव घटता हो, आत्म ग्लानि होती हो और आत्म हनन करना पड़ता हो, ऐसे धन, सुख, भोग, पद लेने की अपेक्षा भूखा रहना कहीं ज्यादा अच्छा है।

जागृत तन्द्रा के तीन दर्जे हैं। १. लापरवाही २. आलस्य ३. प्रमाद। ये तीनों ही क्रमशः अधिक भयंकर एवं घातक हैं। हम सबको इनसे बचना चाहिए।

धर्म को आडम्बरयुक्त मत बनाओ, वरन् उसे अपने जीवन में धुला डालो। धर्मानुकूल ही सोचो और करो। शास्त्र की उक्ति है कि रक्षा किया हुआ धर्म अपनी रक्षा करता है और धर्म को जो मारता है, धर्म उसे मार डालता है, इस तथ्य को ध्यान में रखकर ही अपने जीवन का नीति निर्धारण किया जाना चाहिए।

मनुष्य को एक ही प्रकार की उन्नति से संतुष्ट न होकर जीवन की सभी दिशाओं में उन्नति करनी चाहिए। केवल एक ही दिशा में उन्नति के लिए अत्यधिक प्रयत्न करना और अन्य दिशाओं की उपेक्षा करना और उनकी ओर से उदासीन रहना उचित नहीं है।

भोग शारीरिक रोग-शोक पैदा करने वाले होते हैं। उसमें इन्द्रियों की दक्षता नष्ट होती है और मनुष्य वृद्धावस्था तथा मृत्यु की ओर अग्रसर होता है। भोगों से जहाँ शारीरिक व्याधियाँ बढ़ती है वहाँ मानसिक चिन्तायें भी बढ़ती है। यह चिन्तायें मनुष्य को बन्धनों से बाँधती है और दुःखी करती है।

परमात्म सत्ता की सर्वज्ञता एवं सर्वव्यापकता के विश्वास पर जो जितना ही दृढ़ होगा, उतना ही उसे परमात्मा का नियम और न्याय स्मरण रहेगा।

आठ दिशाओं की तरह जीवन की भी आठ दिशा है। आठ बल हैं। १. स्वास्थ्य बल २. विद्याबल ३. धनबल ४. मित्र बल ५. प्रतिष्ठाबल ६. चातुर्यबल ७.साहस बल ८. आत्मबल। इन आठों का यथोचित मात्रा में संच्यय होना चाहिए। आठों बल बढ़ाओ। आठों मोर्चों पर सजग रहो, आठो दिशाओं की रखवाली करो, तभी सर्वांगीण उन्नति हो सकेगी।

हमें सदा बाहर व भीतर से पवित्र होकर रहना चाहिए। मलीनता से हमें घृणा होनी चाहिए। उसे हटाने या उठाने में हमारी रुचि होनी चाहिए। जो गन्दगी को छूने या उसे उठाने में हिचकिचाते है, वे सफाई नहीं रख सकते।

स्वच्छ शरीर, स्वच्छ वस्त्र, स्वच्छ निवास स्वच्छ सामान, स्वच्छ जीविका, स्वच्छ विचार, स्वच्छ व्यवहार, जिसमें इस प्रकार की स्वच्छताएँ निवास करती है, वह पवित्रात्मा मनुष्य निष्पाप जीवन व्यतीत करता हुआ पुण्य गति को प्राप्त करता है।

हमें स्वार्थ परमार्थ के वास्तविक स्वरूप को समझना चाहिए। लोक व्यवहार में अधिकांश मनुष्यों को तीन प्रकार से व्यवहार करते देखा जाता है। १. अनर्थ २.स्वार्थ ३. परमार्थ।

१. अनर्थ- अर्थात् दूसरों को हानि पहुँचा कर भी अपना मतलब सिद्ध करना।

२. स्वार्थ- व्यापारिक दृष्टि से दोनों ओर के स्वार्थ का सम्मिलन।

३. परमार्थ- अपनी कुछ हानि सहकर भी दूसरे लोगों का हित साधन करना।

जिसका स्वभाव देना हो, वह देव है। जिसे तृष्णा खाये जा रही हो, वह दानव है। हमें अनुकरणीय देव जीवन जीना चाहिए। मस्तिष्क में दिव्य दर्शन करते रहना चाहिए। समाज को देवात्माओं से भरा हुआ स्वर्गीय परिस्थितियों से ओत-प्रोत बनाने के लिए प्रयत्न करना चाहिए।

किसी इन्द्रिय का भोग पाप नहीं है। सच तो यह है कि अन्तःकरण को, विविध क्षुधाओं को, तृष्णाओं को तृप्त करने का इन्द्रियाँ एक माध्यम है। जैसे पेट की भूख प्यास को न बुझाने से शरीर का संतुलन बिगड़ जाता है, वैसे ही सूक्ष्म शरीर की क्षुधायें उचित रीति से तृप्त न की जाती रहे तो आन्तरिक क्षेत्र का संतुलन बिगड़ जाता है। और अनेक मानसिक रोग उठ खड़े होते हैं।

इन्द्रियाँ आत्मा के औजार हैं, घोड़े हैं, सेवक हैं। परमात्मा ने इन्हें इसलिए प्रदान किया है कि इनकी सहायता से आत्मा की आवश्यकताएँ पूरी हों और सुख मिले।

मनुष्य के जीवन में विपत्तियाँ, कठिनाईयाँ, विपरीत परिस्थितयाँ, हानियाँ और कष्ट की घड़ियाँ भी प्रायः आती ही रहती है। जैसे रात और दिन समय के दो पहलू है वैसे ही सम्पदा और विपदा, सुख और दुःख भी जीवन रथ के दो पहिए हैं। दोनों के लिए ही मनुष्य को धैर्यपूर्वक तैयार रहना चाहिए। न विपत्ति में छाती पीटे और न ही सम्पत्ति पाकर इतरा-इतरा कर चले। कठिन समय में मनुष्य के चार साथी है- १. विवेक २. धैर्य ३. साहस ४. प्रयत्न। इन चारों को मजबूती से पकड़े रहने पर बुरे दिन धीरे धीरे निकल जाते हैं।

किसी व्यक्ति की उपासना सच्ची है अथवा झूठी है, इसकी एक ही परीक्षा है कि साधक की अन्तरात्मा में संतोष, प्रफुल्लता, आशा, विश्वास और सद्‌भावना का कितनी मात्रा में अवतरण हुआ। यदि यह गुण नहीं आये हैं,और हीन वृत्तियाँ घेरे हुए हैं तो समझना चाहिये कि यह व्यक्ति चाहे जितनी पूजा-पाठ क्यों न करता हो, उपासना से अभी बहुत दूर है।

ईश्वर उपासना से मनुष्य को वह स्थिति प्राप्त होती है, जहाँ से वह अधिक सूक्ष्मता, दूरदर्शिता एवं विवेक के साथ संसार और उसकी परिस्थितियों का निरीक्षण करता है।

विपन्नता की स्थिति में धैर्य न छोड़ना मानसिक संतुलन नष्ट न होने देना, आशा पुरूषार्थ को न छोड़ना, आस्तिकता अर्थात् ईश्वर विश्वास का प्रथम चिन्ह है।

आस्तिकता महत्त्वपूर्ण मानवीय गुण है। उसके कारण मन पर कितना अधिक अंकुश रहता है। चौबीस घण्टे का एक सच्चा स्वजन संबंधी सर्वशक्तिमान ईश्वर जब अपने साथ रहते हुए अनुभव होता है तो कितनी हिम्मत बँधी रहती है। ईश्वरीय सद्‌गुणों का निरन्तर चिंतन करते रहने से उस आदर्श के अनुकूल अपने आप को ढालने में भी कितनी सुविधा होती है। (अखंड ज्योति-१९६२, अक्टू० २७)

ईश्वर में आस्था रखे बिना हमारी दुष्प्रवृत्तियाँ बिना नकेल के ऊँट की तरह, बिना लगाम के घोड़े की तरह, बिना नाथ के बैल की तरह, बिना अंकुश के हाथी की तरह उच्छृंखलता, अनीति और उद्दण्डता की ओर द्रुतगति से दौड़ने लगती हैं। (अखंड ज्योति-१९६२, सित० ८)

जो आस्तिक कर्त्तव्य पालन की उपेक्षा करता है और कुछ पूजा पत्री करके मुफ्त में ही ईश्वर से धन वैभव प्राप्त कर लेने या दुष्कर्मों के फल से छुटकारा पाने की बात सोचता है उसे भोला बहका हुआ, नासमझ या जरूरत से ज्यादा चालाक कह सकते हैं। (अखंड ज्योति-१९६२, सित० ९)

आस्तिकता की सबसे पहली प्रतिक्रिया अपने कर्त्तव्य को ईश्वर का आदेश मानकर उस पर चट्टान की तरह अटल बने रहने की प्रेरणा के रूप में परिलक्षित होती है। (अखंड ज्योति-१९६२, सित० ९-१०)

कर्त्तव्य परायणता की मात्रा किसमें कितनी है इसी आधार पर उसकी आस्तिकता के स्तर को नापा जा सकता है। (अखंड ज्योति-१९६२, सित० १०)

आस्तिकता का प्रतिफल है 'निर्भयता' जो हर घड़ी ईश्वर को अपने सहायक के रूप में साथ रहता हुआ अनुभव करेगा वह किसी से क्यों डरेगा ? इतना बड़ा बलवान उसके साथ है उसे किसी समस्या या किसी वस्तु से डरने की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती। ईश्वर महान् है। उसकी दया, करुणा, वात्सल्य, दान, न्याय, क्षमा, उदारता, आत्मीयता आदि महानता का स्मरण रखने और वैसे ही स्वयं बनने की चेष्टा करने से ईश्वरीय समीपता एवं महानता प्राप्त होती है, उसकी का नाम मुक्ति है। इन भावनाओं के साथ की हुई ईश्वर उपासना उपासक की आत्मा में तुरन्त एवं निश्चित रूप से आत्मबल प्रदान करती है। (अखण्ड ज्योति १९६२, जून ४९)

चित्त की वृतितयों को शुद्ध करने से ही आत्मा की प्राप्ति होती है, जिसका अंतःकरण मल विकारों से भरा हे उसे आत्मा का साक्षात्कार नहीं हो सकता। सत्कर्म के द्वारा भावना शुद्ध होती है और भाव शुद्धि से ईश्वर मिल जाता है। जो अपने दोषों को नहीं देखता, उनके शमन और निराकरण का उपाय नहीं करता उसकी सारी साधनाएँ आडम्बर मात्र हैं। मन को निर्मल बनाये बिना न भक्ति प्राप्त होती है, न उपासना बन पड़ती है। जिस ज्ञान से आचार शुद्ध न हों, सद्‌गुण न बढ़े वह निरर्थक भार वहन मात्र है। जिस कर्म के पीछे उच्च भावनाएँ न हों वह बंधन में बाँधने वाला ही होता है। इसलिए ज्ञान, कर्म और भक्ति योग की साधना करके आत्मा की प्राप्ति करनके के इच्छुकों को सबसे पहले अपने आचार और विचार शुद्ध करने चाहिए। (भगवान् कृष्ण) (अखंड ज्योति-१९६२, अक्टूबर १)

जीवन का सम्मान ही आचार शास्त्र है। (अखंड ज्योति-१९७७, दिस० १४)

अच्छाइयों का छोटा आरंभ यदि क्रमबद्ध रूप से अग्रसर होता रहे तो उसका अंतिम परिणाम ऐसा महान् हो सकता है जिस पर गर्व और संतोष व्यक्त किया जा सके। (अखंड ज्योति-१९६२, अक्टू० २०)

कोई महापुरुष, संत या ऋषि और कुछ नहीं केवल छोटी-छोटी अच्छाइयों का एक समूह है। यह छोटी अच्छाइयाँ यदि समाप्त हो जाँय तो उसका सारा वैभव बुद्धिबल और पुरुषार्थ मिलकर भी महानता की रक्षा न कर सकेगा, वह फिर तुच्छ का तुच्छ बन जावेगा। (अखंड ज्योति-१९६२, अक्टू० २०)

छोटी अच्छाइयाँ देखने में तुच्छ लगती हैं, पर वस्तुतः इन्हीं ईंटों को चुनकर महानता का विशाल भवन खड़ा किया जाता है। (अखंड ज्योति-१९६२, अक्टू० २०)

अच्छाइयाँ आज इसलिए घट रही हैं कि उनका ढोल बजाने वाले लोग तो कहीं-कहीं मिलते भी हैं, पर अपने कार्यों द्वारा निष्ठात्मक करने वाले दृष्टिगोचर नहीं होते। (अखंड ज्योति-१९६२, सित० २७)

अच्छाइयों के प्रचारक आज निष्ठावान नहीं बातूनी लोग ही दिखाई पड़ते हैं। फलस्वरूप बुराइयों की तरह अच्छाइयों का प्रसार नहीं हो पाता और वे पोथी के बैंगनों की तरह केवल कहने-सुनने भर की बातें रह जाती हैं। (अखंड ज्योति-१९६२, सित० २७)

समुद्र की ऊपरी सतह पर ज्वार, सीपें ओर घोंघे ही मिलते हैं पर तल में इतनी मूल्यवान सम्पदा छिपी पड़ी है कि उसे प्राप्त कर लिया जाय तो पाने वाला मालामाल हो सकता है। समुद्री गोताखोर सतह पर नहीं गहराई में गोता लगाकर तह से मोती बीन लेते हैं। धरती की ऊपरी परत कूड़े-कचरे, धूल-मिट्टी और कंकड़ पत्थरों से भरी हुई है, पर उसे गहरे खोदते जाते हैं तो पानी से जेकर अनेकानेक प्रकार की बहुमूल्य खनिज सम्पदाँए मिलती चली जाती हैं। रेत के एक कण का स्थूल मूल्य नगण्य जैसा है। बाजार में उसकी कीमत कुछ भी नहीं है, पर जब उसकी भीतरी शक्ति की कुरेद-बीन की जाती है तो सहज ही इस बात का पता चल जाता है कि पदार्थ का वह तुच्छातितुच्छ घटक शक्ति का महान् और अजस्त्र शक्ति भांडागार अपने में दबाये पड़ा है। परमाणु विस्फोट के समय उसकी शक्ति का लाखवाँ हिस्सा ही प्रयोग में आ पाता है, शेष भाग अन्तरिक्ष में विलीन हो जाता है। परन्तु परमाणु शक्ति के लाखवें हिस्से का भी जो प्रभाव और परिणाम देखने में आता है, उसी से पदार्थ की महान शक्ति के बारे में पता चलता है। परमाणु में निहित यदि सम्पूर्ण शक्ति का प्रयोग किया जा सके और उसे ध्वंस में लगाया जाय तो उतने से ही सारे भूमण्डल का विनाश हो सकता है। इसी प्रकार यदि उस शक्ति का प्रयोग सृजन कार्य में किया जाय तो इतनी ऊर्जा प्राप्त हो सकती है जितनी कि सूर्य से पृथ्वी को मिली है।

जब कोई साधक ईश्वर की खोज में आगे बढ़ता है तो सबसे अधिक कठिनाई अपने मन को रोकने में होती है। जो मन को रोकने का अभ्यास कर रहे हैं, वे ही इसका प्रत्यक्ष अनुभव कर सकते हैं। जब हम विचारों का संयम करने बैठते हैं, तो हमें मालूम होता है कि हमारा मन कितना स्वच्छन्द और निरंकुश रहा करता है। तथा उसमें सब प्रकारों के विचारों को ग्रहण करने की भी कितनी अपार शक्ति रहती है। हमें यह स्मरण करके बड़ा दुःख और आश्चर्य होता है कि हमने इधर-उधर की निरर्थक बातों में अपना कितना अमूल्य समय नष्ट किया है। अगर इसी समय को हम किसी विशेष लक्ष्य की, जीवन ऊपर उठाने वाले विचारों की ओर लगाते तो हमारा चरित्रबल कितना अधिक बढ़ जाता, हमारा हृदय कितना शुद्ध हो जाता, हमारा प्रभाव कितना बढ़ जाता और हमारी आत्मिक-उन्नति कितना अधिक हो गई होती।

मानव जीवन को स्त्रष्टा का सर्वोत्तम उपहार कहा गया है। इस निर्माण में परमात्मा ने अपना सारा कला-कौशल सँजो दिया है। प्राणियों में इसके समकक्ष और कोई नहीं है। उसे विशिष्ट काया,मन, बुद्धि, प्रतिभा सुविधा सभी कुछ उपलब्ध हैं। विकास क्रम में भी वह समस्त जीवधारियों से आगे है। इतना सब कुछ होने पर भी अभी मुष्य का विकास अधूरा रह गया है। उसके पास जो बुद्धि-वैभव है, वह जीवन को सुव्यवस्थित रखने, चेतना के उच्चतम स्थिति तक पहुँचाने के लिए पर्याप्त नहीं है। सामान्य बुद्धि के रहते वह सृष्टि के मुकुटमणि के शीर्षस्थ पद से सम्मनित नहीं हो सकता। मन के जिस धरातल पर वह आज खड़ा है उससे भी अधिक उच्चस्तरीय चेतना की परतें उसके अन्तराल में विद्यमान हैं जिन्हें अब तक कुरेदा नहीं गया है। पूर्णता की प्राप्ति के लिए उसे मन के उच्चतर धरातल अतिमानसिक चेतना की ओर छलाँग लगानी होगी जिस पर पहुँचकर मनुष्य सर्वज्ञ बन जाता है। मानव से अतिमानव, महामानव, पुरुष से पुरुषोत्तम बनना, यही उसके विकास की अगली मंजिल है।

मल-मूत्र में सना हुआ बच्चा माता की गोद में चढ़ने,दूध पीने के लिए चाहे कितना ही क्यों न मचल रहा हो,पर वह असीम प्यार करने पर भी तब तक उसे दूर ही रखती है, जब तक धो-पोंछकर उसे भली प्रकार साफ-सुथरा नहीं कर लेती। भगवान की भी रीति-नीति यही है। उनके भक्त को उत्कृष्ट चिन्तन और आदर्श चरित्र का परिचय देना चाहिए। इसमें अनाचर से हाथ खींचना पड़ता है। लोगों को यह कठिन प्रतीत होता है। सरल यह लगता है कि अनाचार से मिलने वाले लाभों को दोनों हाथों से समेटते रहें और पूजा-पाठ की चित्र-विचित्र चिन्ह पूजा करके भगवान को भी बहकाते-फुसलाते रहें। दोनों हाथ लड्डू भरे रहने की यह विडम्बना मात्र मन को बहकाने भर के काम आती है। भागीरथ, हरिश्चन्द्र वाल्मीकि, विल्व मंगल, अंगुलिमाल, अम्बपाली की तरह अपनी जीवनधार बदलनी पड़ती है। भागीरथ, हरिश्चन्द्र और दधीचि की तरह सतप्रयोजनों के लिए बढ़-चढ़कर त्याग बलिदान की आवश्यकता अनुभव करनी पड़ती है। सो भी ऐसा त्याग-बलिदान नहीं, जिसकी परिधि काय कष्ट और कर्मकाण्डों की सीमा तक अवरुद्ध होकर रह गयी हो।

वासना, तृष्णा और अहंता से हमारे तीनों शरीर मलीन होते हैं। वासन स्थूल शरीर को तृष्णा सूक्ष्म शरीर को और अहंता कारण शरीर को हेय बनाती है। इन मलीनताओं का परिशोध करना ही साधना है। जो इन सही मार्ग पर चलते है, वे अध्यात्म साधना के अनुरूप ऋद्धि-सिद्धियों से भरा-पूरा सत्परिणाम भी प्राप्त करते हैं।

समर्थता, कुशलता और संपन्नता की आए दिनों जय-जयकार होती देखी जाती है। यह भी सुनिश्चित है कि इन्हीं तीन क्षेत्रों में फैली अराजकता ने वे संकट खड़े किए हैं, जिनसे किसी प्रकार उबरने के लिए व्यक्ति और समाज छटपटा रहा है। इन तीनों से ऊपर उठकर एक चौथी शक्ति है- भाव संवेदना। ये दैवी अनुदान के रूप में जब मनुष्य की स्वच्छ अंतरात्मा पर उतरती है तो उसे निहाल बनाकर रख देती है। इस एक के आधार पर ही अनेकानेक दैवी तत्त्व उभरते चले जाते हैं।

विकृतियाँ दीखती भर ऊपर हैं, पर उनकी जड़ अंतराल की कुसंस्कारिता के साथ जुड़ी रहती है। यदि उस क्षेत्र को सुधारा, सँभाला, उभारा जा सके, तो समझना चाहिए कि चिंतन, चरित्र और व्यवहार बदला और साथ ही उच्चस्तरीय परिवर्तन भी सुनिश्चित हो गया। भगवान् असंख्य ऋद्धि-सिद्धियों का भंडागार है। उसमें संकटों के निवारण और अवांछनीयताओं के निराकरण की भी समग्र शक्ति है।

युग परिवर्तन की घड़ियों में भगवान अपने विशेष पार्षदों को महत्वपूर्ण भूमिकाएँ सम्पादित करने के लिए भेजता है। युग निर्माण परिवार के परिजन निश्चित रूप से उसी श्रृंखला की अविछिन्न कड़ी हैं। उस देव ने उन्हें अत्यन्त पैनी सूक्ष्म-दृष्टि से ढूंढा और स्नेह सूत्र में पिरोया है। जिन्होंने अपने को तपाया निखारा है उन्हें ईश्वर का विशेष प्यार-अनुग्रह उपलब्ध रहता है। यह उपलब्धि भौतिक सुख-सुविधाओं के रूप में नहीं है यह लाभ की प्रवीणता और कर्मपरायणता के आधार पर कोई भी आस्तिक-नास्तिक प्राप्त कर सकता है। भगवान जिसे प्यार करते हैं उसे परमार्थ-प्रयोजनों की पूर्ति के लिए स्फुरणा एवं साहसिकता प्रदार करते हैं॥ वाडमय ६६ पृष्ठ ३.४१

ईश्वर प्रदत्त पाँच विभूतियाँ हैं। (१) भावना (२) विद्या (३) प्रतिभा (४) धन (५) कला। महाकाल की सरकार इन पाँचों का राष्ट्रीयकरण करने वाली है। ऐसी समाज व्यवस्था शीघ्र खड़ी होगी, जिसमें इन पाँचों विभूतियों को व्यक्तिगत स्वार्थों में प्रयुक्त न होने दिया जायगा। ऐसा होता रहा तो अणुशक्ति के भण्डार में विस्फोट होने की तरह दुर्घटना होगी। विनाश या विकास इन्हीं विभूतियों के दुरुपयोग-सदुपयोग पर निर्भर है। अच्छा हो विवेक और न्याय की पुकार से द्रवित होकर अपना रुख बदल दें, अन्यथा परिवर्तन तो होना ही है,इन विभूतियों को लगना तो सृजन में ही है। वह बलात् न किया जाय, आत्मा की पुकार ही उसे समय रहते सम्पन्न कर दे, यही उचित है। इस औचित्य के लिए हमें अपने सहित हर विभूतिवान को झकझोरना चाहिए और निष्ठुरता को उदारता में बदलने का प्रयत्न करना चाहिए। ६६ १ ३० ३२

* शंकराचार्य एक मामूली घर के लड़के थे। उनकी माता यह उम्मीद करती थी कि पढ़ाने के बाद में लड़के की शादी-ब्याह कर देंगे। बाल-बच्चे होंगे, नाती-पोते खिलाएंगे, लेकिन शंकर ने अपना दृष्टिकोण बदल लिया और माँ से इन्कार कर दिया। उन्होंने अपने भावी लक्ष्य और भावी जीवन का एक स्वरूप बना लिया। यह स्वरूप उनका अपना बनाया हुआ था। यह दृष्टिकोण उन्होंने स्वयं बनाया था। कार्य पद्धति उन्होंने स्वयं बनाई। अगर आदि शंकराचार्य ने अपने दृष्टिकोण में हेर-फेर न किया होता तो तब फिर वही होता जो इनकी माँ चाहती थीं। वे एक मामूली पंडित-पुरोहित होते, जन्म-पत्रियाँ बनाते फिरते, पूजा-पाठ कराते फिरते, बाल-बच्चे होते और गए-बीते स्तर के होते। पर जब दृष्टिकोण उन्होंने बदल दिया तो आदि शंकराचार्य हो गए। गुरुवर की धरोहर-भाग-२-१३

इस विष से सावधान रहियेजब समुद्र मथा गया था तो उसमें से सबसे पहले विष, फिर वारुणी, उसके बाद अन्य रत्न निकले थे। युग निर्माण के लिए, मुर्छित समाज को जाग्रत करने के लिए भी गायत्री संस्था द्वारा वह अमृत निकालने के लिए समुद्र-मंथन का कार्य हो रहा है, जिसे पीने से यहाँ के निवासी इस देवभूमि को अमरों, भूसुरों की निवास-स्थली प्रत्यक्ष रूप में दिखा सकें। यह समुद्र-मंथन ठीक प्रकार से चला रह है या नहीं, इसकी प्रारम्भिक परीक्षा यही है कि इसमें कितना विष निकलता है, यह देखा जाय, जब सड़ी हुई कीचड़ की नाली साफ की जाती है तो उसमें से नाक फाड़ने वाली बदबू उड़ती है। दुर्बद्धि की, संभावनाओं की, स्वार्थपरता और पाखण्ड की कीचड़, बहुत दिनों से हमारे धार्मिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में पड़ी सड़ रही है, उसे साफ किया जा रहा है तो वे तत्व जिनके स्वार्थों को हानि पहुँचती हे, स्वभावतः विरोध करेंगे। असुरता को नष्ट करने वाले जब कभी भी अभियान हुए हैं, उनके प्रतिरोध के लिए असुरों ने पूरी शक्ति से प्रत्याक्रमण किये हैं।

आत्मदर्शन का अर्थ है अन्तःकरण में पवित्रता और प्रखरता का समुचित सम्वर्धन। दर्पण पर धूलि जमी हो या उसके भीतर का रंग उतर गया हो तो फिर उसमें मुख दीख पड़ने का सुयोग न बनेगा। जिसने अपने अन्तःक्षेत्र को टटोला नहीं है, उसे धोया संजोया नहीं है, उसके लिये यह कठिन है कि उस गॅदले क्षेत्र में ईश्वर का आगमन अवतरण या दिव्य-दर्शन की आशा करे। वस्तुतः आत्मशोधन ही प्रभुदर्शन का एक मात्र उपाय है।

''हिन्दू धर्म विश्व धर्म बनेगा और वेद मंत्रो से ब्रह्माण्ड गूँजेगा। भारत विश्व का मार्गदर्शक बनेगा।''

अनुष्ठान के नियम

(सामान्य जप के तुलना में अनुष्ठानों से उत्पन्न शक्ति का स्तर तथा परिणाम कहीं अधिक होता है। अधिक श्रम, अधिक समय, अधिक तत्परता, अधिक तपश्चर्या का समावेश होने से गायत्री उपासना में विशिष्टता उत्पन्न हो जाना और उसका प्रभाव परिणाम अधिक ऊँचे स्तर का दीख पड़ना स्वाभाविक है)

☞ नियत दिनों में नियत जप संख्या पूरी करनी होती है, जिसमें सामान्य उपासना की तुलना में अधिक समय लगता है। इसके लिये दिनचर्या में आवश्यक हेर-फेर करके अधिक समय लगाने का प्रबन्ध करना पड़ता है।

☞ अनुष्ठान के दिनों में ब्रह्मचर्य पालन अनिवार्य रूप से आवश्यक होता है।

☞ भोजन में उपवास तत्व का समावेश किसी न किसी रूप में करना ही होता है। साधारण भोजन क्रम नहीं चल सकता। उपवास का स्वरूप-(क) नमक और शक्कर का त्याग-अस्वाद व्रत का पालन, (ख) एक समय भोजन (सेंधा नमक लिया जा सकता है), एक समय दूध, छाछ पर निर्वाह, (ग) शाकाहार, फलाहार, (घ) एक वस्तु खानें की दूसरी लगाने की मात्र दो ही वस्तुओं का उपयोग। जैसे-रोटी-साग, चावल-दाल आदि। थाली में दो से अधिक वस्तुयें न हों।(ङ) अपनी सेवा आप की जाय,(च) भूमि अथवा तखत पर शयन किया जाय, (छ) जहाँ तक हो सके कम वस्त्र पहना जाय ताकि सर्दी-गर्मी का प्रभाव कुछ तो सहन करना ही पड़े। (ज) चमड़े के जूते वर्जित, (झ) बाजारू भोजन ग्रहण न किया जाय, (ञ) पत्नी-माता अथवा पुत्री द्वारा पकाया भोजन लिया जा सकता है, (ट)हजामत अपने हाथों बनाये नाई की सेवा न लें।

☞ जप से पूर्व स्नान और धूले वस्त्र पहनने का नियम है।

☞ उपासना कक्ष पूजा के पात्र हर दिन साफ करने चाहिये।

☞ प्रयोग में आ चुके पूजा-उपचार की वस्तुओं को दुबारा काम में नहीं लाना चाहिए।

☞ आधी जली हुई अगरबत्ती दूसरे दिन प्रयोग में नहीं आनी चाहिए। इसी प्रकार दीपक में बचा हुआ घी या बत्ती, तथा कटोरी में बचा हुआ चन्दन अगले दिन काम में नहीं लाना चाहिए।

☞ अनुष्ठान के दिनों में अग्नि और जल को साक्षी रखा ही जाना चाहिए।

☞ जप करते समय बीच में पेशाब जाना पड़े तो हाथ-पैर धोकर बैठना चाहिए, किन्तु शौच जाना पड़े तो धोती बदलने एवं स्नान करने की आवश्यकता पड़ेगी।

☞ साधना कक्ष में मोजा पहनकर न आयें। हाथ पैर अवश्य धो लें।

लोहे की काई लोहे को खा जाती है इसी प्रकार पाप की वासनाएँ मनुष्य को खा जाती है।

परम पूज्य गुरुदेव

सिंह जब शिकार पर आक्रमण करता है, तो एक क्षण ठहरकर हमला करता है। धनुष पर बाण को चढ़ाकर जब छोड़ा जाता है तो यत्किंचित् रुककर तब बाण छोड़ा जाता है। बन्दूक का घोड़ा दबाने से पहले जरा-सी देर शरीर को साध कर स्थिर कर लिया जाता है, ताकि निशाना ठीक बैठे। इसी प्रकार अभीष्ट उद्देश्य की प्राप्ति के लिये पर्याप्त मात्रा में आत्मिक बल एकत्रित करने के लिये कुछ समय आन्तरिक शक्तियों को फुलाया और विकसित किया जाता है, इसी प्रक्रिया का नाम '*पुरश्चरण*' है।

गायत्री मंत्र में हजार परमाणु बमों से अधिक शक्ति है। यदि भारतवासी सामूहिक रूप से इस उपासना को आरम्भ करें तो उससे प्रकट होने वाली शक्ति आक्रमणकारियों के हौंसले पस्त कर सकती है।

f

धोबी का व्यवसाय है- दूसरों के मैले कपड़ों को बटोरना और उन्हें धुले हुए चमकदार वापस करना। सन्त और सुधारक ऊँची किस्म के धोबी हैं।

चोर, उचक्के, व्यसनी, जुआरी भी अपनी बिरादरी निरंतर बढ़ाते रहते हैं । इसका एक ही कारण है कि उनका चरित्र और चिंतन एक होता है। दोनों के मिलन पर ही प्रभावोत्पादक शक्ति का उद्भव होता है। किंतु आदर्शों के क्षेत्र में यही सबसे बड़ी कमी है।

जिस प्रकार कर्त्तव्यशील पुलिस, न्यायाधीश अथवा राजा को सामने खड़ा देखकर कोई पक्का चोर भी चोरी करने या कानून तोड़ने का साहस नहीं कर सकता। इसी प्रकार जिस व्यक्ति के मन में यह भावना दृढ़तापूर्वक समाई हुई है कि परमात्मा सर्वत्र व्याप्त है और हजार आँखों से उसके हर विचार और कार्य को देख रहा है तो उसकी यह हिम्मत नहीं हो सकती कि कोई पाप गुप्त या प्रकट रूप से करे।

परम पूज्य गुरुदेव

जो स्वास्थ्य की रक्षा के लिए जागरूक नहीं है, उसे देर या सबेर बीमारियाँ आ दबोचेगी। जो काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद,मत्सर सरीखे मानसिक शत्रुओं की गतिविधियों की तरफ से आँखें बन्द किये रहता है, वह वह कुविचारों और कुकर्मों के गर्त में गिरे बिना नहीं रहेगा। जो दुनिया के छल, प्रपंच, झूठ, ठगी, लूट, अन्याय, स्वार्थपरता, शैतानी आदि की ओर से सावधान नहीं रहता, उसे उल्लु बनाने वाले, ठगने वाले, सताने वाले अनेकों पैदा हो जाते हैं। जो जागरूक नहीं है, उसे दुनियाँ के शैतानी तत्त्व बुरी तरह

जागृत तन्द्रा के तीन दर्जे हैं। १. लापरवाही २. आलस्य ३. प्रमाद। ये तीनों ही क्रमशः अधिक भयंकर एवं घातक हैं। हम सबको इनसे बचना चाहिए। इसलिए गायत्री का यह अक्षर हमें सावधान व जागृत रहने का संदेश देता है।

‘‘वृद्ध जटायु रावण को पराजित करने में समर्थ न था, तो भी उसने अनीति होते देख कर चुप बैठना उचित न समझा, भिड़ गया। इसमें उसे प्राण त्यागने पड़े पर हारने पर भी वह विजयी से भी अधिक श्रेयाधिकारी बन गया।’’

अपने को समझे। मल-मूत्र की गठरी को अपना आधार न माने। ईश्वर का अंश पंचतत्वों की गठरी में इस लिये बंधा है कि इस उपकरण के सहारे वह अपने अभीष्ट प्रयोजनों को पूरा कर सके। लुहार हथौड़ा नहीं हो सकता।

इन्द्रियाँ किसी को नहीं सताती, वे तो उपयोगी प्रयोजनो के लिये बने हुये साधन मात्र हैं। उच्छृंखल तो मन है। उसी को समेटो ताकि इन्द्रियों द्वारा अपनी उच्छृंखलता के लिए बाधित न करें।

वृक्ष धूप, शीत सहते रहते हैं, पर दूसरो को छाया, लकडी और फल–फूल बिना किसी प्रतिफल की आशा के मनुष्यो से लेकर पशु पक्षियों तक को बाँटते रहते हैं। क्या तुम इतना भी नहीं कर सकते

बुद्धिमानी की निशानी उपलब्ध साधन और समय का श्रेष्ठतम उपयोग करना

ईश्वर कैसा है और
कहाँ है ? इस झंझट
मे भले ही न पडो पर
यह तो देखो कि तुम्हें
किस लिये बनाया
और किस तरह जीने
के लिये कहा।

महापुरुषों में ही महापुरुष उत्पन्न करने की क्षमता होती है। हाथियों के समूह में ही हाथी बढ़ते और पलते हैं। मूषक तो कुतरने वाली बिरादरी में ही बढ़ते हैं।

लोग प्रशंसा करते है
या निन्दा इसकी
चिन्ता छोड़ो। सिर्फ
एक बात सोचो कि
ईमानदारी से
जिम्मेदारियाँ पूरी
की गईं या नहीं।

दिवास्वप्न न देखो। बिना पंख उड़ाने न भरो। वह करो जो आजकी परिस्थियों में किया जा सकता है।

योगी का वेष बनाने और आवरण धारण करने की आवश्यकता नहीं। श्रेष्ठता को स्वभाव और प्रयास में सम्मिलित करने वाले योगी कहलाते हैं।

योग्यता बढ़ाओ, पात्रता विकसित करो ताकि अभीष्ट वस्तुएँ सरलतापूर्वक मिल सकें। समुद्र के पास नदियाँ बिना बुलाये ही जा पहुँचती है।

नाव स्वयं ही नदी पार नहीं करती। पीठ पर अनेकों को भी लाद कर उतारती है। सन्त अपनी सेवा भावना का उपयोग इसी प्रकार किया करते है।

जो दूसरों के अवगुणों
पर जीत पा लेता है,
वह 'वीर' कहलाता है
पर इससे भी अगली
श्रेणी का 'महावीर'
वह है जिसने अपने
आप को जीत लिया।

तलवार की कीमत म्यान से नहीं बल्कि धार से होती है। इसी प्रकार मनुष्य की कीमत धन से नहीं, सदाचार से आंकी जाती है।

दूसरे की त्रुटियों और बुराइयों को ही न ढूंढ़ते रहो, अपनी ओर भी देखो, जो अपनी बुराइयों सुधारने के लिये प्रयत्नशील है, उसे ही दूसरों की बुराई ढूंढ़ने का अधिकार है।

कठिनाइयां जब आती
हैं तो कष्ट देती हैं, पर
जब जाती है तो आत्म
बल का ऐसा उत्तम
पुरष्कार दे जाती हैं जो
उन कष्टों दुखों की
तुलना में हजारों गुना
मूल्यवान होता है।

सुधा बीज बोने से
पहले, कालकूट
पीना होगा। पहिन
मौत का मुकुट,
विश्वहित मानव
को जीना होगा।।

मातृवत् पर दारेषु।

पर द्रव्येषु लोष्ठवत्॥

आत्मवत सर्व भूतेषू:॥।

अग्रतः चतुरो वेदाः,
पृष्ठतः सशरम् धनुः ।
इदं ब्राह्मणम् इदं क्षात्रम्,
शास्त्रादपि शरादपि ॥

वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः

धिक्बलं क्षत्रीय बलम् ब्रह्म
तेजो बलम्–बलम् ॥

जो अपने बारे में
तुच्छता के विचार
रखता है वह सचमुच
तुच्छ है और जिसका
विश्वास है कि मैं
महान हूँ, सचमुच
वही महान् है।

परमात्मा जिस पर
अत्यन्त प्रसन्न होता है
उसे नदी सी दान
शीलता, सूर्य सी
उदारता और पृथ्वी
की सी सहन शीलता
प्रदान करता है।

प्रयत्न से सांसारिक समृद्धि मिलती है, प्रयत्न से आत्मिक सम्पदाएँ मिलती हैं, प्रयत्न से परमात्मा मिलता है, इसलिए प्रयत्न ही प्रधान है।

हमारा कर्त्तव्य है कि
हम जिसे सही
समझते है, निर्भय
होकर करते रहें।
जिसे गलत समझते
हैं, उसके आगे
किसी भी कीमत पर
न झुकें।

जब तुम्हारा मन टूटने
लगे, तब भी यह
आशा रखो कि प्रकाश
की कोई किरण कहीं
न कहीं से उदय होगी
और तुम डूबने न
पाओगे, पार लगोगे।

ज्ञान का जितना
भाग व्यवहार में
लाया जा सके वही
सार्थक है, अन्यथा
वह गधे पर लदे
बोझ के समान है।

हराम की कमाई खाने वाले, भ्रष्टाचारी बेईमान लोगों के विरुद्ध इतनी तीव्र प्रतिक्रिया उठानी होगी जिसके कारण उन्हें सड़क पर चलना और मुँह दिखाना कठिन हो जाये। जिधर से वे निकलें उधर से ही धिक्कार की आवाजें ही उन्हें सुननी पडें। समाज में उनका उठना-बैठना बन्द हो जाये और नाई, धोबी, दर्जी कोई उनके साथ किसी प्रकार का सहयोग करने के लिए तैयार न हों।

व्यक्तिगत, सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्र में संव्याप्त अगणित दुष्प्रवृत्तियों के विरुद्ध व्यापक परिमाण में संघर्ष आरम्भ किया जाये। इसलिए हर नागरिक को अनाचार के विरुद्ध आरम्भ किये धर्म युद्ध में भाग लेने के लिए आह्वान करना होगा। किसी समय तलवार चलाने वाले और सिर काटने में अग्रणी लोगो को योध्धा कहा जाता था, अब माप दण्ड बदल गया। चारों ओर संव्याप्त आतंक और अनाचार के विरुध्ध संघर्ष में जो जितना साहस दिखा सके और चोट खा सके उसे उतना बड़ा बहादुर माना जायेगा। उस बहादुरी के ऊपर ही शोषण में विहीन समाज की स्थापना संभव हो सकेगी। दुर्बुध्धि से कुत्सा और कुण्ठा से लड सकने में जो लोग समर्थ होंगे उन्हीं का पुरुषार्थ पीड़ित मानवता को त्राण दे सकने का यश संचित कर सकेगा।

हमारी उपासना एक है-
समर्पण की, श्रद्धा की।
हमने नाले की तरह से
अपने आपको नदी के साथ
में मिला दिया है और उसमें
मिल जाने की वजह से
हमारी हैसियत, हमारी
औकात, हमारी शक्ति और
हमारा स्वरूप नदी जैसा
बन गया है।

उपासना की निष्ठा को जीवन में हमने उसी तरीके से घोलकर रखा है जैसे एक पतिव्रता स्त्री अपने पति के प्रति निष्ठावान रहती है और कहती है–'सपनेहु आन पुरुष जग नाही।' आपके पूजा की चौकी पर तो कितने बैठे हुए हैं। ऐसी निष्ठा होती है कोई ? एक से श्रद्धा नहीं बनेगी क्या ? मित्रो! हमारे भीतर श्रद्धा है। हमने एक पल्ला पकड़ लिया है और सारे जीवन भर उसी का पल्ला पकड़े रहेंगे। हमारा प्रियतम कितना अच्छा है। उससे अधिक रूपवान, सौंदर्यवान, दयालु और संपत्तिवान और कोई हो नहीं सकता। हमारा वही सब कुछ है, वही हमारा भगवान् है।

अपने दोषों की ओर से अनभिज्ञ रहने से बड़ा प्रमाद इस संसार में और कोई नहीं हो सकता।

पं.श्रीराम शर्मा आचार्यजी

हमारी वसीयत और विरासत

हम कौन हैं?

''लोग हमें संत, सिद्ध, ज्ञानी मानते हैं। कोई लेखक, वक्ता, विद्वान और नेता समझते हैं, पर किसने हमारा अन्तःकरण खोलकर पढ़ा, समझा है ? कोई उसे देख सका होता, तो उसे मानवीय व्यथा-वेदना की अनुभूतियों की करुण कराह से हाहाकार करती एक उद्विग्न आत्मा भर इन हड्डियों के ढाँचे में बैठी-बिलखती दिखाई पड़ती।''

➢ **पं. श्रीराम शर्मा आचार्य**

जिसके अन्दर ऐय्याशी, फिजूलखर्ची और विलासिता की कुर्बानी देने की हिम्मत नहीं, वे अध्यात्म से कोसों दूर हैं और मुझे प्रिय भी नहीं।

पं.श्रीराम शर्मा आचार्यजी

आज का सद्चिंतन

मानव जीवन को स्त्रष्टा का सर्वोत्तम उपहार कहा गया है। इस निर्माण में परमात्मा ने अपना सारा कला-कौशल सँजो दिया है। प्राणियों में इसके समकक्ष और कोई नहीं है। उसे विशिष्ट काया, मन, बुद्धि, प्रतिभा सुविधा सभी कुछ उपलब्ध है। विकास क्रम में भी वह समस्त जीवधारियों से आगे है। इतना सब कुछ होने पर भी अभी मनुष्य का विकास अधूरा रह गया है। उसके पास जो बुद्धि-वैभव है, वह जीवन को सुव्यवस्थित रखने, चेतना के उच्चतम स्थिति तक पहुँचाने के लिए पर्याप्त नहीं है। सामान्य बुद्धि के रहते वह सृष्टि के मुकुटमणि के शीर्षस्थ पद से सम्मानित नहीं हो सकता। मन के जिस धरातल पर वह आज खड़ा है उससे भी अधिक उच्चस्तरीय चेतना की परतें उसके अन्तराल में विद्यमान हैं जिन्हें अब तक कुरेदा नहीं गया है। पूर्णता की प्राप्ति के लिए उसे मन के उच्चतर धरातल-अतिमानसिक चेतना की ओर छलाँग लगानी होगी जिस पर पहुँचकर मनुष्य सर्वज्ञ बन जाता है। मानव से अतिमानव, महामानव, पुरुष से पुरुषोत्तम बनना, यही उसके विकास की अगली मंजिल है।

➢ वाङ्मय 22-3.88

आज का सद्चिंतन

सिंह जब शिकार पर आक्रमण करता है, तो एक क्षण ठहरकर हमला करता है। धनुष पर बाण को चढ़ाकर जब छोड़ा जाता है तो यत्किंचित् रुककर तब बाण छोड़ा जाता है। बन्दूक का घोड़ा दबाने से पहले जरा-सी देर शरीर को साध कर स्थिर कर लिया जाता है, ताकि निशाना ठीक बैठे। इसी प्रकार अभीष्ट उद्देश्य की प्राप्ति के लिये पर्याप्त मात्रा में आत्मिक बल एकत्रित करने के लिये कुछ समय आन्तरिक शक्तियों को फुलाया और विकसित किया जाता है, इसी प्रक्रिया का नाम '*पुरश्चरण*

गायत्री महाविज्ञान भाग-१

आज का सद्चिंतन

आप अपनी उपासना को प्राणवान बनाइए। प्राण किसे कहते हैं? प्राण उसे कहते हैं, जो अपना कलेवर साथ-साथ लिए घूमता-फिरता है। प्राण जो है, उसके भीतर इच्छाएँ रहती हैं, हिम्मत रहती है, बहादुरी रहती है कि वह दिमाग को घसीट ले जाए, शरीर को घसीट ले जाए और साधना को घसीट ले जाए। इस तरह जो तीनों को घसीट ले जाए, उसको प्राण कहते हैं। आपकी उपासना की प्राण-प्रतिष्ठा होनी चाहिए। आपकी उपासना में प्राण होना चाहिए।

➢साधना में प्राण आ जाए तो कमाल हो जाए

आज का सद्चिंतन

मंत्रो की शक्ति, भगवान की शक्ति, उपासना की शक्ति के बारे में जिसमें एक चीज जुड़ी ही रहनी चाहिए; उसका नाम है-चरित्र। दुश्चरित्र आदमी, दुष्ट आदमी, दुराचारी आदमी यह ख्याल करे कि हम यह मंत्र जप करके, माला घुमा करके, पूजा करके किसी देवी-देवता को प्रसन्न करके काबू में ला सकते हैं तो यह बिल्कुल असम्भव है। मेरी जिंदगी का सार यही है चरित्र वाला पक्ष, जिसमें मैंने अपने आपको धोबी के तरीके से धोया और धुनिये के तरीके से धुना। धुनिया जैसे थोड़ी रुई को धुन-धुन करके इतनी मोटी बना देता है और धोबी कपड़े को पीट-पीट करके सफेद झक बना देता है, हमने भी अपने चरित्र को उसी प्रकार धोया और भगवान का अनुग्रह पाया। यह उसी का परिणाम है जो आपके सामने है।

-परम पूज्य गुरुदेव

आज का सद्चिंतन

महात्मा बुद्ध का कथन है कि अन्तःकरण भी एक मुख है। दर्पण में हम अपना मुख देखते हैं तथा सौन्दर्य देखकर प्रमुदित होते हैं। हमारे मुँह पर यदि धब्बे या कालौंच आदि होती है तो उसे भी सप्रयास छुटाने की चेष्टा करते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि इस अन्तःकरण रूपी मुख को भी हम नित्यप्रति चेतना के दर्पण में देखें-परखें और उसके सौन्दर्य में अभिवृद्धि करें। आत्मनिरीक्षण करके देखें कि किन-किन कषाय कल्मषों ने आत्मा के अनन्त सौन्दर्य को आच्छादित कर रखा है। कामनाओं और वासनाओं ने कहीं उसे पथ-भ्रष्ट तो नहीं कर रखा ? आशा और तृष्णा रूपी भयंकर ग्रहोने अपने चंगुल में उसे जकड़ तो नहीं रखा ? जब इन प्रश्नों का उत्तर 'नहीं' में मिलने लगेगा तो व्यक्ति तुच्छ से महान, लघु से विराट् और नर से नारायण बन जायेगा।

➤वाङ्मय-22-3.35

आज का सद्चिंतन

उपासना जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है-क्यों?

उपासना का अर्थ होता है–पास बैठना। परमात्मा के पास बैठने से ही ईश्वर उपासना हो सकती है। साधारण वस्तुएँ तथा प्राणी अपनी विशेषताओं की छाप दूसरों पर छोड़ते हैं तो परमात्मा के समीप बैठने वालों पर उन दैवी विशेषताओं का प्रभाव क्यों नहीं पड़ेगा?

किसी व्यक्ति की उपासना सच्ची है अथवा झूठी है, इसकी एक ही परीक्षा है कि साधक की अन्तरात्मा में संतोष, प्रफुल्लता, आशा, विश्वास और सद्भावना का कितनी मात्रा में अवतरण हुआ। यदि यह गुण नहीं आये हैं और हीन वृत्तियाँ घेरे हुए हैं तो समझना चाहिये कि वह व्यक्ति चाहे जितनी पूजा–पाठ क्यों न करता हो, उपासना से अभी बहुत दूर है।

➤अक्षर चौबीस परम पुनीता

आज का सद्चिंतन

उपासना का मुख्य उद्देश्य है ईश्वर के सान्निध्य को प्राप्त करना। जप, तप, पूजा, अर्चा, ध्यान आदि जो कुछ भी किया जा रहा है, वह सब परमात्मा के लिये ही किया जा रहा है, ऐसा अनुभव किया जाना चाहिए। अनुभव करना चाहिये परमात्मा उसकी पूजा स्वीकार कर रहा है। वह उसकी प्रार्थना अथवा कीर्तन को सुन रहा है। इस प्रकार सच्ची भावना से की गयी उपासना चमत्कार की तरह फलवती होती है। ऐसी जीवंत उपासना व्यक्ति के जीवन पर एक स्थायी प्रभाव डालती है। जो उत्कृष्ट विचारों, निर्विकार स्वभाव तथा सत्कर्मों के रूप में परिलक्षित होता है। उपासना करता हुआ जो भी व्यक्ति गुण, कर्म, स्वभाव एवं मन, वचन तथा कर्म से उत्कृष्ट नहीं बना तो यही मानना होगा, उसने उपासना की ही नहीं, केवल उपासना करने का नाटक किया है। उपासना के समय जितनी गहराई के साथ अपनी मानसिक भावना को परमात्मा के साथ संयोजित किया जायगा, वह अनुभव उतनी ही गहराई से जीवन में उतरेगा, वह स्थिर होता जायगा। ऐसी स्थिति आ जाने पर मनुष्य का आत्मोद्धार निश्चित है। उसके गुण, कर्म, स्वभाव परमात्मा जैसे पावन, उत्कृष्ट हो जायेंगे।

➤ अक्षर चौबीस परम पुनीता

आज का सद्‌चिंतन

पुरूषार्थ के दो पक्ष हैं-एक श्रम और दूसरा मनोयोग। श्रम में स्फूर्ति और तत्परता होनी चाहिए। मनोयोग में तन्मयता, निष्ठा का समावेश होना चाहिए। अन्यथा इन दोनों का स्तर नहीं बनता और चिह्न पूजा होने जैसी स्थिति बनी रहती है। लकीर पीटते रहने को पुरूषार्थ नहीं बेगार भुगतना कहा जाता है। उसका प्रतिफल भी नहीं के बराबर ही होता है। साधना के क्षेत्र में भी उच्चस्तरीय पुरूषार्थ चाहिए। साधक की उपासना में सघन श्रद्धा और जीवन प्रक्रिया में उत्कृष्टता का अधिकाधिक समन्वय होना चाहिये। भजन-पूजन बेगार भुगतने की तरह क्रिया-कृत्य बनकर ही नहीं चलते रहना चाहिये वरन् उसमें सघन निष्ठा का समावेश होना चाहिये।

साधनात्मक पुरूषार्थ में तीन चरणों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये। प्रथम चरण में उपासना का नियमित और निश्चित होना द्वितीय चरण में व्यक्तित्व में पवित्रता एवं प्रखरता का समावेश बढ़ना तृतीय चरण में तपश्चर्या की संयम एवं सेवा की शर्तो को पूरा किया जाना चाहिए। साधक इन्हीं के सहारे सशक्त बनता है। संसार से सम्मान, सहयोग एवं दैवी अनुग्रह का लाभ सहज ही प्राप्त होने लगता है।

➤अक्षर चौबीस परम पुनीता

आज का सद्‌चिंतन

मन कुचाल छोड़, इन्द्रिय लिप्साओं में भटकना छोड़। वासना आग की तरह है, भोग उपभोग से यह शान्त होने वाली नहीं है। इन्हें तृप्त करने के जितने ही साधन जुटायेगा उतनी ही अतृप्ति भड़केगी। फिर उनके कुचक्र में जितना ही फँसा जाय उतनी ही क्षमता, आयु, प्रतिभा घटती है। क्षणिक चटोरेपन के पीछे समर्थता की सम्पत्ति को गँवाने और दिन-दिन दुर्बल होते जाने से क्या लाभ ? बता मन, तू कोयलों के ऊपर मुहरें निछावर करने में क्या बुद्धिमत्ता अनुभव कर रहा है ?

आत्मा रोती-बिलखती रही, उसके सन्तोष उत्थान, कल्याण के लिए एक कदम नहीं बढ़ाया गया, एक प्रयत्न नहीं किया गया। अन्तरात्मा की सहचरी सत्प्रवृत्तियाँ कुम्हलाईं, मुरझाईं और सूख गईं। उन्हें सींचने के लिए एक लोटा पानी नहीं डाला जा सका। सद्‌भाव के बालक अपने पोषण की पुकार करते रहे; उनकी आवश्यकताएँ जुटाने से मुँह मोड़े रहा गया, पर दुर्बुद्धि, दुष्प्रवृत्ति और दुर्भावनाओं के पोषण लिए तरह-तरह के साज-सरंजाम जुटाये जाते रहे। परिवार का पोषण, विकास करना पर्याप्त था। पर उन्हें विलासी और धन कुबेर बनाकर छोड़ जाने के मोह से सारी ममता उन्हीं पर उँडेल दी गई। उन्हें ही अपना समझा गया। जो कुछ किया जाय उन्हीं के लिए, जो कुछ सोचा जाय उन्हीं के लिए, सम्पन्न बनाया जाय तो उन्हीं को, समृद्ध बनें तो वे ही। उस छोटे से दायरे में अपनी सारी ममता समेटकर मन तू ठगा गया। इस मोहग्रस्तता ने लोक भी बिगाड़ा और परलोक भी। बता मन तू इसी चाल पर कब तक चलता रहेगा ? विश्व परिवार की ओर से कब तक आँखें बन्द कराये रहेगा ?

➢ **वाङ्मय 22-2.79**

आज का सद्चिंतन

चरित्रवान् व्यक्ति जब विकसित होता है तब उदार हो जाता है, परमार्थ-परायण हो जाता है, लोकसेवी हो जाता है, जनहितकारी हो जाता है और वह अपनी क्षुद्र स्वार्थ, संकीर्णताओं को कम करके लोकहित में, परमार्थ हित में अपने स्वार्थ को देखना शुरू कर देता है।

➤पं.श्रीराम शर्मा आचार्य

आज का सद्चिंतन

योद्धा दूसरों का सिर काटने वाले को नहीं कहते। सच्चे शूरवीर वे हैं जो अपनी पशु प्रवृत्तियों को महामानवों के स्तर तक बदलने में अपने प्रचण्ड पराक्रम का परिचय दे सकें।

पं.श्रीराम शर्मा आचार्य

आज का सद्चिंतन

मित्रो, ब्रह्मवर्चस और ब्रह्मतेजस वह शक्ति है जो भगवान को अपना भक्त बना लेने के लिए मजबूर कर देती है। यह ब्रह्मतेजस आता कहाँ से है? चरित्र में से आता है। पूजा चरित्र के लिए है। पूजा से भगवान नहीं मिल सकते। पूजा हमारा माध्यम है; लक्ष्य नहीं। पूजा के माध्यम से हम अपनी चरित्रनिष्ठा, विचारशीलता और आंतरिक उदात्तता का विकास करते हैं। उपासना इसी के लिए की जाती है।

पं.श्रीराम शर्मा आचार्य

आज का सद्चिंतन

संत की यह निशानियाँ हैं कि उसका चरित्र ऊँचा होना चाहिए। भक्त का चरित्र ऊँचा न हुआ तब? तब सभी कथा-कीर्तन, भजन-पूजन, जप-तप, अनुष्ठान बेकार हैं। नहीं साहब, हम तो अखंड कीर्तन करते हैं, जागरण करते हैं, जप-तप करते हैं। आप यह सब करते हैं तो आपको मुबारक, लेकिन पहले आप सिर्फ एक जवाब दीजिए कि आप अपनी पात्रता को विकसित करते हैं कि नहीं? भगवान सिर्फ दो ही बातें देखते रहते हैं और वे आपकी मानसिक पवित्रता और चरित्रनिष्ठा। अपनी पूजा तो अपने मन को धोने का एक तरीका है।

आज का सद्चिंतन

आत्मसुधार में तपस्वी, परिवार निर्माण में मनस्वी और समाज परिवर्तन में तेजस्वी की भूमिका निबाहें। अनीति के वातावरण में मूकदर्शक बनकर न रहें।

➢पं.श्रीराम शर्मा आचार्य

आज का सद्चिंतन

लोभ, मोह और अहंकार के तीन भारी पत्थर जिनने सिर पर लाद रखे हैं, उनके लिए जीवन साधना की लम्बी और ऊँची मंजिल पर चल सकना, चल पड़ना असम्भव हो जाता है। भले ही कोई कितना ही पूजा पाठ क्यों न करता रहे। जिन्हें तथ्यान्वेषी बनना है, उन्हें इन तीन शत्रुओं से अपना पीछा

➤जीवन देवता की साधना-आराधना-२०

आज का सद्चिंतन

मनीषी इंसान की समस्याओं का समाधान देते हैं, व्यक्ति तैयार करते हैं, समाज बनाते हैं। सुकरात को तैयार करने वाले का नाम अरस्तू है और शिवाजी को तैयार करने वाले का नाम समर्थ गुरु रामदास है। चंद्रगुप्त को तैयार करने वाले का नाम चाणक्य है और विवेकानंद को तैयार करने वाले हैं रामकृष्ण परमहंस। ये कौन हैं? अरे भाई, ये मनीषी हैं। मनीषी विचार नहीं, दर्शन देते हैं, दर्शन जीकर दिखाते हैं और अनेक का जीवन बना देते हैं।

➤गुरुवर की धरोहर भाग-१-१०९

आज का सद्चिंतन

कुशल माली बगीचे में खाद पानी के साथ साथ पौधों की काट-छाँट खर पतवार के निष्कासन की व्यवस्था बनाता है। व्यक्तित्व विकास के लिए विकृतियों का परिशोधन और सत्प्रवृत्तियों की स्थापना की दोहरी माली जैसी ही प्रक्रिया अपनानी होती है।

➤पं.श्रीराम शर्मा आचार्य

आज का सद्चिंतन

जो सत्यवान नहीं है, जिन्होंने अपना सारा जीवन झूठवान बना करके रखा है, जिसके व्यवहार में झूठ, विचारों में झूठ, नियम में झूठ, रोम-रोम में झूठ भरा पड़ा है। उसका यदि ख्याल हो कि गायत्री मंत्र बोलने के बाद में किसी ऐसी शक्ति को गुलाम बना सकता है जो उसके मनमर्जी के मुताबिक जो भी मनोकामना होगी, उसको पूरा कर दिया करेगी, तो मेरे हिसाब से यह ख्याल गलत है। दुनिया में ऐसी कोई देवी नहीं है जो किसी पूजा-पत्री करने वाले को निहाल इसलिए कर दिया करे कि उसने इतना जप किया, धूपबत्ती जलाई या इतना हवन कर दिया है। हवन, धूपबत्ती और जप की संख्या के नाम पर प्रसन्न होकर आदमी की मनोकामना को पूरी कर दिया करे, ऐसी देवी दुनिया में नहीं है। ➢पं.श्रीराम शर्मा आचार्य

दि-३०/०४/२००७

आज का सद्चिंतन

युगद्रष्टा पूज्य गुरुदेव के शब्दों में घोषित करें तो ''(हमारे मिशन) युग निर्माण योजना के अंतर्गत प्रबल प्रयास यह किया जा रहा है कि समस्त मानव जाति को प्रेम, सौजन्य, सद्भाव, आत्मीयता, समता, ममता आदि उच्च अध्यात्म आदर्शों की आधारशिला पर एकत्रित और संघबद्ध किया जाये।''

''जो हमें प्यार करता हो, उसे हमारे मिशन से भी प्यार करना चाहिए। जो हमारे संगठन की उपेक्षा-तिरस्कार करता है, लगता है वह हमें ही उपेक्षित-तिरस्कृत कर रहा है। व्यक्तिगत रूप से कोई श्रद्धावान है, उसके लिए कुछ करता है, सोचता है तो लगता है, मानो हमारे ऊपर अमृत बिखेर रहा है और चंदन लेप रहा है। किन्तु यदि केवल हमारे व्यक्तित्व के प्रति ही श्रद्धा है, शरीर से ही मोह है, उसी को प्रशस्ति पूजा की जाती है; यदि मिशन की बात ताक पर उठाकर रख दी जाती है तो लगता है हमारे प्राण का तिरस्कार करते हुए केवल मृत शरीर पर पंखा डुलाया जा रहा है।'' ➤वांङमय-१-८.२५, ८.२६

दि-०१/०५/२००७

आज का सद्चिंतन

गुरुजी आज भी हममें से प्रत्येक से पूछ रहे हैं-''अपने विशाल परिवार में कहीं सच्ची आत्मीयता का कितना अंश विद्यमान है, यह जानने की इच्छा होती है? हमारी आत्मीयता की एक ही कसौटी है कि हमारा दर्द किस-किस की नसों में कितनी मात्रा में भर चला और हमारी आग की कितनी चिनगारियाँ, कितने अंशों में, किसके कलेजे में सुलगने लगी? किसने हमारे प्राणों से सींचे गए संगठन को मजबूत बनाने का संकल्प लिया? कौन स्वार्थ और अहंकार का बलिदान कर इस संगठन के लिए समर्पित हुआ? ये सवाल अपने प्रत्येक परिजन से है। हम इन स्वजन-सहचरों को उनके सामयिक एवं अनिवार्य कर्त्तव्यों में संलग्न होने के लिए अभीष्ट प्रेरणा को फलितार्थ होते देखना चाहते हैं।''

➤ वांङमय-१- ८.२६

आज का सद्‌चिंतन

पूज्यवर ने एक आदर्श आचार संहिता के नाते प्रत्येक परिजन से (शांतिकुंज में) प्रवेश के समय एक ही बात कही थी कि- ''तुम सब यह मानकर चलना कि यह तुम्हारी ओढ़ी हुई गरीबी है। तुम्हारी इस गरीबी में ही तुम्हारी शान है। कभी किसी से भीख मत माँगना एवं जो भी कोई तुम्हें व्यक्तिगत रूप से दे, उसे अपना न मानकर माताजी को दे देना ताकि वह समष्टिगत रूप से बँट सके। जिस दिन तुम्हें दीन-हीन याचक माना जाने लगेगा, तुम पर भेंट तो न्यौछावर होगी, घर जाकर भी तुम्हें तुम्हारे वाक्-कौशल से प्रभावित हो कोई न कोई कुछ दे जायेगा, पर बेटा उसी दिन से तुम्हारा ब्रह्मतेज समाप्त होने लगेगा। माताजी के दिए पैसे से तुम चने खाकर संतोष कर लेना, पर दूसरों के दिये बादाम मत खाना। जिस दिन इस स्तर का ब्राह्मत्व तुम्हारे अंदर उतर गया, मानो एक लोकसेवी का सही मानों में उदय हो गया।''

➢वांङ्मय-१-८.३७

आज का सद्चिंतन

शिशिर ऋतु में पूज्य गुरुदेव अपने कक्ष से बाहर धूप में बैठते थे। लेखन-शोध से सम्बन्धित कार्यकर्ताओं को वहीं बुलाकर चर्चा करते थे। वहीं निर्देश देते-देते एकाएक गंभीर हो उठे, बोले - ‘‘लड़को! कहीं तुम्हें अविश्वास तो नहीं होता, मेरे कथन पर कि सतयुग वास्तव में आनेवाला है। मैंने जो कुछ भी पिछले दिनों लिखा है, महाकाल के आदेश से लिखा है। मेरी नब्बे प्रतिशत से अधिक चेतना अब सूक्ष्म जगत में सक्रिय है व ऋषिसत्ताओं के साथ नये युग का सरंजाम जुटा रही है। तुम देखना कि मेरे कहे गये ये वाक्य, लिखी हुई एक-एक पंक्ति बम का धमाका करेंगी व देखते-देखते विचार क्रांति का स्वरूप तुम्हें दस-पन्द्रह वर्ष में ही दिखाई देने लगेगा। विश्व का सारा ढाँचा बदल जायेगा। मेरी बात पर विश्वास रखना कि भारतीय संस्कृति का ही अलख अब चारों दिशाओं में गूँजने जा रहा है।’’

➤वांङ्मय-१-८.४३

आज का सद्चिंतन

"अपनी २४ वर्षीय तपश्चर्या के प्रकाश में जहाँ-तहाँ बिखरे पड़े मणि-मुक्तकों को ढूँढ़ -ढूँढ़कर एक सुसम्बद्ध माला के रूप में पिरोया है। आप लोग अपने को पहचानते नहीं, आत्म-विस्मृति की मूर्छना में झपकी लेते रहे हैं, पर हम जानते हैं कि 'युग-निर्माण' संगठन की माला में जिन परिजनों को प्रयत्नपूर्वक पिरोया गया है, उनमें से प्रायः सभी हनुमान-अंगद की, रीछ-वानरों की, भीम-अर्जुन की, गोप-गोपियों की स्थिति में रह चुके हैं। हीरा कीचड़ में सन गया हो तो भी उसका वास्तविक मूल्य अक्षुण्ण रहेगा। हम लोग अहंता और ममता के गर्त में गिरकर मायाग्रस्त निरीह प्राणी जैसे लगते भर भले ही हों, फिर भी वस्तुस्थिति ज्यों की त्यों है। जामवन्त ने समुद्र लाँघते समय हनुमान की हिचक को दूर करने के लिए उद्बोधन दिया था और उस आत्मबोध को पाते ही सामान्य बन्दर के कलेवर से विस्तृत होकर हनुमान अति महान रामदूत बन गये थे। आप सबको वैसे ही रामदूत बनने के लिए यहाँ बुलाया है।"

➢वांङ्मय-१-४.४०

आज का सद्चिंतन

वासना-तृष्णा की कीचड़ से निकालकर हमें परिजनों को महानता के पथ पर अग्रसर और ईश्वरीय इच्छा की पूर्ति के लिए नियोजित करना है। जिन्हें हम प्यार करते हैं, उन्हें सहज छोड़ने वाले नहीं हैं। वे अनुभव करेंगे कि कोई अदृश्य सत्ता उन्हें ऊपर उठने और आगे बढ़ने के लिए कहती-सुनती ही नहीं, नोचती-झकझोरती भी है। हमें चैन से जीवन भर बैठने नहीं दिया गया। चैन और आराम की बात, दौलत और अमीरी की बात को अपने आदर्शवादी परिवार को सोचना बन्द कर देना चाहिए और वह करना चाहिए जिसके लिए आज हमें हर दिशा से आमन्त्रित किया जा रहा है।

➤वांङ्मय-१-४.४०

आज का सद्चिंतन

हमें अपना सारा साहस समेटकर तृष्णा और वासना के कीचड़ से बाहर निकलना होगा और वाचालता और विडम्बना से नहीं, अपने कृत्यों से अपनी उत्कृष्टता का प्रमाण देना होगा। हमारा उदाहरण ही दूसरे अनेक लोगों को अनुकरण का साहस प्रदान करेगा।

वाणी और लेखनी के माध्यम से लोगों को किसी बात की, अध्यात्मवाद की भी जानकारी कराई जा सकती है। इससे अधिक भाषणों का कोई उपयोग नहीं। दूसरों को यदि कुछ सिखाना हो, तो उसका एक मात्र तरीका अपना उदाहरण प्रस्तुत करना है। यही ठोस, वास्तविक और प्रभावशाली पद्धति है।

➤पं.श्रीराम शर्मा आचार्यजी

आज का सद्‌चिंतन

मित्रो! अगर आप गायत्री मंत्र का वह चमत्कार, जो कि ऋषियों को मिला था; उपासकों, ब्राह्मणों और हमको मिला है तो इसके लिए आप अपनी श्रद्धा को विकसित कीजिए। चरित्र के बारे में ध्यान रखिए। दोष-दुर्गुणों का त्याग कीजिए और सेवावृत्ति के लिए उदारता से तैयार हो जाइए और यह देखिए कि जनमानस के परिष्कार के लिए आप क्या कर सकते हैं? समय का, श्रम का, धन का, अपनी बुद्धि का कोई हिस्सा लगाने के लिए आप तैयार हैं क्या? कोशिश कीजिए, हिम्मत कीजिए। बीज के तरीके से गलिए और वृक्ष के तरीके से फलिए।

➤पं.श्रीराम शर्मा आचार्यजी

आज का सद्चिंतन

मित्रो! ब्रह्मवर्चस कौन सा है? ब्रह्मवर्चस कहते हैं तेज को। ब्रह्मतेज कैसा होता है? ब्रह्मतेज उसे कहते है- जब विश्वामित्र और वशिष्ठ में संघर्ष हुआ तब विश्वामित्र हार गए और अपना राज्य छोड़कर यह कहने लगे कि वशिष्ठ जितने शक्तिशाली हैं उतना ही शक्तिशाली बनकर मैं भी दिखाऊँगा। उनने एक श्लोक कहा-

'धिक बलं क्षत्रिय बलं, ब्रह्मतेजो बलं बलम्।'

➢पं.श्रीराम शर्मा आचार्यजी

दि-०९/०५/२००७

आज का सद्चिंतन
सार्थक उपासना के मर्म

उपासना में मन स्वाभाविक रूप से लगे तथा अंतरंग क्षमताओं के संयोग से साधक उसका अधिक लाभ उठा सके, इसके लिये कुछ नियम हैं। तीन महत्व पूर्ण नियमों का उल्लेख यहाँ किया जाता है। प्रथम उपासना की सुनिश्चित मात्रा। उपासना अन्तःकरण का आहार, उसके व्यायाम जैसी है। व्यायाम अथवा आहार का क्रम कभी अधिक कभी कम रहे तो उसका ठीक ठाक लाभ नहीं मिल सकता है। अपनी शक्ति एवं रुचि के अनुसार न्यूनतम मात्रा निश्चित करके उन्हें नियमित रूप से प्रारम्भ किया जाय तथा फिर क्रमशः बढ़ाया जाय तो निश्चित रूप से उल्लेखनीय लाभ प्राप्त किया जा सकता है। उपासना के संबंध में भी यही है। प्रारम्भ में थोड़ी ही सही नियमित उपासना प्रारम्भ की जाय। रुचि बढ़ने के साथ-साथ उसकी मात्रा बढ़ाई जाय, यही उचित है।

दूसरा नियम है नियत समय। नियत समय पर जो भी कार्य लगातार किये जाते है, उनसे मनुष्य में विशेष जागरुकता उत्पन्न हो जाती है। भोजन के नियमित समय पर भूख लग आना, नशे का समय होते ही तलब लगना आदि इसके प्रमाण हैं। नियत समय पर नित्य उपासना करने से शरीर के अवयवों से लेकर अन्तःचेतना की परतों तक उस समय उपासना के अनुकूल एक लहर पैदा होती है, जो साधक को उपासना में तल्लीन होने में अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होती है।

तीसरा नियम है निश्चित स्थान। पूजा का स्थान निश्चित रखना भी बड़ा लाभदायक है। हर क्रिया के समय शरीर से विशेष तरह के विकिरण उत्पन्न होते हैं। उनके आसपास का क्षेत्र प्रभावित संस्कारित होता रहता है। उसके प्रभाव से उसी प्रकार की धारायें सूक्ष्म जगत में भी आकर्षित होकर वहाँ एकत्रित होती हैं। जहाँ एक ही प्रकार की प्रक्रिया लम्बे समय तक चलती रहती है, वहाँ उस तरह के सूक्ष्म संस्कार अधिक सबल हो जाते हैं। तीर्थों की स्थापना इसी आधार पर होती रही है। निश्चित पूजा पाठ भी घर के अन्दर एक तरह का तीर्थ स्थल बन जाता है। जहाँ पहुँचते ही मनुष्य में दैवी प्रेरणा प्रवाह जाग्रत होने लगता हैं। व्यक्तिगत साधना नहीं बन पड़े तो मानसिक रूप से उसकी पूर्ति कर लेनी चाहिए। मजबूरी में जितनी उपासना छूट जाय उसे बाद में पूरा कर लेना चाहिए। उस तरह से की गयी उपासना सामान्य की अपेक्षा अनेक गुनी फलदायिनी सिद्ध होती हैं।

➢पं.श्रीराम शर्मा आचार्यजी

दि-१०/०५/२००७

आज का सद्चिंतन

एकलव्य ने भी अध्यात्म का व्यापार किया था और मिट्टी के द्रोणाचार्य से इतना सीख लिया कि कुत्ते का मुँह तक सिल दिया था। अर्जुन जो पहले कायर बना हुआ था,परन्तु भगवान श्रीकृष्ण के समझाने पर जब उसने भी अपने अन्दर आत्मबल धारण किया तो वह फायदे में रहा। भगवान आगे-आगे थे तथा उसके सारथी बनकर चल रहे थे।

बेटे,आत्मबल एक सुन्दर तथा नफे का व्यापार है। हम भी इसके व्यापारी हैं। हमारा आपसे निवेदन है कि आप भी भगवान की इस लिमिटेड कम्पनी में अपना शेयर खरीद लीजिए और भागीदार बन जाइये । आप भी फायदे में रहेंगे। सुना है रुड़की में हरिद्वार के पास एक बड़ा पावर हाउस है। उसी तरह भगवान के पास भी एक बिजलीघर है। उसी से हम सभी को जिसने आत्मबल का व्यापार किया है, शक्ति मिलती रहती है और हमारा काम चलता रहता है। इस आत्मबल की प्राप्ति अध्यात्म मार्ग पर चलने से ही होती है।

➤पं.श्रीराम शर्मा आचार्यजी

दि-११/०५/२००७

आज का सद्चिंतन

एक साधक अपनी श्रद्धा के बल पर धातु और पत्थर से बनी प्रतिमाओं से चमत्कारी प्रतिक्रिया उत्पन्न कर लेता है, दूसरा अपनी अनास्था के कारण जीवन्त देव मानवों के अति समीप रहने पर भी कोई लाभ नहीं ले पाता। एकलव्य ने मिट्टी से बनी द्रोणाचार्य प्रतिमा से वह अनुदान प्राप्त कर लिया था जो पाण्डव सचमुच के द्रोणाचार्य से भी प्राप्त नहीं कर सके थे। मीरा के 'गिरधर गोपाल' और राम कृष्ण परमहंस की 'काली' में जो चमत्कारी शक्ति थी वह उनके श्रद्धारोपण से ही उत्पन्न हुई थी और उन्हीं के लिए फलप्रद सिद्ध होती रही। यन्त्र-तन्त्रों की सिद्धि में विधि-विधानों की इतनी भूमिका नहीं होती, जितनी साधक के श्रद्धा, विश्वास की।

➤वाङमय-२२-१.८९

आज का सद्चिंतन

युग-निर्माण परिवार के हर व्यक्ति को अपने बारे में ऐसी ही मान्यता बनानी चाहिए कि हमको भगवान ने विशेष काम के लिए भेजा है। यह कोई विशेष समय है और हममें से हर आदमी को यह अनुभव करना चाहिए कि हम कोई विशेष उत्तरदायित्व लेकर के आए हैं। समय को बदलने का उत्तरदायित्व, युग की आवश्यकताओं को पूरा करने का उत्तरदायित्व हमारे कन्धों पर है। अगर इन बातों पर आप विश्वास कर सकें तो आपकी प्रगति का दौर खुल सकता है और आप महामानवों के रास्ते पर, जो कि अपने इस युग-निर्माण परिवार का उद्देश्य है, सफलतापूर्वक चल सकते हैं।

➢परम पूज्य गुरुदेव

दि-१३/०५/२००७

आज का सद्चिंतन

बीज छोटा सा होता है, परन्तु फलों का, फूलों का, सभी का गुण छोटे से बीज में सन्निहित होता है। छोटे से शुक्राणु में बाप, दादा का पीढ़ियों का गुण समाया रहता है। इसी तरह जो भी इस संसार का दिव्य ज्ञान-विज्ञान है, वह इस छोटे से गायत्री मंत्र के अन्दर समाविष्ट है। २४ अक्षरों वाले बीज में विद्यमान है।

➢परम पूज्य गुरुदेव

दि-१४/०५/२००७

आज का सद्चिंतन

हमारे प्रेमी-परिजन लोभ-मोह के जाल से जिस हद तक निकल सकें, निकलने के लिए पूरा जोर लगाएँ। भौतिक और व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षाओं की कीचड़ से निकलकर विश्व-मानव की आराधना के लिए त्याग-बलिदान भरा अनुदान अधिक से अधिक मात्रा में उत्पन्न करें।

पश्चिम का भोगवाद जिस अग्नि में-तेजाबी तालाब में जलता-कलपता, निष्ठुर स्वार्थपरता की कीचड़ में डूबा विकल, संत्रस्त दृष्टिगोचर हो रहा है, उसे भारतीय अध्यात्म ही भावसंवेदना की गंगोत्री में स्नान कराके मुक्ति दिलाएगा। इक्कीसवीं सदी भाव-संवेदनाओं के उभरने-उभारने की अवधि है। हमें इस उपेक्षित क्षेत्र को ही हरा-भरा बनाने में निष्ठावान माली की भूमिका निभानी चाहिए।

➤परम पूज्य गुरुदेव

दि-१५/०५/२००७

आज का सद्चिंतन

हमारी तपश्चर्या का प्रधान प्रयोजन उन सुसंस्कारित आत्माओं में प्राण और साहस भरना है, जिनकी मनोभूमि में आज के युगधर्म को समझ सकने और उसके लिए कुछ करने की हिम्मत विद्यमान है। हमारे तप से इस स्तर के व्यक्ति पूरी तरह लाभान्वित होंगे। पिछले दिनों रामकृष्ण परमहंस, महर्षि रमण, अरविन्द घोष जैसे महामानवों ने इसी स्तर की, इसी प्रयोजन की तप-साधना की थी और उसका फल भारतीय स्वतन्त्रता के लिए उत्पन्न अगणित शूर सैनिकों के रूप में प्रस्तुत हुआ।

➤परम पूज्य गुरुदेव

दि-१६/०५/२००७

आज का सद्‌चिंतन

आज मनुष्य को जीना कहाँ आता है? जीना भी एक कला है। सब आदमी खाते हैं, पीते हैं, सोते हैं और मौत के मुँह में चले जाते हैं, किन्तु जीना नहीं जानते। जीना बड़ी शानदार चीज है। इसको संजीवनी विद्या कहते हैं-जीवन जीने की कला। यहाँ हम अपने विश्वविद्यालय में, शांतिकुंज में जीवन जीने की कला सिखाते हैं और यह सिखाते हैं कि आज के गए-बीते जमाने में आप अपनी नाव पार करने के साथ-साथ सैकड़ों आदमियों को बिठाकर पार किस तरह से लगा पाते हैं? (वाङ्मय-६८-पृष्ठ-१.४०)

शांतिकुंज धर्मशाला नहीं है। यह कॉलेज है, विश्वविद्यालय है। कायाकल्प के लिए बनी एक अकादमी है। हमारे सतयुगी सपनों का महल है। आपमें जिन्हें आदमी बनना हो, बनाना हो, इस विद्यालय की संजीवनी विद्या सीखने के लिए आमंत्रण है। कैसे जीवन को ऊँचा उठाया जाता है, समाज की समस्याओं को कैसे हल किया जाता है? यह आप लोगों को सिखाया जाएगा। दावत है आप सबको। आप सबमें जो विचारशील हों, भावनाशील हों, हमारे इस कार्यक्रम का लाभ उठाएँ। अपने को धन्य बनाएँ और हमको भी।

(वाङ्मय-६८-पृष्ठ-१.४१)

दि-१७/०५/२००७

आज का सद्चिंतन

युग निर्माण परिवार के हर सदस्य को युग परिवर्तन की प्रक्रिया को एक धर्म युद्ध मानकर चलने के लिए कहा गया है। पाप और अनाचार से, दुष्टता और असुरता से लड़ना इस आपत्तिकाल में हर प्रबुद्ध एवं भावनाशील व्यक्ति के लिए अनिवार्य हो गया है। अज्ञान असुर से प्रचारात्मक मोर्चे पर और अनाचार दानव से संघर्ष मोर्चे पर लड़ा जाएगा, तभी हर मस्तिष्क पर अधिकार किये हुए आज के हिरण्याक्ष लोभी दृष्टिकोण का अंत किया जा सकेगा।

➤परम पूज्य गुरुदेव

वाङमय भाग-६६-१.५२

दि-१८/०५/२००७

आज का सद्चिंतन

जब समुद्र मथा गया था तो उसमें से सबसे पहले विष, फिर वारुणी, उसके बाद अन्य रत्न निकले थे। युग निर्माण के लिए, मूर्छित समाज को जाग्रत करने के लिए भी गायत्री संस्था द्वारा वह अमृत निकालने के लिए समुद्र-मंथन का कार्य हो रहा है, जिसे पीने से यहाँ के निवासी इस देवभूमि को अमरों, भूसुरों की निवास-स्थली प्रत्यक्ष रूप में दिखा सकें।

यह समुद्र-मंथन ठीक प्रकार से चल रहा है या नहीं, इसकी प्रारम्भिक परीक्षा यही है कि इसमें कितना विष निकलता है, यह देखा जाय, जब सड़ी हुई कीचड़ की नाली साफ की जाती है तो उसमें से नाक फाड़ने वाली बदबू उड़ती है। दुर्बुद्धि की, संभावनाओं की, स्वार्थपरता और पाखण्ड की कीचड़, बहुत दिनों से हमारे धार्मिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में पड़ी सड़ रही है, उसे साफ किया जा रहा है तो वे तत्व जिनके स्वार्थों को हानि पहुँचती है, स्वभावतः विरोध करेंगे। असुरता को नष्ट करने वाले जब कभी भी अभियान हुए हैं, उनके प्रतिरोध के लिए असुरों ने पूरी शक्ति से प्रत्याक्रमण किये हैं।

वाङमय भाग-६६-३.९

दि-१९/०५/२००७

आज का सद्चिंतन

परम पूज्य गुरुदेव के गुरु प्रेम के आलोक में तनिक हम भी परखें, हमारा शिष्यत्व कैसा है ? ध्यान रहे मनुष्य जिसे प्यार करता है, उसके उत्कर्ष एवं सुख के लिए बड़े से बड़ा त्याग और बलिदान करने को तैयार रहता है। यदि अन्तःकरण में गुरुप्रेम की पवित्र ज्योति जल सकी होगी तो अपने शरीर मन, अतःकरण एवं भौतिक साधनों का अधिकाधिक भाग समाज और संस्कृति की सेवा में लगाने से कदम पीछे नहीं हटेंगे। फिर तो ऐसी हूक उठेगी कि कोई भी सांसारिक प्रलोभन रोक सकने में समर्थ नहीं होगा। अपने आराध्य के लिए, उनके आदर्शों के लिए सब कुछ लुटाकर भी अन्तःकरण ऐसे दिव्य आनंद से भरा-पूरा रहेगा जिसे भक्तियोग के मर्मज्ञ ही जान सकते हैं।

वाङ्मय भाग-१-९.३५

➤परम पूज्य गुरुदेव

दि-२०/०५/२००७

आज का सद्चिंतन

"गुरुदेव! जब हम आपके सामने नहीं होते, कहीं दूर कार्यक्षेत्र में काम कर रहे होते हैं अथवा अपने-अपने घरों में सो रहे होते हैं, तब भी आपको हमारा ध्यान रहता है ?" उन्होंने आँख में आँसू लाकर कहा था-"बेटा! जब तुम सोते हो, मेरा या गायत्री माता का ध्यान करते हो तब मैं तुम्हारी चेतना में प्रवेश कर तुम्हें सुधारता हूँ। तुम्हारी चेतना के कण-कण को बदलता हूँ। शरीर से न रहने पर तो यह काम और अधिक व्यापक क्षेत्र में करूँगा, क्योंकि मुझे एक करोड़ साधक तैयार करने हैं। मुझे अपने एक-एक शिष्य व जाग्रतात्मा का ध्यान है।" यह आश्वासन है इस दैवीसत्ता का। यदि हम साधना द्वारा उनसे जुड़े रहें, उनकी दैवीसत्ता को सूर्यमण्डल के मध्य स्थितमान ध्यान करें तो पायेंगे कि पवित्रता सतत बढ़ रही है व शक्ति की निरंतर वर्षा हो रही है। जब तक अंतिम आदमी उनसे जुड़ा मुक्त नहीं हो जाता, उनकी सत्ता सक्रिय है-युगऋषि के रूप में। कृतसंकल्प है हमें बदलने को तथा सतयुग लाने को। फिर मन में कैसा असमंजस, कैसा उहापोह ?

वाङमय भाग-१-८.४२

दि-२१/०५/२००७

आज का सद्चिंतन

"आज दुनिया में पार्टियाँ तो बहुत हैं, पर किसी के पास कार्यकर्ता नहीं हैं। लेबर सबके पास है, पर समर्पित कार्यकर्ता जो साँचा बनता है व कई को बना देता है अपने जैसा, कहीं भी नहीं है। हमारी यह दिली ख्वाहिश है कि हम अपने पीछे कार्यकर्त्ता छोड़ कर जाएँ। इन सभी को सही अर्थों में डाई-एक साँचा बनना पड़ेगा तथा वही सबसे मुश्किल काम है। रॉ मटेरियल तो ढेरों कहीं भी मिल सकता है, पर डाई कहीं-कहीं मिल पाती है। श्रेष्ठ कार्यकर्त्ता श्रेष्ठतम डाई बनता है। तुम सबसे अपेक्षा है कि अपने गुरु की तरह एक श्रेष्ठ साँचा बनोगे।"

गुरुवर की धरोहर-१-७१

(श्रावणी पर्व-१९८८ कार्यकर्ता संदेश)

आज का सद्चिंतन

"पीला कपड़ा आप उतारना मत। यह हमारी शान है, हमारी इज्जत है। यह हमारी हर तरह की साधु और ब्राह्मण की परम्परा की निशानी है, कुल की निशानी है। पीले कपड़े पहनकर जहाँ भी जायेंगे लोगों को मालुम पड़ेगा कि ये मिशन के आदमी हैं, जो संतों की परम्परा को जिन्दा रखने के लिए कमर बाँधकर खड़े हो गये। जो ब्राह्मण की परम्परा को जिन्दा रखने के लिए कमर कसकर खड़े हो गये हैं। ऋषियों की निष्ठा को ऊँचा उठाने के लिए आप पीला कपड़ा जरूर पहनना।"

परम पूज्य गुरुदेव

(कुंभ पर्व पर संदेश-८-४-

दि-२३/०५/२००७

आज का सद्चिंतन

महर्षि अरविन्द कह गये हैं कि ''अतिमानसिक दिव्यता नीचे आकर मानव-प्रकृति का सामूहिक रूपान्तरण करना चाहती हे।'' यही बात परमपूज्य गुरुदेव ने अपने शब्दों में इस प्रकार कही है-''इन दिनों मनुष्य का भाग्य और भविष्य नये सिरे से लिखा और गढ़ा जा रहा है। ऐसा विलक्षण समय कभी हजारों लाखों वर्षों बाद आता है।'' इन्हें चूक जाने वाले सदा पछताते रहते हैं और जो उसका सदुपयोग कर लेते हैं, वे अपने आपको सदा-सर्वदा के लिए अजर-अमर बना लेते हैं।

परम पूज्य गुरुदेव

(वाङमय-१-९.८)

दि-२४/०५/२००७

आज का सद्चिंतन

''छोटे-छोटे मकान, पुलों का मामूली ओवरसियर बना लेते हैं, पर जब बड़ा बाँध बनाना होता है तो बड़े इंजीनियरों की आवश्यकता पड़ती है। मेजर आपरेशन छोटे अनुभवहीन डॉक्टरों के बस की बात नहीं। उसे सिद्धहस्त सर्जन ही करते हैं। समाज में मामूली गड़बड़ियाँ तो बार-बार होती, उठती रहती है। उनका सुधार कार्य सामान्य स्तर के सुधारक ही कर लेते हैं, जब पाप अपनी सीमा का उल्लंघन कर देता है, मर्यादाएँ टूटने लगती हैं, तो महासुधारक की आवश्यकता स्वयं होती है, तब इस कार्य को महाकाल स्वयं करते हैं।''

(प्रज्ञा अभियान १९८३-

दि-२५/०५/२००७

आज का सद्चिंतन

विचार बीज हैं और कार्य उसका फल। किसान की बीज बोने की प्रक्रिया ही कालान्तर में धान्य राशि के रूप में प्रकट होती है। संसार को फलता-फूलता सुखी और संतुष्ट देखना हो तो उसका एकमात्र उपाय यही है कि जनता को धार्मिक विचार अधिकाधिक मात्रा में दिए जाएँ। यह विचार एक चतुर किसान की तरह ही होना चाहिए। जो एक दिन बीज बोकर ही निश्चिन्त नहीं हो जाता वरन् अपने खेतों में रोज-रोज खाद, पानी, निराई, गुड़ाई, रखवाली आदि की क्रियाएँ करता ही रहता है।

वाड्मय-६६-पृष्ठ-३.१२

दि-२६/०५/२००७

आज का सद्चिंतन

मैले कपड़े को साफ करने के लिए जो उपयोगिता साबुन की है वही मन पर चढ़े हुए मैलों को शुद्ध करने के लिए स्वाध्याय की है। मनुष्य के पास सर्वोत्तम विशेषता उसकी बुद्धि की ही है और इन विचारों का सही एवं सुसंस्कृत बनना स्वाध्याय पर निर्भर है। श्रेष्ठ पुरुषों की कमी, उनके पास समय का अभाव और अपने लिए भी समुचित फुरसत की कमी रहने के कारण प्रायः उपयुक्त सत्संग की व्यवस्था बन सकना कठिन है। ऐसी दशा में जीवन-निर्माण के श्रेष्ठ साहित्य का अध्ययन ही सत्संग की आवश्यकता को पूरी करता है। जिस प्रकार भोजन त्याग कर शरीर को जीवित रख सकना कठिन है, इसी प्रकार स्वाध्याय की उपेक्षा करके, उसका परित्याग करके कोई व्यक्ति न तो अपने आत्मिक स्तर को ऊँचा उठा सकता और न स्थिर रख सकता है। बिना पढ़े लोगों के लिए भी उचित है कि वे श्रेष्ठ-साहित्य का श्रवण किया करें। दुर्भिक्ष काल में जिस प्रकार साधन सम्पन्न लोग भूखों मरते हुओं को अन्न की व्यवस्था जुटाते हुए पुण्य लाभ प्राप्त करते हैं उसी प्रकार स्वाध्यायशील सज्जनों का कर्त्तव्य है कि जीवन-निर्माण साहित्य अपने घर के तथा बाहर के अशिक्षितों को पढ़कर सुनाया करें और उनके आत्मिक जीवन को अपने पसीने से सींच कर हरा-भरा रखने का पुण्य प्राप्त किया करें।

वाङमय-६६-पृष्ठ-५.९

दि-२७/०५/२००७

आज का सद्चिंतन

आगामी दिनों प्रज्ञावतार का कार्य विस्तार होने वाला है। उस काम की जिम्मेदारी केवल ब्राह्मण तथा संत ही पूरा कर सकते हैं। आपको इन दो वर्गों में आकर खड़ा हो जाना चाहिए तथा प्रज्ञावतार के सहयोगी बनकर उनके कार्य को पूरा करना चाहिए। अगर आप अपने खर्च में कटौती करके तथा समय में से कुछ बचत करके इस ब्राह्मण एवं संत परम्परा को जीवित कर सकें, तो आने वाली पीढ़ियाँ आप पर गर्व करेंगी। अगर समस्याओं के समाधान करने के लिए खर्चे में कुछ कमी आती है, तो हम आपको सहयोग करेंगे।

सितम्बर-१९८० शांतिकुंज में उद्बोधन

आज का सद्चिंतन

अगले दिनों धन का संग्रह कोई नहीं कर सकेगा क्योंकि आने वाले दिनों में धन के वितरण पर लोग जोर देंगे। शासन भी अगले दिनों आपको कुछ जमा नहीं करने देगा। अतः आप मालदार बनने का विचार छोड़ दें। आप अगर जमाखोरी का विचार छोड़ देंगे तो इसमें कुछ हर्ज नहीं है। अगर आप पेट भरने, गुजारे भर की बात सोचें तो कुछ हर्ज नहीं है। आप संतान के लिए धन जमा करने, उनके लिए व्यवस्था बनाने की चिन्ता छोड़ दें। उन्हें उनके ढंग से जीने दें। संसार में जो आया है, वह अपना भाग्य लेकर आता है।

सितम्बर-१९८० शांतिकुंज में उद्बोधन

आज का सद्चिंतन

हमारे विचारों को लोगों को पढ़ने दीजिए। जो हमारे विचार पढ़ लेगा, वही हमारा शिष्य है। हमारे विचार बड़े पैने है, तीखे हैं। हमारी सारी शक्ति हमारे विचारों में सीमाबद्ध है। दुनिया को हम पलट देने का जो दावा करते हैं, वह सिद्धियों से नहीं, अपने सशक्त विचारों से करते हैं। आप हमारे विचारों को फैलाने में सहायता कीजिए। अब हमको नई पीढ़ी चाहिए। हमारी विचारधारा उन तक पहुँचाइए।

४ अगस्त-१९८३- संदेश

दि-३०/०५/२००७

आज का सद्चिंतन

आप अपने त्याग को, अपनी भावना को, केवल भावना को ही नहीं, वरन उस काम को हमेशा याद रखें, जिसके लिए आपने साहस भरा कदम उठाया था। जिन्दगी बड़ी शानदार है, इस तथ्य को आपको समझना चाहिए।

आपको यह समझना चाहिए कि भगवान ने आपको यह जिन्दगी बहुत ही शानदार दी है तथा आप जो काम कर रहे हैं, वह बड़ा ही शानदार है। इसमें करोड़ों लोगों का भाग्य छिपा है। आप यह नहीं समझते हैं, किन्तु हम स्पष्ट रूप से देख रहे हैं। एक इतिहास बनने वाला है। आगामी दिनों गाँधी जी के आंदोलन के बाद कोई कार्यक्रम अगर इस दुनिया में है और अगर कोई उसकी चर्चा होगी, तो वह शांतिकुंज, युग निर्माण योजना का कार्यक्रम होगा। इतना बड़ा तथा महत्वपूर्ण कार्यक्रम कभी बना नहीं तथा कोई ऐसा कार्यक्रम बना भी नहीं सकता है। यह सफल होगा और बिलकुल सफल होगा, हमें पूरा विश्वास है, आपको विश्वास हो या न हो। हम जब भगवान के पास बैठते हैं, तो हमें इस बात का पूरा-पूरा विश्वास दिलाया जाता है।

आपमें से किसी के मन में यह बात नहीं आनी चाहिए कि यह योजना सफल नहीं होगी। सफल न होने पर हम मारे-मारे फिरेंगे, यह बात भी आपको अपने मन में कभी सोचनी नहीं चाहिए। इस मिशन में आप ऐसे सफल होंगे, जो इतिहास के पन्नों में कभी नहीं आए।

परम पूज्य गुरुदेव

(युग निर्माण योजना-फरवरी-२००७)

दि-३१/०५/२००७

आज का सद्चिंतन

युग परिवर्तन का अर्थ है- विचार परिवर्तन। जन-साधारण की वर्तमान मान्यताओं एवं आस्थाओं का स्तर बदला जा सके तो हाड़-माँस की दृष्टि से ज्यों का त्यों रहने पर भी मनुष्य आश्चर्यजनक रीति से बदल जाएगा। साधारण राजकुमार का भगवान बुद्ध, एक जघन्य डाकू का ऋषि बाल्मीकि, दुर्दान्त हत्यारे का ऋषि अंगुलिमाल, वेश्या का साध्वी आम्बपाली, अशिक्षित जुलाहे का संत कबीर, अछूत का तत्त्वज्ञानी रैदास, व्यभिचारी का विल्वमंगल बन जाना विचारणाओं के परिवर्तन का ही चमत्कार है। मनुष्य का हाड़-माँस का आवरण भले ही न बदले पर विचारणाओं का परिवर्तन कुछ ही समय में किसी को भी देवता या असुर बना सकता है।

परम पूज्य गुरुदेव

वाङ्मय-६६-२.१

दि-०१/०६/२००७

आज का सद्चिंतन

अपनी यह आस्था चट्टान की तरह अडिग होनी चाहिए कि युग बदल रहा है, पुराने सड़े-गले मूल्यांकन नष्ट होने जा रहे हैं। दुनिया आज जिस लोभ-मोह और स्वार्थ-अनाचार के सर्वनाशी पथ पर दौड़ रही है उसे वापस लौटना पड़ेगा। अन्धपरम्पराओं और मूढ़-मान्यताओं का अंत होकर रहेगा। अगले दिनों न्याय, सत्य और विवेक की ही विजय वैजन्ती फहरायेगी। हमें मूढ़ता और दुष्टतावादियों से तनिक भी प्रभावित नहीं होना चाहिए और विश्वास रखना चाहिए कि बदलना उन्हें भी पड़ेगा। महाकाल के हाथ उन्हें करारी चपत लगाने के लिए उठ ही पड़े हैं। हमें अपने को एकाकी, दुर्बल या साधनहीन नहीं मानना चाहिए, वरन् यह समझकर चलना चाहिए कि पीछे अजेय शक्तियाँ विद्यमान हैं जो इस महान अभियान के अपने प्रयासों को पूर्ण सफलता प्रदान करके रहेंगी।

➤परम पूज्य गुरुदेव

वाडमय भाग-६६-१.२६

दि-०२/०६/२००७

आज का सद्चिंतन

मात्र अक्षर दोहरा लेने से तो स्कूली बच्चे प्रथम कक्षा में ही बने रहते हैं। उन्हें प्रशिक्षित बनने के लिए वर्णमाला, गिनती जैसे प्रथम चरणों से आगे बढ़ना पड़ता हैं। इसी प्रकार गायत्री मंत्र के साथ जो विभूतियाँ अविच्छिन्न रूप से आबद्ध हैं, मात्र थोड़े से अक्षरों को याद कर लेने या दोहरा देने से उसमें वर्णित विशेषताओं को उपलब्ध करना नहीं माना जा सकता। उनमें सन्निहित तत्वज्ञान पर भी गहरी दृष्टि डालनी होगी। इतना ही नहीं, उसे हृदयंगम भी करना होगा और जीवनचर्या में नवनीत को इस प्रकार समाविष्ट करना होगा कि मलीनता का निराकरण तथा शालीनता का अनुभव संभव बन सके।

आद्य शक्ति की समर्थ साधना पृष्ठ-२

➤परम पूज्य गुरुदेव

दि-०३/०६/२००७

आज का सद्चिंतन

हनुमान ने कितनी उपासना की थी, नल-नील, जामवन्त, अर्जुन ने कितनी पूजा एवं तीर्थयात्रा की थी? यह हम नहीं कह सकते, परन्तु उन्होंने भगवान का काम किया था। ये लोग घाटे में नहीं रहे। इस समय महाकाल कुछ गलाई-ढलाई करने जा रहे हैं। अब नये व्यक्ति, नयी परम्पराएँ, नये चिंतन उभरकर आयेंगे। अगले दिनों यह सोचकर अचम्भा करेंगे कितने कम समय में इतना परिवर्तन कैसे हो गया। अगर हम समय को पहचान पाये तो आप सच्चे अर्थों में भाग्यवान बन सकते हैं।

गुरुपूर्णिमा संदेश-१९८० ➤परम पूज्य गुरुदेव

आज का सद्चिंतन

लेखों और भाषणों का युग अब बीत गया। गाल बजाकर, लम्बी-चौड़ी डींग हाँककर या बड़े-बड़े कागज काले करके संसार के सुधार की आशा करना व्यर्थ है। इन साधनों से थोड़ी मदद मिल सकती है पर उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता। युग-निर्माण जैसे महान् कार्य के लिए तो यह साधन सर्वथा अपर्याप्त और अपूर्ण हैं। इसका प्रधान साधन वही हो सकता है कि हम अपना मानसिक स्तर ऊँचा उठाएँ, चरित्रात्मक दृष्टि से अपेक्षाकृत उत्कृष्ठ बनें। अपने आचरण से ही दूसरों को प्रभावशाली शिक्षा दी जा सकती है। गणित, भूगोल, इतिहास आदि की शिक्षा में कहने-सुनने की प्रक्रिया से काम चल सकता है पर व्यक्ति निर्माण के लिए तो निखरे हुए व्यक्तित्वों की ही आवश्यकता पड़ेगी। उस आवश्यकता की पूर्ति के लिए उत्कृष्टता के संदर्भ में संसार की श्रेष्ठता अपने आप बढ़ने लगेगी। हम बदलेंगे तो युग भी जरूर बदलेगा और हमारा युग-निर्माण संकल्प भी अवश्य पूर्ण होगा।

वांडमय-६६ पृष्ठ नं-५.२०

दि-०५/०६/२००७

आज का सद्चिंतन

साहस, परिश्रम, सूझ-बूझ, मधुर भाषण, व्यवस्था आदि वे गुण हैं, जो उपार्जन करते हैं। बेईमानी तो अपयश, अविश्वास, घृणा, असहयोग, राजदण्ड, आत्मग्लानि आदि दुष्परिणाम ही उत्पन्न करती है। वस्तुतः लोग सद्गुणों के आधार पर कमाते हैं। बेईमानी का तात्पर्य है दूसरों को धोखा देना, यह तभी सम्भव है जब उस पर ईमानदारी का आवरण चढ़ा हो। किसी को ठगा तभी जा सकता है, जब उसे अपनी ईमानदारी एवं विश्वसनीयता के बारे में आश्वस्त कर दिया जाये। असलियत जैसे ही प्रकट हुई, बेईमानी करने वाला न केवल उस समय के लिए वरन् सदा के लिए उन लोगों से अपनी विश्वास खो बैठता है और लाभ कमाने के स्थान पर उल्टा घाटा उठाता है।

वांङमय-६६ पृष्ठ नं-६.३५ ➤परम पूज्य गुरुदेव

दि-०६/०६/२००७

आज का सद्चिंतन

तुम सब हमारी भुजा बन जाओ, हमारे अंग बन जाओ, यह हमारे मन की बात है। अब तुम पर निर्भर है कि तुम कितना हमारे बनते हो ? समर्पण का अर्थ है दो का अस्तित्व मिट कर एक हो जाना। तुम भी अपना अस्तित्व मिटाकर हमारे साथ मिला दो व अपनी क्षुद्र महत्त्वाकांक्षाओं को विलीन कर दो। जिसका अहं जिंदा है, वह वेश्या है। जिसका अहं मिट गया वह पवित्र है। देखना है कि हमारी भुजा, आँख, मस्तिष्क बनने के लिए तुम कितना अपने अहं को गला पाते हो ?

परम पूज्य गुरुदेव

श्रावणी पर्व-१९८८ कार्यकर्ता संदेश

दि-०७/०६/२००७

आज का सद्चिंतन

युग निर्माण परिवार के प्रत्येक परिजन को निरंतर आत्म-निरीक्षण करना चाहिए और देखना चाहिए कि भारत के औसत नागरिक के स्तर से वह अपने ऊपर अधिक खर्च तो नहीं करता ? यदि करता है तो आत्मा की, न्याय की, कर्त्तव्य की पुकार सुननी चाहिए और उस अतिरिक्त खर्च को तुरंत घटाना चाहिए। हमें अधिक कमाने की, अधिक बढ़ाने की, अधिक जोड़ने की ललक छोड़नी चाहिए और यह देखना चाहिए कि जो उपलब्ध है उसका श्रेष्ठतम सदुपयोग क्या हो सकता है ? जो पास है उसी का ठीक उपयोग कर सकना जब संभव नहीं हो पा रहा है, तो अधिक उपार्जन से भी क्या बनने वाला है ? उससे तो साँप के दूध पीने पर बढ़ने वाले विष की तरह अधिक तृष्णा-वासना प्रबल होगी और पतन का क्रम ही तीव्र होगा। हमें उपयोग करने की बात को उपार्जन की ललक से असंख्य गुना महत्त्व देना चाहिए। ऐसा साहस करना कुछ खोना, कुछ गँवाना नहीं है वरन् चक्र-वृद्धि ब्याज समेत अनेक गुना वापस करने वाले किसी प्रामाणिक बैंक में जमा करने की दूरदर्शिता दिखाना भर है।

परम पूज्य गुरुदेव

वाङ्मय-६६ पृष्ठ-१.३२

दि-०८/०६/२००७

आज का सद्चिंतन

२० वीं सदी का अंत और २१ वीं सदी का आरंभ युग संधि का ऐसा अवसर है, जिसे अभूतपूर्व कहा जा सकता है, शायद भविष्य में इसकी पुनरावृत्ति कभी न हो। अपने मतलब से मतलब रखने का आदिमकालीन सोच अब चल न सकेगा। इन दिनों महाविनाश एवं महासृजन आमने-सामने खड़े हैं। इनमें से एक का चयन सामूहिक मानवी चेतना को ही करना पड़ेगा। देखना इतना भर है कि इस परिवर्तन काल में युग शिल्पी की भूमिका संपादन के लिए श्रेय कौन पाता

(अखण्ड ज्योति-१९८८, सितम्बर) ➢परम पूज्य गुरुदेव

दि-०९/०६/२००७

आज का सद्चिंतन

सार्वजनिक संस्थाओं में, स्वार्थपरता और नेतागिरी लूटने के लिए जिन दुरात्माओं ने अड्डा जमा लिया है उन्हें दूध में से मक्खी की तरह निकाल कर फेंक दिया जाय। धर्म और अध्यात्म का लबादा ओढ़कर जो रँगे सियार अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं, उनकी असलियत चौराहे पर नंगी खड़ी कर दी जाय ताकि लोग उन्हें भरपूर धिक्कारें। भोले लोगों को उनके हाथों लुटने से बचाना एक ऊँची और श्रेष्ठ सेवा होती है।

(वाङ्मय-६६-पृष्ठ-४.७३)   ➤परम पूज्य गुरुदेव

दि-१०/०६/२००७

आज का सद्चिंतन

बुद्ध ने स्वयं घर त्यागा तो उनके अनुयायी ढाई लाख युवक, युवतियाँ उसी मार्ग पर चलने के लिए तैयार हो गये। गाँधीजी को जो दूसरों से कराना था, पहले उन्होंने उसे स्वयं किया। यदि वे केवल उपदेश करते और अपना आचरण विपरीत प्रकार का रखते तो उनके प्रतिपादन को बुद्धिसंगत भर बताया जाता, कोई अनुगमन करने को तैयार न होता। जहाँ तक व्यक्ति के परिवर्तन का प्रश्न है वह परिवर्तित व्यक्ति का आदर्श सामने आने पर ही सम्भव होता है। बुद्ध, गाँधी, हरिश्चन्द्र आदि ने अपने को एक साँचा बनाया तब कहीं दूसरे खिलौने, दूसरे व्यक्तित्व उसमें ढलने शुरू हुए।

वाडमय-६६.पृष्ठ नं-१.२७ ➢परम पूज्य गुरुदेव

दि-११/०६/२००७

आज का सद्चिंतन

संत और ऋषि आप पर दया करके, करुणा करके आपको सहायता कर सकते हैं, लेकिन आपको बच्चे समझते रहेंगे। जब तक आप माँगते रहेंगे, आपकी हैसियत बच्चों जैसी बनी रहेगी। भगवान से, गायत्री माता से ऊँची चीजें, कीमती चीजें पाने के लिए आपको जो काम करना है वह है कि आप एक चीज को छोड़ जाइए। कार्लमार्क्स कहते थे कि मजदूरों! तुम हमारी कंपनी में साम्यवाद में भर्ती हो जाओ। इसमें तुम्हारा बस एक ही नुकसान होगा कि तुम गरीबी खो बैठोगे। इसके अलावा फायदे ही फायदे हैं और मैं कहता हूँ कि एक चीज छोड़नी पड़ेगी आपको बाकी सब नफा ही नफा है। क्या छोड़नी पड़ेगी ? कृपणता। कृपणता आप पर हावी हो गई है। न पैसे की कमी है, न रोटी की कमी है। कृपणता को छोड़कर थोड़ा दिल बड़ा कीजिए, यह आज के समय की आवश्यकता है।

गुरुवर की धरोहर-१/१४४ ➢परम पूज्य गुरुदेव

दि-१२/०६/२००७

आज का सद्चिंतन

"महाकाल का युग निर्माण प्रत्यावर्तन अब द्रुतवेग से गतिशील होने जा रहा है। उसके इस अभियान में प्रबुद्ध आत्माओं को महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करनी होगी। जिनकी जड़ता और अनुदारता न छूट सके उन्हें समय से टकराकर चूर-चूर होने की तैयारी करनी होगी। बीच की कोई स्थिति नहीं। जैसा अब तक चलता रहा है। आगे भी वैसा ही ढर्रा चलता रह सकता है ऐसा किसी को भी नहीं सोचना चाहिए। इधर या उधर अपना एक स्थान नियत कर लेना चाहिए। 'अखण्ड-ज्योति' परिवार में बहुत प्रयत्नपूर्वक संस्कारवान प्रबुद्ध आत्माएँ मूल्यवान मणियों की तरह एकत्रित कर एक माला में सँजोई हैं। उनके जीवनोद्देश्य पूरा करने की भूमिका में प्रवेश करने का ठीक यही समय है। इस अवसर को न चूका जाना चाहिए, क्योंकि यह चूक अन्ततः बहुत महँगी पड़ेगी।"

वाङमय-६६-७.४५ ➤परम पूज्य गुरुदेव

दि-१३/०६/२००७

आज का सद्चिंतन

समय के साथ बदलना ही बुद्धिमानी है। अपने मस्तिष्क की बनावट उसी ढाँचे में ढालनी चाहिए जो समय के अनुरूप है। अपने क्रियाकलाप को उस ढर्रे पर छोड़ना चाहिए, जिसकी पटरी अगले समय के साथ ठीक तरह बैठ सके। यदि ऐसा परिवर्तन अपने भीतर किया जा सका तो समझना चाहिए कि बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता की एक बहुत बड़ी परीक्षा पास कर ली। अगला समय जैसा आ रहा है उसके प्रतिकूल स्तर की अपनी आकांक्षाएँ, गतिविधियाँ एवं योजनाएँ चलती रहीं तो आकस्मिक परिवर्तन का इतना बड़ा झटका लगेगा कि सम्भालना मुश्किल हो जाएगा। अप्रत्याशित परिस्थितियाँ जो बिल्कुल ही वर्तमान ढाँचे से विपरीत हों-जब सामने आ खड़ी होती हैं तब पश्चाताप और दुःख बहुत होता है। जब समयानुसार बदले हुए लोग चिर प्रतीक्षित सुअवसर आने का मोद मना रहे होते हैं तब अढ़ियल लोग हक्का-बक्का होकर शोक-संताप में डूबे खड़े होते हैं। अच्छा हो इस विपन्नता से बचा जा सके।

वाङमय-६६-७.४५

➤परम पूज्य गुरुदेव

दि-१४/०६/२००७

आज का सद्चिंतन

युग निर्माण योजना का आरंभ परोपदेश से नहीं, वरन् अपने को बदलने-सुधारने से शुरु होगा। यदि हमारा मन बात मानने के लिए तैयार नहीं, तो दूसरा कौन सुनेगा? जीभ की नोंक से निकले हुए लच्छेदार प्रवचन दूसरों के कानों को प्रिय लग सकते हैं, सब उनकी प्रशंसा भी कर सकते है, पर प्रभाव तो आत्मा का आत्मा पर पड़ता है। आत्म-सुधार, आत्म-निर्माण और आत्म-विकास हमारा ध्येय हो।

अखण्ड ज्योति-१९६२, अप्रैल

दि-१५/०६/२००७

आज का सद्चिंतन

विचार आपसे कहते हैं-हमें मन के जेलखाने में ही घोटकर मत मारिए। वरन् शरीर के कार्यों द्वारा जगत् में आने दीजिए। मनुष्य उत्तम लेखक, योग्य वक्ता, उच्च कलाविद् एवं वह जो भी चाहे सरलतापूर्वक बन सकता है, लेकिन एक शर्त है कि वह अपने शुभ संकल्पों को क्रियाशील कर दे। उन्हें दैनिक जीवन में कर दिखाए। जो कुछ सोचता, विचारता है, उसे परिश्रम द्वारा, प्रयत्न द्वारा, अपनी सामर्थ्य द्वारा साक्ष्य का रूप प्रदान करे। शुद्ध विचारों की उपयोगिता तब प्रकट होगी, जब अंतरंग के चित्रों को शरीर के कार्यों द्वारा क्रियान्वित करने का प्रयत्न किया जाएगा।

वाङ्मय-१, पृष्ठ-१०.३०

आज का सद्चिंतन

गायत्री परिवार का हर व्यक्ति बड़ा है। छोटेपन का उसने मुखौटा भर पहन रखा है। उतारने भर की देर है कि उसका असली चेहरा दृष्टिगोचर होगा। हमें हमारे मार्गदर्शक ने एक पल में क्षुद्रता का लबादा झटककर महानता का परिधान पहना दिया था। इस कायाकल्प में मात्र इतना ही हुआ था कि लोभ, मोह की कीचड़ से उबरना पड़ा। जिस-तिस के परामर्शों-आग्रहों की उपेक्षा करनी पड़ी और आत्मा-परमात्मा के संयुक्त निर्णय को शिरोधार्य करने का साहस जुटाना पड़ा। इसके बाद एकाकी नहीं रहना पड़ा।

दि-१७/०६/२००७

आज का सद्चिंतन

हमारा कार्य अब सारथी का होगा।

दुष्प्रवृत्तियों से महाभारत का मोर्चा अब पूरी तरह हमारे कर्त्तव्यनिष्ठ बालक सँभालगें। विश्व के पाँच अरब लोगों के चिंतन, जीवन व्यवहार, दृष्टिकोण में परिवर्तन और मानवीय संवेदना की रक्षा के लिए और अधिक तत्पर होकर कार्य करेंगे। यह न समझें हम आपसे दूर हो जाएँगे। सूक्ष्म एवं कारण सत्ता में विलीन होकर आत्मीय कुटुम्बियों को अधिक प्यार बाँटेंगे।

वाङ्मय-१ पृष्ठ-१०.३०

आज का सद्चिंतन

गायत्री परिवार के प्रत्येक सदस्य को आपसी खींचतान में अनावश्यक समय नष्ट नहीं करना चाहिए। जन्म-जन्मांतर से संग्रहीत उनकी उच्च आत्मिक स्थिति आज अग्नि परीक्षा की कसौटी पर कसी जा रही है। महाकाल अपने संकेतों पर चलने के लिए बार-बार हमें पुकार रहा है। रीछ-वानरों की तरह हमें उनके पथ पर चलना ही चाहिए। आत्मा की पुकार अनसुनी करके वे लोभ-मोह के पुराने ढर्रे पर चलते रहे, तो आत्म-धिक्कार की इतनी विकट मार पड़ेगी कि झंझट से बच निकलने और लोभ-मोह को न छोड़ने की चतुरता बहुत मँहगी पड़ेगी। अंतर्द्वन्द्व उन्हें किसी काम का न छोड़ेगा। मौज-मजा का आनन्द आत्म-प्रताड़ना न उठाने देगी और साहस की कमी से ईश्वरीय निर्देश पालन करते हुए जीवन को धन्य बनाने का अवसर भी हाथ से निकल जाएगा।

आज का सद्चिंतन

दि-२०/०६/२००७

आज का सद्चिंतन

आज का सद्चिंतन

जो सत्यवान नहीं है, जिन्होंने अपना सारा जीवन झूठवान बना करके रखा है, जिसके व्यवहार में झूठ, विचारों में झूठ, नियम में झूठ, रोम-रोम में झूठ भरा पड़ा है। उसका यदि ख्याल हो कि गायत्री मंत्र बोलने के बाद में किसी ऐसी शक्ति को गुलाम बना सकता है जो उसके मनमर्जी के मुताबिक जो भी मनोकामना होगी, उसको पूरा कर दिया करेगी, तो मेरे हिसाब से यह ख्याल गलत है। दुनिया में ऐसी कोई देवी नहीं है जो किसी पूजा-पत्री करने वाले को निहाल इसलिए कर दिया करे कि उसने इतना जप किया, धूपबत्ती जलाई या इतना हवन कर दिया है। हवन, धूपबत्ती और जप की संख्या के नाम पर प्रसन्न होकर आदमी की मनोकामना को पूरी कर दिया करे, ऐसी देवी दुनिया में नहीं है।

आज का सद्चिंतन

बुरे आदमी बुराई के सक्रिय और सजीव प्रचारक होते हैं। वे अपने आचरणों द्वारा बुराइयों की शिक्षा लोगों को देते हैं। उनकी कथनी और करनी एक होती है। जहाँ भी ऐसा सामंजस्य होगा, उसका प्रभाव अवश्य पड़ेगा। हममें से कुछ लोग धर्म प्रचार का कार्य करते हैं, पर वह सब कहने भर की बातें होती हैं। इन प्रचारकों की कथनी और करनी में अंतर रहता है। यह अन्तर जहाँ भी रहेगा, वहाँ प्रभाव भी क्षणिक रहेगा। आज आवश्यकता है सच्चे धर्म प्रचारकों की, जिनकी कथनी और करनी में अंतर न रहे। वे अपने आदर्शों के प्रति सच्चे रहें।

दि-२२/०६/२००७

आज का सद्चिंतन

नये युग के मनुष्य को बनाने के लिए हम मनस्वी पैदा करेंगे। मनस्वी पैदा करने का मतलब यह है कि वह व्यक्ति अपने मन से कहेगा कि जिस देश में हम पैदा हुए हैं उसके औसत नागरिक के स्तर के जीवनयापन का मापदण्ड बनाना चाहिए। भारत का औसत नागरिक क्या खाता है, वह खाइये। वह जिस स्तर का जीवनयान करता है, आप भी उसी स्तर पर करिये। औसत नागरिक स्तर की आवश्यकतायें क्या हैं? आप तय कीजिए और अपना मापदण्ड बनाइये। मनस्वी व्यक्ति ऐसे ही होते हैं और ऐसे ही होने चाहिए। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर को मैं मनस्वियों में नाम लेता हूँ। वे पाँच सौ रुपया महीने कमाते थे, लेकिन ५० रुपये में अपना और अपने कुटुम्ब का खर्च चलाते थे। शेष बचे हुए ४५० रुपये गरीब विद्यार्थियों, मुसीबतग्रस्तों के लिए सुरक्षित रखते और उससे उनकी मदद करते थे। मनस्वी उसे नहीं कहते जो प्राणायाम करता है और ग्यारह माला जप करता है। मनस्वी वह होता है जो बहादुरों और ईमानदार आदमियों की तरीके से अपने जीवनयापन के सम्बन्ध में, अपने जीवन पद्धति के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण फैसले कर लेता है। अगर आप यह फैसला कर लें तो आपके जीवन में कायाकल्प हो जायेगा।

आज का सद्चिंतन

मित्रों ! ब्याज की दर बहुत अधिक होती है। आपको मालूम नहीं है। बच्चा जिस दिन पैदा हो, उस दिन बच्चे के नाम से आप एक हजार रुपये बैंक में जमा करा दें, उनचास वर्ष में एक लाख अट्ठाईस हजार रुपये मिल जाएँगे। यह गलत नहीं है, बिल्कुल सही है। बैंक वालों ने मुझे हिसाब करके समझाया कि सात वर्ष में यह पैसा दूना हो जाता है और फिर सात वर्ष में दूना....। इस तरह सात का चक्कर बन जाता है और ब्याज सहित एक लाख अट्ठाईस हजार रुपये हो जाते हैं। यह मैं ब्याज की बात कह रहा हूँ। मूल से ज्यादा ब्याज होती है। बेटे! भगवान के यहाँ ब्याज बहुत ज्यादा ब्याज मिलती है, शर्त यही है कि आपने जमा किया हो, तब। द्रौपदी ने भगवान के बैंक में जमा किया था और जमा करने के बाद में भगवान आए उस कपड़े का गट्ठर गरुड़ जी की पीठ पर लादकर। भगवानजी जब भागे तो गरुड़ जी धीरे चलने लगे तो उन्होंने कहा कि आप बुड्ढे हो गए हैं और आप तेजी से नहीं चल सकते हैं। हमारे भक्त को जरूरत है, इसलिए भक्त की सहायता करने हम स्वयं जाएँगे।

आज का सद्चिंतन

लोकसेवियों को अपने स्वरूप की गौरव गरिमा का ध्यान रखने के लिए उज्ज्वल चरित्र और धवल व्यक्तित्व की आवश्यकता अनुभव करनी चाहिए। इस सम्बन्ध में यह मान्यता बनायी और अपनायी जाय कि हम जो कुछ भी कहना चाहें, जो कुछ भी शिक्षा दें वह वाणी से कम और व्यक्तित्व से अधिक उद्भूत हो। लोकसेवी को भी अपना आचरण इस स्तर का रखना चाहिए कि उसे देखकर ही लोगों में लोकसेवी के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो। कहने का अर्थ यह है कि लोकसेवी अपनी गरिमा को समझें और उसे अक्षुण्ण बनायें

दि-२४/०६/२००७

आज का सद्चिंतन

अपने निर्वाह के लिए लोकसेवी को कम से कम आवश्यकतायें रखने का दृष्टिकोण विकसित करना चाहिए। समझा जाता है कि हम जितनी शान शौकत और मौज मजे के विलासिता पूर्ण साधनों का उपयोग करेंगे उतना ही बड़प्पन मिलेगा। वस्तुतः यह सोचना गलत है। इसके लिए अपने बड़प्पन की परिभाषा बदलनी चाहिए। बड़प्पन धन-सम्पति या शान-शौकत से नहीं, उत्कृष्ट और आदर्श व्यक्तित्व तथा महान बनाने वाले सद्गुणों से मिलता है। प्राचीन काल में लोकसेवी परम्परा के अन्तर्गत जितने भी सन्त, ऋषि, विचारक, मनीषी और महापुरुष हुए उन्होंने यही दृष्टिकोण अपनाया। ऋषियों के रहन-सहन की सादगी इतनी सुविख्यात है कि उस सम्बन्ध में कुछ भी कहना पुनरुक्ति ही कहलायेगा। चाणक्य-जिन्होंने भारत को एक राष्ट्र के रूप में संगठित करने के लिए चन्द्रगुप्त का मार्गदर्शन किया, हमेशा एक कुटिया में रहे। यदि वे चाहते तो अपने लिए प्रचुर साधन-सुविधायें जुटा सकते थे और सुविधा सम्पन्न जीवन व्यतीत कर सकते थे। लेकिन लोकसेवियों की आदर्श परम्परा की रक्षा के लिए उन्होंने न्यूनतम आवश्यकता की मर्यादा का ही पालन किया।

आज का सद्‍चिंतन

मित्रो! महत्वाकांक्षाएं अगर आपके दिमाग पर हावी रहीं तो हमको कहना पड़ेगा कि आपत्तिकालीन युग में आप कुछ नहीं कर पाएंगे। अपनी महत्वाकांक्षाओं को कम करिए। तो क्या महत्वाकांक्षाएं खत्म कर देने से आदमी का वर्चस खत्म नहीं हो जाएगा? नहीं बेटे, उसके प्वाइंट बढ़ा दें, दिशाएं बदल दें। जीवन को बडप्पन की अपेक्षा महानता की दिशा में मोड़ दें, कि हम महान बनेंगे। महान किसे कहते हैं? जो सिद्धांतों के लिए काम करते हैं, आदर्शों के लिए काम करते हैं। इस दिशा में महत्वाकांक्षाओं को जितना बढ़ाना चाहें बढ़ा दें। गुरुजी हम तो ऋषि बनेंगे। बेटा, हम तुझे ऋषि बनाएंगे, ऋषि की महत्वाकांक्षा बढ़ा। हम तुझे ब्रह्मर्षि बना देंगे, राजर्षि बना देंगे। पर शर्त एक ही है कि हमारे रास्ते पर चल और उधर की महत्वाकांक्षाएं कम करके इधर की महत्वाकांक्षाओं में लगा दे, फिर जो भी तू कहेगा, हम बना देंगे। हम आपको सेठ नहीं बना सकते, मिनिस्टर नहीं बना सकते, राजा भी नहीं बना सकते, पर आपकी आध्यात्मिक महत्वाकांक्षाओं को हम पूरा सकते है, क्योंकि वे स्वाभाविक और सरल हैं। उसमें दैवी शक्तियाँ सहायता करती हैं, पर आपकी भौतिक महत्वाकांक्षाओं में दैवी शक्तियाँ सहायता नहीं करतीं। उसमें आपका कर्म और पुरुषार्थ सहायता करता है।

आज का सद्चिंतन

श्रीकृष्ण ने अर्जुन का रथ चलाया था, आपका रथ हम चलाएंगे। काहे का रथ? आपके कारोबार का रथ, आपके व्यापार का रथ, आपके धंधे का रथ, आपके शरीर का रथ, आपकी गृहस्थी का रथ-यह सब हम चलाएंगे, इसका हम वायदा करते हैं, लेकिन साथ-साथ आपसे यह निवेदन भी करते है कि आप हमारे रास्ते पर आइए, साथ-साथ चलिए। हमारे कंधे से कंधा मिलाइए। इसमें आपको कोई नुकसान नहीं होगा। आप यह यकीन रखिए हमने उन विरोधियों को मार कर रखा है और विजय की माला आपके लिए गूँथ कर रखी है। पाँचों पांडवों के लिए विजय की मालाएं बनी हुई रखी थीं, मात्र उनके गले में पहनानी भर थीं। आपके लिए भी मालाएं रखीं हैं, मात्र आपको पहनना है, आपको श्रेय भर लेना है। यह जो नवयुग का क्रम चल रहा है, उसमें जब आप भागीदार होंगे तो श्रेय आपको ही मिलेगा। तो गुरुजी हमारे बीवी-बच्चों का क्या होगा? बेटे, उनकी जिम्मेदारी हमारी है। यदि वे बीमार रहते है, तो हम उनकी बीमारियाँ दूर कर देंगे। व्यापार में नुकसान होता है तो तेरे उस नुकसान को पूरा करना हमारी जिम्मेदारी है। तेरे व्यापार में जो घाटा पड़ जाए तो तू हमसे वसूल कर ले जाना। लेकिन जब बच्चा बड़ा हो जाता है तब कुछ बड़ी चीज दी जाती है, जो छोटे बच्चे को नहीं दीं जा सकती। अब आप जवान हो गए हैं। अब कोई बच्चा नहीं दिखाई पड़ता, आप सब जवान हो गए हैं। अब हम सबको काम-धंधे से लगाएंगे और जो हमारे पास बाकी बचा है वह भी आप सबको बाँट देंगे। हम आपको यकीन दिलाते है, कि हमारी जो भी कमाई है वह सब आपको देकर जाएंगे चाहे वह पुण्य की कमाई हो, चाहे वह सांसारिक कमाई हो, चाहे आध्यात्मिक हो। उस कमाई में तुम्हारा हिस्सा है।

दि-२७/०६/२००७

आज का सद्चिंतन

दि-२८/०६/२००७

आज का सद्‌चिंतन

गायत्री का अंतरंग यह कहता है कि मनुष्य को लोक मंगल के लिए, उत्कृष्ट जीवन जीने के लिए और प्रभु समर्पित जीवन जीने के लिए कटिबद्ध होना चाहिए। यह प्रेरणा है गायत्री मंत्र की। मनुष्य को अपने लिए ही नहीं जीना चाहिए। वह भगवान का सहायक है। भगवान ने उससे अपेक्षा रखी है कि वह उसकी दुनिया को सुंदर बनाने की कोशिश करे। यह संकल्प धारण करे कि उसके पास जितना समय, बुद्धि, श्रम अपने बच्चों को पालने के अतिरिक्त बचेगा उसे भगवान के लिए, लोकमंगल के लिए खर्च करेगा। भगवान बुद्ध, शंकराचार्य, गाँधी, लोकमान्य तिलक, जब लोक मंगल के लिए जुट गये तो उनके घरवालों ने उन्हें बेवकूफ कहा। लोकमंगल के लिए जब कोई आदमी बड़ा काम करता है, तब उसकी पहचान यह है कि इस दुनिया के लोग उसको अमूमन बेवकूफ बताया करते है। इसलिए यह बात साफ है कि ये पागल मनुष्य जिस बात की प्रशंसा कर रहे हों तो समझना चाहिए कि दाल में कहीं काला है। यह दुनिया इतनी बेवकूफ और बेहूदी है कि जिनकी प्रशंसा करती है वे उस लायक नहीं होते और जिन्होंने प्रशंसा की है उनका मुँह और तमीज प्रशंसा करने लायक है ही नहीं। इसलिए प्रशंसा के लायक वे व्यक्ति है जिनकी कभी प्रशंसा नहीं होती।

दि-२९/०६/२००७

आज का सद्चिंतन

मल-मूत्र में सना हुआ बच्चा माता की गोद में चढ़ने, दूध पीने के लिए चाहे कितना ही क्यों न मचल रहा हो, पर वह असीम प्यार करने पर भी तब तक उसे दूर ही रखती है, जब तक धो-पोंछकर उसे भली प्रकार साफ-सुथरा नहीं कर लेती। भगवान की भी रीति-नीति यही है। उनके भक्त को उत्कृष्ट चिन्तन और आदर्श चरित्र का परिचय देना चाहिए। इसमें अनाचार से हाथ खींचना पड़ता है। लोगों को यह कठिन प्रतीत होता है। सरल यह लगता है कि अनाचार से मिलने वाले लाभों को दोनों हाथों से समेटते रहें और पूजा-पाठ की चित्र-विचित्र चिह्न पूजा करके भगवान को भी बहकाते-फुसलाते रहें। दोनों हाथ लड्डु भरे रहने की यह विडम्बना मात्र मन को बहकाने भर के काम आती है। भागीरथ, हरिश्चन्द्र, वाल्मीकि, बिल्व मंगल, अंगुलिमाल, अम्बपाली की तरह अपनी जीवनधारा बदलनी पड़ती है। भागीरथ, हरिश्चन्द्र और दधीचि की तरह सत्प्रयोजनों के लिए बढ़-चढ़कर त्याग बलिदान की आवश्यकता अनुभव करनी पड़ती है। वासना, तृष्णा और अहंता से हमारे तीनों शरीर मलीन होते हैं। वासना स्थूल शरीर को, तृष्णा सूक्ष्म शरीर को और अहंता कारण शरीर को हेय बनाती है। इन मलीनताओं का परिशोधन करना ही साधना है।

वाङ्मय नं-२२ पृष्ठ-२.१४३

आज का सद्चिंतन

हमारे साहित्य को घर-घर पढ़ाओ, तो मेरा दावा है कि युग अवश्य बदलेगा। इससे कम में काम न बनेगा। यदि हमारे विचारों को साहित्य के माध्यम से विश्व भर में फैला दिया गया होता, तो मिशन सौ साल आगे होता। यदि समग्र रूपांतरण चाहते हो तो हमारे साहित्य को पढ़ो, समझो और सीखो। **युग साहित्य के स्वाध्याय में ही** मानव में देवत्व का उदय, धरती पर स्वर्ग का अवतरण और युग निर्माण सत्संकल्प पूरा करने की शक्ति है।

जितना पुण्य धन-धान्य सहित इस समस्त पृथ्वी को दान देने से मिलता है, इससे तीन गुना अधिक पुण्य स्वाध्याय करने वाले को मिलता है। स्वाध्याय करने वाले को जब इतना पुण्य मिलता है, तो स्वाध्याय कराने वाले को कितना पुण्य मिलेगा, वह विचारणीय है। बीमा कराने वाले को तो लाभ मिलता ही है, लेकिन एजेंट को भी निरंतर लाभ मिलता रहता है।

युग निर्माण योजना नवम्बर-२०००-पेज-३०

आज का सद्चिंतन

मित्रो! जनमानस का परिष्कार भी एक महाभारत है, धर्म युद्ध है। उसे कुरुक्षेत्र में कृष्ण के मार्गदर्शन और अर्जुन के पुरुषार्थ से लड़ा जायगा। भगवान कृष्ण ने पाञ्चजन्य शंख बजाकर युद्ध की घोषणा की थी और उसके लिए शौर्य, साहस का संचार किया था। अर्जुन ने गाण्डीव उठाकर शर सन्धाने थे। पुरुषार्थ और प्रयत्न, त्याग और बलिदान का इस पक्ष में उदय हुआ था। गीता का ज्ञानयोग और अर्जुन का कर्मयोग एक स्थान पर लाकर खड़ा किया गया था, दोनों का समन्वय किया गया था। द्वापर के अन्त में जो हुआ था उसी की पुनरावृत्ति आज फिर हो रही है। जनमानस धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र है। ज्ञान भूमिका और कर्म भूमिका के समस्त सूत्र इसी केन्द्र में समाविष्ट है। यहाँ सौ कौरवों का साम्राज्य है। अगणित दोष-दुर्गुण, अनाचार, कुविचार सौ असुरताओं का यहाँ बोलबाला है। मानवता की, नैतिकता की, दूरदर्शिता की, धर्मनिष्ठा की, पुरुषार्थ की पाँचों पाण्डवों की एक ही पत्नी द्रौपदी, संस्कृति आज भरी सभा में नंगी की जा रही है। किसी एक देश पर नहीं समस्त विश्व पर सुशासन उठ गया। कहीं रामराज्य, धर्मराज्य दिखाई नहीं पड़ता सर्वत्र दुष्प्रवृत्तियों का दुःशासन अपना आधिपत्य जमाए बैठा है। इन परिस्थितियों में महाभारत के अतिरिक्त और क्या उपाय रह जाता है? शास्त्रों से नहीं भावनाओं से लड़ा जाने वाला यह महा अभियान प्रकारान्तर से समूल महाभारत की सूक्ष्म पुनरावृत्ति ही है।

आज का सद्चिंतन

मित्रो! जीवन-धारण के लिए अन्न, वस्त्र और निवास की आवश्यकता पड़ती है। साहित्य सृजन के लिए कलम, स्याही और कागज चाहिए। फसल उगाने के लिए बीज और खाद-पानी का प्रबन्ध करना पड़ता है। यह तीनों ही अपने-अपने स्थान पर महत्त्वपूर्ण हैं। उनमें एक की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। आत्मिक-प्रगति के लिए उपासना, साधना और आराधना इन तीनों के समान समन्वय की आवश्यकता पड़ती है। इनमें से किसी अकेले के सहारे लक्ष्य तक नहीं पहुँचा जा सकता। कोई एक भी ऐसा नहीं है जिसे छोड़ा जा सके।

मित्रो! सबसे प्रमुख पाठ जो इस कायारुपी चोले में रहकर हमारी आत्म-सत्ता ने सीखा है, वह है आराधना। यही वह मार्ग है, जो व्यक्ति को नर-मानव से देवमानव, ऋषि, देवदूत स्तर तक पहुँचाता है।

दि-०३/०७/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो! उपासना यदि सच्चे मन से पूर्ण निष्ठा और तन्मयतापूर्वक की जाए, तो वह एक घण्टा भी, बेमन से बेगार भुगत कर किये जाने वाले छह घण्टे जप से भी अधिक महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है। घट-घटवासी भगवान विधान को नहीं, भावना को देखते हैं। विशेष व्यक्तियों द्वारा या विशेष अवसरों पर, विशेष साधनाओं के लिए, विशेष समय भी उपासना में लगाया जाना चाहिए, पर साधारण परिस्थितियों के व्यक्तियों के लिए नियमित रूप से सच्चे मन से की गई एक घण्टे की उपासना भी पर्याप्त हो सकती है। परमार्थ के लिए निकाले गये छह घण्टे में से उपासना का एक घण्टा कम कर देने के बाद शेष पाँच घण्टे जो बचते हैं, उनमें से एक घण्टा स्वाध्याय के लिए निश्चित रूप से रखा जाना चाहिए। यह कार्य भजन से किसी भी प्रकार कम महत्त्व का नहीं है। आत्म-निर्माण की समस्याओं को, जीवन की विभिन्न गुत्थियों को सुलझाने में सहायता करने वाला साहित्य ही स्वाध्याय की आवश्यकता पूरी करता है।

वाङ्मय-नं-६६-पेज-१.२७

दि-०४/०७/२००७

आज का सद्चिंतन

आपमें से हर आदमी को हम यह काम सौंपते हैं कि आप हमारे बच्चे के तरीके से हमारे मिशन को चलाइए। बंद मत होने दीजिए। हम तो अपनी विदाई ले जाएँगें, लेकिन जिम्मेदारी आपके पास आएगी। आप कपूत निकलेंगे तो फिर लोग आपकी बहुत निंदा करेंगे और हमारी निंदा करेंगे। कबीर का बच्चा ऐसा हुआ था जो कबीर के रास्ते पर चलता नहीं था तो सारी दुनिया ने उससे यह कहा–'बूढ़ा वंश कबीर का उपजा पूत कमाल' आपको कमाल कहा जाएगा और यह कहा जाएगा कि कबीर तो अच्छे आदमी थे, लेकिन उनकी संतानें दो कौड़ी की भी नहीं हैं।

परम पूज्य गुरुदेव २५ मार्च-१९८७

आज का सद्चिंतन

मित्रो! मनुष्य वह है जिसमें मानवता को सम्मानित करने वाले गुण, कर्म, स्वभाव का बाहुल्य है। ईमानदारी और सच्चाई जिसकी नीति है-जो छल-कपट से दूर रहकर सीधा, सरल और स्वच्छ जीवन जीता है, जिसे अपने पसीने की कमाई पर्याप्त और सन्तोषप्रद लगती है-जिसमें धैर्य, साहस, सन्तुलन, शौर्य और विवेक की समुचित मात्रा मौजूद है, उसी को खरा व्यक्तित्व कहना चाहिए। जिसे न डरने की आदत है न डराने की। जो हँसने का अभ्यासी है और रोते को हँसाने की कला जानता है, उसे मनुष्य कह सकते हैं। जिसका अन्तःकरण उदारता, सरलता, करुणा, ममता और सज्जनता से लबालब भरा रहता है, उसी में मानव-जन्म के साथ-साथ मानव हृदय भी पाया समझा जाना चाहिए।

दि-०६/०७/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो! संयम में ब्रह्मचर्य की बात गाँठ बाँध रखने की है। शक्तियों का कोटा सीमित है। उसे बहुत ही सोच-समझकर खर्च करना चाहिए। आमदनी कम और खर्च अधिक करने वाले दिवालिया बनते हैं। ऐसा न हो कि हम अति वासनाओं की अग्नि में अपने बहुमूल्य जीवन-तत्वों को जलाने लगें। विशेषतया कामेन्द्रियों और सम्बन्धित मनोविकारों पर तो कड़ाई का अंकुश रखना चाहिए। आहार की तरह विहार पर भी यदि सचमुच ध्यान रखा जा सके तो निःसन्देह हम स्वास्थ्य-रक्षा की दृष्टि से बहुत हद तक सफल हो सकते हैं।

वाङमय-नं-६६-पेज-६.५६

आज का सद्चिंतन

मित्रो! इमारतें और कारखाने बनाना सरल है। स्कूल और बाँध भी थोड़ी अर्थ-व्यवस्था हो जाने पर आसानी से बन सकते हैं। असली काम व्यक्ति निर्माण का है जो काम जितना ही कठिन है उतना ही महत्त्वपूर्ण भी है। ताजमहल बनाने वाले शाहजहाँ की तुलना में समर्थ गुरु रामदास द्वारा शिवाजी का निर्माण अधिक महत्त्वपूर्ण है। गाँधी की तुलना टाटा के लौह संस्थानों से नहीं की जा सकती। निजीधाम का सारा स्वर्ण कोष लोकमान्य तिलक के मूल्य से बढ़कर नहीं हो सकता। किसी समाज की असली सम्पत्ति उसके चरित्रवान्, मनस्वी और परमार्थ परायण व्यक्ति ही होते हैं। वे ही करोड़ों जीवनों को प्रभावित करते, वातावरण को बदलते और अवतरित देवदूत ही माना जाएगा। इस दृष्टि से अपना 'ज्ञान-यज्ञ' एक ऐसा ऐतिहासिक अनुदान है जिसे भावी पीढ़ियाँ लाखों वर्षों तक विस्मरण न कर सकेंगी।

आज का सद्‌चिंतन

मित्रो! 'ज्ञान-यज्ञ' का अभी आरम्भ काल है। उसमें से अग्नि की लपटें फूटने लगी हैं। अभी उसे विश्व-व्यापी ऐसी प्रचण्ड दावानल का रूप धारण करना शेष है, जिसकी आग में मानव समाज के समस्त पाप-ताप जल जाएँ और शुद्ध स्वर्ण जैसी कान्तिमान होकर वह विश्व मंगल का नया सूत्रपात कर सके। अभी हिन्दी भाषा में थोड़ा लेखन एवं प्रकाशन कार्य आरम्भ हुआ है, आगे यह विचार-धारा भारतीय भाषाओं में प्रकट होगी और विश्व का प्रत्येक नागरिक उससे एक नया प्रकाश, नया प्रभाव ग्रहण करेगा। यह सब कुछ कौतुहलवर्द्धन प्रचार कार्य नहीं वरन् मनोभूमि का परिवर्तन है, जो व्यक्तियों को कुछ सुझाव मात्र नहीं देगा वरन् उनकी जीवन-दिशा और क्रियापद्धति को ही पलट कर रख देगा। आज जो भारभूत, निकम्मे व्यक्ति दीखते हैं कल वे ही एक से एक बढ़-चढ़ कर महत्त्वपूर्ण भूमिकाएँ प्रस्तुत करेंगे, ऐसे होगा अपने 'ज्ञान-यज्ञ' का प्रभाव। यह कल्पना नहीं सच्चाई है, जिसे कुछ ही वर्षों में हर कोई अपनी इन्हीं आँखों से मूर्तिमान प्रत्यक्ष देख सकेगा।

दि-०९/०७/२००७

आज का सद्चिंतन

लोकसेवी युग-निर्माता की धर्म सेवा

मित्रो! संसार में जितने भी महत्वपूर्ण जन-आन्दोलन चले और सफल हुए हैं उनके पीछे भावनाशील, उच्चचरित्र, आदर्शवादी लोकसेवकों की शक्ति ही प्रधान आधार रही है। इस बल के अभाव में अन्य साधन कितने ही अधिक होने पर भी कोई बड़ा काम, खासतौर से नवनिर्माण जैसा महान अभियान सफल नहीं हो सकता। इसलिए हमें इस बात का घोर प्रयत्न करना होगा कि कुछ व्यक्ति भजन करके स्वर्ग प्राप्ति के लिए लाल कपड़े वाले बाबाजी नहीं वरन् युग-रचना के लिए जनता-जनार्दन की आराधना करने वाले विवेकशील त्यागी, तपस्वी लोग कर्मक्षेत्र में उतरें और भौतिक एषणाओं से ऊँचे उठकर सच्चे महामानवों की तरह अपनी हस्ती विश्वमंगल के लिए लगा दें।

दि-१०/०७/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो! हमारी अभिलाषा है कि गायत्री परिवार का हर सदस्य उत्कृष्ट प्रकार के व्यक्तित्व से सम्पन्न भारतीय धर्म और संस्कृति का सिर ऊँचा करने वाला सज्जन व्यक्ति बने। उसका जीवन उलझनों से और कुंठाओं से भरा हुआ नहीं, वरन् आशा, उत्साह, संतोष एवं मस्ती से भरा हुआ बीते। अपनी श्रेष्ठता का अनुकरणीय आदर्श उपस्थित करना-इसी कसौटी पर हमारी वास्तविकता अब परखी जानी है। अब तक उपदेशों का कितना प्रभाव अंतःकरण पर हुआ? इस प्रश्न का उत्तर अब हमें आचरण द्वारा ही देना पड़ेगा।

अखण्ड ज्योति-१९६४

आज का सद्चिंतन

मित्रो! उपदेश तो बहुत पा चुके हो, किन्तु उसके अनुसार क्या तुम कार्य करते हो? अपने चरित्र का संशोधन करने में अभी भी क्या किसी अन्य की राह देख रहे हो? तुम तो अब श्रेष्ठ कार्य करने की योग्यता प्राप्त करो। विवेक बुद्धि की किसी प्रकार अब उपेक्षा न करो। अपने चरित्र का संशोधन करने में लापरवाही करोगे या प्रयत्न में ढिलाई करोगे तो उन्नति कैसे हो सकती है? अपने शुभ अवसरों को न खोकर जीवन रणक्षेत्र में प्रबल पराक्रम से निरन्तर अग्रसर होकर विजय प्राप्त करने के लिए सदैव तत्पर रहना सीखो।

अखण्ड ज्योति-१९६४

आज का सद्चिंतन

मित्रो! इस समय जो भगवान के भक्त हैं, जिन्हें इस संसार के प्रति दर्द है, उनके नाम हमारा यही संदेश है कि वे अपने व्यक्तिगत लाभ के कार्यों में कटौती करें एवं भगवान का काम करने के लिए आगे आएँ। अगर इस समय भी आप अपना मतलब सिद्ध करते रहे और मालदार बनते रहे, तो पीछे आपको बहुत पछताना पड़ेगा। अब आपकी इज़्ज़त-आपकी इज़्ज़त नहीं, हमारी इज़्ज़त है। हमारी और मिशन की इज़्ज़त की रक्षा करना अब आपका काम है।

गुरु पूर्णिमा संदेश-१९८०

आज का सद्चिंतन

मित्रो! ज्ञान को उपनिषदों में अमृत कहा गया है। जीवन को ठीक प्रकार जीने और सही दृष्टिकोण अपनाये रहने के लिए प्रेरणा देते रहना और श्रद्धा स्थिर रखना यही ज्ञान का उद्देश्य है। जिन्हें ज्ञान प्राप्त हो गया उनका मनुष्य जन्म धन्य हो गया। शिक्षा का उद्देश्य भी ज्ञान की प्राप्ति ही है। सद्ज्ञान को ही विद्या या दीक्षा कहते हैं। जिसे यह सम्पति प्राप्त हो गई, उसे और कुछ प्राप्त करना शेष नहीं रह जाता।

जीवन निर्माण की आवश्यक प्रेरणा देने वाला सत्साहित्य नित्य-नियमपूर्वक पढ़ना ही चाहिए। स्वाध्याय को भी साधना का ही एक अंग माना जाए और कुछ समय इसके लिए नियत रखा जाए। कुविचारों को शमन करने के लिए नित्य सद्विचारों का सत्संग करना आवश्यक है। व्यक्ति का सत्संग कठिन पड़ता है पर साहित्य के माध्यम से संसार भर के जीवित या मृत सत्पुरुषों के साथ सत्संग किसा जा सकता है। यह जीवन का महत्त्वपूर्ण लाभ है, जिससे किसी को भी वंचित नहीं रहना चाहिए। जो पढ़े-लिखे नहीं हैं उन्हें दूसरों से सत्ससाहित्य पढ़ाकर सुनने की व्यवस्था करनी चाहिए।

दि-१४/०७/२००७

आज का सद्चिंतन

आज का सद्चिंतन

मित्रो! मानव अन्तःकरण को पुलकित एवं भावविभोर करने की क्षमता कला में रहती है। कला का वासना को भड़काने में इन दिनों बड़ा हाथ रहा है। अब इस महान शक्ति को हमें जीवन-निर्माण एवं समाज-रचना की महान प्रक्रिया में लगाना होगा। कला शास्वत है। उसमें दोष कुछ नहीं वरन् मानव अन्तःकरण का सीधा स्पर्श करने की क्षमता से सम्पन्न होने के कारण यह आवश्यक है और अभिवन्दनीय है। इस सृजनात्मक शक्ति को जनमानस को श्रेष्ठता की ओर प्रेरित करने के लिए प्रयुक्त करना चाहिए।

दि-१६/०७/२००७

आत्म चिंतन

१. समय जैसी जीवन की बहुमूल्य निधि का हम ठीक प्रकार सदुपयोग करते हैं या नहीं? आलस्य और प्रमाद में उसकी बरबादी तो नहीं होती?

२. जीवन लक्ष्य की प्राप्ति का हमें ध्यान है या नहीं? शरीर सज्जा में ही इस इस अमूल्य अवसर को नष्ट तो नहीं कर रहे? देश, धर्म, समाज और संस्कृति की सेवा के पुनीत कर्त्तव्य की अपेक्षा तो नहीं करते?

३. अपनी विचारधारा एवं गतिविधियों को हमने अंधानुकरण के आधार पर बनाया है या विवेक,दूरदर्शिता एवं आदर्शवादिता के अनुसार उनका निर्धारण किया है?

४. मनोविकारों और कुसंस्कारों के शमन करने के लिए हम संघर्षशील रहते हैं या नहीं? छोटे-छोटे कारणों को लेकर हम अपनी मानसिक शांति से हाथ धो बैठने और प्रगति के सारे मार्ग अवरुद्ध करने की भूल तो नहीं करते?

५. कटु भाषण, छिद्रान्वेषण एवं अशुभ कल्पनाएँ करते रहने की आदतें छोड़कर सदा संतुष्ट, प्रयत्नशील एवं हँसमुँख रहने की आदत हम डाल रहे हैं या नहीं?

६. शरीर, वस्त्र, घर तथा वस्तुओं को स्वच्छ एवं सुव्यवस्थित रखने का अभ्यास आरंभ किया या नहीं? श्रम से घृणा तो नहीं करते?

७.परिवार को सुसंस्कारी बनाने के लिए आवश्यक ध्यान एवं समय लगाते हैं या नहीं?

८.आहार सात्विक प्रधान होता है न? चटोरेपन की आदत छोड़ी जा रही है न? सप्ताह में एक समय उपवास, जल्दी सोना, जल्दी उठना, आवश्यक ब्रह्मचर्य का नियम पालते हैं या नहीं?

९. ईश्वर उपासना,आत्म-चिंतन,स्वाध्याय को अपने नित्य-नियम में स्थान दे रखा है न?

१०.आमदनी से अधिक खर्च तो नहीं करते? कोई दुर्व्यसन तो नहीं? बचत करते हैं या नही?

➲उपरोक्त दस प्रश्न नित्य अपने आपसे पूछते रहने वाले को तो उत्तर आत्मा दे, उन

आज का सद्चिंतन

मित्रो! हम युगान्तर प्रस्तुत करने वाली चेतना का ज्ञान गंगा का अवतरण करने के लिए भागीरथ प्रयत्न कर रहे हैं। हमारा ज्ञान यज्ञ सतयुग की कल्पना को साकार करने वाले नवयुग को धरती पर उतारने के लिए है। हम मनुष्य में देवत्व का उदय देखना चाहते हैं और इन्हीं सपनों को साकार करने के लिए समुद्र को पाटकर अपने अण्डे पुनः प्राप्त करने के लिए चोंच में बालू भर-भर डालने में निरत टिटहरी की तरह उत्कट संकल्प लेकर जुटे हैं। इन प्रयत्नों का केन्द्र छोटा सा आश्रम है-**शान्तिकुञ्ज गायत्री तीर्थ।**

दि-१८/०७/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! स्वाति वर्षा जब कभी, जहाँ कहीं भी होती है, तब वहाँ समुचित क्षमता वाली सीपों में मोती, केलों में कपूर, बाँसों में वंशलोचन जैसी बहुमूल्य उपलब्धियाँ उपलब्ध होकर रहती हैं। **गायत्री तीर्थ-शान्तिकुञ्ज** में ऐसे तत्त्व अदृश्य रूप में बरसते रहते हैं, जिन्हें यथासमय ओस बिन्दुओं की तरह घनीभूत देखा जा सके।

दि-१९/०७/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! सेनेटोरियम उन स्थानों पर बनते हैं, जहाँ की जलवायु औषधि उपचार से भी अधिक लाभदायक हो, रुग्णता और दुर्बलता को भगाने में अमृतोपम सिद्ध हो। **शान्तिकुञ्ज**

दि-२०/०७/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! शांतिकुंज

दि-२२/०७/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! ब्रह्माजी ने चार वेदों की रचना से पूर्व २४ अक्षर वाले गायत्री मन्त्र की रचना की। इस मन्त्र के एक-एक अक्षर में ऐसे सूक्ष्म तत्त्व भरे हुए हैं कि जिनके पल्लवित होने पर चारों वेदों की अनेक शाखा-प्रशाखाएँ उद्भूत हुईं। समस्त शास्त्र, पुराण, इतिहास, स्मृति, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् दर्शन आदि एक गायत्री वटवृक्ष के पत्र-पल्लव ही हैं। गायत्री के रहस्यों का विस्तार पूर्वक वर्णन करने के लिए ही इन सबकी रचना हुई है। जो ज्ञान किसी भी शास्त्र में उपलब्ध है, वह सब बीज रूप से गायत्री महामंत्र के २४ अक्षरों में प्रारंभ से ही मौजूद है।

गायत्री महामंत्र जहाँ आध्यात्मिक साधना का एक उत्कृष्ट विज्ञान है वहाँ विश्वमानव का सार्वभौम आचार शास्त्र भी है। साम्प्रदायिकता सिर फुटौवल जिन विवादास्पद बातों को लेकर होती है उनकी गन्ध भी गायत्री महामंत्र में नहीं मिलती, जिनमें २४ सिद्धान्तो का गायत्री के २४ अक्षरों में प्रतिपादन किया गया है। गायत्री सार्वभौम मानव धर्म का बीज मंत्र है। कोई भी देश, धर्म, जाति, सम्प्रदाय, गायत्री महामंत्र की शिक्षाओं और सिद्धान्तों का खण्डन नहीं कर सकता। इनके संबंध में किसी वर्ग का कोई विरोध भी नहीं है। यह शिक्षायें देश, काल, पात्र के अनुसार भी नहीं बदलती। अनादि काल से यह आदर्श समान रूप से उपयोगी एवं सम्माननीय रहे हैं।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! शांतिकुंज

दि-२३/०७/२००७

आज का सद्चिंतन

परम पूज्य गुरुदेव श्रीराम शर्मा

आज का सद्‌चिंतन

मित्रो ! आप अपने त्याग को, अपनी भावना को, केवल भावना को ही नहीं, वरन उस काम को हमेशा याद रखें, जिसके लिए आपने साहस भरा कदम उठाया था। जिंदगी बड़ी शानदार है, इस तथ्य को आपको समझना चाहिए।

आपको यह समझना चाहिए कि भगवान ने आपको यह जिंदगी बहुत ही शानदार दी है तथा आप जो काम कर रहे हैं, वह बड़ा ही शानदार है। इसमें करोड़ों लोगों का भाग्य छिपा है। आप यह नहीं समझते हैं, किंतु हम स्पष्ट रूप से देख रहे हैं। एक इतिहास बनने वाला है। आगामी दिनों गाँधीजी के आंदोलन के बाद कोई कार्यक्रम अगर इस दुनिया में है और अगर कोई उसकी चर्चा होगी, तो वह शांतिकुंज, युग निर्माण योजना का कार्यक्रम होगा। इतना बड़ा तथा महत्त्वपूर्ण कार्य कभी बना नहीं तथा कोई ऐसा कार्यक्रम बना भी नहीं सकता है। यह सफल होगा ओर बिलकुल सफल होगा, हमें पूरा विश्वास है, आपको विश्वास हो या न हो। हम जब भगवान के पास बैठते हैं, हमें इस बात का पूरा-पूरा विश्वास दिलाया जाता है।

आप में से किसी के मन में यह बात नहीं आनी चाहिए कि यह योजना सफल नहीं होगी। सफल न होने पर हम मारे-मारे फिरेंगे, यह बात भी आपको अपने मन में कभी सोचनी नहीं चाहिए। इस मिशन में आप ऐसे सफल होंगे, जो इतिहास के पन्नों में कभी नहीं आए।

दि-२५/०७/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! दुनिया की तीन मूर्खताएँ उपहासास्पद होते हुए भी कितनी व्यापक हो गई हैं यह देखकर आश्चर्य होता है:-

- ✧ पहली यह कि लोग धन को शक्ति मानते हैं।
- ✧ दूसरी यह कि लोग अपने को सुधारे बिना दूसरों को धर्मोपदेश देते हैं।
- ✧ तीसरी यह कि कठोर श्रम से बचे रहकर भी लोग आरोग्य की आकाँक्षा करते हैं।

मनुष्य को चाहिए कि झूठ से कामना सिद्ध न करे। निन्दा, स्तुति तथा भय से भी झूठ न बोले और न लोभवश। चाहे राज्य भी मिलता हो तो झूठ, अधर्म को न अपनावे। भोजन-जीविका बिना भी चाहे प्राण जाते हों, तो भी धर्म का त्याग न करे, क्योंकि जीव और धर्म नित्य है। वे मनुष्य धन्य हैं जो धर्म को किसी भी भाव नहीं बेचते।

परम पूज्य गुरुदेव श्रीराम शर्मा

दि-२६/०७/२००७

आज का सद्चिंतन

परम पूज्य गुरुदेव श्रीराम शर्मा

दि-२७/०७/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो !आप बुरे विचारों के खिलाफ अच्छे विचारों की एक सेना खड़ी कर दीजिए। आपको कामवासना के विचार आते हैं, व्यभिचार के विचार आते हैं, तो उसके मुकाबले एक सेना और खड़ी कर दीजिये। हनुमान कितने सामर्थ्यवान हो गए-ब्रह्मचर्य की वजह से, भीष्म पितामह कितने शक्तिशाली हो गए। आद्य शंकर से लेकर अनेक संतों की याद कर सकते हैं। उन महापुरुषों को याद कर सकते हैं, जिनने अपने कुविचारों से लोहा लिया है। यदि यह न किया होता, तो संकल्पों की क्या विसात होती? चलते ही नहीं, टूट जाते। कुसंस्कार हावी हो जाते और जो विचार किया गया था, वह एक कोने में रखा रह जाता। आप श्रेष्ठ विचारों की एक बड़ी सेना बनाइये। लोभ के विचार आयें, तो आप ईमानदारों के समर्थन हेतु उनके इतिहास और उदाहरण से वचनों को संग्रह करके रखिये। ईमानदारी की ही कमाई खायेंगे, ऐसी विचारों की सेना यदि आप मन में तैयार करलें, तो आपके लिए सरल होगा कि जब बेईमानी के, कामवासना के, ईर्ष्या के, अधःपतन के विचार आयेंगे, तो उनकी रोकथाम आप कर सकेंगे। अपनी इस सेना को आप हमेशा सामने से भिड़ा देंगे। यह लड़ाई लड़े बिना काम कैसे चलेगा?''

गुरुवर की धरोहर-भाग-४ से

दि-२८/०७/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! ''ऋतम्भरा प्रज्ञा का ही नाम गायत्री है। ऋतम्भरा प्रज्ञा आदमी को उछाल देती है, ऊपर की ओर। ऊँचे उठे व्यक्ति का दायरा बड़ा हो जाता है। विचार करने का, देखने का और सोचने का स्तर ऊँचा उठ जाता है। यही ऋतम्भरा प्रज्ञा हम पर प्रसन्न हो जाय, तो हम सबको मालदार बना सकती है। वही गायत्री जिसे हमने ऋतम्भरा प्रज्ञा नाम से कहा है, हम पर प्रसन्न हो जाय, तो हमको गुरु वशिष्ठ बना सकती है, विश्वामित्र बना सकती है। फिर हम विश्वामित्र के तरीके से राजपाट को ठोकर मारकर ऋतम्भरा प्रज्ञा प्राप्त करने के लिये कोशिश करेंगे। गायत्री की कृपा और अनुग्रह हमें मात्र माला घुमाने से नहीं मिल सकता। यह तो कलेवर है। मैं चाहता हूँ कि गायत्री के चमत्कार, गायत्री की सिद्धियाँ और गायत्री का गौरव आपको समझाऊँ। गायत्री उसी पर सवार होगी जो हंसवृत्ति को जीवन में धारण करेगा। हंस नीर-क्षीर-विवेक धारण करता है। क्या हम ऐसे बन सकते हैं?''

पूज्यवर की अमृतवाणी से (२.५०)

दि-२७/०७/२००७

आज का सद्चिंतन

परम पूज्य गुरुदेव श्रीराम शर्मा

दि-२७/०७/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! जिस प्रकार बिजली से जीरो पावर का मद्धिम प्रकाश उत्पन्न होता है, उससे सौ किलोवाट का तेज चौंधिया देने वाली रोशनी का बल्ब भी जल सकता है। उसी प्रकार जिन शक्तियों और साधनों से हम अपना रोज का काम चलाते हैं, उन्हीं साधनों और शक्तियों से अपनी निर्धनता को भी दूर भगा सकते हैं। पर हमारी स्थिति ऐसी है जैसे इस उधेड़बुन में उलझे हुए व्यक्ति की जिसे जीरो पावर बल्ब को जलाने वाली बिजली की बड़ी सामर्थ्य पर ही शंका होती है। जिन क्षमताओं और शक्तियों का सहारा लेकर निर्धन से निर्धन और धनवान से धनवान व्यक्ति अपना निर्वाह करते और काम चलाते हैं, वे हैं-बुद्धि, शक्ति, स्वास्थ्य

परम पूज्य गुरुदेव श्रीराम शर्मा

दि-२८/०८/२००८

आज का सद्‌चिंतन

परम पूज्य गुरुदेव श्रीराम शर्मा

आज का सद्चिंतन

मित्रो! आपको मानसिक तप करना चाहिए। असल में मन कभी इधर घूमता हैं, कभी उधर घूमता हैं, कभी किधर घूमता है? इस सबको रोककर के क्या करेंगे? आप मन को रोकिये। रोकने के बाद में उसको भगवान में लगा दीजिए। यही तो योगाभ्यास है। तपश्चर्या और योगाभ्यास दोनों की एक जोड़ी है। तपश्चर्या का अर्थ है- निखार देना और योग का अर्थ? योग का अर्थ है-किसी के साथ में जोड़ देना, भगवान के साथ जोड़ देना। उपासना इसी का नाम है। हम किसी के साथ में जोड़ देते है, अपने मन को। टंकी के साथ में जोड़ देते है नल को। अपने बल्ब को बिजलीघर के साथ में जोड़ देते है। जोड़ देना- इसी का नाम 'योग' है। अपने आपको, अपने असंयम को तपा देने का नाम, गला देने, झुका देने और मिटा देने का नाम 'तप' है।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! पूज्यवर चर्चा प्रसंग में अक्सर कहते थे-"मैंने पीले वसंती वस्त्रों का प्रावधान तुम सबके लिए इसलिए किया है कि सूर्य व बृहस्पति की, गायत्री व गुरु की दोनों की शक्तियों को ग्रहण कर पाना तुम सबके लिए संभव हो सके।" सूर्य व बृहस्पति के अंतर्सम्बन्ध जिस वर्ण को जन्म देते हैं वह पीला ही है। उन्होंने कहा कि-"अब गेरुए वस्त्र की नहीं-वैराग्य लेकर भागने की नहीं, समर क्षेत्र में जूझने वाले पीत वस्त्राधारी बंदा-वैरागियों की आवश्यकता है। इन्हें सतत सूर्य की प्रखरता का अनुदान मिलता रहेगा।" वस्तुतः गुरुतत्व (बृहस्पति) को ग्रहण किए बिना गायत्री सावित्री तत्व (सूर्य सविता) को आत्मसात किया भी नहीं जा सकता।

दि-२८/०७/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! आत्मा को, अपने आप का निर्माण कर लेना-नम्बर एक। अपने परिवार का निर्माण कर लेना-नम्बर दो। अपने समाज को प्रगतिशील बनाने के लिए, उन्नतिशील बनाने के लिए कुछ-न-कुछ योगदान देना-नम्बर तीन। तीन काम अगर आप कर पाएँगे, तो आपको समझना चाहिए कि आपने आत्मा की भूख को बुझाने के लिए और आत्मिक जीवन को समुन्नत बनाने के लिए कुछ कदम बढ़ाना शुरु कर दिया, अन्यथा यही कहा जाएगा कि आप शरीर के लिए मरे हैं और शरीर के लिए ही जिए हैं। शरीर ही आप का इष्टदेव है। इन्द्रियों के सुख ही तो आपकी आकांक्षा है। वासना तृष्णा ही तो आपको सबसे प्यारे मालूम पड़ते है। शरीर ही सब कुछ नहीं है, शरीर की आकांक्षाएँ ही सब कुछ नहीं है, इन्द्रियाँ ही सब कुछ नहीं है, मन की लिप्सा और लालसा ही सब कुछ नहीं है। कहीं आत्मा भी आपके भीतर है और आत्मा अगर आपके भीतर है, तो आप ये भी विश्वास रखिये कि उसकी भूख और प्यास भी है। आत्मा के अनुदान भी असीम और असंख्य हैं, लेकिन उसके भूख और प्यास भी है। पौधों के द्वारा, पेड़ों के द्वारा हरियाली भी मिलती है, छाया भी मिलती है, पर उनकी अपनी जरूरतें भी तो हैं। आप जरूरत को क्यों भूल जाते हैं? खाद की जरूरत नहीं है? पानी की जरूरत नहीं है? उनकी रखवाली की जरूरत नहीं है? उनकी रखवाली न करेंगे, खाद-पानी नहीं देंगे, तो पेड़ों से और पौधों से क्या आशा करेंगे? इसी तरीके से जीवात्मा का पेड़ और वृक्ष भी अपनी खुराक माँगता है।

पूज्यवर की अमृतवाणी भाग-१-३.६२

आज का सद्चिंतन

दि-३०/०७/२००७

आज का सद्चिंतन

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! आज गुरु पूर्णिमा का त्यौहार है। हम आपको बता रहे हैं कि भगवान का नया अवतार होने जा रहा है। आज की परिस्थितियों के अनुरूप यह अवतार है। जब-जब दुष्टता बढ़ती है तब-तब देश-काल की परिस्थितियों के अनुरूप भगवान अवतार के रूप में जन्म लेते हैं। आज आस्थाओं में, जन-जन के मन-मन में असुर घुस गया है। इसे विचारों की विकृति कह सकते हैं। एक किश्त आज के अवतार की आज से २५०० वर्ष पूर्व बुद्ध के रूप में, विचारशीलता के रूप में आई थी। वही प्रज्ञा की, विवेक की, विचारों की वेला अब पुनः आई है। वह है गायत्री मंत्र ऋतंभरा- प्रज्ञा के रूप में। यह अवतार भी हलचलें पैदा करेगा। विचार क्रांति के रूप में जो आ रही है वह युगशक्ति गायत्री है। यह गायत्री हिंदुस्तान मात्र की नहीं, सारे विश्व की है। नए विश्व की माइक्रोफिल्म इसमें छिपी पड़ी है। गायत्री मंत्र विश्व मंत्र है। व्यक्ति का अंतस व बहिरंग बदलने वाले बीज इस मंत्र के अंदर छिपे पड़े हैं। यदि आपको यह बात समझ में आ गई तो आप हमारे साथ नवयुग का स्वागत करने में जुट जाएँगे। हम अपने लिए एक ही नाम बताते हैं-मुर्गा। मुर्गा वह जो प्रभात के आगमन का उद्घोष करता है। गायत्री ने हमें फिर मुर्गा बना दिया है। आइए जोर से उद्घोष करें कि नव प्रभात आ रहा है, नया युग आ रहा है, युग शक्ति का अवतरण हो रहा है। कुकुडूकूँ........। यह तो मुर्गा करता है। हम नए युग की अगवानी करें।

दि-०२/०८/२००७

आज का सद्चिंतन

परम पूज्य गुरुदेव श्रीराम शर्मा

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! तपस्वी का जीवन जीने के लिए आपको हिम्मत और शक्ति इकट्ठी करनी चाहिए। तपाने के बाद हर चीज मजबूत हो जाती है। कच्ची मिट्टी को जब हम तपाते हैं तो तपाने के बाद मजबूत ईंट बन जाती है। कच्चा लोहा तपाने के बाद स्टेनलेस स्टील बन जाता है। पारे को जब हकीम लोग तपाते हैं तो पूर्ण चंद्रोदय बन जाता है। पानी को गरम करते हैं तो भाप बन जाता है और उससे रेल के बड़े-बड़े इन्जन चलने लगते हैं। कच्चे आम को पकाते हैं तो पका हुआ आम बन जाता है। जब हम वेल्डिंग करते हैं तो लोहे के दो टुकड़े जुड़ जाते हैं। उस पर जब हम शान धरते हैं तो वह हथियार बन जाता है। बेटे! यह सब गलने की निशानियाँ हैं। आपको अपने ऊपर शान धरनी चाहिए और भगवान के साथ वेल्डिंग करनी चाहिए। आपको अपने आप को इतना तपाना चाहिए कि आप पानी न होकर स्टीम भाप बन जाएँ। कौन-सी वाली स्टीम? जो रेलगाड़ी को धकेलती हुई चली जाती है। यह गरमी के बिना नहीं हो सकता। आपको तपस्वी बनने के लिए यही करना चाहिए।

दि-०४/०८/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! स्मरण रखिए, रुकावटें और कठिनाइयाँ आपकी हितचिंतक हैं। वे आपकी शक्तियों का ठीक-ठीक उपयोग सिखाने के लिए हैं। वे मार्ग के कंटक हटाने के लिए हैं। वे आपके जीवन को आनंदमय बनाने के लिए हैं। जिनके रास्ते में रुकावटें नहीं पड़ीं, वे जीवन का आनंद ही नहीं जानते। उनको जिंदगी का स्वाद ही नहीं आया। जीवन का रस उन्होंने ही चखा है, जिनके रास्ते में बड़ी-बड़ी कठिनाइयाँ आई हैं। वे ही महान् आत्मा कहलाए हैं, उन्हीं का जीवन, जीवन कहला सकता है।

उठो ! उदासीनता त्यागो। प्रभु की ओर देखो। वे जीवन के पुंज हैं। उन्होंने आपको इस संसार में निरर्थक नहीं भेजा। उन्होंने जो श्रमआपके ऊपर किया है, उसको सार्थक करना आपका काम है। यह संसार तभी तक दुःखमय दीखता है, जब तक कि हम इसमें अपना जीवन होम नहीं करते। बलिदान हुए बीज पर ही वृक्ष का उद्भव होता है। फूल और फल उसके जीवन की सार्थकता सिद्ध करते हैं।

सदा प्रसन्न रहो। मुसीबतों का खिले चेहरे से सामना करो। आत्मा सबसे बलवान है, इस सच्चाई पर दृढ़ विश्वास रखो। यह विश्वास ईश्वरीय विश्वास है। इस विश्वास द्वारा आप सभी कठिनाइयों पर विजय पा सकते हैं। कोई कायरता आपके सामने ठहर नहीं सकती। इसी से आपके बल की वृद्धि होगी। यह आपकी आंतरिक शक्तियों का विकास करेगा।

ऋषि चिन्तन से-परम पूज्य गुरुदेव

दि-०५/०८/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! मिट्टी के खिलौने जितनी आसानी से मिल जाते हैं, उतनी आसानी से सोना नहीं मिलता। पापों की ओर आसानी से मन चला जाता है, किंतु पुण्य कर्मों की ओर प्रवृत्त करने में काफी परिश्रम करना पड़ता है। पानी की धारा नीचे पथ पर कितनी तेजी से अग्रसर होती है, किंतु अगर ऊँचे स्थान पर चढ़ाना हो, तो पंप आदि लगाने का प्रयत्न किया जाता है।

बुरे विचार,तामसी संकल्प ऐसे पदार्थ हैं, जो बड़ा मनोरंजन करते हुए मन में धँस जाते हैं और साथ ही अपनी मारक शक्ति को भी ले जाते हैं। स्वार्थमयी नीच भावनाओं को वैज्ञानिक विश्लेषण करके जाना गया है कि वे काले रंग की छुरियों के समान तीक्ष्ण एवं तेजाब की तरह दाहक होती हैं। उन्हें जहाँ थोड़ा-सा भी स्थान मिला कि अपने सदृश और भी बहुत-सी सामग्री खींच लेती हैं। विचारों में भी पृथ्वी आदि तत्त्वों की भाँति खिंचने और खींचने की शक्ति होती है। तदनुसार अपनी भावना को पुष्ट करने वाले उसी जाति के विचार उड़-उड़ कर वहीं एकत्रित होने लगते हैं।

यही बात भले विचारों के संबंध में है। वे भी अपने सजातियों को अपने साथ इकट्ठे करके बहुकुटुंबी बनने में पीछे नहीं रहते। जिन्होंने बहुत समय तक बुरे विचारों को अपने मन में स्थान दिया है, उन्हें चिंता, भय और निराशा का शिकार होना ही पड़ेगा।

ऋषि चिन्तन से-परम पूज्य गुरुदेव

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! आप भगवान के अनुग्रह तक पहुँच सकते हैं और भगवान का अनुग्रह एवं जीवन-लक्ष्य प्राप्त करने वालों ने जिंदगी के जो आनंद उठाए हैं, वे उठा सकते हैं। शर्त यही है कि आप अपनी उपासना को भजन से आरंभ तो करें, पर उसे वहीं तक सीमित न करें। उसके साथ-साथ में जीवन की साधना, स्वाध्याय, विचारों का परिमार्जन, संयम, अपनी जिंदगी के छिद्रों का निराकरण और सेवा, इनको आप मिला दीजिए, फिर देखिए कि आपकी उपासना फलित होती है कि नहीं? आप सिद्धपुरुष बनते हैं कि नहीं? आप चमत्कृत होते हैं कि नहीं? भगवान आपके घर में सेवा-सहायता करने के लिए आते हैं कि नहीं? ऐसी है साधना, जिसको मैंने किया। मैं चाहता हूँ कि आपमें से हरेक आदमी को उसी तरीके से साधना करनी चाहिए जो कि सफल होती है और होती रहेगी।

दि-०७/०८/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! आज दशमुख के रावणों से नहीं, सौ कुटुम्बियों के कौरवों से नहीं, हजार भुजा वाले सहस्रबाहु से नहीं, बल्कि अरबों की जनसंख्या वाले मानव समाज पर अगणित दुष्प्रवृत्तियों और दुर्भावनाओं के साथ छाये हुए सर्वग्राही महाअसुर से जूझना है। इस महाभारत में किसी को भी दर्शक बनकर नहीं बैठे रहना चाहिए। जिसके पास जो है, उसी को लेकर आगे आना

परम पूज्य गुरुदेव

दि-०८/०८/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! सत्य! सत्य!! सत्य!!! अहा, कितना सुन्दर शब्द है। उच्चारण करते ही जिह्वा को शांति मिलती है, विचार करते ही मस्तिष्क शीतल हो जाता है, हृदयंगम करने से कलेजा ठंडक अनुभव करता है। झूठ के मायावी प्रपंचों में उलझ कर ईश्वर का राजकुमार-मनुष्य मानवता से पतित होकर पशु बन गया है। सत्य की अवहेलना करने का अभिशाप वह भुगत रहा है।

ईश्वर सत्य है, आत्मा सत्य है, प्रभु की त्रिगुणमयी लीला सत्य है, सर्वत्र सत्य ही सत्य व्याप्त हो रहा है। जीवन के कण-कण की एक ही प्यास है-'सत्य'। हमारा जीवन इसलिए है कि अखिल सत्य तत्त्व में विचरण करते हुए अमृत का पान करें। प्रभु ने कृपा करके हमें अपने संसार की सत्यरूपी वाटिका में भ्रमण करके आनंद लाभ करने के लिए भेजा है। परन्तु हाय, हम तो अपने को बिलकुल ही भूले जा रहे हैं। वास्तव में दुनियाँ कुछ नहीं है। अपनी छाया ही संसार के दपर्ण में प्रतिबिंबित हो रही है। 'सत्य' मनुष्यों को प्रेरणा देता है कि अंतर में दृष्टि डालो, अपना दृष्टिकोण बदलो, अपना और दुनियाँ का स्वरूप समझो, अपने को अच्छा बना डालो, बस सारी दुनियाँ तुम्हारे लिए अच्छी बन जाएगी। तुम सत्यनिष्ठ बनो, दुनियाँ तुम्हारे साथ सत्य का आचरण करेगी। श्रुति कहती 'असतो मा सद्गमय' असत्य की ओर नहीं, सत्य की ओर गमन कीजिए। आपका इसी में कल्याण है।

ऋषि चिन्तन पुस्तक मे से

दि-०९/०८/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! तुम व्यर्थ में दूसरों के अनर्थकारी संदेशों को ग्रहण कर लेते हो। तुम वह सच मान बैठते हो, जो दूसरे कहते हैं। तुम स्वयं अपने आप को दुःखी करते हो और कहते हो कि दूसरे लोग हमें चैन नहीं लेने देते। तुम स्वयं ही दुःख का कारण हो, स्वयं ही अपने शत्रु हो। जो किसी ने कुछ बक दिया, तुमने मान लिया यही कारण है कि तुम उद्विग्न रहते हो।

सच्चा मनुष्य एक बार उत्तम संकल्प करने के लिए यह नहीं देखता कि लोग क्या कह रहे हैं। वह अपनी धुन का पक्का होता है। सुकरात के सामने जहर का प्याला रखा गया, पर उसकी राय को कोई न बदल सका। बंदा बैरागी को भेड़ों की खाल पहना कर काले मुँह गली-गली फिराया गया, किंतु उसने दूसरों की राय न मानी।

दूसरे के इशारों पर नाचना, दूसरों के सहारे पर निर्भर रहना, दूसरों की झूठी टीका-टिप्पणी से उद्विग्न होना, मानसिक दुर्बलता है। जब तक मनुष्य स्वयं अपना स्वामी नहीं बन जाता, तब तक उसका संपूर्ण विकास नहीं हो सकता। दूसरों का अनुकरण करने से मनुष्य अपनी मौलिकता से हाथ धो बैठता है।

स्वयं विचार करना सीखो। दूसरों के बहकावे में न आओ। कर्त्तव्य-पथ पर बढ़ते हुए, दूसरे क्या करते हैं, इसकी चिंता न करो। यदि ऐसा करने का साहस तुम में नहीं है, तो जीवन भर दासत्व के बंधनों में जकड़े रहोगे।

ऋषि चिन्तन पुस्तक मे से

दि-१०/०८/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! विद्वान पुरुष सुगंधित पुष्पों के समान हैं। वे जहाँ जाते हैं, वहीं आनंद साथ ले जाते हैं। उनका सभी जगह घर है और सभी जगह स्वदेश है। विद्या धन है। अन्य वस्तुएँ तो उसकी समता में बहुत ही तुच्छ हैं। यह धन ऐसा है जो अगले जन्मों तक भी साथ रहता है। विद्या द्वारा संस्कारित की हुई बुद्धि आगामी जन्मों में क्रमशः उन्नति ही करती जाती है और उससे जीवन उच्चतम बनते हुए पूर्णता पाता है।

कुएँ को जितना गहरा खोदा जाए, उसमें से उतना ही अधिक जल प्राप्त होता जाता है। जितना अधिक अध्ययन किया जाए उतना ही ज्ञानवान बना जा सकता है। विश्व क्या है और इसमें कितनी आनंदमयी शक्ति भरी हुई है, इसे वही जान सकता है, जिसने विद्या पढ़ी है। ऐसी अनुपम संपत्ति का उपार्जन करने में न जाने क्यों लोग आलस्य करते हैं? आयु का कोई प्रश्न नहीं है, चाहे मनुष्य वृद्ध हो जाए या मरने के लिए चारपाई पर पड़ा हो तो भी विद्या प्राप्त करने में उसे उत्साहित होना चाहिए क्योंकि ज्ञान तो जन्म-जन्मांतरों तक साथ जाने वाली वस्तु है।

वे मनुष्य बड़े अभागे हैं, जो विद्या पढ़ने में जी चुराते हैं। भिखारी को दाता के सामने जैसे तुच्छ बनना पड़ता है, ऐसे ही यदि तुम्हें शिक्षकों के सामने तुच्छ बनना पड़े तो भी शिक्षा प्राप्त करना ही कर्त्तव्य है।

ऋषि चिन्तन पुस्तक मे से

दि-११/०८/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! तुम्हें ऐसे व्यक्तियों का प्रेमपात्र बनने का सदैव प्रयत्न करते रहना चाहिए जो कष्ट पड़ने पर तुम्हारी सहायता कर सकते हैं और बुराइयों से बचाने की एवं निराशा में आशा का संचार करने की क्षमता रखते हैं।

खुशामदी और चापलूसों से घिर जाना आसान है। मतलबी दोस्त तो पल भर में इकट्ठे हो सकते हैं, पर ऐसे व्यक्तियों का मिलना कठिन है, जो कड़वी समालोचना कर सकें, जो खरी सलाह दे सकें,फटकार सकें और खतरों से सावधान कर सकें। राजा और साहूकारों की मित्रता मूल्यवान् समझी जाती है, पर सबसे उत्तम मित्रता उन धार्मिक पुरूषों की है, जिनकी आत्मा महान् है। जिसके पास पूँजी नहीं है, वह कैसा व्यापारी? जिसके पास सच्चे मित्र नहीं हैं, वह कैसा बुद्धिमान? उन्नति के साधनों में इस बात का बड़ा मूल्य है, कि मनुष्य को श्रेष्ठ मित्रों का सहयोग प्राप्त हो। बहुत से शत्रु उत्पन्न कर लेना मूर्खता है, पर उससे भी बढ़कर मूर्खता है, यह है कि भले व्यक्तियों की मित्रता को छोड़ दिया जाए।

निर्मल बुद्धि और श्रम में श्रद्धा, यही दो वस्तुएँ तो किसी मनुष्य को महान् बनाने वाली हैं। उत्तम गुणों को अपनाने से नीच व्यक्ति ऊच्च बन सकते हैं और दुर्गुणों के द्वारा बड़े व्यक्ति छोटे हो जाते हैं। निरंतर लगन, सावधानी, समय का सदुपयोग छोटे को बड़ा बना सकते हैं, हीन मनुष्यों को कुलीन बना सकते हैं।

ऋषि चिन्तन पुस्तक मे से

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! आनन्द की खोज में भटकता हुआ इन्सान, दरवाजे-दरवाजे पर टकराता फिरता है। बहुत-सा रुपया जमा करें, उत्तम स्वास्थ्य रहे, सुस्वाद भोजन करें, सुन्दर वस्त्र पहनें, बढ़िया मकान और सवारियाँ हों, नौकर-चाकर हों, पुत्र, पुत्रियों, बंधुओं से घर भरा हो, उच्च अधिकार प्राप्त हो, समाज में प्रतिष्ठा हो, कीर्ति हो। ये चीजें आदमी प्राप्त करता है। जिन्हें ये चीजें उपलब्ध नहीं होती, वे प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। जिनके पास हैं, वे उससे अधिक लेने का प्रयत्न करते हैं।

इन सब तस्वीरों में आनन्द खोज करते-करते चिरकाल बीत गया, पर राजहंस को ओस ही मिली। मोती! उसकी तो खोज ही नहीं की, मानसरोवर की ओर तो मुँह ही नहीं किया, लम्बी उड़ान भरने की तो हिम्मत ही नहीं बाँधी। मन ने कहा-जरा इसे और देख लूँ। आँखों से न दीख पड़ने वाले मानसरोवर में मोती मिल ही जाएँगे, इसकी क्या गारंटी है। फिर ओस चाटी और फड़फड़ाया, फिर यही पहिया चलता रहता है। आपने उनमें खोजा, कुछ क्षण पाया भी, परन्तु ओस की बूँदें ठहरीं, वे दूसरे ही क्षण जमीन पर गिर पड़ी और धूल में समा गईं।

यही नष्ट होने की आशंका अधिक संचय के लिए प्रेरित करती रहती है, फिर भी नाशवान चीजों का नाश होता ही है।

ऋषि चिन्तन पुस्तक मे से

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! लगन आदमी के अंदर हो तो सौ गुना काम करा लेती है। इतना काम करा लेती है कि हमारे काम को देखकर आपको आश्चर्य होगा। इतना साहित्य लिखने से लेकर इतना बड़ा संगठन खड़ा करने तक और इतनी बड़ी क्रांति करने से लेकर के इतने आश्रम बनाने तक जो काम शुरू किए हैं वे कैसे हो गए? यह लगन और श्रम है।

यदि हमने श्रम से जी चुराया होता तो उसी तरीके से घटिया आदमी होकर के रह जाते जैसे कि अपना पेट पालना ही जिनके लिए मुश्किल हो जाता है। चोरी से, ठगी से, चालाकी से जहाँ कहीं भी मिलता पेट भरने के लिए, कपड़े पहनने के लिए और अपना मौज-शौक पूरा करने के लिए पैसा इकट्ठा करते रहते, पर हमारा यह बड़ा काम संभव न हो पाता।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! लोभों के झोंके, मोहों के झोंके, नामवरी के झोंके, यश के झोंके, दबाव के झोंके ऐसे हैं कि आदमी को लम्बी राह पर चलने के लिए मजबूर कर देते हैं और कहाँ से कहाँ घसीट ले जाते हैं। हमको भी घसीट ले गए होते। ये सामान्य आदमियों को घसीट ले जाते हैं। बहुत से व्यक्तियों में जो सिद्धांतवाद की राह पर चले इन्हीं के कारण भटक कर कहाँ से कहाँ जा पहुँचे।

आप भटकना मत। आपको जब कभी भटकन आए तो आप अपने उस दिन की उस समय की मनःस्थिति को याद कर लेना जबकि आपके भीतर से श्रद्धा का एक अंकुर उगा था। उसी बात को याद रखना कि परिश्रम करने के प्रति जो हमारी उमंग और तरंग होनी चाहिए उसमें कमी तो नहीं आ रही।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! साहस ने हमें पुकारा है। समय ने, युग ने, कर्त्तव्य ने, उत्तरदायित्व ने, विवेक ने पौरुष ने हमें पुकारा है। यह पुकार अनसुनी न की जा सकेगी। आत्म निर्माण के लिए, नव-निर्माण के लिए हम काँटों से भरे रास्तों का स्वागत करेंगे और आगे बढ़ेंगे। लोग क्या कहते हैं और क्या करते हैं, इसकी चिंता कौन करे। अपनी आत्मा ही मार्गदर्शन के लिए पर्याप्त है। लोग अंधेरे में भटकते हैं, भटकते रहें। हम अपने विवेक के प्रकाश का अवलंबन कर स्वतः आगे बढ़ेंगे। कौन विरोध करता है, कौन समर्थन? इसकी गणना कौन करे। अपनी अंतरात्मा, अपना साहस अपने साथ है और हम वही करेंगे जो करना अपने जैसे सजग व्यक्ति के लिए उचित और उपयुक्त है।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! भगवान के दो हाथ हैं। एक हाथ से वह पीड़ित होकर के माँगता है, पतित होकर के माँगता है। आप पतितों की सहायता कीजिए, पीड़ितों की सहायता कीजिए। पीड़ितों की और पतितों की आप सहायता न करें तब? तब बेटे ! मुश्किल है। तब आपको भगवान मिल पाएगा? भगवान का अनुग्रह आपको मिल जाएगा? मैं सोचता हूँ कि तब भगवान आपको नहीं मिलना चाहिए, क्योंकि आपके अंदर न करुणा है, न आपके भीतर सदाशयता है। आपके भीतर तो केवल हवस काम करती है और इस हवस की आग में आप उन्हें भी जलाना चाहतें हैं, जिसमें आप जल गए; आपका परलोक जल गया; आप का ध्यान जल गया; आपका कुटुंब जल गया। अब कौन रह गया है? अब संतोषी माता और रह गई है और जो कोई भी रह गया है, उसे भी इसी नरक में जला डालिए अभागो! जिसमें कि आप जल रहे हैं। हवसों की आग, ख्वाहिशों की आग, वासनाओं की आग, तृष्णाओं की आग में संतोषी माता को भी भून डालिए। अरे अभागो! अपने आप को भूनिए, परंतु उनको तो अपनी जगह पर रहने दीजिए। क्या कीजिए? उदात्त जीवन, श्रेष्ठ जीवन, परोपकारी जीवन, शानदार जीवन, दूसरों के दुःखों में सम्मिलित होने वाला जीवन, संसार में सत्प्रवृत्तियों का संवर्द्धन करने वाला जीवन जिएँ। यही अध्यात्म है। यदि आपको यह सब आ गया तो आप निहाल हो जाएँगे।

आज का सद्चिंतन

मजबूत राष्ट्रनिर्माण के लिए सर्वप्रथम चरित्रवान नागरिकों को गढ़ने की आवश्यकता है। चरित्रवान नागरिक ही किसी राष्ट्र की बुनियाद से लेकर गुंबद तक के निर्माण में सहायक होते हैं। इसके लिए उनके अंदर पवित्र प्रेरणा जगानी होगी। प्रेरणाविहीन व्यक्ति मुरदे के समान होता है। शव का श्रृंगार करने के शरीर स्पंदित नहीं होता। शरीर स्पंदन के लिए प्राणतत्व आवश्यक है। प्राणशक्ति तभी सुरक्षित रह सकती है, जब साधना की जाएगी। इन प्राणशक्तिसंपन्न जीवंत नागरिकों से ही कोई राष्ट्र शक्तिवान एवं सामर्थ्यवान बन सकता है। जीवनी शक्ति के लिए चाहिए राष्ट्रमाता के प्रति अटूट, अखंड, अविचल, निष्ठा एवं भक्ति। राष्ट्र सुदृढ तभी होगा, जब ऐसे नागरिकों के मन मिलेंगे और ये मन तभी मिलेंगे, जब किसी निर्दिष्ट लक्ष्य पर केंद्रित होंगे।

राष्ट्र के वैभव के लिए भौतिक संपन्नता एवं उपलब्धियाँ आवश्यक हैं, परंतु राष्ट्र सुदृढ़ एवं मजबूत नहीं रहा तो यह संपदा-संपन्नता संकट और विनाश को न्योता देने लगती हैं। मजबूत राष्ट्र, विकसित राष्ट्र की परिकल्पना किसे अच्छी नहीं लगती, पर इस अच्छे लगने मात्र से राष्ट्रनिर्माण नहीं होता है। राष्ट्रनिर्माण के लिए पीढ़ियों को बलिदान करना पड़ता है। हमारे राष्ट्र की स्वतंत्रता इन्हीं बलिदानी परंपराओं का परिणाम है। राष्ट्र को समग्र रूप से समृद्ध और विकसित करने के लिए इसी बलिदानी मानसिकता तथा आध्यात्मिक तत्त्वों की आवश्यकता है। त्याग, बलिदान, समर्पण, निस्स्वार्थपरता, सेवा, क्षमा, सहिष्णुता, धैर्य, सहानुभूति, भ्रातृत्व, उदारता, दया, करुणा आदि गुणों का विकास करके अपने खोए राष्ट्र के आत्मसम्मान को हम फिर से प्राप्त कर सकते हैं।

दि-१७/०८/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! उपासना का मुख्य उद्देश्य है ईश्वर के सान्निध्य को प्राप्त करना। जप,तप,पूजा, अर्चा,ध्यान आदि जो कुछ भी किया जा रहा है, वह सब परमात्मा के लिये ही किया जा रहा है, ऐसा अनुभव किया जाना चाहिए। अनुभव करना चाहिये परमात्मा उसकी पूजा स्वीकार कर रहा है। वह उसकी प्रार्थना अथवा कीर्तन को सुन रहा है। इस प्रकार सच्ची भावना से की गयी उपासना चमत्कार की तरह फलवती होती है। ऐसी जीवंत उपासना व्यक्ति के जीवन पर एक स्थायी प्रभाव डालती है। जो उत्कृष्ट विचारों, निर्विकार स्वभाव तथा सत्कर्मों के रूप में परिलक्षित होता है। उपासना करता हुआ जो भी व्यक्ति गुण, कर्म,स्वभाव, एवं मन, वचन तथा कर्म से उत्कृष्ट नहीं बना तो यही मानना होगा, उसने उपासना की ही नहीं, केवल उपासना करने का नाटक किया है। उपासना के समय जितनी गहराई के साथ अपनी मानसिक भावना को परमात्मा के साथ संयोजित किया जायगा,वह अनुभव उतनी ही गहराई से जीवन में उतरेगा, वह स्थिर होता जायगा। ऐसी स्थिति आ जाने पर मनुष्य का आत्मोद्धार निश्चित है। उसके गुण,कर्म,स्वभाव परमात्मा जैसे पावन, उत्कृष्ट हो जायेंगे।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! उपासना का तात्पर्य अपने आपको महानता के आदर्श के अधिकाधिक निकट लाना तथा आग और ईंधन की तरह तादात्म्य स्थापित कर लेना है। साधना का तात्पर्य है संचित कुसंस्कारों और कषाय-कल्मषों की छाती पर चढ़ बैठना, उन्हें बेरहमी के साथ कुचल-मसल कर रख देना। इंद्रिय संयम, समय संयम, अर्थ संयम और विचार संयम की चतुर्विध तपश्चर्या के सहारे ही जीवन की वरिष्ठता उभरती है और उस आत्मबल का उदय होता है जिसे संसार का सबसे बड़ा सामर्थ्य स्त्रोत कहा जाता है। आराधना वह है जिसमें 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' की, 'वसुधैव कुटुंबकम्' की अनुभूति होती है। उपासना, साधना और आराधना का अवलंबन करके ही कोई वास्तविक आत्मिक प्रगति कर सका है। आत्मिक प्रगति का वास्तविक मार्ग एक ही है समूची जीवन-चर्या में उत्कृष्टता का समावेश। जिसने यह समझ लिए उसने अध्यात्म का सारतत्व समझ लिया।

दि-१९/०८/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो !चार आधार भावी युग निर्माण के मूलभूत आधार, तथ्य एवं आदर्श होंगे। इन्हीं सिद्धांतों पर व्यक्ति के अधिकार एवं कर्तव्य निर्धारित किए जाएंगे। प्रथा-परंपरा, कानून एवं आवरण इन्हीं सिद्धांत पर खड़े किए जाएंगे। ये आधार हैं-

(१) धन पर समाज का स्वामित्व-व्यक्तिगत संपदा का अंत, (२) जाति और लिंग के नाम पर बरती जाने वाली असमानता का अंत और मनुष्य मात्र के समान नागरिक अधिकारों की प्रतिष्ठापना, (३) विश्व बंधुत्व की मान्यता, प्रत्येक क्रिया-पद्धति में सहकारिता का, कौटुंबिकता की प्रवृत्ति का प्राधान्य। विश्व राष्ट्र की स्थापना, समस्त संसार का एक शासन, एक धर्म, एक संस्कृति, एक भाषा, एक आचार आदि एक्य सूत्रों का सार्वभौम प्रचलन, (४) व्यक्तिवाद का अंत, समूहवाद का उदय, अधिकार की उपेक्षा और कर्तव्य की निष्ठा-तत्परता, उदारता और सज्ञनता की मात्रानुसार मानवीय गरिमा का मूल्यांकन।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! इमारतों का सृजन सीधा-सादा सा होता है। पुल, सड़कों बाँधों का निर्माण निर्धारित नक्शे के आधार पर चलता रहता है। पर युगों के नव सृजन में अनेकानेक पेचीदगियाँ और कठिनाइयाँ आ उड़ेली हैं। कार्य का स्वरूप ही ऐसा है, जिसमें प्रवाह के उलटने के प्रयास, जूझने की विद्या ही प्रमुख बन जाती है। विचारक्रांति, युग परिवर्तन, जनमानस का परिष्कार ऐसे संकल्प हैं, जिनकी पूर्ति में प्रायःउन सभी से टकराना पड़ता है, जो अब तक स्वजन, संबंधी, हितैषी, निकटवर्ती एवं अपने प्रभाव क्षेत्र के अंतर्गत माने जाते थे। इसमें मार-काट न होने पर भी इसे भूतकाल में संपन्न हुए महाभारत के समतुल्य माना जा सकता है, भले ही उस टकराहट को दृश्य रूप में न देखा जा सकता हो।

आज अभिमन्यु जैसा साहस उन्हें भी अर्जित करना पड़ेगा, जो अवांछनीयता, मूढ़-मान्यता, लोभ-लिप्सा, संकीर्ण स्वार्थपरता और निकृष्ठता के व्यामोह को चीरकर नवसृजन का मार्ग बनाना चाहें।

दि-२१/०८/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! आत्म-निरीक्षण करके गुण, कर्म, स्वभाव में भरे हुये दोष दुर्गुणों को ढूंढा जा सकता है और उन्हें निरस्त करने का प्रयास आरम्भ किया जा सकता है। लोहे से लोहा कटता है और विचारों से विचारों की काट की जाती है। हेय आदतें, इच्छायें और मान्यतायें जो अपने मनः क्षेत्र में जड़ जमाये बैठी हों, उन्हें आत्म- निरीक्षण की टार्च जलाकर बारीकी से तलाश करना चाहिए और निश्चय करना चाहिए कि उनका उन्मूलन करके ही रहेंगे। प्रत्येक निकृष्ट विचार के विरोधी विचारों की एक सुसज्जित सेना खड़ी करनी चाहिए।

वाङ्मय-पृष्ठ-46.1.68

दि-२२/०८/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! आस्तिकता सच्ची शक्ति, सच्चा जीवन तथा सच्चा धर्म है। रामायण में श्रद्धा को भवानी और शिव को विश्वास की उपमा दी है और कहा है कि इन दोनों के बिना हृदय में विराजमान होते हुए भी इष्ट देव का दर्शन, अनुग्रह नहीं होता। इससे प्रकट है कि जितनी किसी देवता या मंत्र में शक्ति है उसकी तुलना में सघन श्रद्धा किसी प्रकार कम नहीं पड़ती। किसी कार्य की गरिमा के प्रति श्रद्धा रखते हुए सच्चे मन और पूरे परिश्रम के साथ जुट जाना सफलता का सुनिश्चित पथ प्रशस्त करना है। शरीर में सत्कर्म, मन में सद्विचार और अन्तःकरण में सदभाव की प्रेरक शक्ति को गायत्री कह सकते हैं। कुंडलिनी आद्यशक्ति है। कुशल गुरु के मार्गदर्शन में संभव हुए उसके उत्थान से ईश्वर दर्शन, आत्मबल जैसी जिज्ञासाएँ तो शांत होती ही हैं; शरीर, मन, प्राण और भावनाओं में ऐसे उच्चस्तरीय परिवर्तन होते हैं कि व्यक्ति साधारण न रहकर असाधारण स्तर का बन जाता है। वह नाना प्रकार की सिद्धियों और विभूतियों का स्वामी हो जाता है। उसकी बात लोग ध्यान से सुनते हैं। उसकी वाड़ी में ओज और चेहरे पर तेज आ जाता है। उसके हर कार्य में सुन्दरता और सुव्यवस्था झलकने लगती है।

अखण्ड ज्योति-२००४

दि-२३/०८/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! अभागों की दुनियाँ अलग है और सौभाग्यवानों की अलग। अभागे जिस-तिस प्रकार लालच को पोषते, अविवेकी प्रजनन में निरत रहकर कमर तोड़ने वाला बोझ लादते, व्यामोह में तथाकथित अपनों को कुसंस्कारी बनाते, अपव्ययी, असंयमी रहकर दुर्व्यसनों के शिकार बनते, अहंता के परिपोषण में समय बिताते हैं। रोते-कलपते, खीजते-खिजाते, डरते-डराते, छेड़ते-पीटते लोगों के ठट्ठ के ठट्ठ हर गली चौराहों पर खड़े देखे जा सकते हैं। इन्हीं दुर्दशाग्रस्तों की भीड़ में जा घुसना समझदारी कहाँ है?

भगवान किसी को उच्च शिक्षा से वंचित भले ही रखे पर इतनी समझ तो दे कि हित-अनहित में अंतर करना आए। भले ही शूर-वीर योद्धा बनने का श्रेय किसी को न मिले पर इतनी सूझ-बूझ तो रहे कि मनुष्य जीवन बहुमूल्य है और उसे सार्थक बनाने के लिए भीड़ के साथ न चलने और अपना रास्ता आप चुनने जितना विवेक तो चाहिए ही।

युग धर्म पृष्ठ नं-८

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! इन दिनों जागृत आत्माओं की पीठ पर उदबोधनों के चाबुक इसीलिए जमाए जा रहे हैं कि अवसर को टालने के लिए वे वास्तविक,अवास्तविक बहानों की आड़ न लें। समय किसी की प्रतीक्षा करने वाला नहीं है।अवसर चूकने वाले यों सदा ही पछताते हैं, पर यह अलभ्य अवसर ऐसा है जिससे मात्र जागृतात्माओं को ही पछताना पड़ेगा।अनगढ़, प्रसुप्त, अबोध, असमर्थ, अपंग, असहाय तो करुणा के पात्र होने के कारण क्षम्य भी समझे जाते हैं, किंतु समर्थ और प्रखर व्यक्ति जब आपत्तिकाल आने पर भी मुँह छिपाते दुम दबाते हैं तो स्थिति दूसरी ही होती है। युग धर्म के निर्वाह में हर किसी को बाधित नहीं किया जा सकता किंतु जागृत आत्माएँ तो एक प्रकार से अनिवार्य बाधित हैं।

भीतर के महान को जगाना चाहिए और अपने विवेक के सहारे अपने पैरों पर चलने के लिए कटिबद्ध हो जाना चाहिए।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! इक्कीसवीं सदी रूपी गंगावतरण को उन भगीरथों की आवश्यकता है, जो सूखे पड़े विशाल क्षेत्र की प्यास बुझाने के लिए राजपाट का व्यामोह छोड़कर तप-साधना का मार्ग अपनाने का असाधारण साहस दिखा सकें।

जिनका साहस उभरे, उन्हें करना इतना भर है कि अपनी पहुँच से प्रज्ञा पुत्रों को महाकाल की चुनौती से अवगत कराएँ और युग धर्म के परिपालन में वरिष्ठों को क्या करने के लिए बाधित होना पड़ता है, इसका स्वरूप समझाते हुए उन्हें नए सिरे से नई उमंगों का धनी बना सकने की स्थिति उत्पन्न करें। अपना परिवार इतना बड़ा, इतना समर्थ और इतना प्रबुद्ध है कि उस परिवार के लोग ही नव सृजन में जुट सकें, तो असंख्य-अनेक को अपना सहयोगी बनाने में निश्चित रूप से सफल हो सकते हैं। उतने भर से वह गति चक्र घूमने लगेगा जो नया इन्सान बनाने, नया संसार बसाने की युग चेतना को समुचित सहयोग दे सकें।

दिनाँक-२६/०८/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! साधना का प्रयोजन अपने भीतर की महानता को विकसित करना ही है। बाहर व्यापक क्षेत्र में भी देव शक्तियाँ विद्यमान हैं। पर उनके लिए समष्टि विश्व की देखभाल का विस्तृत कार्य क्षेत्र नियत रहता है। व्यक्ति की भूमिका के अनुरूप प्रतिक्रिया उत्पन्न करने-सफलता और वरदान देने का कार्य उनके वे अंश ही पूरा करते हैं जो बीज रूप में हर व्यक्ति के भीतर विद्यमान है। सूर्य का अंश आँख में मौजूद है। यदि आँखें सही हों तो ही विराट् सूर्य के प्रकाश से लाभ उठाया जा सकता है। अपने कान ठीक हों तो ही बाहर के ध्वनि प्रवाह की कुछ उपयोगिता है। इसी प्रकार अपने भीतर के हेय बीज यदि विकसित परिष्कृत हों तो उनके माध्यम से विश्वव्यापी देवतत्वों के साथ सम्बन्ध जोड़ना आकर्षित करना और उनका सहयोग अनुग्रह प्राप्त कर सकना सम्भव हो सकता है।

वांङमय-१५-पृष्ठ नं-५.१६

दिनाँक-२७/०८/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! मन, लोभ, मोह के विचारों, वासना-तृष्णा के धमाचौकड़ी से खाली रहे तो मनुष्य प्रतिभावान, तेजस्वी एवं अग्रगामी महामानवों में गिना जा सकने योग्य तानाबाना बुन सकता है। ऐसे व्यक्ति साधारण परिस्थितियों में भी, साधनों और सहयोगियों का अभाव होते हुए भी अपने व्यक्तिगत चुम्बकत्त्व द्वारा जो आवश्यक है उसे निखिल ब्रह्माण्ड में से अपने लिए खींच बुलाते हैं। ऐसे तेजस्वी व्यक्ति अपने बलबूते आगे बढ़ते हैं और बाँस की तरह झुरमुट बनाते हुए असाधारण ऊँचाई तक जा पहुँचते हैं। यह उनकी आन्तरिक जीवट का प्रतिफल है। इसी को कुण्डलिनी कहते हैं। इसके जाग्रत होने पर मनुष्य निर्भय और निश्चयी बन जाता और कठिनाई, समस्याओं और आक्रमणों के विरुद्ध इस प्रकार लोहा लेता है मानो उसे खेल के मैदान में कला-कौशल भर दिखाना है।

वांङ्मय-१५-पृष्ठ नं-५.३०

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! पुलिस का सिपाही अपना 'सिम्बाल' पहने रहता है, उसके कमर में एक पेटी बँधी रहती है और उसके ऊपर लगा रहता है एक पीतल का बिल्ला। उस पीतल के बिल्ले पर क्या लिखा रहता है? 'यू.पी.पी.' लिखा रहता है। पहले अँग्रेजी में लिखा रहता था और अब हिन्दी में लिखा रहता है। उत्तर प्रदेश पुलिस-'उ.प्र.पु.'। मध्यप्रदेश में-'म.प्र.पु.' लिखा रहता है। पीतल का बिल्ला न हो किसी के पास तो समझ लीजिए कि वह सिपाही नहीं है और कमर में पेटी बँधी हुई न हो तो समझ लीजिए कि वह पुलिस का सिपाही नहीं है। सिपाही को कमर में पेटी बाँधनी चाहिए।

जब कभी किसी का फौज में कोर्टमार्शल होता है तो सबसे पहला यह काम किया जाता है कि उसकी पेटी उतार ली जाती है, उसका बिल्ला उतार लिया जाता है उसको 'क्रिमिनल' मान लिया जाता है तथा उसको लाइन में खड़ा किया जाता है फिर उसका कोर्टमार्शल किया जाता है और यह कहा जाता है तुम हमारी इज्जत मत खराब करो। पेटी की इज्जत-राष्ट्र की इज्जत है। तुमने ऐसे खराब काम किए हैं, इसलिए सबसे पहले तुमको यह सजा दी जाएगी कि तुम्हारी पेटी और तुम्हारा बिल्ला हम जब्त कर लेते है। पुलिस में भी यही होता है और फौज में भी यही होता है। हमारा बिल्ला जब्त किया या नहीं किया, हम पुलिस के सिपाही हैं कि नहीं, हम फौज के सिपाही हैं कि नहीं, हम हिन्दू धर्म के सिपाही हैं कि नहीं, हम हिन्दू धर्म के दीक्षित हैं कि नहीं, इसकी पहचान आपके शिखा और सूत्र (जनेऊ) से होती है। अगर आप हिन्दु धर्म में दीक्षित हैं तो लाइए वह निशान आपके कंधे पर 'यू.पी.पी.' लिखा हुआ है कि नहीं और कमर में पेटी बँधी हुई हैं कि नहीं और अगर आपकी पेटी छीन ली किसी ने तो आपको यह कहना पड़ेगा कि पुलिस में से हमें बर्खास्त कर दिया गया-फौज में से बर्खास्त कर दिया गया और हमारा कोर्टमार्शल किया गया। अगर आप का बिल्ला छीन लिया गया, पेटी छीन ली गई हो तो फिर इसका मतलब यह होगा कि आपको हिन्दू धर्म में से बर्खास्त कर दिया गया। हिन्दू धर्म से कोई और धर्म होगा आपका।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! श्रावणी पर्व की अतीत कथाएँ जो भाव दरसाती हैं, उनसे यही स्पष्ट होता है कि पुरातनकाल में ब्रह्मबल संपन्न ब्राह्मण राष्ट्र के नेता होते थे। जन-जीवन को सन्मार्ग पर चलाना उनका कर्त्तव्य था। आसुरी विचारों एवं प्रवृत्तियों से रक्षा करने की जिम्मेदारी उन्हीं की थी। 'वयम् राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः' का व्रत धारण किए हुए ये पुरोहित-आचार्यगण अपने यजमानों को श्रावणी पर्व के पावन अवसर पर रक्षासूत्र बाँधते हुए अपने संकल्प को स्मरण करते थे कि मनुष्यता को उँचा उठाने के लिए उन्हें क्या करना है, यदि एक वर्ष में उनके कार्यों में कोई शिथिलता आ गई हो, तो उसे दूर करके पुनः जाग्रत होना है। इन ब्रह्मवेत्ता ब्राह्मणों का कार्य तप के उच्चतम मानदंडों को अपने जीवन में धारण करते हुए सदा-सर्वदा जनकल्याण में निरत रहना था।

श्रावणी पर्व का दिन भाई-बहिनों के पवित्र स्नेह-सूत्र के प्रतीक रक्षाबंधन से भी जुड़ा हुआ है। इसके प्रचलन में आने के विषय में एक किंवदंती बहुश्रुत है कि जब भगवान् श्रीकृष्ण के हाथ में चोट लगी थी तब द्रौपदी ने अपने वस्त्र को फाड़कर उनके हाथ में बाँधा था और ऐसे समय में श्रीकृष्ण ने द्रौपदी को विपत्ति के समय रक्षा का वचन दिया था। कौरव-सभा में चीरहरण के समय द्रौपदी की लाज बचाकर श्रीकृष्ण ने अपना यही वचन निभाया था।

मनुष्य जीवन की खुशहाली एवं स्थायी प्रगति के लिए प्रकृति-संतुलन एवं इसके लिए हरीतिमा-संवर्द्धन के विषय में हमारे ऋषि, पूर्वज भलीभाँति परिचित थे। अतः वृक्षारोपण पर वे बहुत जोर देते थे। वृक्ष-वनस्पतियाँ भी मनुष्य की ही तरह पृथ्वी के पुत्र हैं। वस्तुतः स्वास्थवर्द्धक एवं वायुमंडल शोधक गुणों के कारण हरीतिमा की भूमिका अद्वितीय है। श्रावणी पर्व वृक्षारोपण के इसी शुभ प्रयोजन की याद दिलाकर इसको क्रियान्वित करने की प्रेरणा देता है।

इस तरह श्रावणी के पुण्य पर्व का पावन दिवस प्रायश्चित पर्व के रूप में आत्मिक विकास-ऋषित्व के अभिवर्द्धन, रक्षाबंधन के रूप में नारी-अस्मिता एवं संस्कृति-पूजा और हरितिमा-संवर्द्धन के रूप में पर्यावरण-रक्षा का संदेश देते हुए जीवन के आंतरिक एवं बाह्य दोनों मोरचों पर सक्रिय होने का संदेश देता है।

परम पूज्य गुरुदेव

दिनाँक-३०/०८/२००७

आज का सद्चिंतन

परम पूज्य गुरुदेव

आज का सद्‌चिंतन

मित्रो ! भीष्म ने मृत्यु को धमकाया था कि जब तक सूर्य उत्तरायण न आए, तब तक इस ओर पैर न धरना। सावित्री ने यमराज के भैंसे की पूँछ पकड़कर उसे रोक लिया था और सत्यवान के प्राण वापस करने के लिए बाध्य किया था। अर्जुन ने पैना तीर चलाकर पाताल-गंगा की धार ऊपर निकाली थी और भीष्म की इच्छानुसार उनकी प्यास बुझाई थी। राणा सांगा के शरीर में अस्सी घाव लगे थे, फिर भी वे पीड़ा की परवाह न करते हुए अंतिम साँस रहने तक युद्ध में जूझते ही रहे थे। बड़े काम बड़े व्यक्तित्वों से ही बन पड़ते हैं। भारी वजन उठाने में हाथी जैसे सशक्त ही काम आते हैं, बकरों और गधों से उतना बन नहीं पड़ता; भले ही वे कल्पना करते, मन ललचाते या डींगे हाँकते रहें।

प्रतिभा जिधर भी मुड़ती है, उधर ही बुलडोजरों की तरह मैदान सफा करती चलती है। सर्वविदित है कि यूरोप के विश्वविजयी पहलवान सैंडो किशोर अवस्था तक अनेक बीमारियों से घिरे, दुर्बल काया लिए फिरते थे, पर जब उन्होंने समर्थ तत्वावधान में स्वास्थ्य का नए सिरे से संचालन और बढ़ाना शुरु किया तो कुछ समय में विश्वविजयी स्तर के पहलवान बन गए। भारत के चंदगीराम पहलवान के बारे में अनेकों ने सुना है कि वह हिंदकेसरी के नाम से प्रसिद्ध हुए थे। पहले वह अन्यमनस्क स्थिति में अध्यापकी से रोटी कमाने वाले क्षीणकाय व्यक्ति थे। उन्होंने अपने मनोबल से ही नई रीति-नीति अपनाई और खोई हुई सेहत नए सिरे से न केवल पाई वरन् इतनी बढ़ाई कि हिंदकेसरी उपाधि से विभूषित हुए।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! प्रार्थना से हमारे हृदय के कलुष ही दूर नहीं होते हैं, परमात्मा के प्यार का असीम आनंद भी मिलता है। हाँ, यदि प्रार्थना करने के लिए खड़े होते समय मन में किसी के लिए विरोध आए, किसी का अपराध स्मरण हो तो उसे प्रार्थना करने से पूर्व क्षमा कर देना चाहिए। अगर तुम ऐसा नहीं करते तो मन का विरोध और आत्मा का द्वेष, प्रार्थना के शब्द दूषित कर देंगे।

सब के दोष-दुर्गुण भूल कर सब की सेवा और उन्नति करना भी प्रार्थना है। यह प्रार्थना उन सब प्रार्थनाओं से अच्छी है, जिसमें भगवान का नाम तो है, पर अंतःकरण की पवित्रता न रहे। प्रार्थना का बीज पवित्रता की ही भूमि पर अच्छी तरह अंकुरित, पुष्पित और पल्लवित होता है। उसी में अच्छे फल लगते हैं, उसी से मनुष्य को प्रार्थना का आनंद मिलता है।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! नये युग की रचना के लिए अब ऐसे व्यक्तित्वों की ही आवश्यकता है, जो वाचालता और प्रचार-प्रसार से दूर रहकर अपने जीवनों को प्रखर एवं तेजस्वी बनाकर अनुकरणीय आदर्श उपस्थित करें। आदर्शों पर जिनकी निष्ठा नहीं है, ऐसे ओछे लोग न तो अपने को विकसित कर सकते हैं और न शान्तिपूर्ण सज्जनता की जिन्दगी ही जी सकते हैं, फिर इनसे युग निर्माण के उपयुक्त उत्कृष्ट चरित्र उत्पन्न करने की आशा कैसे की जाए? आदर्शवादी व्यक्तियों के बिना दिव्य समाज की भव्य रचना का स्वप्न साकार कैसे होगा? जरूरत उन लोगों की है, जो अपनी आस्था की सच्चाई प्रमाणित करने के लिए बड़ी से बड़ी परीक्षा का उत्साहपूर्ण स्वागत करें।

आज का सद्चिंतन

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! बुड्ढे आदमी भूतकाल या वर्णन करते हैं। बच्चे भविष्य की बात सोचते हैं, लेकिन जवान आदमी वर्तमान की बात सोचते हैं। आपको वर्तमान याद करना चाहिए कि आज का दिन आप किस तरीके से बेहतरीन बना सकते हैं। अगर यह विचार आपके जी में आ जाए तो मैं आप से यह कहूँगा कि आप स्वर्ग में निवास करने वाले आदमी हैं। भविष्य की क्यों अनावश्यक कल्पनाएँ आप करेंगे? योजनाएँ बना लीजिए, इसमें कोई हर्ज नहीं, लेकिन 'महत्त्वकांक्षा' बात अलग है, योजना की बात अलग है। आपको एम.ए.करना है तो आप स्कीम बनाइए। नहीं साहब! एम.ए.नहीं हुए तो मर जाएँगे, नाक कट जाएगी, बात बिगड़ जाएगी। क्या बात बिगड़ जाएगी? दुनिया में ऐसे भी हैं, जो ज्यादा पढ़े नहीं हैं। आप मैट्रिक पास रहेंगे तो क्या आफत आ जाएगी? नहीं साहब! हमारा ये हो जाएगा, हमारा वह हो जाएगा। आप अगर ऐसे ही विचार करते रहेंगे तो मैं आपको नरकगामी कहूँगा।

मित्रों ! स्वर्ग में रहने वाले अपने वर्तमान का ध्यान करते हैं, भविष्य की तैयारी करते हैं, भूतकाल को भूल जाते हैं और खिलाड़ी की तरह जिंदगी जीते हैं।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! हमारे राष्ट्र की सर्वोपरी विशेषता है-सर्वधर्म समभाव, एकता, अखंडता एवं शांति। इस राष्ट्र ने आज तक कभी भी किसी राष्ट्र पर पहले आक्रमण नहीं किया है। भारत और भारतीय सदा सर्वदा से शांति के संदेश वाहक माने जाते रहे हैं, परंतु किसी के दबाव या बरगलाने से ये नौजवान अगर बारूद के चलते-फिरते यंत्र बन जाएँगे तो हमारी आस्था, विश्वास एवं सांस्कृतिक प्रतीक और प्रतिमानों का क्या होगा?

संसद पर हमला हो या फिर अक्षरधाम मंदिर पर, अयोध्या में आतंकी वारदातें हुई हों, चाहे वाराणसी के संकटमोचन मंदिर पर या दिल्ली, हैदराबाद, बैंगलूर के प्रतिष्ठानों पर या फिर कश्मीर में हो रहे आए दिन धमाके। ये सभी यही दरशाते हैं कि हम भी कहीं न कहीं इसके लिए जिम्मेदार हैं। बाहर के आतंकवादी आते हैं और बरबाद करके चले जाते हैं। यह हमारे बीच किसी के सहयोग एवं संरक्षण के बिना कैसे संभव हो सकता है? आतंकवाद हमें और हमारे राष्ट्र को बाँटना चाहता है। ध्यान रहे, हमें इनके खतरनाक मंसूबों को जड़ से उखाड़ फेकना है। हमें केवल अपने राष्ट्र के प्रति उन जिम्मेदारियों को याद करना है, जिन्हें कि हमारे शहीदों, रणबाँकुरों ने उठाया था और हमें आजादी दी थी, वरना आज भी हम किसी के गुलाम बनकर रहते होते। हमें हर कीमत पर अपने राष्ट्र को बचाए रखना है, बाहरी एवं भीतरी आघातों से इसकी रक्षा करना है।

आज हिंदुस्तान और हर हिंदुस्तानी की परीक्षा की घड़ी है। आज की चुनौती बाहरी जितनी है, उससे कहीं अधिक भीतर की है। इसे स्वीकारना होगा और फिर से राष्ट्रहित में कुरबानी देनी होगी। हमारे नवयुवकों को आह्वान है कि फिर से अपनी समझदारी, सूझ-बूझ और यहाँ तक कि प्राणोत्सर्ग करके भी अपने राष्ट्र को बचाना है। समस्त विश्व को अजस्त्र अनुदान देने वाले इस राष्ट्र की प्रतिष्ठा को फिर से प्रतिष्ठित करना है।

आज का सद्चिंतन

आज का सद्चिंतन

मित्रों ! 'प्रेरणा' एक जादू की छड़ी है, यह बिजली है। सफलता और सौभाग्य की कुंजी है। उन्नति की सारी शक्ति उसमें छिपी हुई है। जिस ओर मनुष्य की लगन लग जाए उस ओर की कठिनाइयों का जंजाल थोड़े ही समय में साफ हो जाता है। मूर्ख को बुद्धिमान, बीमार को पहलवान, निर्धन को धनी, अभागे को सौभाग्यवान्, तुच्छ को महान्, गुणहीन को गुणवान, पतित को समुन्नत बनाने की सामर्थ्य 'प्रेरणा' में ही है। जिस दिशा में मनुष्य पूरी स्फूर्ति, अभिलाषा, दृढ़ता, लगन और बुद्धिमता के साथ चल पड़े तो उस दिशा में सफलता प्राप्त करने से उसे कोई रोक नहीं सकता। जब बिखरी हुई शक्तियाँ एकत्रित और सोई हुई शक्तियाँ जागृत होकर दृढ़तापूर्वक अग्रगामी होती हैं, तो पर्वत के समान कठिन कार्यों को रज के समान तुच्छ बना देती हैं। शास्त्रकार ने कहा है-एक मनस्वी के लिए इस संसार में कुछ भी कमी नहीं है।

आज का सद्चिंतन

मित्रों ! संसार में दो प्रकार से आनन्द अनुभव किया जाता है (१) ख्याल से (२) माल से। दुनियाँ माल की मस्ती में मस्त है। संपति से सुख मिलता है, यह मान्यता लोगों के मस्तिष्क में घर कर गई है, इस अशुद्ध दृष्टिकोण के फेर में पड़कर वे संपति के आस-पास चक्कर काटते रहते हैं, वह भी मिल तो किसी विरले को ही पाती है, पर उसकी मृग-तृष्णा में सभी भटकते रहते हैं, यह बाल-बुद्धि मूढ़मति लोगों के लिए उपयुक्त हो सकती है। गायत्री के साधक से बुद्धिमान होने का आशा की जाती है। वह प्रौढ़, परिपक्व, शुद्ध विचारों का होना चाहिए। तदनुसार उसे यह सद्विचारों की, ज्ञान की मस्ती में मस्त होने का मार्ग अपनाना चाहिए।

आज का सद्चिंतन

मित्रों ! हमारे भीतर देव और असुर दोनों का निवास है। दोनों में नित्य संघर्ष होता रहता है। गायत्री कहती है कि हम देव तत्व को विकसित करें, देवत्व को प्रोत्साहन दें, दैवी आत्म संकेतों का अनुसरण करें। यही कल्याणकारी संदेश 'देवस्य' शब्द में छिपा हुआ है।

असुरों को अहंकार और भोग प्रिय होते हैं। मनुष्यों को यश और संपदाओं की इच्छा रहती है। देवताओं को प्रेम, कला-भाव, सरसता, सेवा, परमार्थ एवं सात्विकता में रुचि होती है। जिसके स्वभाव में जो वृत्ति जितनी मात्रा में हैं, वह उतने ही अंश में असुर, मनुज या देव हैं। गायत्री कहती है कि हम अमरता को वरण करने का प्रयत्न करें।

आज का सद्चिंतन

मित्रों ! गायत्री मंत्र में इस महा शक्तिशाली जीवन-तत्त्व 'प्रेरणा' का रहस्य प्रकट किया गया है। इस मंत्र में भगवान से धन,वैभव, सुख,स्त्री, पुत्र, मकान, मोटर, विद्या, रूप आदि कुछ नहीं माँगा गया है। इन सब बातों को यहाँ तक कि अमृत,कल्पवृक्ष और पारस को भी छोड़कर केवल यह प्रार्थना की गई है कि हे भगवान ! आप हमें प्रेरणा दीजिए। हमारी बुद्धि को प्रेरित कीजिए। जब बुद्धि में प्रेरणा उत्पन्न हो गई तो सारे धन, वैभव पाँवों तले स्वयं ही लोटेंगे। यदि प्रेरणा नहीं है, तो कुबेर का खजाना पाकर भी आलसी लोग उसे गँवा देंगे। किसी से तेल, लकड़ी, आटा, सुई, साबुन, लोटा, टोपी, पुस्तक आदि दर्जनों छोटी-छोटी चीजें माँगने की अपेक्षा यदि एक सेर सोना माँग लिया जाए, तो वह अधिक उचित होगा। उस सोने से वह अधिक उचित होगा। उस सोने से यह सारी चीजें आसानी से खरीदी जा सकती हैं। भगवान यदि हमारी मलीनता, सुस्ती, काहिली हटाकर हमें प्रेरणाशील बना दें, तो इससे बड़ी संपत्ति भला और क्या हो सकती हैं? इसलिए गायत्री के 'प्रचोदयात्' शब्द में एक मात्र सद्‌बुद्धि को प्रेरित करने की याचना परमात्मा से की गई है।

आत्म-निरीक्षण करके हमें सूक्ष्म दृष्टि से यह विचार करना चाहिए कि कहीं हमारी प्रेरणा शक्ति निर्बल तो नहीं पड़ गई है। आशा, उत्साह, स्फूर्ति, लगन, कर्त्तव्यपरायणता, श्रमशीलता, चित्त की एकाग्रता में कमी तो नहीं आ गई है। इस क्षति की पूर्ति करने के लिए हमें प्रयत्नपूर्वक जुट जाना चाहिए, अपने स्वभाव में से ढीलपोल को हटाकर उसके स्थान पर चुस्ती को प्रतिष्ठित करना चाहिए।

आज का सद्चिंतन

मित्रों ! एक विलक्षणता गायत्री महामंत्र में यह है कि इसके अक्षर, शरीर एवं मनःतंत्र के मर्मकेंद्रों पर ऐसा प्रभाव छोड़ते हैं कि कठिनाइयों का निराकरण एवं समृद्धि-सुविधाओं का सहज संवर्द्धन बन पड़े। टाइपराइटर पर एक जगह कुंजी दबाई जाती है और दूसरी जगह संबद्ध अक्षर छप जाता है। बहिर्मन पर, विभिन्न स्थानों पर पड़ने वाला दबाव एवं कंठ के विभिन्न स्थानों पर विभिन्न शब्दों का उच्चारण अपना प्रभाव छोड़ता है और इन स्थानों पर पड़ा दबाव सूक्ष्म-शरीर के विभिन्न शक्ति-केन्द्रों को उद्वेलित-उत्तेजित करता है। योगशास्त्रों में षट्चक्रों,पंचकोशों, चौबीस ग्रंथियों, उपत्यिकाओं और सूक्ष्म नाड़ियों का विस्तारपूर्वक वर्णन है; उनके स्थान,स्वरूप के प्रतिफल आदि का भी विवेचन मिलता है; साथ ही यह भी बताया गया है कि इन शक्ति-केन्द्रों को जाग्रत कर लेने पर साधक उन विशेषताओं-विभूतियों से संपन्न हो जाता है।

आज का सद्‌चिंतन

मित्रों ! गायत्री को त्रिपदा कहा गया है। उसके तीन चरण हैं। उद्‌गम एक होते हुए भी साथ तीन दिशाधाराएँ जुड़ती हैं।

(१) सविता के भर्ग-तेजस् का वरण अर्थात् जीवन में ऊर्जा एवं आभा का बाहुल्य। अवांछनीयताओं से अंतःऊर्जा का टकराव। परिष्कृत प्रतिभा एवं शौर्य-साहस इसी का नाम है। गायत्री के नैष्ठिक साधक में यह प्रखर प्रतिभा इस स्तर की होनी चाहिए कि अनीति के आगे न सिर झुकाए और न झुककर कायरता के दबाव में कोई समझौता करे।

(२) दूसरा चरण है-देवत्व का वरण अर्थात् शालीनता को अपनाते हुए उदारचेता बने रहना, लेने की अपेक्षा देने की प्रकृति का परिपोषण करना, उस स्तर के व्यक्तित्व से जुड़ने वाली गौरव-गरिमा की अंतराल में अवधारणा करना। यही है देवत्व धीमहि।

(३) तीसरा सोपान है-'धियो यो नः प्रचोदयात् मात्र अपनी ही नहीं, अपने समूह, समाज व संसार में सद्‌बुद्धि की प्रेरणा उभारना-मेधा, प्रज्ञा,दूरदर्शी विवेकशीलता,नीर-क्षीर विवेक में निरत बुद्धिमत्ता।

यही है आध्यात्मिक त्रिवेणी-संगम, जिसमें अवगाहन करने पर मनुष्य असीम पुण्यफल का भागी बनता है। कौए से कोयल एवं बगुले से हंस बन जाने की उपमा जिस त्रिवेणी संगम के स्नान से दी जाती है, वह वस्तुतः आदर्शवादी साहसिकता, देवत्व की पक्षधर शालीनता एवं आदर्शवादिता को प्रमुखता देने वाली महाप्रज्ञा है। गायत्री का तत्वज्ञान समझने और स्वीकारने वाले में ये तीनों ही विशेषताएँ न केवल पाई जानी चाहिए वरन् उनका अनुपात निरंतर बढ़ते रहना चाहिए।

आज का सद्चिंतन

मित्रों ! ऑपरेशन करने से पूर्व औजारों को उबालना पड़ता है। सिनेमा घर में प्रवेश करने वालों के पास गेटपास होना चाहिए। पूजा-उपासना के कर्मकाण्डों की विधि अपनाने से पूर्व साधक की निजी जीवनचर्या उच्चकोटि की होनी चाहिए। प्राचीनकाल में यह तथ्य आध्यात्मविज्ञान में पहला चरण बढ़ाने वालों को भी समय से पूर्व जानने होते थे। लोग वर्णमाला सीखना अनावश्यक मानते हैं और एम. ए. का प्रमाण-पत्र झटकने की फिराक में फिरते हैं। समझा जाना चाहिए कि राजयोग के निर्माता महर्षि पतंजलि ने पहले यम और नियमों के परिपालन को प्रमुखता दी है, इसके बाद ही आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि आदि साधनात्मक प्रयोजनों की शिक्षा दी है। गायत्री मंत्र के साधकों को सर्वप्रथम सद्बुद्धि धारण करने एवं सत्कर्म अपनाने की प्रक्रिया अपनानी चाहिए। जब प्रथम कक्षा में उत्तीर्ण होने से सफलता मिल जाए, तब रेखागणित, बीजगणित ,व्याकरण आदि का अभ्यास करना चाहिए। आज की महती विडंबना यह है कि लोग विधि-विधान, कर्मकांडों व उच्चारणों को ही समग्र समझ बैठते हैं और उतने भर से ही यह अपेक्षा कर लेते हैं कि उन पर दैवी वरदान बरसने लगेंगे और सिद्धियाँ, विभूतियाँ बटोरने में सफलता मिल जाएगी। समझना चाहिए कि अध्यात्म-विद्या जादूगरी-बाजीगरी नहीं है। उनके पीछे व्यक्तित्व को उभारने, निखारने और उत्कृष्ट बनाने की अनिवार्य शर्त जुड़ी हुई है, जिसे प्रथम चरण में ही पूरा करना पड़ता है।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! मस्तिष्क विकृत, हृदय निष्ठुर, रक्त दूषित, पाचन अस्त-व्यस्त हो, शरीर के अंग-प्रत्यंगों में विषाणुओं की भरमार हो, तो फिर वस्त्राभूषण की भरमार, अगर-चंदन का लेपन और इत्र-फुलेल का मर्दन बेकार है। वस्त्र आभूषण जुटा देने और तकिए के नीचे स्वर्ण मुद्राओं की पोटली रख देने से भी कुछ काम न चलेगा। जबकि स्वस्थ, सुडौल होने कारण सुन्दर दीखने वाला शरीर गरीबी में भी हँसती-हँसाती जिंदगी जी लेता है, आए दिन सामने आती रहने वाली समस्याओं से भी निपट लेता है और किसी न किसी प्रकार, कहीं न कहीं से प्रगति के साधन जुटा लेता है। वस्तुतः महत्व साधनों या परिस्थियों का नहीं, व्यक्तिगत स्वस्थता, प्रतिभा और दूरदर्शिता का है। वह सब उपलब्ध रहे तो फिर, न अभावों की शिकायत करनी पड़ेगी और न जिस-तिस प्रकार के व्यवधान सामने आने पर भी अभ्युदय में कोई बाधा पड़ेगी।

''सादा जीवन-उच्च विचार'' का सिद्धांत अपनाते ही प्रस्तुत असंख्य समस्याओं में से एक के भी पैर न टिक सकेंगे। अपराधों की भरमार भी क्यों न हों, जब हर व्यक्ति ईमानदारी, समझदारी और बहादुरी की नीति अपनाकर श्रमशीलता, सभ्यता और सुसंस्कारिता को व्यावहारिक जीवन में स्थान देने लगेगा, तो देखते ही देखते समस्याओं के रूप में छाया अंधकार मिटता चला जाएगा।

आज का सद्चिंतन

मित्रों ! आँखों पर जिस रंग का चश्मा लगा लिया जाए, समस्त संसार उसी रंग का दीख पड़ता है। संसार के दृश्य कैसे ही क्यों न हों, पर यदि अपनी आँख की पुतली काम करना बंद कर दे, तो फिर सर्वत्र अंधकार ही दीख पड़ेगा। कान बहरे हो जाएँ तो कहीं किसी शब्द का अस्तित्व न रहेगा। अपने दृष्टिकोण के अनुरूप सारा वातावरण दीख पड़ता है। हर व्यक्ति का अपना संसार अलग से रचा हुआ है और वह उसी में विचरण करता है। स्वर्ग और नरक दोनों ही मात्र अनुभूतियाँ हैं, जिनको हर व्यक्ति इच्छानुसार अपने लिए विनिर्मित करता एवं बदलता रहता है।

यह संसार जड़ पदार्थों का बना है, उसमें भले-बुरे जैसा कहीं कुछ नहीं है। जड़ पदार्थों का अपना स्वरूप भर है। उनके सुख और दुःख की अनुभूति तो मनुष्य की खुद की गढ़ी हुई है। पाप-पुण्य पदार्थ तो कैसे करेंगे? उनका सदुपयोग, दुरुपयोग की पाप-पुण्य की अनुभूति गढ़ते हैं। इंजन कितना ही समर्थ या कीमती क्यों न हो, उसे चलाने की क्षमता तो सजीव मनुष्य में ही होती है। रेलगाड़ी अपने बलबूते किसी निर्दिष्ट लक्ष्य तक नहीं पहुँच सकती है। अधिक से अधिक कोई दुर्घटना करने की निमित्त भर बन सकती है। संसार भर का वातावरण जड़ पदार्थों से विनिर्मित होने के कारण अपने बलबूते कुछ भला बुरा नहीं कर सकता। सचेतन सत्ता का प्रत्यक्ष प्रतिनिधित्व करने वाला मनुष्य ही हर परिस्थिति के लिए पूरी तरह उत्तरदायी है।

आज का सद्चिंतन

मित्रों ! परमाणु मोटी दृष्टि से एक अत्यंत ही छोटा, अदृश्य स्तर का, प्रकृति का अत्यंत कनिष्ठ घटक मात्र मालूम पड़ता है। इतने पर भी वस्तुस्थिति यह है कि उसमें एक समूचे ग्रह पिण्ड जितनी शक्ति भरी पड़ी है। मनुष्य असंख्य परमाणुओं, जीवाणुओं, रसायनों विद्युत आवेशों का भंडार है। प्रायः साढ़े पाँच फुट ऊँचे, ६० किलोग्राम औसत भार के इस काय-कलेवर में संभवतः उतने ही गोलक हो सकते हैं, जितने कि इस समूचे ब्रह्मांड में तारे ग्रह-उपग्रह आदि हैं। इस समूची शक्ति का अनुमान लगाया और आँकलन किया जाए, तो उसे अकल्पनीय ही कहना होगा। एक औसत मनुष्य प्रायः उतना ही हो सकता है, जितना कि यह समूचा ब्रह्मांड प्रकृति संपदा से भरा पड़ा है।

ब्रह्मांड को 'महतो महीयान्' कहा गया है, पर पिण्ड को 'अणुरणियान'। यदि आकार की न्यूनाधिकता पर ध्यान न दिया जाए, तो मानवी सत्ता भी परमात्मा सत्ता के समतुल्य जा पहुँचती है। भगवान को जितने भी प्रमुख अवतार लेने पड़े हैं, वे सभी मनुष्य आकृति में ही हुए हैं। स्वर्गीय देवता अपनी जगह विराजमान हो सकते हैं, पर धरती पर देवताओं की भी कभी कमी नहीं रही। महामानवों के रूप में उनके अस्तित्व का परिचय समय-समय पर मिलता रहा। मनुष्य ही देव के स्वरूप में सृजन और दैत्य के रूप में ध्वंस के ऐसे कृत्य दिखाते रहे हैं, जिनकी विशालता और विभीषिका पर ध्यान देते ही दाँतों तले उँगली दबानी पड़ती है। क्षुद्रता का प्रतिनिधित्व करते हुए उन्हें इसी कारण देखा जाता है कि वह अपना वास्तविक स्वरूप भूल जाता है। यदि मनुष्य ''आत्म-बोध'' प्राप्त कर ले और समझ ले कि मैं कौन हूँ? और क्या कर सकता हूँ? तो समझना चाहिए कि उसे क्षुद्र से महान, नर से नारायण, पुरुष से पुरुषोत्तम बनने से कोई नहीं रोक सकता।

आज का सद्चिंतन

मित्रों ! करोड़ों व्यक्ति धर्म के नाम पर ढेरों पैसा, समय और श्रम खर्च करते हैं। यदि उनका विवेक-सम्मत और योजनाबद्ध उपयोग होने लगे, तो उनसे सरकारी विकास योजनाओं की अपेक्षा सौ गुना अधिक कार्य स्वेच्छापूर्वक हो सकता है। हर सोमवती अमावस्या पर गंगा स्नान करने प्रायः ५० लाख व्यक्ति आते हैं। हर व्यक्ति का समय तथा खर्च करने का औसत लगाया जाए, तो १० करोड़ होता है। ऐसी प्रायः ४-५ सोमवती हर साल पड़ती हैं। उनमें प्रायः ५० करोड़ रुपया तो यों ही गया। यदि यह पैसा गंगा में पड़ने वाले गंदे नाले कृषि कार्य के लिए मोड़ देने में लगाया जा सके, तो एक साल में गंगा माता की स्वच्छता और सिंचाई से करोड़ों की आमदनी बढ़ सकती है। ऐसा निर्माणात्मक नेतृत्व यदि धर्मतंत्र का विवेक रखने वालों ने किया होता, तो देश की स्थिति न जाने कहाँ पहुँच गई होती।

मंदिर-मठों में प्रायः खरबों की अचल संपत्ति लगी है। हर साल उनकी आय खरबों रुपया है। जनता जितना सरकारी टैक्स देती है, उससे कहीं अधिक यह स्वेच्छा अनुदान है। यदि यह पैसा रचनात्मक प्रवृत्तियों की ओर मोड़ा जा सके, तो उससे काया-कल्प जैसा परिवर्तन प्रस्तुत हो सकता है। कथा-सत्संगों के नाम पर जो कूड़ा-करकट जनता के दिमाग में भरा जाता है, उसके स्थान पर यदि सच्चे धर्म तत्त्व, अध्यात्म, नीति, सदाचार, कर्त्तव्यपरायणता और सामाजिकता का प्रशिक्षण बन पड़े, तो सोया हुआ भारतवर्ष एकाकी जग सकता है और आत्मनिर्माण ही नहीं, विश्व भर का नेतृत्व करने में समर्थ हो सकता है।

आज का सद्चिंतन

मित्रों ! राजनीति में सुधार के प्रयत्न किए जा रहे हैं, सो ठीक हैं, पर इससे अधिक ध्यान दिए जाने योग्य 'धर्म-नीति' है। परिवर्तन, सुधार राजनीति का कार्य नहीं, धर्मनीति का है। राजनीति कानून बना सकती है, परंतु अंदर की भ्रष्टता बनी रहे, तो कानून कभी सफल नहीं हो सकता। भीतर घुसी दुष्प्रवृत्तियों, स्वार्थों तथा अहमन्यताओं को धोना धर्म क्षेत्र का कार्य है। समाज में संव्याप्त दुष्प्रवृत्तियों, स्वार्थ से जुड़ी मान्यताओं व अहमन्यताजन्य विडंबनाओं से जूझना धर्मतंत्र का कर्त्तव्य है। जागरूक सुशिक्षित पुरोहित ही ऐसी स्थिति में राष्ट्र के लिए सचेतक की भूमिका निभा सकते हैं। युगों-युगों से यह दायित्व धर्मतंत्र के सूत्रधार ही उठाते रहे हैं। आज की परिस्थितियों में उन्हें अपने ऊपर छाई कलंक की तमिस्रा को मिटा कर युग नेतृत्व हेतु आगे आना होगा, समाज सेवा ही वास्तविक उपासना-आराधना है। जन जागरण से बढ़कर सामयिक समाज सेवा और नहीं हो सकती। जनशक्ति का दैत्य जब जाग उठेगा, तो विकृतियाँ स्वयंमेव नष्ट होती चली जाएँगी।

आज का सद्चिंतन

मित्रों ! भले और बुरे की, हानि और लाभ की, मित्र और शत्रु की, सच्चे और झूठे की पहचान केवल विवेक ही करा सकता है। आकर्षणों, प्रलोभनों, तृष्णाओं, विकारों, भ्रांतियों, खतरों से सावधान करके हमें पतन के गहरे गड्ढे में गिरने से बचाने की शक्ति केवल विवेक में ही है। विवेक हमारा सच्चा मित्र है। वह भूलें सुधारता है, मार्ग सुधारता है, उलझनें सुलझाता है, खतरे से बचाता है और सफलता की ओर अग्रसर करता है। ऐसे मित्र की आवश्यकता समझना, उससे प्रेम करना और उसे अधिक से अधिक आदर के साथ समीप रखना यह हमारे लिए सब प्रकार से कल्याणकारक हो सकता है।

गायत्री के 'धियो' शब्द का आदेश है कि हम विवेकवान बनें। विवेक को अपनाएँ, विवेक की कसौटी पर कसकर अपने विचार और कर्मों का निर्धारण करें। इस शिक्षा को स्वीकार करना, मानो अपनी जीवन दशाओं को शीतल शांतिदायक, मलय मारुत के लिए उन्मुक्त कर देना है।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! अग्नि का आविष्कार होने पर आदि काल में मनुष्य इस दैवी तत्व को पाकर बड़ा प्रसन्न हुआ, उसने अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए अग्नि को घृत, मेवा, मिष्ठान्न, पकवान, सुगंधित वनस्पतियों का भोजन कराने का विधान, यज्ञ आरंभ किया। समय के साथ उस पवित्र यज्ञ व्यवस्था में विकार आया और गौ,अश्व,नर आदि का वध करके हवन किया जाने लगा। इस विकृति को रोकने के लिए गौतम बुद्ध ने यज्ञों का खंडन किया। कालांतर में बुद्ध में भी विकार आए और उनका शंकराचार्य को खंडन करना पड़ा। शंकर मतानुयायी भी धीरे-धीरे शुष्क वेदांती मात्र रह गए, तब प्रेम और भावना को जागृत करने के लिए भक्ति मार्गी संतों ने वेदांत का विरोध करके भक्ति की ध्वजा फहराई। भक्ति में अंध-विश्वास आ गया, स्वामी दयानंद जी ने उसका भी खंडन किया। इस प्रकार देखते हैं कि एक आचार्य दूसरे का खंडन करता चला आ रहा है। जैसे एक समय का स्वादिष्ट भोजन कालांतर में विष्टा बन जाता है, वैसे ही एक समय की व्यवस्था कालांतर में जीर्ण-शीर्ण हो जाती है और उसका पुनरुद्धार करना पड़ता है। अपने-अपने समय का प्रत्येक शास्त्रकार सच्चा है, पर कालांतर में उनमें सुधार होना अवश्यंभावी है। देश काल का ध्यान न रखते हुए जब हम शास्त्रों को समकालीन मानकर चलते हैं, तब उनमें विरोध दिखाई पड़ता है, किंतु काल भेद और परिस्थिति भेद को ध्यान में रखते हैं तो सभी व्यवस्थाएँ सही मालूम पड़ती हैं।

आज का सद्चिंतन

मित्रों ! मनुष्य जीवन का सबसे बड़ा लाभ भगवान को प्राप्त करना है। मैं नहीं समझता कि इससे भी बड़ा कोई लाभ हो सकता है। असल में जितने भी लाभ हैं, जितनी भी क्षमताएँ हैं, जितनी भी सामर्थ्यें हैं, उन सबका केंद्र एक शक्ति का स्त्रोत है, जिसको हम भगवान कहते हैं। जनरेटर कहाँ लगे हुए हैं? यहाँ से बहुत दूर रुड़की के पास बहादराबाद पथरी नाम की जगह है, वहाँ बिजलीघर बने हुए हैं। यहाँ जो बत्तियाँ जल रहीं हैं, माइक चल रहे हैं, एम्प्लीफायर में से बोल रहे हैं, वह सारी बिजली वहीं से आ रही है। इसी तरह मनुष्य के पास जो भी चीज है, सारे के सारे विश्व में, जड़ में चेतना का जो चमत्कार है, वह भगवान का है। चेतना एक ही है, भगवान के पास। उसके अंश जितने भी हमारे पास आ जाते हैं- उसके हिसाब से हम मजबूत, ताकतवर, संपत्तिवान और ज्योतिर्वान बन जाते हैं। भगवान की क्षमताएँ जितनी हमारे भीतर कम होती हैं, उतने ही हम कमजोर बने रहते हैं, दुर्बल बने रहते हैं, दीन-दुर्बल बने रहते हैं। असहाय बने रहते हैं और जब ये क्षमताएँ हमारे भीतर पर्याप्त मात्रा में इकट्ठी हो जाती हैं, तब फिर हम देवपुरुष बन जाते हैं, फिर हम देवात्मा बन जाते हैं और तब अंत में हम भगवान हो जाते हैं।

आज का सद्चिंतन

आज का सद्चिंतन

मित्रों ! ईमानदारी और प्रामाणिकता ही किसी व्यक्ति का वजन बढ़ाती है। बेईमान, लफंगे, झूठे, ठग और चालाक व्यक्ति अपनी इज्जत खो बैठते हैं और फिर उनकी साधारण बातों पर भी कोई भरोसा नहीं करता। लोग यह भारी भूल करते हैं कि अपने दोष-दुर्गुणों के छिपे रहने की बात सोचते रहते हैं। यह सर्वथा असंभव है। पारा पचता नहीं। कोई खा ले तो शरीर में से फूट निकलता है। दुष्प्रवृत्तियाँ और दुर्भावनाएँ, पाप और कुकर्म, निकृष्टता और दुष्टता के जो भी तत्त्व अपने भीतर होंगे, उनके छिपे रहने की कोई संभावना नहीं है। पाप छत पर चढ़कर चिल्लाते हैं-यह उक्ति सोलहों आने सच है। मनुष्य की दुष्प्रवृत्तियाँ कोई प्रतिक्रिया उत्पन्न न करें, यह संभव नहीं। शाश्वत सत्य को झूठलाने का प्रयास न करना ही श्रेयस्कर है।

वाङमय-६६ पृ०१.२८

आज का सद्चिंतन

मित्रों ! अनीति को सहन न करने, किसी पर अनीति न होने देने की हिम्मत हर जीवित मनुष्य में होनी चाहिए। बहादुरी मानवता का एक आवश्यक अंग है। पौरुष संपन्न को ही पुरुष कहते हैं। शौर्य और साहस मनुष्य जीवन की अनिवार्य आवश्यकताएँ हैं। इनके बिना अन्न खाने और साँस लेने भर के लिए जीवित मनुष्य को एक प्रकार से मृतक या पतित ही कहा जा सकता है। कोई अवसर ऐसे होते हैं, जिनमें जोखिम उठाना भी गर्व और गौरव का कारण होता है। उद्दण्डता के अवरोध में जोखिम उठाकर आगे आना सत्साहस है, जिसकी प्रशंसा मूक मानवता का कण-कण करता रहेगा।

वाङ्मय-६६ पृ०१.४४

आज का सद्चिंतन

मित्रों ! दुष्प्रवृत्तियाँ जन्म-जन्मांतरों से संचित पशु प्रवृत्तियों के रूप में स्वभाव के साथ गुँथी रहती हैं। फिर निकटवर्ती लोग जिस राह पर चलते और जिस स्तर की गतिविधियाँ अपनाते हैं वे भी प्रभावित करती हैं और अपने साथ चलने के लिए ललचाती हैं।

इतना विवेक तो किन्हीं विरलों में ही पाया जाता है कि वे उचित-अनुचित का विचार करें, दूरवर्ती परिणामों का अनुमान लगाएँ और सन्मार्ग पर चलने के लिए बिना साथियों की प्रतीक्षा किए एकाकी चल पड़ने का साहस जुटाएँ। आमतौर से लोग प्रचलित ढर्रे पर चलते देखे गए हैं। पत्ते और धूलकण हवा के रुख के साथ उड़ने लगते हैं। दिशा बोध उन्हें कहाँ होता है। यही स्थिति लोक मानस के संबंध में भी कही जा सकती है। नीर-क्षीर की विवेक-बुद्धि तो कम दीख पड़ने वाले राजहंसों में ही होती है। अन्य पक्षी तो ऐसे ही कूड़ा-कचरा और कीड़े-मकोड़े खाते देखे गए हैं।

आज का सद्चिंतन मातृवाणी

बेटे ! अगर आप ये कहें कि गुरुजी के बाद क्या होगा? बेटे, गुरुजी का शरीर ही तो चला गया, लेकिन आत्मा तो उनकी यहीं विद्यमान है। मेरे पास भी है और सारे शांतिकुंज में भी विद्यमान है। आप जैसे पहले रहते थे, वैसे ही अब रहेंगे। क्यों साहब, माताजी जब आप नहीं रहेंगी, तो फिर हमारा क्या होगा? बेटे, आपसे हमारा वायदा है कि आपके लिए कोई घाटा होने वाला नहीं है। न तो पहनने का और खाने का, कोई भी घाटा होने वाला नहीं है। घाटा होगा तो केवल आपकी संकीर्णता का होगा। संकीर्ण आप रहेंगे, बुजदिल आप रहेंगे, कायर रहेंगे और जो आपका पहले संकल्प था, उस संकल्प को अगर आप तोड़ेंगे, तो कहीं के नहीं रहेंगे, दो कौड़ी के हो जाएँगे। जब हमें इसी मिट्टी में मिलना है, इसी में रहना है, इसी में मरना है, इसी में खपना है, तो अपना मनोबल बनाए रखना चाहिए। आप के लिए बेटे, हम इतना छोड़ जाएँगे और इतना गुरुजी छोड़ भी गए हैं कि आपका पेट पालन होता रहेगा।

महा प्रयाण दिवस पर विशेष

मातृसत्ता का विशेष संदेश

बेटे ! हमारा एक भी कार्यकर्त्ता भिखारी नहीं है, फिर से सुन लो। हमारा कार्यकर्त्ता त्यागी और तपस्वी की लाइन में आता है। भिखारी की लाइन में नहीं आता। हमें उन लोगों से नफरत है, जो हमारे बच्चों को भिखारी के रूप में देखें अथवा हमारे बच्चों की मनोभूमि में ऐसी बात पैदा हो, जो कि छोटे-छोटे उपहारों से उनका मनोबल गिरा दे। धिक्कार है ऐसे लोगों को और धिक्कार है ऐसी मनोभूमि को। कुछ दिन पहले लंदन की एक महिला मेरे पास आई और बोली, माताजी, मैं चाहती हूँ कि यहाँ सबको अमुक चीज बाँट दूँ। मैंने कहा, देवी नमस्कार है तेरे लिए। तू हमारे बच्चों का मनोबल मत गिरा। जो देना होगा अपने बच्चों को हम देंगे। हमने उन्हें सादगी सिखाई है। हमारे बच्चे भिखारी नहीं हैं। हमारे पास होगा तो देंगे अन्यथा हम नमक-रोटी खिलाएँगे। हमें नहीं चाहिए तेरा साग और नहीं चाहिए तेरी मेवा-मिठाई। तू ले जा और वहाँ कहीं देकर आ जहाँ कोढ़ी बैठे होंगे। तू इसे कोढ़ियों को, भिखारियों को बाँट आना।

नहीं साहब, और आश्रमों में तो होता है कि वहाँ जो सेठ जी आते हैं, सो कुछ-न-कुछ बाँटते हैं। पीछे-पीछे जैसे कुत्ता लगा फिरता है न मिठाई देखकर, इसी तरह से पीछे-पीछे लोग लगे रहते हैं, उनका जयकारे बोलते हैं। नहीं बेटी तू वहीं कहीं दे आना आश्रमों में, पर यहाँ तू मेरे बच्चों को गिराने तो मत आया कर। यहाँ मेरे बच्चों का मनोबल तो मत गिराए। मैं आप से भी निवेदन करती हूँ कि आप कभी स्वार्थपरता में, कभी लालच में मत फँसना। बेटे, कई बार हमारी मनोभूमि विचलित हो जाती है, पर सँभालो विचलित मत होने दो उसे। कई बार कुछ ऐसी चीजें देखकर के मन में लुभावनपन आ जाता है। आप ऐसा मत होने देना, नहीं तो हम दूसरों की आँखों में गिर जाएँगे। जो भगवान ने हमें दिया है, उसी में हम अपना संतोष व्यक्त करेंगे। बेटे, आप इसी तरीके से रहना।

हमारे सब बच्चे हमको बहुत प्रिय हैं। हम किसी को हटाना नहीं चाहते, किसी को भगाना नहीं चाहते, लेकिन गड़बड़ी होगी तो बेटे, उस सड़े टमाटर को हम फेंक भी देंगे, इसमें दो राय नहीं है। चाहे वह हमारा कितना ही विरोधी क्यों न हो जाए। हमें इसकी चिंता कुछ नहीं है। हमें तो उनका बनाया हुआ यह वंश आगे फैलाना है, इसे मजबूत बनाना है और विश्वव्यापी बनाना है।

आज का सद्चिंतन

मित्रों ! ''मनुष्य स्वयं ही अपना शत्रु है और स्वयं अपना मित्र है'', ''मन ही बंधन और मोक्ष का एकमात्र कारण है'', ''अपने आप को ऊँचा उठाओ, उसे गिराओ मत।'' एक आप्तपुरुष का कथन है-''मनुष्य की एक मुट्ठी में स्वर्ग और दूसरी में नरक है। यह अपने लिए इन दोनों में से किसी को भी खोल सकने में पूर्णतया स्वतंत्र है।''

मनःशास्त्र के विज्ञानी कहते हैं कि मनःस्थिति ही परिस्थितियों की जन्मदात्री है। मनुष्य जैसा सोचता है, वैसा ही करता है एवं वैसा ही बन जाता है। किए हुए भले-बुरे कर्म ही संकट एवं सौभाग्य बनकर सामने आते हैं। इसलिए परिस्थितियों की अनुकूलता और बाहरी सहायता प्राप्त करने की फिराक में फिरने की अपेक्षा यह हजार दर्जे अच्छा है कि भावना, मान्यता, आकांक्षा, विचारणा और गतिविधियों को परिष्कृत किया जाए। नया साहस जुटाकर नया कार्यक्रम बनाकर प्रयत्नरत हुआ जाए। बिना भटकाव का यही एक सुनिश्चित मार्ग है।

आज का सद्चिंतन

मित्रों ! अमृत पारस कल्पवृक्ष का जागरण :- जनसामान्य को केवल धारा से जोड़ने के लिए यंत्रवत् साधना भी करने दी जाय; किन्तु युगऋषि के निर्देश के अनुसार प्राणवानों-प्रगल्भों को गायत्री विद्या के गहन प्रयोग से अपने अन्दर अमृत, पारस एवं कल्पवृक्ष जाग्रत् करने के तत्त्वज्ञान को हृदयंगम कराया जाय।

अमृत :-सद्ज्ञान ही वह अमृत है, जिसे पाकर साधक स्वयं को अमर आत्म चेतना के रूप में अनुभव करने लगता है। फिर उसके सारे भय दूर हो जाते हैं और वह ईश्वर के अनुरूप न्यायनिष्ठ, नैतिक जीवन जीने के लिए अपने अंदर क्रमशः क्षमता बढ़ती अनुभव करता है।

साधना के अन्तर्गत जप-अनुष्ठान के साथ स्वाध्याय-अनुष्ठान भी जोड़े जायें, जप की संख्या भले ही कुछ कम कर दी जाय। जितना समय जप में लगता है उतना ही अथवा कम से कम उसका आधा समय 'स्वाध्याय-तप' में लगाने के संकल्प किए कराये जायें। पात्र के अनुरूप उन्हें गायत्री विद्या संबंधी सैट, क्रान्तिधर्मी साहित्य अथवा प्रज्ञा पुराण (प्रज्ञोपनिषद्) के स्वाध्याय के लिए कहा जाय। इससे अंतःकरण के ज्ञान के स्त्रोत जीवन्त हो उठेंगे। अमृत पान की प्रत्यक्ष अनुभूति होगी।

पारस :- गुरुवर ने प्रेम को पारस कहा है। प्रेम जिसे छुला दिया जाय, वही अपना बन जाता है। अपना बन गया, मतलब सोना बन गया। गुरुदेव ने इसे ही अपनी-अपनी उपासना माना है।

कल्पवृक्ष :- तप ही वह कल्पवृक्ष है, जिसकी छाया में, प्रभाव में आने से श्रेष्ठ कामनाएँ क्रमशः विचार बनती हैं, संकल्प में ढलती हैं और फलित होने लगतीं हैं। खिलाड़ी, संगीतकार, वैज्ञानिक से लेकर अध्यात्मवेत्ताओं को अपने-अपने ढंग से तपः साधना का वरण करना ही पड़ता है।

समय आ गया है कि हम अपनी साधना को उच्चस्तरीय बनायें। समय, प्रकृति, ऋषितंत्र, युगशक्ति सब हमारे सहयोग के लिए तैयार हैं। हमें अपने संकल्पों और प्रयासों का स्तर थोड़ा उन्नत करना है। जितना उन्नत हम इन्हें कर सकेंगे, उसी अनुपात में नयी शक्ति का संचार एवं अनुदानों का लाभ हम प्राप्त कर सकेंगे।

आज का सद्चिंतन

मित्रों ! अवांछनीयता एवं दुष्प्रवृत्तियों के विरुद्ध संघर्ष व्यापक रुप से खड़ा किया जाये। हम भर्त्सना अभियान चलाएँ। दुष्टता को रोकने, हटाने, मिटाने के लिये विरोध, असहयोग, सत्याग्रह, धरना या विरोध के सभी हथियार काम में लायें जो स्वतंत्रता आंदोलन के दिनों अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध अपनाये गये थे। इस महाभारत को करो या मरो के स्तर तक पहुँचाया जाएगा। मनुष्य की गौरव गरिमा को कलंकित करने वाली हर दुष्प्रवृत्ति को अस्वीकृत ही नहीं किया जाए वरन् उसका संजीदगी के साथ उन्मूलन किया जाए जिससे कि उसके सिर उठाने की संभावना ही शेष न रहे।

(हमारी युग निर्माण योजना २. पृ.२०३)

आज का सद्चिंतन

मित्रों ! चरित्र इस शब्द में मनुष्य का समूचा व्यक्तित्व समाया हुआ है। सामान्य अर्थों में चरित्रवान उन्हीं को कहा जाता है जिनके व्यक्तिगत जीवन में कर्तव्य परायणयता, सत्य निष्ठा, पारिवारिक जीवन में सद्भाव, स्नेह, सामाजिक जीवन में शिष्टता, नागरिकता आदि आदर्शों के प्रति निष्ठा है। इन्हें दृढ़ता के साथ पालन करते हैं उन्हीं को व्यक्तित्ववान भी कहा जाता है। किसी भी देश, समाज अथवा समुदाय का भाग्य इन्हीं पर टिका रहता है। ऐसे चरित्रवान ही सतयुगी परिस्थितियों को पनपाते-विकसित करते तथा समाज का कायाकल्प करने में सक्षम होते हैं।

(अखण्ड-ज्योति-१९८९ नवम्बर)

आज का सद्चिंतन

मित्रों ! पूर्णमासी को समुद्र में आने वाले ज्वार-भाटे ऐसे लगते हैं, मानों वे प्रशांत सागर को ज्वार-भाटों के सहारे आकाश तक उछाल कर रहेंगे। मनुष्य के लिए यह सब कर सकना कठिन हो सकता है, पर उस प्रकृति के लिए तो ऐसी उठक-पटक, क्रीड़ा-विनोद मात्र है, जो आए दिन विशालकाय ग्रह पिंड रचने और मिटाने का खेल-खिलवाड़ करते रहने में अलमस्त बालक की तरह निरत रहती है। सृष्टा की सत्ता और क्षमता पर जिन्हें विश्वास है, उन्हें इसी प्रकार सोचना चाहिए कि गंदगी कितनी ही कुरुचिपूर्ण क्यों न हो, वह तूफानी अंधड़ के दबाव और मूसलाधार वर्षा के प्रवाह के सामने टिक नहीं सकेगी। बिगाड़ रचने में मनुष्य ने अपनी क्षुद्रता का परिचय कितना ही क्यों न दिया हो? पर इस सुंदर भूलोक के नंदन वन का संस्थापक, उसे इस प्रकार वीरान न होने देगा जैसा कि कुचक्री उसको विस्मार कर देने के षड्यंत्र रच रहे हैं। अनाचारियों की करतूतें निश्चय ही रोमांचकारी होती हैं। पर विश्व को संरक्षण देने वाली ऐसी देव सत्ताएँ भी सर्वथा निष्क्रिय नहीं, जिनको सृष्टि का संतुलन बनाए रहने का काम सौंपा गया है।

दिनाँक-०२/१०/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रों ! जीवन क्रम को योजनाबद्ध रीति से जी सकना अपने ढ़ंग की अति महत्वपूर्ण कला कौशल है। जिन्हें यह आता है, वे गई-गुजरी परिस्थितियों और कठिनाइयों के बीच रहते हुए भी प्रगति का मार्ग ढूँढ निकालते हैं और उस पर समझदारी के साथ चलते हुए उन्नति के उस शिखर तक जा पहुँचते हैं, जिसमें सफलता, सम्पन्नता और प्रतिष्ठा का आनन्द भरा रहता है।

स्वच्छता परमात्मा का सानिध्य है तथा निर्मलता आत्मा का प्रकाश है। आन्तरिक स्वच्छता का आधार भी शारीरिक और बाह्य स्वच्छता ही हैं। आन्तरिक शुचिता एवं स्वच्छता का अभ्यास बाह्य पवित्रता, सुसज्जा और स्वच्छता अपनाकर ही सिद्ध किया जा सकता है क्योंकि बाह्य स्वच्छता ही आन्तरिक स्वच्छता का हेतु है। यदि परिवार के हर सदस्य अपनी तथा अपने पास-पड़ोस की गन्दगी दूर करके उसके स्थान पर स्वच्छता एवं पवित्रता को पूरी तरह स्थापित कर ले, तो काल्पनिक स्वर्ग के स्थान पर जीवन के यथार्थ स्वर्ग को धरती पर और अपने घर पर ही देख सकते हैं। सुसज्ज़ा, स्वच्छता एवं पवित्रता की पराकाष्ठा ही वह मनुष्यता है, जिसकी परिणति देवत्व में होना असंदिग्ध है। असली रूप तो अपने गुणों से झलकता है। अपनी छाया गुणवान होकर डालनी चाहिए, रूपवान होकर नहीं।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी

आज का सद्चिंतन

मित्रों ! दान में सर्वोपरि ज्ञानदान को माना जाता है। इसे ब्रह्मयज्ञ भी कहते हैं। जिन प्रयत्नों से सद्भावनाएँ और सत्प्रवृत्तियाँ बढ़ सकें, उसी को सच्चा परमार्थ कहना चाहिए। सत् चिन्तन के अभाव में ही लोग अनेकों दुर्गुण अपनाते और पतन-पराभव के गर्त में गिरते हैं। यदि सही चिन्तन कर सकने का पथ प्रशस्त हो सके तो समझना चाहिए कि सर्व-समर्थ मनुष्य को अपनी समस्याएँ आप हल करने का मार्ग मिल गया। अपंगों, असमर्थों या दुर्घटनाग्रस्तों को छोड़कर कोई ऐसा नहीं है, जो सही चिन्तन करने का मार्ग मिल जाने पर ऊँचा उठ न सके, आगे न बढ़ सकें, अपनी समस्याओं को आप हल न कर सके। इसलिए आत्मिक प्रगति के लिए प्रधानतया यही नीति अपनानी चाहिए कि लोकमानस के परिष्कार के लिए, सत्प्रवृत्ति सवंर्धन के लिए अपनी योग्यता और परिस्थिति के अनुसार भरसक प्रयत्न किया जाय।

कहा जाता रहा है कि विचारक्रान्ति की, ज्ञान की साधना में सभी दूरदर्शी, विवेकवानों को लगाना चाहिए। इसी निमित्त लेखनी, वाणी तथा दृश्य-श्रव्य आधारों का ऐसा प्रयोग करना चाहिए, जिससे सर्व साधारण को युगधर्म पहचानने और कार्यान्वित करने की प्रेरणा मिल सके। सर्वजनीन और सार्वभौम ज्ञानयज्ञ ही आज का सर्वश्रेष्ठ परमार्थ है।

जीवन देवता की साधना आराधना में से

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! अपने वर्तमान पाँच लाख परिजनों में से एक लाख जीवंत-वरिष्ठों को अग्रदूतों की भूमिका के लिए छाँटा जा रहा है। उन्हें एक हलका-सा का सौंपा गया है। वे प्रतिदिन पाँच-दस परिचितों को नवप्रकाशित इक्कीसवी सदी संबंधी क्रांतिधर्मी पुस्तकें एक-एक करके पढ़ाएँ-सुनाएँ। घंटे-दो-घंटे समयदान देने वाले के लिए यह कार्य बहुत आसान है।

यदि औसतन १० दिनों में न्यूनतम ५ व्यक्तियों को भी यह क्रांतिधर्मी सैट पढ़ाया जाए, तो एक माह में १५ तथा एक वर्ष में १८० व्यक्तियों तक एक ही परिजन द्वारा नवचेतना का संदेश पहुँच सकता है। इस प्रकार पाँच वर्ष में यह ९०० हो जाएगी। इस क्रम में एक लाख परिजनों द्वारा, पाँच वर्ष में ९ करोड़ व्यक्तियों का युगचेतना से अनुप्राणित किया जा सकेगा। यह संख्या आश्चर्यजक लगती है, पर यह न्यूनतम के आँकड़े हैं, नैष्ठिक पुरुषार्थी १० दिन में १० व्यक्तियों को भी पढ़ा-सुना सकता है। तब यह संख्या दो गुनी हो जाएगी- अर्थात् पाँच वर्ष में १८ करोड़। अगले पाँच वर्ष में नैष्ठिकों की संख्या बढ़ेगी ही। अस्तु, उस पाँच वर्षीय पुरुषार्थ से और भी अधिक लोगों को अनुप्राणित किया जा सकेगा। सफलता का प्रतिशत कितना भी घटे, हर पाँच वर्ष में करोड़-दो-क रोड़ भागीदारी खड़े कर लेना जरा भी कठिन नहीं है।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! गायत्री-उपासना का सहज स्वरूप है-व्याहृतियों वाली त्रिपदा गायत्री का जप। 'ॐ भूर्भुवः स्वः-' यह शीर्ष भाग है, जिसका तात्पर्य है कि आकाश, पाताल और धरातल के रूप में जाने जाने वाले तीनों लोकों में उस दिव्यसत्ता को समाविष्ट अनुभव करना। जिस प्रकार न्यायाधीश और पुलिस अधीक्षक की उपस्थिति में अपराध करने का कोई साहस नहीं करता, उसी प्रकार सर्वदा, सर्वव्यापी, न्यायकारी सत्ता की उपस्थित अपनी सब ओर सदा-सर्वदा अनुभव करना और किसी भी स्तर की अनीति का आचरण न होने देना। 'ॐ' अर्थात् परमात्मा। उसे विराट् विश्वब्रह्मांड के रूप में व्यापक भी समझा जा सकता है। यदि उसे आत्मसत्ता में समाविष्ट भर देखना हो तो स्थूल-शरीर, सूक्ष्म-शरीर और कारण-शरीर में परमात्म सत्ता की उपस्थिति अनुभव करनी पड़ती है और देखना पड़ता है कि इन तीनों ही क्षेत्रों में कहीं ऐसी मलीनता न जुटने पाए, जिसमें प्रवेश करते हुए परमात्म सत्ता को संकोच हो, साथ ही इन्हें इतना स्वस्थ, निर्मल एवं दिव्यताओं से सुसंपन्न रखा जाए कि जिस प्रकार खिले गुलाब पर भौंरे अनायास ही आ जाते हैं, उसी प्रकार तीनों शरीरों में परमात्मा की उपस्थिति दीख पड़े और उनकी सहज सदाशयता की सुगंधि से समीपवर्ती समूचा वातावरण सुगंधित हो उठे।

आद्य शक्ति गायत्री की समर्थ साधना पृ-१६

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! गायत्री को त्रिपदा कहा गया है। उसके तीन चरण हैं। उद्गम एक होते हुए भी साथ तीन दिशाधाराएँ जुड़ती हैं।

(१) सविता के भर्ग-तेजस् का वरण अर्थात् जीवन में ऊर्जा एवं आभा का बाहुल्य। अवांछनीयताओं से अंतःऊर्जा का टकराव। परिष्कृत प्रतिभा एवं शौर्य-साहस इसी का नाम है। गायत्री के नैष्ठिक साधक में यह प्रखर प्रतिभा इस स्तर की होनी चाहिए कि अनीति के आगे न सिर झुकाए और न झुककर कायरता के दबाव में कोई समझौता करे।

(२) दूसरा चरण है-देवत्व का वरण अर्थात् शालीनता को अपनाते हुए उदारचेता बने रहना, लेने की अपेक्षा देने की प्रकृति का परिपोषण करना, उस स्तर के व्यक्तित्व से जुड़ने वाली गौरव-गरिमा की अंतराल में अवधारणा करना। यही है देवत्व धीमहि।

(३) तीसरा सोपना है- 'धियो यो नः प्रचोदयात् मात्र अपनी ही नहीं, अपने समूह, समाज व संसार में सद्बुद्धि की प्रेरणा उभारना-मेधा, प्रज्ञा, दूरदर्शी विवेकशीलता, नीर-क्षीर विवेक में निरत बुद्धिमत्ता।

यही है आध्यात्मिक त्रिवेणी-संगम, जिसमें अवगाहन करने पर मनुष्य असीम पुण्यफल का भागी बनता है। कौए से कोयल एवं बगुले से हंस बन जाने की उपमा जिस त्रिवेणी संगम के स्नान से दी जाती है, वह वस्तुतः आदर्शवादी साहसिकता, देवत्व की पक्षधर शालीनता एवं आदर्शवादिता को प्रमुखता देने वाली महाप्रज्ञा है। गायत्री का तत्वज्ञान समझने और स्वीकारने वाले में ये तीनों ही विशेषताएँ न केवल पाई जानी चाहिए वरन् उनका अनुपात निरंतर बढ़ते रहना चाहिए। इस आस्था को स्वीकारने के उपरांत संकीर्णता-कृपणता से अनुबंधित ऐसी स्वार्थपरता के लिए कोई गुंजाइश नहीं रह जाती कि उससे प्रभावित होकर कोई दूसरों के अधिकारों का हनन करके अपने लिए अनुचित स्तर का लाभ बटोर सकें-अपराधी या आततायी कहलाने के पतन-पराभव अपना सके।

आद्य शक्ति गायत्री की समर्थ साधना पृ-६

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! पौराणिक कथा-प्रसंग में चर्चा आती है कि सृष्टि के आरंभकाल में सर्वत्र मात्र जलसंपदा ही थी। उसी के मध्य में विष्णु भगवान शयन कर रहे थे। विष्णु की नाभि में कमल उपजा । कमल पुष्प पर ब्रह्माजी अवतरित हुए। वे एकाकी थे, अतः असमंजसपूर्वक अनुरोध लगे कि मुझे क्यों उत्पन्न किया गया है? क्या करूँ? कुछ करने के लिए साधन कहाँ से पाऊँ? इन जिज्ञासाओं का समाधान आकावाणी ने किया और कहा- 'गायत्री के माध्यम से तप करें, आवश्यक मार्गदर्शन भीतर से ही उभरेगा।' उनने वैसा ही किया और आकाशवाणी द्वारा बताए गए गायत्री मंत्र की तपपूर्वक साधना करने लगे।

पूर्णता की स्थिति प्राप्त हुई। गायत्री दो खंड बनकर दर्शन देने एवं वरदान-मार्गदर्शन से निहाले करने उतरी। उन दो पक्षों में से एक को गायत्री,दूसरे को सावित्री नाम दिया गया। गायत्री अर्थात् तत्वज्ञान से संबंधित पक्ष। सावित्री अर्थात् भौतिक प्रयोजनों में उसका जो उपयोग हो सकता है, उसका प्रकटीकरण। जड़-सृष्टि-पदार्थ-संरचना सावित्री शक्ति के माध्यम से और विचारण से संबंधित भाव-संवेदना, आस्था, आकांक्षा, क्रियाशीलता जैसी विभूतियों का उद्भव गायत्री के माध्यम से प्रकट हुआ। यह संसार जड़ और चेतना के-प्रकृति और परब्रह्मके समन्वय से ही दृष्टिगोचर एवं क्रियारत दीख पड़ता है।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! अशोक की जाग्रत आत्मचेतना ने महत्त्वाकांक्षा को ठोकर मारकर स्वयं के व्यक्तित्व से बाहर निकाल फेंका था। क्रूरता को तोड़-मरोड़ कर कूड़े के ढेर में डाल दिया और जुट गया शांति और सद्भाव की भावधारा बहाने में। समूचे साम्राज्य को प्रेम के शीतल जल से सींचना शुरू किया। साम्राज्य का संचालन ही नहीं, व्यक्तिगत जीवन भी अब अपने परिवर्तित स्वरूप में था। सभी के कहने-सुनने मना करने के बाद भी उसने अपनी आवश्यकताओं को कम कर लिया। समाज का सबसे गरीब अधिकतर जिस तरह जीता है, सम्राट् उसी तरह जीने लगा। ऐतिहासिक विवरण के अनुसार उसकी कुल संपत्ति थी-एक चीवर और एक सुई, केशों के लिए एक छुरा, जल छानने के लिए एक छलनी और एक तूंबा जो उसका अभिन्न संगी बना। उसने एक शिलालेख में कहा है-मैं सभी जनों के मंगल के लिए कार्य करुँगा। सभी के हित में मेरा हित है, इससे मैं कभी विमुख न रहूँगा। जीवन की सफलता के यही सूत्र हैं।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! सालों-साल से बना घना अँधेरा समाप्त होने में एक क्षण लगता है। पर कब ? जिस क्षण माचिस की एक तीली जल उठे। जीवन का अँधेरा भी उसी पल से छटने-मिटने लगता है, जिस पल संवेदनाओं की लौ जल उठे, शरीर व मन की सारी शक्तियाँ उसे बढ़ाने, व्यापक बनाने में जुट जाएँ । फिर विषमताएँ और अवरोध उसे बुझा नहीं पाते। वह व्यापकतर बनती है। टैगोर ने ऐसों के लिए ही लिखी है-

''यदि झड़ बादले आधार राते दुआर देवघरे। तबे वज्रानले।
आपन बुकेर पाजंर ज्वालिए निए-एकला चलो रे॥'' अर्थात् यदि प्रकाश न हो, झंझावात और मूसालाधार वर्षा की अँधेरी रात में जब अपने घर के दरवाजे भी तेरे लोगों ने बंद कर लिए हों, तब उस वज्रानल में अपने वक्ष के पिंजरे को जलाकर उस प्रकाश में अकेला चलता चल।

कर्मवीर गाँधी के जीवन में एक दिन यही लौ धधक उठी। जल गए उसमें मान-सम्मान, महत्वाकांक्षाएँ, पद-प्रतिष्ठा सभी कुछ। उस समय वह दक्षिण भारत का दौरा कर रहे थे। अफ्रीका से लौटने के बाद कर्मवीर के रुप में उनकी ख्याति थी, पर अभी महात्मा नहीं बने थे। रास्ते में देखा-एक युवा लड़की फटी धोती से जैसे-तैसे अपना शरीर ढके हुए थी । उसे धोती की जगह मैला-कुचैला चीथड़ा कहना ज्यादा ठीक होगा। टोकरी उठाए चली जा रही उस लड़की को सभी ने देखा। इन दृष्टियों में विरक्ति, उपेक्षा, वितृष्णा, सभी कुछ था, नहीं थी तो सिर्फ संवेदना। दृष्टि गाँधी जी की भी गई। उनकी दृष्टि में सिर्फ यही एक थी-बाकी कुछ न था।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! दिन में किसी समय कम से कम एक घंटे का जीवन निर्माता स्वाध्याय, रात को एक या आधा घंटा आत्म-निरीक्षण एवं निर्माण की विवेचना का यदि नित्य नियम रहे और दिनभर अपने विचारों और आचरणों पर कड़ी निगरानी रखी जाए तो हमारी आंतरिक गतिविधियों में भारी परिवर्तन हो सकता है। दैनिक जीवन में क्या परिस्थितियाँ उत्पन्न होने पर आमतौर से क्या विचार उठा करते हैं उन्हें समझना चाहिए, और यह विचार करना चाहिए कि उनमें कितना औचित्य एवं कितना अनौचित्य रहता है। जो अनुचित हो उसे छोड़कर उनके स्थान पर उचित दृष्टिकोण अपनाने की बात सोची जाए तो यह विचारणा कार्यरूप में भी परिणत होने लगती है।

यदि विचार बदल जाएँगें तो कार्यों का बदलना सुनिश्चित है। कार्य बदलने पर भी विचारों का न बदलना सम्भव है, पर विचार बदल जाने पर उनसे विपरीत कार्य देर तक नहीं होते रह सकते। विचार बीज है, कार्य अंकुर, विचार पिता है, कार्य पुत्र। इसलिए जीवन परिवर्तन का कार्य विचार परिवर्तन से आरम्भ होता है। जीवन-निर्माण का, आत्म-निर्माण का अर्थ है-'विचार-निर्माण।'

युग निर्माण योजना के प्रत्येक परिजन को (१) अपने दैनिक जीवन में उपासना को स्थान देना चाहिए। (२) स्वाध्याय के लिए कोई निश्चित समय निर्धारित करना चाहिए। (३) नित्य युग-निर्माण सत्संकल्प याद रखना चाहिए। (४) सोते समय आत्मनिरीक्षण का कार्यक्रम नियमित रूप से चलाना चाहिए। (५) दिन में समय-समय पर कुविचारों से लड़ते रहना चाहिए। यह पाँच कार्यक्रम आत्म-निर्माण की दृष्टि से अत्यंत आवश्यक है। युग-निर्माण अपने आप से ही आरम्भ करना है।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! जीवतों, जाग्रतों और प्राणवान् में से प्रत्येक को अनुभव करना चाहिए कि यह ऐसा विशेष समय है, जैसा कि हजारों लाखों वर्षों बाद कभी एक बार आता है। गाँधी के 'सत्याग्रही' और बुद्ध के 'परिव्राजक' बनने का श्रेय समय निकल जाने पर अब कोई किसी भी मूल्य पर नहीं पा सकता। हनुमान और अर्जुन की भूमिका हेतु फिर से लालायित होने वाला कोई व्यक्ति कितने ही प्रयत्न करे, अब दुबारा वैसा अवसर हस्तगत नहीं कर सकता। समय की प्रतीक्षा तो की जा सकती है, पर समय किसी की भी प्रतीक्षा नहीं करता। भगीरथ, दधीचि और हरिश्चंद्र जैसा सौभाग्य अब उनसे भी अधिक त्याग करने पर भी पाया नहीं जा सकता।

आज का सद्‌चिंतन

मित्रो ! साधु-बाबा जिस दिन घर से निकलते हैं, उस दिन यह श्रद्धा लेकर निकलते हैं कि हमको संत बनना है, महात्मा बनना है, ऋषि बनना है, तपस्वी बनना है। लेकिन थोड़े दिनों बाद यह जो उमंग होती है वह ढीली पड़ जाती है और ढीली पड़ने के बाद में संसार के प्रलोभन उनको खींचते हैं। किसी की बहन-बेटी की ओर देखते हैं, किसी से पैसा लेते हैं। किसी को चेला-चेली बनाते हैं। किसी की हजामत बनाते हैं। फिर जाने क्या से क्या हो जाता है। पतन का मार्ग यही से आरंभ होता है। ग्रेविटी-गुरुत्वाकर्षण पृथ्वी की हर चीज को ऊपर से नीचे की ओर खींचती है। संसार भी एक ग्रेविटी है जो ऊपर से नीचे की ओर खींचती है। आप लोगों से सबसे मेरा यह कहना है कि आप ग्रेविटी से खिंचना मत। रोज सबेरे उठकर भगवान के नाम के साथ में यह विचार किया कीजिए कि हमने किन सिद्धांतों के लिए समर्पण किया था। और पहला कदम जब उठाया था तो किन सिद्धांतों के आधार पर उठाया था। उन सिद्धांतों को रोज याद कर लिया कीजिए। रोज याद किया कीजिए कि हमारी उस श्रद्धा में और उस निष्ठा में, उस संकल्प में और उस त्यागवृत्ति में कहीं फर्क तो नहीं आ गया। संसार ने हमको खींच तो नहीं लिया। वातावरण ने हमको गलीज तो नहीं बना दिया। कहीं हम कमीने लोगों की नकल तो नहीं करने लगे। आप यह मत करना।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! आपका पिछला जीवन कैसे कुसंस्कारों से भरा पड़ा है और उन कुसंस्कारों को दूर करने के लिए आपको क्या करना चाहिए और यह कैसे संभव है? हमारी प्रायश्चित पद्धति में बताया जाता है कि आदमी की आध्यात्मिक उन्नति में सबसे बड़ी रुकावट उसके पुराने किए हुए कर्म हैं। पुराने दुष्कर्म पत्थर की तरह से रास्ते में खड़े हो जाते हैं और एक कदम भी आगे बढ़ने नहीं देते, बार-बार रोक देते हैं। क्योंकि उसका भविष्य बुरा होता है, उसको दंड मिलने है, इसलिए अच्छे काम की ओर से मन उचाट देते हैं। इसलिए पहला काम हर साधक को अपने आपकी धुलाई के रूप में करना पड़ता है। रंगने से पहले धुलाई करनी पड़ती है। धुलाई अगर नहीं की जाए तो कपड़ा रंगा नहीं जाएगा। इसलिए पहला काम यह करना पड़ता है। कल्प साधना में जो आप आए हैं तो यह कार्यपद्धति आपको समझनी होगी। आपके ऊपर दबाव डाला जाएगा और आप में उत्साह पैदा किया जाएगा कि आपके अंदर पिछले स्वभाव, पिछली गंदी आदतें और पिछली क्रियापद्धति जो जम गई है, उसको आप हटा दीजिए। उसको निकालिए, उसको छोड़िए। उनके विरुद्ध बगावत कीजिए। उनको अस्वीकार कर दीजिए, उनका असहयोग कीजिए और उनका दबाव मानने से इन्कार कीजिए। आपको कायाकल्प में यह करने का पहला काम है। अगर आप यह नहीं करेंगे और पुराने घिनौने जीवन के ढर्रे पर ही चलते रहेंगे तो फिर हम क्या कर पाएंगे। फिर आपकी पूजा-उपासना क्या कर लेगी? आपको जप और अनुष्ठान चमत्कार कैसे दिखा पाएंगें? जादु चमत्कार जैसा अध्यात्म नहीं है। अध्यात्म तो मानसिक पुरुषार्थ को कहते हैं। मानसिक पुरुषार्थ का यह एक काम तो आपको करना ही पड़ेगा।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! अब हमें अपने कार्य क्षेत्र का विस्तार करने के लिए आपकी सहायता की जरूरत है। इसके लिए अब हमको वह वर्ग ढूँढ़ना पड़ेगा जिसको विचारशील वर्ग कहते हैं, भावनाशील वर्ग कहते हैं, त्याग और बलिदान के लिए आगे बढ़ने वाला वर्ग कहते हैं। अब हमें इंजीनियरों की जरूरत है, डाक्टरों की जरूरत है, सिपाहियों की जरूरत है, ओवरसियरों की जरूरत है। हमको उनकी जरूरत है जो राष्ट्र के निर्माण के काम आ सकें। नए वर्ग में, नए क्षेत्र में जाने के लिए आप सब हमारी मदद कर दीजिए। क्या काम करेंगे? हमने एक बहुत ही शानदार भवानी तलवार निकाली है। ऐसी शानदार योजना दुनिया में आज तक नहीं बनी। क्या बनी है? हमने हर दिन हर पढ़े-लिखे को नियमित रूप से बिना मूल्य युग-साहित्य पढ़ाने की योजना बनाई है। आप पढ़े-लिखे लोगों से यह मत कहना कि गुरुजी बड़े सिद्ध पुरुष हैं, बड़े महात्मा हैं और सबको वरदान देते हैं, वरन यह कहना कि गुरुजी एक ऐसे व्यक्ति का नाम है जिसके पेट में से आग निकलती है, जिसकी आँखों में से शोले निकलते हैं। आप ऐसे गुरुजी का परिचय कराना, सिद्ध पुरुष का नहीं। विचार क्रांति अभियान को हमने युग साहित्य के रूप में लिखना शुरु कर दिया है और हर आदमी को स्वाध्याय करने के लिए मजबूर किया है। हमारे विचारों को आप पढ़िए और हमारी आग की चिनगारी को जो प्रज्ञा अभियान के अंतर्गत युग साहित्य के रूप में लिखना शुरू किया है, उसे लोगों में फैला दीजिए। हमारे विचारों को लोगों को पढ़ने दीजिए। जो हमारे विचार पढ़ लेगा, वही हमारा शिष्य है। हमारे विचार बड़े पैने हैं, तीखे हैं। हमारी सारी शक्ति हमारे विचारों में सीमाबद्ध है। दुनिया को हम पलट देने का जो दावा करते हैं वह सिद्धियों से नहीं अपने सशक्त विचारों से करते हैं। आप इन विचारों को फैलाने में हमारी सहायता कीजिए। अब हमको नई पीढ़ी चाहिए इसके लिए आप पढ़े-लिखे विचारशीलों में जाइए, उनके घरों में जाइए और हमारी विचारधारा उन

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! अब हमें उन लोगों को बुलाना है जो आशीर्वाद देने में समर्थ हो सकें, हमारे कंधे से कंधा मिला सकें। जो हमारा गोवर्धन उठाने में लाठी का टेका लगा सकें। जो हमारे समुद्र पर पुल बाँधने में ईंट और पत्थर ढो सकें और गाँधी जी के कंधे से कंधा मिलाकर जेल जा सकें। हमने सारे विश्व को अपना कार्यक्षेत्र बना लिया है। अब हम हर एक आदमी को बुलाएँगे और उसी स्तर के लिए उसमें प्राण फूँकेंगे। आप लोग इन योजनाओं में हमारी सहायता करना। भगवान ने हाथ पसारा है। हमने आपके सामने हाथ पसारा है। हमारे गुरुदेव ने हमारे सामने हाथ पसारा था। विवेकानंद के सामने रामकृष्ण ने हाथ पसारा था, चाणक्य ने चंद्रगुप्त के सामने और समर्थ गुरु रामदास ने शिवाजी के आगे हाथ पसारा था। भगवान की हथेली पर रखने वाला आदमी कभी घाटे में नहीं रहा। आप भी घाटे में नहीं रहेंगे। हम आपके आगे हाथ पसारते हैं, आपका श्रम माँगने के लिए, समय माँगने के लिए, आपकी क्षमता माँगने के लिए, आपकी भावना माँगने के लिए। अगर आप देंगे तो विश्वास कर सकते हैं कि हमारे खेत में अगर बीज बोएँगे तो हमारी जमीन उसको खाने वाली नहीं है। हम आपको हजार गुना फल उगाकर देंगे और आपको निहाल कर देंगे।

आज का सद्चिंतन

मित्रों ! भगवान जब भी आते हैं तो उसके कई मकसद होते हैं। एक तो आपने पहले ही सुन रखा है कि वह धर्म की स्थापना करने के लिए और अधर्म का नाश करने के लिए आते हैं। यह दो मकसद तो आपको मालूम ही है, रामायण में भी आपने पढ़ा है, सब जगह पढ़ा है। एक बात हमारी ओर से आप जोड़ लीजिए। रामचन्द्र जी ने या कृष्ण भगवान ने अपनी ओर से तो नहीं कही है, लेकिन हम अपनी ओर से कहते हैं-एक तीसरी बात। क्या कहते हैं? जो सौभाग्यशाली हैं, उनके सौभाग्य को चमका देने के लिए, निष्ठावानों को, अपने भक्तों को सिर और माथे पर रखने लिए भी भगवान आते है। उनको उछाल देने के लिए भी भगवान आते हैं। उनको इतिहास में अजर-अमर बना देने के लिए भी भगवान आते हैं। जो इस मौके को पहचान लेते हैं वे धन्य हो जाते हैं। केवट को उन्होंने धन्य बना दिया। केवट ने क्या काम किया था? नाव में बिठाकर के रामचन्द्र जी को पार लगा दिया था बिना कुछ कीमत लिए। तो गुरुजी चलिए, हम भी आपको कार में बिठाकर घुमा लाएँ और आप हमें केवट बना दीजिए। नहीं भाईसाहब अब मुश्किल है। अब हम नहीं बना सकते। तब वे खास मौके थे, तब आपने पहचाने नहीं और अब शिकायत करते हैं, अपने कर्म को दोष देते हैं कि ऐसा वक्त आया था और हम कुछ कर नहीं सके। मित्रो, शबरी ने भगवान को बेर खिलाए थे, जिसकी प्रशंसा करते-करते हम थकते नहीं। भगवान ने शबरी से कहा-शबरी हम भूखे हैं। भगवान को जरूरत पड़ी थी, वे भूखे थे। आपकी अपनी जरूरत है, पर कभी-कभी भगवान को भी जरूरत होती है और मनुष्य के लिए वही सौभाग्य के वक्त हैं। गिद्धों को आप जानते हैं, जब वे बूढ़े हो जाते है तो आपस में लड़ाई-झगड़ा करने लग जाते हैं। गिद्धों का मरना कोई बड़ी बात नहीं है, लेकिन एक गिद्ध ने समय को पहचान लिया था कि हमारी जरूरत है। किसको? सीताजी को जरूरत है कि कोई हमारी सहायता करे और चल पड़ा और

आज का सद्चिंतन

मित्रों ! एक बार रामचन्द्रजी के ऊपर मुसीबत आयी। उन्होंने बन्दरों से कहा, हनुमानजी से कहा, सुग्रीव से कहा था-'भाइयों, हमारी मदद करो।' हनुमानजी चले गये मदद करने के लिए रामचन्द्रजी की। थे तो हनुमान भी एक बन्दर। ये सुग्रीव के यहाँ नौकरी करते थे। किसी तरीके से अपना गुजारा करते थे, लेकिन जब रामचन्द्रजी के पुकारने पर चले गये, मौके को उन्होंने पहचान लिया तो क्या परिणाम हुआ? फिर वे ऐसे बड़े हो गये जैसे सारी जिन्दगी में कभी नहीं हुए थे। उन्होंने पहाड़ को उखाड़ा, समुद्र को लाँघा, लंका को जलाया और सीताजी की खोज की। रामराज्य की स्थापना के लिए उन्होंने सारे का सारा जीवन लगाया और अपने आप में धन्य हुए। अब उनकी पूजा हर जगह की जाती है। उस समय को हनुमानजी चूक गये होते और रामचन्द्रजी से यह कह दिया होता कि साहब, अभी तो हमें नौकरी से छुट्टी नहीं मिल रही है। अभी तो लड़की का ब्याह नहीं हुआ है। अभी तो काम करने को पड़ा हुआ है। तब तो हनुमानजी उस मौके को चुका देने के बाद में सुग्रीव के यहाँ नौकरी ही करते रहते। बन्दर बने रहते और हनुमान जी देवता के रूप में शायद फिर पूजित न हो पाते।

जिन्होंने भी मौके का लाभ उठाया, वे धन्य हो गये।

दिनाँक-१९/१०/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रों ! साधना ! साधना के माने? साधना के माने यह है कि अपने आप को साध लेना। अपनी पात्रता को इस लायक बना लेना कि कोई हमको देने के योग्य समझे और हमको दे। एक राजा ने दो माली रखे थे दोनों मालियों के सुपुर्द एक-एक बगीचा किया गया। एक माली दिन और रात राजा के बगीचे में लगा रहा और एक वर्ष के भीतर उसे स्वर्ग जैसा बना दिया। इतना फूलों और फलों से लदा हुआ बना दिया। इतना खूबसूरत बना दिया। नये पौधे लगा दिये। देखते ही उसमें घुसने को हरेक का मन चलने लगा। एक और माली था। उस माली ने राजासाहब की भक्ति दिखाने के लिए राजासाहब का फोटो लगाया। उस पर चन्दन रोज चढ़ाया, उसकी आरती उतारी, एक सौ आठ परिक्रमा रोज की; लेकिन जो उसकी जिम्मेदारी थी, उस पर ध्यान नहीं दिया। बगीचे की ओर ध्यान नहीं दिया। बगीचा सूख गया। जिस हैसियत में बगीचा दिया गया था वह बिल्कुल भी नहीं रही। जब सारा वक्त दूसरे काम में लगा देगा, तो यह कैसे होगा?

आप माली हैं और आपको भगवान के बगीचे के लिए सेवा करने के लिए भेजा गया है। आप हमेशा ध्यान रखिये कि माली हैं। हमने हमेशा ध्यान रखा कि हम केवल माली हैं और माली होने की वजह से अपना देश, अपना धर्म, अपनी संस्कृति और अपना समाज, अपने पड़ोसी और अपना घर, अपनी गृहस्थी और अपनी बीबी और अपने बच्चे जिन लोगों से हमारा ताल्लुक था, उन सबके तईं अपने कर्त्तव्य निभाने के लिए चौबीसों घण्टे हमारा ध्यान बना रहा। साधना है ये भगवान की।

पूज्यवर की अमृतवाणी-पृष्ठ-४.१०

आज का सद्चिंतन

मित्रों ! आध्यात्मिकता जब आती है तो भीतर जो कुछ भी है, उसको पहले बाहर निकालती है। दुर्वासा ऋषि के भीतर आध्यात्मिकता आयी तो क्रोध काबू से बाहर हो गया था। जो कुछ भी हमारे भीतर चीजें हैं, वे बढ़ेगीं। हमारे अन्दर कामुकता है तो कामुकता बढ़ जाएगी। आप नवरात्रि का अनुष्ठान कीजिए, यदि आपके पास संयम के विचार नहीं हैं, तो निश्चित रूप से कामुकता बढ़ेगी। क्रोध आपके भीतर भरा है और उसका परिशोधन नहीं किया गया है और आध्यात्मिक शक्तियों का अनुष्ठान आपने किया है तो मैं बताता हूँ कि क्रोध आपके भीतर बढ़ जाएगा। जो भी चीज आपके भीतर है-ज्ञान आपके भीतर है तो ज्ञान बढ़ जाएगा। भक्ति है तो भक्ति बढ़ जाएगी। अनुष्ठान का काम शक्ति उत्पन्न करना है। यह शक्ति किसमें खर्च होगी? जो कुछ भी है, उसी में खर्च होगी। प्राप्त करना कोई मुश्किल नहीं है, तप करना कठिन है। गुरुदेव ने मुझे सामर्थ्यवान और शक्तिशाली बनने के लिए तपस्वी होने के लिए आज्ञा दी और मैं चौबीस साल तक तप करता रहा। जिव्हा के तप के बारे में आपको मालूम है न कि चौबीस साल तक जौ की रोटी और छाछ के ऊपर निकाले हैं और बाकी तप की बाते कैसे बताएँ कि कैसे कहें, किसी ने देखा नहीं? हम बराबर तप करते रहे और अपने आपको मजबूत बनाते रहे, चौबीस साल तक। गुरुदेव की कृपा रही और लोहा, पारस को छूकर सोना हो गया।

आज का सद्चिंतन

मित्रों ! यह जो हमारा मन है, यह ऐसा बेईमान, बदमाश, दुष्ट, दुराचारी, अन्यायी-अत्याचारी नौकर और साथी है, जो बेकाबू है। मिला यह हमको इसलिए था कि इसकी मदद से हमको अपने जिन्दगी की नाव पार लगानी है, पर हमने इसे घसीट-घसीट कर मारा है जैसे कोई-कोई लड़के अपने बाप को जब वह बुड्ढा हो जाता है तो पैसा छीनने के लिए मारते-पीटते और पैसा छीन लेते हैं। कोई-कोई ऐसा होता है बदमाश।

गुरुजी ! कौन-कौन सा है ऐसा बदमाश, उसका नाम बताइये? बेटे, उस बदमाश का नाम है-आपका मन, जिसने आपके ईमान को, आपकी जीवात्मा को मारा-पीटा है, लातें लगायी हैं, गालियाँ दी हैं और जितना भी पीड़ित कर सकता था, उत्पीड़न दे सकता था, जितना भी गिरा सकता था, वह सब गिरा दिया। यदि यह हमारा और आपका मन यदि काबू में होता तो आज हमारी हैसियत कुछ दूसरी ही होती। अगर आपका मन काबू में होता तो आपमें से अधिकांश व्यक्ति विवेकानंद होते, कबीर होते, रैदास होते, पर यह नहीं मानता है कसाई-हत्यारा हमारे ऊपर दिन-रात हावी रहता है और भगवान के बारे में भी न जाने क्या-क्या ऊल-जलूल पट्टी पढ़ाता रहता है हमको। भगवान को भजन करने से मतलब केवल एक ही है कि हम अपने मन की सफाई करें और यह याद रखें कि भगवान के यहाँ से हम किस काम के लिए आये है और किस काम के लिए जाना पड़ेगा? लेकिन यह चालाक मन क्या पट्टी पढ़ा देता है। ये यों कह देता है कि भगवान की धूपबत्ती जला दीजिए और उन्हें चावल खिला दीजिए, फूल-माला सुँघा दीजिए, भगवान को हनुमान चालीसा सुना दीजिए और भगवान को अपना बना लीजिए, फिर भगवान से चाहे जो काम करा लीजिए। हमारा मन बड़ा चालाक, बड़ा बेईमान, बड़ा दुष्ट और जालिम है जो हमको न जाने क्या-क्या पढ़ाता और कराता रहता है?

आज का सद्चिंतन

मित्रों ! एक हमारा आमन्त्रण अगर आप स्वीकार कर सकें तो बड़ी मजेदार बात होगी। आप हमारी दुकान में शामिल हो जाइए, इसमें बहुत फायदा है। इसमें से हर आदमी को काफी मुनाफे का शेयर मिल सकता है। माँगने से तो हम थोड़ा-सा ही दे पाएँगे। भीख माँगने वालों को कहाँ किसने कितना दिया है? लोग थोड़ा-सा ही दे पाते हैं। आप हमारी दुकान में साझेदार-हिस्सेदार क्यों नहीं बन जाते? अन्धे और पंगे का योग क्यों नहीं बना लेते? हमारे गुरु और हमने साझेदारी की है। शंकराचार्य और मान्धाता ने साझेदारी की थी इस दुकान में। सम्राट अशोक और बुद्ध ने साझेदारी की थी। रामकृष्ण और विवेकानन्द ने साझेदारी की थी। क्या आप ऐसा नहीं कर सकते कि हमारे साथ शामिल हो जाएँ। हम और आप मिल करके एक बड़ा काम करें। उसमें से जो मुनाफा आए उसको बाँट लें। अगर आप इतनी हिम्मत कर सकते हो कि हम प्रामाणिक आदमी हैं और जिस तरीके से हमने अपने गुरु की दुकान में साझा कर दिया है, आप आएँ और हमारे साथ साझा करने की कोशिश करें। अपनी पूँजी उसमें लगाएँ। समय की पूँजी, बुद्धि की पूँजी, हमारी दुकान में शामिल करें और इतना मुनाफा कमाएँ, जिससे कि आप निहाल हो जाएँ। अगर आपकी हिम्मत हो तो आप आएँ और हमारे साथ जुड़ जाएँ। हम जो भी लाभ कमाएँगे-भौतिक और आध्यात्मिक, उसका इतना हिस्सा आपके हिस्से में मिलेगा कि आप धन्य हो सकते हैं और निहाल हो सकते हैं, उसी तरीके से कि जैसे हम धन्य हो गए और निहाल हो गए।

दिनाँक-२४/१०/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रों ! कई तरह की योग्यताएँ मिल-जुलकर अपूर्णता को पूर्ण करती हैं। परिवार को ही लें उसमें कई स्तर के-कई विशेषताओं के मनुष्य मिल-जुलकर रहते हैं तो एक अनोखे आनन्द का सृजन करते हैं। ब्रह्मांड के ग्रह-नक्षत्र और उपग्रह परस्पर मिल-जुलकर ही इस अनन्त अन्तरिक्ष में अपनी सत्ता बनाये हुए हैं। यदि उनका विघटन हो जाय-एकाकी रहने की स्थिति आ जाय तो पारस्परिक आदान-प्रदान के आधार पर खड़ा हुआ संसार का ढाँचा ही चरमरा जाय। फिर ग्रह-नक्षत्रों की वह स्थिति न रहेगी जो आज है। एकाकी भटकने वाले उल्कापिंड अपनी सीमित शक्ति सीमित स्थिति एवं सीमित कक्षा में किसी प्रकार जीवित रह भी सकें तो भी उनकी सारी विशेषता नष्ट ही हो जायेगी। वे मृतक पिण्ड मात्र बनकर रह जायेंगे। पारस्परिक आकर्षण की सघन श्रृङ्खला में बँधकर ही वे अपनी धुरी और अपनी कक्षा में भ्रमण कर रहे हैं। उनकी विशेषताओं का विनिमय ही उनमें हलचलें बनाये हुए हैं, अन्यथा वे हर दृष्टि से स्तब्ध हो जायेंगे उनका सारा पदार्थ अनन्त अन्तरिक्ष में धूलि बनकर बिखर जाएगा।

मनुष्य समाज की विकासोन्मुख स्थिति का एकमात्र आधार संङ्गठन है। दाम्पत्य-जीवन में दो व्यक्तियों का सघन सहयोग कुटुम्ब का निर्माण करता है। मिलजुल कर कई छोटे बड़े व्यक्ति साथ-साथ रहें तो इसी का नाम तो परिवार है। परिवारों का दूसरे के साथ सहयोग करना और पारस्परिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आवश्यक आदान-प्रदान करना यही समाज में विविधा-विधि क्रिया-कलापों के सञ्चालन की धुरी है।

पारस्परिक सहयोग प्रगति के लिए अत्यावश्यक-पृष्ठ-१,१०

आज का सद्चिंतन

मित्रों ! मनुष्य के चिन्तन एवं व्यवहार का कार्य क्षेत्र सीमित है, इसीलिए उसकी दृष्टि एवं सामर्थ्य भी सीमित रहती हैं। चिन्तन का स्तर और क्षेत्र ऊँचा उठने से मिलने वाली तत्व दृष्टि से-दिव्य दृष्टि से-जो देखा समझा जाता है वह क्रमशः सुविस्तृत एवं असीम बनता जाता है। इस स्तर पर पहुँची हुई चेतना अपने इर्द-गिर्द ही असीम एवं अद्भुत का दर्शन करती है। साथ ही उसके साथ सम्बन्ध साधने, अधिकार पाने तथा लाभ लेने का भी साहस जुटाती है।

स्थूल दृष्टि से देखा जाए तो अपने चारों ओर मिट्टी लकड़ी के आडम्बर खड़े हैं और प्राणियों की औंधी-तिरछी निरर्थक हलचलें भर दिखाई पड़ती हैं। सूरज निकलता और डूबता है। भूख लगती और नींद आती है। कमाने और भोगने का पहिया लुढ़कता और प्रतिकूलता, अनुकूलता के ज्वार-भाटे आते रहते हैं। जन्मने, मरने की भगदड़ मची रहती है और रोने-गाने का सिलसिला चलता है। बस इतनी ही है सामान्य दृष्टि की परिधि। इतने से शरीर यात्रा के लिए अनिवार्य साधन जुटाना भर सम्भव हो पाता है। अध्यात्म दर्शन अपनाने वाले के ज्ञान चक्षु खुलते हैं और दिव्य दृष्टि मिलती है। सूक्ष्मदर्शी और दूरदर्शी यन्त्रों के सहारे वह दृष्टि गोचर होता है जो चर्म चक्षुओं की सीमा से बाहर है। प्रकृति और पुरुष की विशालता, समर्थता एवं विलक्षणता उसी दिव्य दृष्टि के सहारे दीख पड़ती है। तभी यह उमंग भी उठती है इस विराट् से क्यों न सम्बन्ध साधा जाय और उनसे घनिष्ठता बनाने पर उपलब्ध होने वाले लाभों को क्यों न उठाया जाय। यही साधना, कार्य साधना एवं मन साधना के त्रिविध उपक्रम हाथ में लिये जाते हैं। उन्हीं को कर्मयोग, ज्ञानयोग एवं भक्तियोग कहते हैं।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! शान्ति का, विश्राम का, आनन्द का स्थान भी आपके अन्दर ही है। जिस व्यक्ति को अपने अन्दर ही शान्ति नहीं मिलती तो निश्चित है उसे कहीं भी शान्ति नहीं मिल सकती। मित्र, सखा, बन्धु-बान्धवों या संसार की अन्य बातों में हम शान्ति ढूँढ़ने का व्यर्थ प्रयत्न करते हैं यत्र-तत्र भटकते हैं। बुद्ध बहुत वर्षों तक इधर-उधर भटके। लेकिन अन्त में अन्तर में ही उन्हें शान्ति का आधार मिला। अपने अन्तर में जो व्यक्ति शान्त है उसके लिए सब जगह शान्ति मिल जाती है। जो अन्दर से अशान्त है उसे कहीं भी शान्ति नहीं मिल सकती।

जो व्यक्ति यह सोचता है कि संसार के लोग उसके दुःख-दर्द बँटाकर उसे आनन्द प्रदान करेंगे, वह भूल में है। सुख, आनन्द एवं विश्राम का स्त्रोत तो अपने अन्दर ही है, उसका आत्मा। साँसारिक पदार्थों और वस्तुओं पर अपनी सुख-शान्ति विश्राम को छोड़ने वाला व्यक्ति जीवनभर उसके परिवर्तन के साथ सदैव हिलता-डुलता भागता-दौड़ता रहेगा। तब यह प्रयास उसके लिए मृग-मरीचिका ही सिद्ध होगा।

आज का सद्चिंतन

मित्रों ! अपने हृदय सिंहासन पर बैठकर आप संसार के स्वामी और शासक हैं। संसार में अपना स्थान ढूँढ़ने जब आप निकलते हैं, तो आप पराधीन हैं, जहाँ आपको परावलम्बन का जीवन बिताना पड़ता है और दूसरों की खुशी, नाराजी पर सुखी, दुःखी होना पड़ता है।

आप यह न सोचें कि संसार आपको क्या समझेगा। यदि आप अपने अन्दर में विराजमान होकर अपना शासन भली प्रकार चलाते हैं तो आप संसार के राजाओं से भी अपार वैभवशाली हैं, उच्च हैं, महान हैं। इसी सत्य को अङ्गीकार करने वाले स्वामी रामतीर्थ अपने आपको ''राम बादशाह कहा करते थे'' जब कि संसार वाले भले उन्हें कोई फकीर, साधु-सन्यासी के रूप में जानें। क्या आप भी अपने बादशाह नहीं बना सकते? ऐसे बादशाह जिनके समक्ष संसार के समस्त वैभव, यश, ऐश्वर्य, कीर्ति की कान्ति भी फीकी पड़ जाती है।

महापुरुषों और जनसाधारण में यही एक फर्क है कि वे अपने अन्तर में स्थित होकर संसार को गति देते हैं, जब की हम संसार में स्थित होकर आगे बढ़ना चाहते हैं। संसार के वस्तु पदार्थों में अपना लक्ष्य, अपनी सफलता, अपना ऐश्वर्य, सुख-शान्ति ढूँढ़ते हैं और अन्ततः इसके लिए हमें निराश ही होना पड़ता है। संसार की लहरों में निराश्रित होकर बहना पड़ता है। उसकी बनने, मिटने वाली, परिवर्तनशील, टूटने-फूटने वाली लहरों में थपेड़े खाकर अशान्त एवं परेशान होना पड़ता है। लेकिन जो अपने अन्तर के दुर्भेध, अजर-अमर का कप्तान बनकर बैठा हुआ है वह संसार की लहरों को भी रौंदता हुआ तीव्र गति से आगे बढ़ जाता है। ऐसा है मनुष्य का आधार बिन्दु जो उसके अपने ही अन्तर में है कही बाहर नहीं।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! आप हमारी वंश परंपरा को जानिए और हम मरने के बाद में जहाँ कहीं भी रहेंगे भूत बनकर देखेंगे। हम देखेंगे कि जिन लोगों को हम पीछे छोड़ कर आए थे, उन्होंने हमारी परंपरा को निबाहा है और अगर हमको यह मालूम पड़ा कि इन्होंने हमारी परंपरा नहीं निबाही और इन्होंने व्यक्तिगत ताना-बाना बुनना शुरू कर दिया और अपना व्यक्तिगत अहंकार, अपनी व्यक्तिगत यश कामना और व्यक्तिगत धन-संग्रह करने का सिलसिला शुरू कर दिया। व्यक्तिगत रूप से बड़ा आदमी बनना शुरू कर दिया, तो हमारी आँखों से आँसू टपकेंगे और जहाँ कहीं भी हम भूत होकर के पीपल के पेड़ पर बैठेंगे, वहाँ जाकर के हमारी आँखों से जो आँसू टपकेंगे-आपको चैन से नहीं बैठने देंगे। और मैं कुछ कहता नहीं हूँ। आपको हैरान कर देंगे, हैरान। दुर्वासा ऋषि के पीछे विष्णु भगवान का चक्र लगा था तो दुर्वासा जी तीनों लोकों में घूम आए थे, पर उनको चैन नहीं मिला था। आपको भी चैन नहीं मिलेगा। अगर हमको विश्वास देकर के विश्वासघात करेंगे तो मेरा शाप है आपको कि आपको चैन नहीं पड़ेगा कभी भी और न आपको यश मिलेगा, न आपको ख्याति मिलेगी, न उन्नति होगी। आपका अधःपतन होगा। आपका अपयश होगा और आपकी जीवात्मा आपको मारकर डाल देगी। आप यह मत करना।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! परमात्मा जब भी आत्मा से मिलेगा, तो अपनी संवेदनाएँ शरणागत पर उड़ेले बिना नहीं रहेगा। उसका कथन-परामर्श, मार्ग-दर्शन भली प्रकार सुनाई देने लगता है। आदान-प्रदान में अनुशासन भी जुड़ा रहता है। कुछ खरीदना हो, तो उसका मूल्य भी चुकाया जाना पड़ता है। भगवान का स्मरण करते ही उसके परामर्श रूपी अनुदानों का प्रवाह आने लगता है। जागो और जगाओ, उठो और उठाओ, चलो और चलाओ, उभरो और उभारो, जियो और जीने दो, उछलो और उछालो, जैसे दुहरे आदेशों की झड़ी लग जाती है और उन्हें पूरा किए बिना किसी प्रकार, किसी क्षण चैन नहीं पड़ता। ऐसी ही स्थिति में रहते देखे जाते हैं, वे भगवद् भक्त, जिन्हें तात्कालिक आदेश के रूप में युग पुरुष, युग देवता या युग सृजेता कहलाने का श्रेय एवं संतोष मिल सकता है। अच्छा हो, उस उपलब्धि को स्वीकार करने से इंकार न किया जाए। द्वार पर खड़े हुए सौभाग्य को ठोकर मार कर वापस न लौटाया जाए।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! अंगारे पर बार-बार राख जम जाती है और उसे प्रज्ज्वलित रखने के लिए बार-बार उसे हटाना पड़ता है। शरीर को स्नान और कपड़े को धोने की बार-बार विद्युत प्रवाह से जोड़ना पड़ता है।

नेवले और साँप की लड़ाई में जब नेवला थकता और विष दंशन से उद्विग्न होता है, तो मुड़ कर किसी जड़ी बूटी को खाने चला जाता है। नई शक्ति सँजोकर फिर लड़ाई आरंभ कर देता और शत्रु को परास्त करके रहता है। पौधों का बार-बार पानी देना पड़ता है। वह न मिले, तो वे सूख जाएँगे।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! उपासना का अर्थ यह होता है कि भगवान के जितने अधिक पास हम चलते चले जाएँगे उतना ही फायदा हमें होगा। नहीं बेटे, ये तेरा ख्याल गलत है। पास बैठने वाले अगर हमारी भावनाओं के नजदीक नहीं हैं, हमारे विचारों के सम्पर्क में नहीं हैं तो उनसे क्या सहानुभूति हो सकती है? अरे, नहीं साहब पास रहने का बहुत फायदा होता है। बेटे, पास रहने का मतलब-भावनाओं के पास रहना होता है। हमने तो ये समझा था कि शरीर से नजदीक होना उपासना है। नहीं बेटे, शरीर के नजदीक तो हमारे सिर में जुँए भी रहते हैं और ये तो २४ घण्टे जैसे अम्मा अपने बच्चे को छाती पर लगाए रहती हैं, ऐसे हम अपनी जूँ को सिर पर लगाए रहते है। बेटे, खटमल जो है हमारी चारपाई पर सोता रहता है। जूँ क्या करती रहती है? बेटे, उपासना करती है। खटमल क्या करता है? उपासना। उपासना किसे कहते है पास बैठने को। इन सबको उपासना कहते हैं, सब पास बैठे रहते हैं। एक और जानवर है जो और भी पास पास बैठा रहता है। कौन बैठा रहता है पेट के सफेद रंग के कीड़े? वे ऐसे बैठे रहते हें जैसे माँ के पेट में गर्भ में बच्चा बैठा रहता है।

बेटे ! शरीर से पास होना ही उपासना नहीं कहलाती। उपासना के लिए जीवन का क्रम बदलना होगा। दृष्टिकोण बदलना होगा, चिंतन बदलना होगा, व्यवहार बदलना होगा, कर्म बदलना पड़ेगा। उपासना का उद्देश्य है-अपने आपका शिक्षण करना कि आदमी को अपने आपको नेक-नीयत बनाना चाहिए, चरित्रवान बनाना चाहिए। ये सारे के सारे शिक्षण हमारी उपासना पद्धति के आधार पर लिखे हुए हैं। यह उसकी फिलॉसफी है। किसकी? उपासना की और हमारी यह फिलॉसफी है कि जितना अधिक आदमी संत और अध्यात्मवादी होता हुआ चला जाएगा, उसको उतनी मात्रा में लोकसेवी बनना पड़ेगा। दूसरों के हित के लिए अधिक से अधिक त्याग और बलिदान करने के लिए कमर बाँधनी पड़ेगी।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! भगवान बुद्ध ने अपने शिष्यों को उपदेश देते हुए बताया-''भिक्षुको! वर्तमान में हम जो कुछ हैं अपने विचारों के कारण हैं और भविष्य में जो कुछ बनेंगे वह भी अपने विचारों के कारण।''

शेक्सपीयर ने लिखा है-''कोई वस्तु अच्छी या बुरी नहीं है। अच्छाई या बुराई का आधार हमारे विचार ही हैं।''

ईसा मसीह का कथन है-''मनुष्य के जैसे विचार होते हैं वैसा ही मन बन जाता है।''

प्रसिद्ध रोमन दार्शनिक मार्क्स आरीलियम ने लिखा है-''हमारा जीवन जो कुछ भी है, हमारे अपने विचारों का प्रतिफल है।''

स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि-''स्वर्ग और नर्क कहीं अन्यत्र नहीं, इनका निवास हमारे विचारों में है।''

स्वामी रामतीर्थ के अनुसार-'मनुष्य के जैसे विचार होते हैं, वैसा ही उसका जीवन बनता है। '

मैस्कल ने एक स्थान पर लिखा है-'संसार की समस्त बुराइयाँ इस तथ्य से पैदा होती है कि मनुष्य एकान्त चिन्तन-मनन का स्वयं को अवसर नहीं देता।'

प्रसिद्ध अमेरीकी लेखक डेल कार्नेगी ने अपने अनुभवों के आधार पर कहा है-'जीवन में मैंने कोई महत्त्वपूर्ण बात सीखी है तो वह है-विचारों की अपूर्व शक्ति और महत्ता। विचारों की शक्ति सर्वोच्च तथा अपार है।'

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! मजबूत चीजों को ग्रहण करने के लिए मजबूत चीजें चाहिए। एटामिक भट्टी बनायी जाती है तो उसके चारों ओर घेरे इतने मजबूत बनाये जाते हैं कि उसके भीतर से रेडिएशन निकलकर कहीं आस-पास के इलाके में न फैल जाएँ। ये घेरे बहुत मजबूत बनाये जाते हैं। इसी तरह आध्यात्मिक शक्तियों को भीतर से जिस किसी आदमी को अवतरित करने की इच्छा हो, हनुमान जी को-शंकर जी को भीतर अवतरित करने की इच्छा हो तो उसे अपने को इस लायक बनाना पड़ेगा कि शंकर जी आएँ तो वहाँ निवास कर सकें। कमजोर आदमी-स्वार्थी, चालाक, विलासी आदमी उसको धारण नहीं कर सकते। यदि आती भी हैं तो या तो टक्कर मारकर वापस चली जाती है या फट जाती हैं। फट जाने से मतलब पागल हो जाते हैं। दिमाग खराब हो जाता है, जैसे रावण का हो गया था, कंस का हो गया था, भस्मासुर का हो गया था। दैवी शक्तियों को प्राप्त कर लेना सुगम है, पर उनको पचा डालना बड़ा मुश्किल है। वे हजम नहीं होतीं। पारा हजम नहीं होता। आध्यात्मिक शक्तियाँ हजम नहीं होतीं। हजम करने का वक्त आता है तो आदमी लोकेषणा, पुत्रेषणा और वित्तेषणा के आधार पर पागल हो जाता है।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! शरीर को बलिष्ठ बनाने के लिए कठिन व्यायाम करने पड़ते हैं। विष ग्रन्थियों को हटाने के लिए आपरेशन करने पड़ते हैं। कैन्सर जैसे संकटों से लड़ने में रेडियो विकिरण प्रयुक्त करना पड़ता है। नट-नटनियाँ सहज ही कला प्रदर्शन का श्रेय प्राप्त नहीं कर लेतीं, उन्हें विशिष्ट अभ्यासों के लिए लगातार प्रयत्न करना पड़ता है। सरकस के जानवरों को पुरानी आदतें छोड़ने और नई अपनाने के लिए कैसी कष्टसाध्य प्रक्रिया में होकर गुजरना पड़ता है इसे निकटवर्ती वातावरण में रहने वाले भली प्रकार जानते हैं। दूर रहने वाले इन सबकी विशिष्टता को दैवी वरदान का अनायास उपहारभर मान सकते हैं। कहा और माना भी जाता रहे, तथ्य यही है कि विशिष्ट उपलब्धियाँ विशिष्ट पुरुषार्थ के सहारे ही करतलगत होती हैं। अन्तराल की गहरी परतों को छूने-कुरेदने, उभारने और प्रत्यक्ष कर दिखाने के लिए जो प्रबल प्रयास करने होते हैं उन्हीं का नाम साधना है। साधना का अपना दर्शन और अपना विज्ञान है। विचार विज्ञान का उपयोग दैनिक व्यवहार में होता है। उसका प्रभाव अपनी चिन्तन शैली, कार्य पद्धति एवं स्वभाव-व्यवहार पर पड़ता है। उसका प्रतिफल आत्मसंतोष, आत्म-गौरव, लोक सम्मान एवं जन सहयोग के रूप में अनेकानेक सुखद सँभावनाएँ साथ लेकर सामने आता है। साधना विज्ञान इससे आगे की स्थिति है। विचार विज्ञान का सम्बन्ध मन की सचेतन परत से है।

आज का सद्चिंतन

मित्रों ! आप अपने जीवन की बागडोर और जीवन का आधार भगवान के हाथ में न सौपे, उसकी मर्जी के अनुसार न चले तो आप पतंग की तरीके से आसमान पर उड़ने की अपेक्षा मत कीजिए। आपने दर्पण देखा है न, उसके सामने जो चीज आती है वह दर्पण में वैसी ही दिखाई पड़ने लगती है। आपके जीवन में चारों ओर से दोष-दुर्गुण एवं कल्मष छाए हुए हैं, इसलिए आपका दर्पण भी, मानसिक स्तर भी, वैसा ही बन गया है। लेकिन अगर आप भगवान को सामने रखें, उसके नजदीक जाएँ तो आप देखेंगे कि आपके जीवन में भी भगवान की आभा, भगवान की शक्ति उसी तरीके से बन जाती है जैसे कि दर्पण के सामने खड़े हुए आदमी की बन जाती है। वंशी अपने आपको पोली कर देती है और खाली कर देती है। पोली और खाली कर देने के बाद में फिर बजाने वाले के पास आ पहुँचती है और उससे कहती है कि आप बजाइए, जो आप कहेंगे वही मैं गाऊँगी। बजाने वाला फूँक मारता जाता है और वह बजती जाती है। भगवान को फूँक मारने दीजिए और आप बजने के लिए तैयार हो जाइए।

आज का सद्चिंतन

मित्रो! एक सर्वशक्तिमान सत्ता है भगवान। उसके साथ अगर आप नाता जोड़ लें, तो आपकी मालदारी का कोई ठिकाना नहीं रहेगा। आप इतने सम्पन्न हो जाएँगे कि मैं कह नहीं सकता आपसे। आप बापा जलाराम के तरीके से सम्पन्न भी हो सकते हैं, आप सुदामा के तरीके से मालदार भी हो सकते हैं, विभीषण के तरीके से धनवान भी हो सकते हैं, सुग्रीव के तरीके से मुसीबतों से बचकर खोया हुआ राजपाट पा सकते हैं, आपके यहाँ नरसी मेहता के तरीके से हुण्डी भी बरस सकती हैं। उसके यहाँ कोई कमी नहीं है। यहाँ जो आपको बुलाया गया है, उसका एक काम यह भी है आपसे कहा जाए कि आप भगवान के साथ में अपना रिश्ता जोड़ लीजिए। आप पूजा करते हैं, उपासना करते हैं, भजन करते हैं। उसका मतलब यह है कि आप इन उपायों के द्वारा अपना रिश्ता भगवान के साथ में जोड़ लें और भगवान के साथ रिश्ता जुड़ गया, तो मजा आ जाएगा।

दिनाँक-०६/१०/२००७

आज का सद्चिंतन

आज का सद्चिंतन

दीपावली अंधतमस् में ज्योतिरूपी विजय की प्रतीक है। अंधकार कुछ नहीं, वरन् प्रकाश का अभाव है। प्रकाश के अभाव में अंधकार अपना साम्राज्य पसारता है। अंधकार की इस महानिशा में तमस् का एकछत्र राज्य होता है और इसके सहचर होते हैं-कामनाएँ, वासनाएँ, अनियंत्रित इच्छाएँ, महत्त्वाकांक्षा, अहंकार, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष, आलस्य, प्रमाद आदि। इनकी शृंखला अत्यंत सुदृढ़ एवं अपराजेय रूप से जुड़ी-मिली रहती हैं। ये न तो अपनी पराजय स्वीकारते हैं और पराजय के पश्चात तो रक्तबीज के समान फिर से और भी बलशाली होकर आक्रमण करते हैं। इनका सबसे प्रबल शत्रु एवं विरोधी है, प्रकाश; क्योंकि प्रकाश में इनका अस्तित्व खतरे में पड़ जाता है। ये प्रकाश में तड़पते-छटपटाते हैं। प्रकाशपर्व इन्हीं पर विजय का महोत्सव है।

आज का सद्चिंतन

दीपावली का पर्व निराशा के अंधकार में डूबे, हताशा के कुहासे में खोए उन सभी दिलों में प्रकाश उँड़ेलने का पर्व है, जिनसे हम सब प्रकाशित हों और हम सभी तमस् के उन साथी-सहचरों को मार भगाने में समर्थ हो सकें, जिससे वैयक्तिक समस्याओं के सुलझाने के साथ ही राष्ट्रीय समस्याओं, जैसे बेकारी, भ्रष्टाचार, अनाचार एवं आतंक आदि को मिटाया जा सके। हमारे अंदर एवं हमारे राष्ट्र में अभी भी आग से धधकते प्रचंड पुरुषार्थ के बीज विद्यमान हैं, भले ही वे बीज इन दिनों प्रसुप्त, सुषुप्त स्थिति में क्यों न पड़े हों। इन्हें जगाने, अंकुरण के लिए प्रकाशपर्व की रोशनी की जरूरत है, जो जुगनूँ के समान टिमटिमाकर बुझ न जाएँ, बल्कि प्रकाशपुंज के समान आलोकित रहें।

आज का सद्चिंतन

दीपावली के असंख्य दीपों में से थोड़े से दीये ही सही जलते रहने का संकल्प करें। ऐसा संकल्प, जो जलने के बाद और बुझने से पहले अनगिनत और दीप जला जाएँ। इससे एक दीप से दूसरा दीप जलेगा और देश के घर-आँगन ही नहीं, खेत-खलिहान, गाँव-शहर और प्रांत सब के सब जगमगाने लगेंगे। इस महापुरुषार्थ के बिना यह आलोक, उमंग एवं उल्लास का पर्व प्रश्नों के जालों में उलझता ही रहेगा। मिट्टी के दीये केवल थोड़ी देर के लिए ही घर-आँगन को रोशन कर पाते हैं, मन-आँगन में उजियारे के लिए श्रद्धा एवं संवेदना के दीप चाहिए। ये दीप कभी नहीं बुझने चाहिए। भले ही वह कर्मकांडों का विधि-विधान हो या राष्ट्र के लिए समर्पित महापुरुषार्थरूपी कर्मयोग हो, सभी के लिए ऐसे श्रद्धासिक्त दीप जल उठें तो दीपावली की महत्ता एवं सार्थकता सिद्ध हो जाएगी।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! ज्ञान वृद्धि तथा विचार साधना के लिए पुस्तकों का अध्ययन एक महत्त्वपूर्ण आधार है। मानवजाति द्वारा संचित समस्त ज्ञान पुस्तकों में संग्रहीत है, उसका लाभ अपनी सुविधानुसार कभी भी प्राप्त किया जा सकता है। डॉक्टर को रात्रि के समय बुलाना हो तो फीस देकर बुलाया जा सकता है। टेलिफोन पर किसी स्वजन सम्बन्धी से किसी भी समय बातचीत की जा सकती है। महापुरुषों के विचारों का लाभ भी इसी तरह स्वाध्याय से किसी भी क्षण प्राप्त किया जा सकता है।

सत्साहित्य ऐसे प्रकाश स्तम्भ हैं जो संसार सागर के भीषण झंझावातों-उतार चढ़ावों में मनुष्य का मार्गदर्शन करते और भटकाव से बचाते हैं।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! साधक को चरित्रवान होना चाहिए। आप यह मत समझिए कि हर आदमी भगवान को बहला सकता है। यह हर आदमी के चंगुल में आने वाला नहीं हैं। अगर यह बात रही होती तो चोर, उचक्के, बेईमान और दुष्ट-दुराचारी भी भगवान को पकड़ करके और चाहे जिस तरीके से अपना उल्लू सीधा करते और देवी को बकरी भेंट करके चाहे जो काम करा लेते। भगवान को पाने के लिए मनुष्य को चरित्रवान होना चाहिए।

मेरी जिन्दगी का सार यही है। चरित्र वाला पक्ष जिसमें मैंने अपने आपको धोबी के तरीके से धोया और धुनिए के तरीके से धुना। धुनिया जैसे थोड़ी-सी रूई को धुन-धुन करके इतनी मोटी बना देता है और धोबी कपड़े को पीट-पीट करके सफेद झक बना देता है, हमने भी अपने चरित्र को उसी प्रकार धोया और भगवान का अनुग्रह पाया।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! विचारों की शक्ति आग या बिजली की तरह है, उसके साथ मखौलबाजी करना खतरनाक है।

अवांछनीय विचारों को मस्तिष्क में स्थान देने और उन्हें वहाँ जड़ जमाने का अवसर देने का अर्थ है-भविष्य में हम उसी स्तर का जीवन जीने की तैयारी कर रहे हैं। भले ही यह सब अनायास या अनपेक्षित रीति से हो रहा है, पर उसका परिणाम तो होगा ही। उचित यही है कि हम उपयुक्त और रचनात्मक विचारों को ही मस्तिष्क में प्रवेश करने दें। यदि उपयोगी और विधायक विचारों का आह्वान करने और अपनाने का स्वभाव बना लिया जाए, तो निःसंदेह प्रगति पथ पर बढ़ चलने की संभावनाएँ आश्चर्यजनक गति से विकसित हो सकती हैं।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! समाज हितैषी व्यक्तियों का कर्त्तव्य है कि वे समाज में इस धारणा का प्रचार करें कि किसी प्रकार की हराम की कमाई नहीं, वरन् ईमानदारी का पैसा ही मनुष्य को सुख और शान्ति प्रदान कर सकता है।

किसी भी बात का समाज में प्रचार करने के लिए पहले उसे अपने जीवन में अपनाना आवश्यक है। समाज के अगुवा लोग जैसा आचरण करते हैं, उसका अनुकरण दूसरे लोग करते हैं। सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक कार्यकर्ता और नेता लोग जब अपने प्रत्यक्ष आचरण और उदाहरण के द्वारा जनता को चरित्र निर्माण का मार्ग दिखाएँगे, तो वह दिन दूर नहीं होगा, जब भ्रष्टाचार हमारे समाज से दूर हट जाएगा।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! सफलता के सूत्रः-

☞जीवन में एक लक्ष्य, एक ध्येय और एक कार्यक्रम का चुनाव करना

☞अपनी संपूर्ण शक्ति, क्षमता को अपने लक्ष्य की पूर्ति में लगाना।

☞अपनी इच्छा और पसंद के स्वभाव को व्यापक बनाना।

☞खतरों से खेलने का स्वभाव सँजोना।

☞खिलाड़ी की भावना रखना।

इस दुनिया में हर वस्तु कीमत देकर प्राप्त की जाती है। यही यहाँ का नियम है। सफलताएँ भी उत्कृष्ट मनोभूमि और आत्मबल के मूल्य पर खरीदी जाती हैं। यदि ये साधन पास में न हों, तो फिर बड़ी-बड़ी आशाएँ और आकांक्षा करना निरर्थक है।

आज का सद्‌चिंतन

मित्रो ! वैराग्य भावना में निःसंदेह बड़ी शक्ति है। बुरे से बुरे संस्कार वैराग्य के बादलों के जल से धुलते देखे गए हैं।

विचार, भाव तथा क्रिया में अत्यंत सूक्ष्म ग्रहणशीलता रखते हुए सांसारिक विषयों के प्रति निरपेक्ष बने रहने का नाम वैराग्य है। संक्षेप में राग द्वेष के बंधनों से मुक्त होना ही वैराग्य है। यह भी कह सकते हैं कि वैराग्य उस अवस्था या स्थिति का नाम है जब मनुष्य की चित्तवृत्तियाँ विभिन्न भावों से हटकर चिरसत्य की ओर जाग्रत हों। इन भावनाओं की शक्ति और सामर्थ्य की थाह पाना निश्चय ही कठिन बात है क्योंकि जिस किसी के जीवन में भी इन भावनाओं का उदय हुआ उनका तीव्र विरोध, उपहास और सांसारिक विषय विकार कुछ कर नहीं पाए। षट् विकारों के शमन का भी श्रेष्ठ उपाय वैराग्य भावनाओं को ही मान सकते हैं।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! देवता या मनुष्य कोई भी भूल करेगा तो दंड पावेगा। इसी प्रकार विसंगठन, फूट, पृथकता एवं स्वार्थपरता का भाव भी मानव जाति के लिए एक अभिशाप है। संघ शक्ति का अवलंबन किए बिना मनुष्य अपनी आत्मरक्षा तक कर सकने में समर्थ नहीं हो सकता।

व्यक्तिगत क्षेत्र हो चाहे सामाजिक क्षेत्र, दोनों में ही एक ही सिद्धांत काम करता है। यदि हमारी पाशविक वृत्तियाँ प्रबल हो रही होंगी और देवत्व बिखरा प्रसुप्त स्थिति में पड़ा होगा तो फिर असुर बुद्धि और असुर प्रवृत्ति ही बलवती रहने से जीव निम्न कोटि का, पतन और पाप से भरा हुआ दीख पड़ेगा। इसके विपरीत यदि देवत्व सजग,संघबद्ध और सक्रिय रहा होगा तो असुरता परास्त हुए बिना न रहेगी।

स्वयं अपने को तौल कर देखो।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! मानव जीवन का ध्येय आत्मसंतोष प्राप्त करना है और आत्मसंतोष प्राप्ति का उपाय मानवीय सामर्थ्य का विकास करना है। सामर्थ्य का विकास साधना से होता है और साधना तप के बिना पूरी नहीं होती।

जीवन के अपने ध्येय की पूर्ति के लिए तप की, कठिन परिश्रम की आवश्यकता होती है। निरंतर की साधना और परिश्रम ही तप के पुण्य नाम से पुकारे जाते हैं। किंतु जो तप त्याग के लिए किया जाता है वही तप है। तप के लिए तप करना तप नहीं कहा जा सकता। उससे शरीर और मानसिक विकारों का प्रादुर्भाव होता है। उससे आत्मपरितोष का उद्देश्य भी प्राप्त नहीं हो सकता। तप के साथ संग्रह का कोई स्थान नहीं है।

दूसरे लोगों के हितार्थ, सेवा के लिए अपने शरीर पर कष्ट सहना ही वास्तविक तप कहा जा सकता है।

आज का सद्‌चिंतन

मित्रो ! मनुष्य के विनाश का सबसे प्रबल कारण है उसका 'अहंकार'। 'मैं ही सब कुछ हूँ', 'मेरा विचार ही सबसे अच्छा है', मैं सबसे अधिक सुंदर हूँ, मैं धनी हूँ, मैं पंडित हूँ आदि अहंकारिक भावनाओं के कारण संसार में कलह, झंझट, युद्ध और महायुद्ध की विभीषिकाएँ उठ खड़ी होती हैं। क्या यह अभिमान सार्थक हो सकता है? आप से अधिक तो इस धरती पर अनेक रूपवान, शक्तिवान और सामर्थ्यवान विद्यमान हैं, फिर यह अहंकार आपका क्या प्रयोजन हल कर सकता है? आध्यात्मिक विकास की सबसे बड़ी बाधा मनुष्य के अहंकारपूर्ण विचार ही होते हैं। संसार से ही यह संभव है कि मनुष्य इस दुष्प्रवृत्ति से बचा रह सके।

संकल्प के धनी व्यक्ति ही अहंकार को कुचलने का साहस कर पाते हैं।

दिनाँक-१८/१०/२००७

आज का सद्चिंतन

परम पूज्य गुरुदेव

दिनाँक-१९/१०/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! जैसे लोहे को किसी अन्य आकृति में ढालना हो तो उसे गरम करके नरम बनाना पड़ता है, तब वह पिछली आकृति को छोड़कर किसी अन्य आकृति में ढलता है, वैसे ही मनुष्य का अन्तःकरण ज्ञान और विवेक की आग में ही नरम बनता है और तभी वह अपने पूर्व पक्ष को छोड़कर किसी अच्छे मार्ग पर चलने को तैयार होता है। पाप और बुराई को तो लोग दूसरों की देखा-देखी एवं उनसे प्राप्त होने वाले तात्कालिक लाभों से प्रभावित होकर ही अपना लेते हैं, पर कुकर्म का लोभ त्याग कर, सत्कर्म की ओर अग्रसर होना, हीन स्थिति में ऊँचे उठकर उच्च स्थिति के लिए प्रयत्नशील होना, बिना तीव्र भावना एवं बिना उत्कृष्ट प्रेरणा के संभव नहीं हो सकता और यह कार्य ज्ञान की अग्नि द्वारा ही संभव हो सकता है। मशीनें कोयला, भाप, तेल गैस, बिजली, अणु आदि आग्नेय शक्ति द्वारा गतिशील होती हैं। मनुष्य रूपी मशीन को यदि उत्कर्ष के मार्ग पर चलाना हो तो उसे ज्ञान की-विवेक की शक्ति अनिवार्यतः चाहिए। इसके बिना हृदय की आँखें नहीं खुलतीं और न दूरवर्ती भलाई, बुराई सूझ पड़ती है। केवल ज्ञान में ही वह शक्ति सन्निहित है, जो व्यक्ति के अंतःस्थल को पलटे और उसे अनुपयुक्त मार्ग से हटाकर उपयुक्त मार्ग पर प्रवृत्त करे। ज्ञान-दान की पुनीत प्रक्रिया को हम लोग इस संसार का सर्वश्रेष्ठ परमार्थ समझकर उसे अत्यधिक महत्त्व दें और इस बात का प्रयत्न करें कि विचार एवं विवेकशीलता की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन मिले। हर आदमी ज्ञान की महत्ता एवं उपयोगिता को समझे।

वाङ्मय-६६ पृष्ठ नं-२.५९

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! केवल कल्पना ही कल्पना मनुष्य के लिए अहितकर है। हमारे विचारों में क्रिया का समन्वय अवश्य होना चाहिए। जो व्यक्ति उत्साहपूर्वक कार्य में प्रविष्ट होता है, वही विजयी भी होता है। जो केवल माला जपने में रहेगा, स्वयं परिश्रम न करेगा, उसे कुछ भी प्राप्त न होगा। हम मानते हैं कि विचार में प्रबल शक्ति है, किन्तु विचार में शक्ति तब ही है, जब उसे अंकुरित होने का सुअवसर प्राप्त हो। जो विचारों के प्रवाह को अवरुद्ध करता है, वह अपनी उन्नति को पीछे धकेलता है। जो विचारों में क्रिया का योग नहीं देता, वह विचारों के अंकुरों को पल्लवित होने से, उन्हें फलित होने से रोकता है।

आज का सद्चिंतन

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! सच्चा मनुष्य एक शूरवीर सिपाही की भाँति निर्भीक रहता है। वह आदर्श सिद्धान्तों का पालन करने के लिए अपने शरीर के टुकड़े-टुकड़े करा देने पर भी पथ से विचलित नहीं होता। दूसरों के प्राणों की रक्षा करने के लिए जिसने अपने प्राणों की बाजी लगा डाली है, उस उदार चित्त सैनिक का जीवन किसी संत से कम नहीं है। तीर, तलवारों की वर्षा जिसके विश्वास को डगमगाती नहीं, जो अपने प्राणों से बढ़कर राष्ट्र के गौरव और सम्मान को समझता है, वही शूरवीर इस धरती पर धन्य होता है। जीते तो सभी हैं; पर जो सिद्धान्त के लिए जीवित हैं, जीना उन्हीं का सार्थक है।

अखण्ड ज्योति-१९६२

दिनाँक-२३/१०/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! जिनका विवेक जग सके, वे समय को पहचाने, अपनी गरिमा और भूमिका समझें और बाल क्रीड़ाओं में ही उलझे न रहें। वरिष्ठों और विशिष्ठों की कोई महत्त्वपूर्ण भूमिका इस आपत्तिकाल में भी न बन सकी, तो इतना ही कहा जाएगा कि भावनाओं के पंख कट गये और वह मात्र कल्पना के पिंजड़े में तड़फड़ाती हुई दम तोड़ गई। नफे-नुकसान का बहीखाता फैलाने का यह समय नहीं है। इन दिनों तो शूरवीरों की तरह सिर हथेली पर रखकर धर्मयुद्ध में कूद पड़ने में ही हमारे वर्चस्व की सार्थकता है। समय बिना किसी की प्रतीक्षा किये चला जाएगा। उसे इस बात की परवाह नहीं कि कौन दूरदर्शिता का परिचय देता है, कौन व्यामोह के चक्रव्यूह में फँसा रहता है?

महाकाल की आकांक्षा-

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! सर्वत्र पात्रता के हिसाब से मिलता है। बर्तन आपके पास है तो उसी बर्तन के हिसाब से आप जो चीज लेना चाहें तो ले भी सकते हैं। खुले में रखें तो पानी उसके भीतर भरा रह सकता है। दूध देने वाले के पास जाएँगे तो जितना बड़ा बर्तन है उतना ही ज्यादा दूध देगा। ज्यादा लेंगे तो वह फैल जाएगा और फिर वह आपके किसी काम नहीं आएगा। इसलिए पात्रता को अध्यात्म में सबसे ज्यादा महत्त्व दिया गया है। जो आदमी अध्यात्म का प्रयोग करते हैं, वे अपने व्यक्तिगत जीवन में अपनी पात्रता का विकास कर रहे हैं कि नहीं कर रहे हैं-यह बात बहुत जरूरी है। आदमी का व्यक्तित्व अगर सही नहीं है तो यह सब बातें गलत हैं। कपड़े को रंगने से पहले धोना होगा। धोएँ नहीं और मैले कपड़े पर रंग लगाना चाहें तो रंग कैसे चढ़ेगा? रंग आएगा ही नहीं, गलत-सलत हो जाएगा। इसी प्रकार से अगर आप धातुओं को गरम नहीं करेंगे तो उससे जेवर नहीं बना सकते। हार नहीं बना सकते। क्यों? इसलिए कि आपने सोने को गरम नहीं किया है। गरम करने से आप इन्कार करते हैं। फिर बताइए जेवर किस तरीके से बनेगा? इसलिए गरम करना आवश्यक है। जो आदमी साधना के बारे में दिलचस्पी रखते हैं या उससे कुछ लाभ उठाना चाहते हैं, उन्हें सबसे पहला जो कदम उठाना पड़ेगा, वह है

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! हमारा अनुरोध यह है कि जो कोई भी आदमी यह चाहते हों कि हमको अपनी उपासना को सार्थक बनाना है तो उन्हें तीनों बातों को बराबर ध्यान में रखना चाहिए।

हम देखते हैं कि अकेला बीज बोना सार्थक नहीं हो सकता। उससे फसल नहीं आ सकती। फसल कमाने के लिए बीज एक, भूमि दो और खाद-पानी-इन तीन चीजों की जरूरत है। निशाना लगाने के लिए बंदूक एक, कारतूस दो और निशाना लगाने वाले का अभ्यास तीन- यह तीनों होगी तब बात बनेगी। मूर्ति बनाने के लिए पत्थर एक, छेनी-हथौड़ा दो और मूर्ति बनाने की कलाकारिता तीन। लेखन कार्य के लिए कागज, स्याही और शिक्षा तीनों चीजों की जरूरत है। मोटर चलाने के लिए मोटर की मशीन, तेल और ड्राइवर तीनों चीजों की जरूरत है। इसी तरीके से उपासना के चमत्कार अगर किन्हीं को देखने हों, उपासना की सार्थकता की परख करनी हो तो इन तीनों बातों का ध्यान में रखना पड़ेगा जो हमने अभी निवेदन किया-उच्चस्तरीय दृष्टिकोण, परिष्कृत व्यक्तित्व और अटूट श्रद्धा-विश्वास। इन तीनों को मिलाकर के जो कोई भी आदमी उपासना करेगा, निश्चयपूर्वक और विश्वासपूर्वक हम कह सकते हैं कि आध्यात्मिकता के तत्वज्ञान को जो कुछ भी माहात्म्य बताया गया है कि आदमी स्वयं लाभान्वित होता है, समर्थ बनता है, शक्तिशाली बनता है, शांति पाता है, स्वर्ग-मुक्ति जैसा लाभ प्राप्त करता है और दूसरों की सेवा-सहायता करने में समर्थ होता है, सही है।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! गायत्री मंत्र के संबंध में हम आजीवन प्रयोग और परीक्षण करते रहे और पाया कि गायत्री मंत्र सही है, शक्तिमान है। सब कुछ उसके भीतर है, लेकिन है तभी जब गायत्री मंत्र के बीज को तीनों चीजों से समन्वित किया जाए। उच्चस्तरीय दृष्टिकोण, अटूट श्रद्धा-विश्वास और परिष्कृत व्यक्तित्व। यह जो करेगा पूरी सफलता पाएगा। हमारे अब तक के गायत्री उपासना संबंधी अनुभव यही हैं कि गायत्री मंत्र के बारे में जो तीनों बातें कही जाती हैं, पूर्णतः सही हैं। गायत्री को कामधेनु कहा जाता है, यह सही है। गायत्री को कल्पवृक्ष कहा जाता है, यह सही है। गायत्री को पारस कहा जाता है, इसको छूकर के लोहा सोना बन जाता है, यह सही है। गायत्री को अमृत कहा जाता है, जिसको पीकर के अजर-अमर हो जाते हैं, यही भी सही है। यह सब कुछ सही उसी हालत में है जबकि गायत्री रूपी कामधेनु को चारा भी खिलाया जाए, पानी पिलाया जाए, उसकी रखवाली भी की जाए। गाय को चारा आप खिलाएँ नहीं और दूध पीना चाहें तो यह कैसे संभव होगा? पानी पिलाएँ नहीं ठंड से उसका बचाव करें नहीं, तो कैसे संभव होगा? गाय दूध देती है, यह सही है, लेकिन साथ-साथ में यह भी सही है कि इसको परिपुष्ट करने के लिए, दूध पाने के लिए उन तीनों चीजों की जरूरत है जो कि मैंने अभी आपसे निवेदन किया।

आज का सद्‌चिंतन

मित्रो ! इन दिनों दुनिया दो तरीके से बदल रही है। इसे कौन बदल रहा है? बीसवीं सदी का अवतार, जिसे हम प्रज्ञावतार कहते हैं। आदमी की अक्ल बहुत ही वाहियात है। इस अक्ल ने सारी दुनिया को गुत्थियों में धकेल दिया है। जितनी ज्यादा अक्ल बढ़ी है, संसार में उतनी ही ज्यादा हैरानी बढ़ी है। आप कॉलेजों में, विश्वविद्यालयों में चले जाइए। पहले वहाँ अराजक तत्त्व, अवांछनीय तत्त्व जन्म ले रहे हैं? आपको बदलता हुआ जमाना दिखाई नहीं पड़ता, आजकल बहुत हेर-फेर हो रहा है। इस अक्ल ने दुनिया को हैरान कर दिया है। इस अक्ल की धुलाई करने के लिए एक नई अक्ल पैदा हो रही है,जिसका नाम है-'महाप्रज्ञा'। चौबीसवाँ अवतार प्रज्ञा के रूप में जन्म ले रहा है। आपको तो नहीं दिखाई पड़ता होगा शायद, पर आप हमारी आँखों में आँखें डालकर देखें। हमारी आँखे बहुत पैनी हैं और बहुत दूर की देखने वाली हैं। हमारी आँखों में टैलिस्कोप लगे हुए हैं। आप आइए, जरा हमारी आँखों में आँखें डालिए, फिर देखिए क्या हो रहा है? जमाना बेहद तरीके से बदल रहा है। यह कौन बदल रहा है? भगवान बदल रहा है। भगवान का अवतार जब कभी भी दुनिया में हुआ है, तब भक्तजनों को अपना सौभाग्य चमकाने का मौका मिल गया है।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! हमने ये कभी किसी से नहीं कहा कि हम आपकी मनोकामना पूरी कर सकते हैं। जो आदमी ये दावा करे कि हम मनोकामना पूरी कर देते हैं, आप समझना ये आदमी धूर्त है। क्यों? क्योंकि इनसान के हाथ में इतनी ताकत नहीं कि आदमी के कर्म और आदमी के प्रारब्ध को पूरी तरह से साफ कर सके। ये काम भगवान कर सकते हैं? मैं सोचता हूँ भगवान भी नहीं कर सकते; क्योंकि भगवान ने कर्म की व्यवस्था ऐसी बना दी कि वह अपने बाप की मुसीबत को दूर न कर सके।

भगवान रामचन्द्र जी के पिता दशरथ जी को शाप लगा था; उस शाप से बिलख-बिलख करके उनके प्राण छूटे। श्रीकृष्ण भगवान अपने भांजे को मौत से बचा न सके। श्रीकृष्ण भगवान ने पहले जन्म में बालि को तीर मारा था, उसका कर्म आकर के उनके पैर में लगा और पैर उनका फट गया। बहेलिया आकर के रोया-महाराजजी ! गलती हो गई। उन्होंने कहा-गलती नहीं है। आप पहले जन्म में बालि थे और हम पहले जन्म में राम। हमने आपको छिप करके तीर मारा, उसका प्रारब्ध-भोग आज हमें इस रूप में मिला है। हमने जो गलती की उसी का यह फल है। चाहे रामचन्द्रजी ही क्यों न हों, छिपकर के भी खराब काम करेंगे तो उनको भी, भगवान जी को भी छुट्टी नहीं मिल सकती। भगवान बड़े है; लेकिन कर्म भगवान से बड़ा है- ये आप ध्यान रखना।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! गुरु गोविन्दसिंह जी ने भी एक हाथ में माला तथा दूसरे में भाला का संदेश दिया था, ताकि हम लोगों को ज्ञान दें, पूजा-पाठ भी बतलाएँ, परन्तु जब दुष्ट एवं अनीति करने वाले हमारे आड़े आ जाएँ, तो उनको भी हम रास्ता दिखा सकें। मित्रो, हमारा मिशन भी इसी तरह के दो उद्देश्यों पर आधारित है। आप जहाँ भी जाएँ भगवान राम का चरित्र सुनाएँ। उनका भाई-भाई का प्रेम, माँ-बाप के प्रति सद्भावना के साथ यह भी बताएँ कि रामचन्द्र जी ने खर-दूषण और मारीचि को मारा था ताकि अभद्रता न पनप सके, अराजकता न रह सके। उस समय के राक्षस मनुष्य के रूप में विद्यमान थे। वे दिखायी नहीं पड़ते। जो दिखाई पड़े, उनका तो इन्तजाम शीघ्र कर सकते हैं, परन्तु न दिखायी पड़ने वालों को मारने में विलम्ब होता है। हमारे जमाने के राक्षस मलेरिया की तरह आँखों के फ्ल्यू की तरह हैं। यों मूढ़-मान्यताओं, अज्ञानता, कुरीतियों और प्रथा-परम्पराओं के रूप में हमारे समाज में भयंकर रूप से फैले हुए हैं, इन्हें दूर करना होगा।

आज का सद्‌चिंतन

मित्रो ! आप इस समय अपनी सारी आकांक्षाओं को और इच्छाओं को सिर्फ इस काम में लगा दीजिए कि हमें समय की माँग पूरी करनी है; युग की भूमिका निभानी है। युग की भूमिका निभाने के लिए आप आगे-आगे बढ़ें, तो आपको पूरा-पूरा सहयोग मिले। जाग्रत आत्माएँ हमेशा आगे-आगे चलती हैं। उन्होंने किसी का इन्तजार नहीं किया। दूसरे करेंगे, तो हम करेंगे। हिमालय पर सबसे पहले जो ऊँचा शिखर होता है, उस पर धूप चमकती है। आप भी अपनी धूप चमकाइए सबसे पहले। झण्डा लेकर चलने वाला आगे-आगे चलता है, दूर से दिखायी पड़ता है। आप आगे-आगे चलिये और दूसरों को रास्ता बताइये। लड़ाई में बैण्डवाजे, बिगुलबाजे आगे-आगे चलते हैं। आप बैण्डवाजे वाले बनिये और बिगुल बजाइये, ताकि सारी सेना में हिम्मत पैदा हो सके। आपको कुछ ऐसे ही शानदार काम करने है। आप जाग्रत आत्मा हैं। युग-आत्माओं को, युग-प्रहरियों को युग को देखना पड़ेगा, युग की जरूरतें क्या है? आपकी इच्छा क्या हैं? अरे बाबा ! एक कोने में रखो आपकी इच्छा क्या है? हम कहते है-अपनी इच्छा को एक कोने में रखिये। भगवान की इच्छा क्या है? समय की माँग क्या है? प्रज्ञावतार की माँग क्या है? आप कान खोलकर सुनिये और सुनने के बाद पूरी हिम्मत के साथ में और पूरी वफादारी और जिम्मेदारी के साथ में निभाने में जुट जाइए।

आज का सद्‌चिंतन

बीज छोटा सा होता है, परन्तु फलों का, फूलों का, सभी का गुण छोटे से बीज में सन्निहित होता है। छोटे से शुक्राणु में बाप, दादा का पीढ़ियों का गुण समाया रहता है। इसी तरह जो भी इस संसार का दिव्य ज्ञान-विज्ञान है, वह इस छोटे से गायत्री मंत्र के अन्दर समाविष्ट है। २४ अक्षरों वाले बीज में विद्यमान है।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! लोहे की भोथरी कील लीजिए। उसे कहीं गाड़िए, ठूँसिए नहीं गड़ेगी, लेकिन अगर कील की नोक निकाल दीजिए, प्वाइंट बना दीजिए, प्वाइंट बनाकर आप सूराख कीजिए, वह सूराख करती हुई चली जाएगी। ड्रिलिंग मशीन सबको पार करती हुई चली जाएगी। कील नहीं, नोक काम करती है। आपने तो अपने मस्तिष्क को, मनःस्थिति को बिखराव से भर दिया है। आप जाने क्या-क्या विचार करते रहते हैं। अल्लम-गल्लम, बेकार के निरर्थक विचार करते रहते हैं। आप इन सभी निरर्थक विचारों को एकत्र कीजिए और एक प्वाइंट पर लगा दीजिए तथा फिर देखिए कि आपकी अक्ल कितनी पैनी हो जाती है? अक्ल कितनी तीखी हो जाती है और आप वैज्ञानिक हो जाते हैं, दार्शनिक हो जाते हैं। मस्तिष्क का बिखराव, समय का बिखराव, धन का बिखराव, इंद्रियों का बिखराव इन सब चीजों के बिखराव को रोककर आप अपने आप को रोकना शुरू करते हैं। अपने आप को काबू में लाना शुरू करते हैं, आप अपने आप को एकाग्र करना शुरू करते हैं तो आपका नाम तपस्वी हो जाता है, संयमी हो जाता है। अर्जुन मछली बेधने में सफल हुआ और स्वयंवर जीतने एवं द्रौपदी से विवाह करने में समर्थ हुआ। उसका एक ही कारण था कि उसने अपनी विचारशक्ति के फैलाव को, बिखराव को केंद्रित कर लिया था। जब उससे गुरु द्रोणाचार्य ने पूछा कि तुमको क्या दिखाई पड़ता है, तब उसने कहा कि हमको मछली की आँख दिखाई देती है और कुछ भी नहीं दिखाई पड़ता। वही तीर सबके पास थे, जो अर्जुन के पास थे, लेकिन मछली की आँख को देखने वाला केवल अर्जुन ही सफलता को प्राप्त करने में सफल हुआ।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! आप अपने ऊपर संयम करना सीख पाएँ, बिखराव के ऊपर नियंत्रण करना सीख पाएँ, अपनी अव्यवस्थाओं के ऊपर नियंत्रण करना सीख पाएँ तो आपको बाहर से कहीं माँगना ही न पड़े। सामर्थ्य आपके भीतर है। बिखराव से वह शक्ति नष्ट होती रहती है। आप उस बिखराव को रोकिए। सूर्यकिरणों पर आजकल रिसर्च हो रही है। वैज्ञानिक कहते हैं कि सूर्यकिरणों को अगर हम एकत्रित कर पाएँ, फैलती हुई किरणों को अगर हम काबू में ला पाएँ तो हीट (गरमी) और बिजली की सभी जरूरतों को हम इसी से पूरा करा लेंगे। आप सूरज हैं और आपके भीतर शक्तियों के जखीरे भरे पड़े हैं। अगर आप अपनी शक्तियों के बिखराव को रोक पाएँ तो मजा आ जाए।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! अपने भगवान को संवेदना में उतारने के लिए हमको ये करना पड़ेगा कि हमें एक अलग कंपनी बनानी पड़ेगी, एक अलग देश बसाना पड़ेगा। एक अलग तरीके से हमको अपनी व्यवस्था करनी पड़ेगी। लोगों में हम काम तो करेंगे, लेकिन उनसे अलग रहकर। ***लोगों की सलाह हम नहीं मानेंगे। किसकी सलाह मानेंगे? स्वाध्याय की। स्वाध्याय का मतलब सत्संग है।*** सत्संग के लिए हम एक ऐसी कंपनी, एक ऐसी कमेटी और एक ऐसी सोसायटी बनाएँगे, जो हमारे ढंग की हो, हमारे स्तर की हो, जिसके परामर्श और सलाह से हम अपनी जिंदगी की समस्याओं का समाधान कर सकें। बेटे ! हमने एक ऐसी ही कंपनी बना रखी है। हम अकेले रहते हैं। कहाँ रहते हैं? ऊपर अकेले रहते हैं। तो महाराज जी! आपको डर नहीं लगता। कोई और नहीं रहता? बेटे! हमारे पास इतने आदमी रहते हैं कि बारह से पाँच बजे तक भीड़ लगी रहती हैं? किसकी? आप लोगों की भीड़ लगी रहती है। ये कितने घंटे रहती हैं? पाँच घंटे। इसके बाद जो उन्नीस घंटे रह जाते हैं, उसमें मेरे पास ऐसे-ऐसे लोग रहते हैं कि कभी आप किवाड़ खोलकर आ जाएँ तो दंग रह जाएँगे। गुरुजी ! ये कौन-कौन बैठे हैं। बेटे ! ऐसे-ऐसे लोग बैठे रहते हैं कि मैं उनका नाम नहीं बता सकता। नहीं महाराज जी ! नाम बताइए। अच्छा, चल बेटे ! तुझे बताता हूँ। हनुमान जी आ करके मेरे पास बैठ जाते हैं। रामचंद्रजी बैठ जाते हैं। सातों ऋषि बैठ जाते हैं। सब उसी में समा जाते हैं।

दिनाँक-०५/१२/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! हम आपको बार-बार जप कराते है, उसके कई प्वाइंट है। पहला प्वाइंट मैंने आपको शिक्षक-छात्र का पढ़ने-पढ़ाने का बताया, दूसरा व्यायामशाला का। व्यायामशाला में आप जाइए और पहलवान जी से पूछिए क्यों साहब, क्या हो रहा है? आप कितने दंड-बैठक करते हैं? उत्तर मिलेगा २००-३०० बैठक करते हैं। यह क्या है? रेपिटिशन जिसे बार-बार करना पड़ता है। मिलिट्री वाले लेफ्ट-राइट और कवायद के रूप में रोज रियाज करते रहते हैं। संगीत को जानने वाले रोज रियाज करते रहते हैं। रियाज हाथ से गया कि संगीत हाथ से गया। स्नान करने और दाँत माँजने में हम रोज रेपिटिशन करते हैं। बर्तन साफ करते हैं तब, कपड़े साफ करते हैं तब, यह सब रेपिटिशन है। मन के ऊपर जो मलीनताएँ छाई हुई हैं, उसे धोने के लिए राम-नाम के माध्यम से, बार-बार जप करने के माध्यम से रेपिटिशन करना पड़ता है। हम बार-बार भगवान को पुकारते हैं। गज और ग्राह की लड़ाई में गज की एक टाँग ग्राह के मुँह में चली गई थी और ग्राह उसे घसीटता हुआ चला जा रहा था। जब गज ने देखा कि हमारा कोई ठिकाना नहीं है, बचाव की कोई सूरत नहीं है, तो उसने आवाज लगाई और भगवान को १००८ बार पुकारा। गजराज के एक हजार आठ बार पुकारने पर भगवान दौड़े हुए चले आये। बेटे, एक टाँग मुँह में पकड़कर घसीट ले गया था, कौन? ग्राह। किसकी? गज की और आप लोगों की तो सारी की सारी टाँगों को पकड़कर यह मगर घसीटे ले जा रहा है। एक काम, दूसरा क्रोध, तीसरा लोभ, चौथा मत्सर, पाँचवाँ अहंकार, छठा मोह-ये छह ग्राह कहाँ-कहाँ चिपके हैं-गर्दन पर, हाथ पर, पैर पर और पूँछ पर। ये सभी मुँह से पकड़ कर घसीटे ले जा रहे हैं। इसलिए हम भगवान को पुकारते हैं कि हे भगवान ! आप कहाँ हैं? आइए। हमारी जीवात्मा ! आप कहाँ हैं? आइए। हमारे जीवन-लक्ष्य, हमारे उद्देश्य, हमारे जीवन की महानता आप कहाँ हैं? हे हमारे आदर्श ! आप कहाँ हैं? आप आइए और हमको ले करके चलिए। बेटे, इसी के लिए हम जप कराते हैं आपसे।

पूज्यवर की अमृतवाणी भाग-१-पृष्ठ-२.६५

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! संदेश वाहक में नीचे लिखे अनुसार तीन गुण होने ही चाहिए-

१. वह स्वाध्यायशील हो। उसे ऋषि का संदेशवाहक बनना है। ऋषि के विचार रोगों-मुसीबतों के श्रेष्ठ उपचार के लिए औषधि-रूप होते हैं। किसे क्या रोग है, किसकी क्या समस्या है? यह अध्ययन करने की क्षमता उसमें होनी चाहिए। इसी के साथ अमुक रोग की दवा के रूप में ऋषि का कौन सा विचार कहाँ उपलब्ध है, यह जानना भी जरूरी है। सभी विचार उसकी स्मृति में ही रहें, यह जरूरी नहीं, किन्तु वह विचार कहाँ उपलब्ध होगा, यह जानना तो जरूरी है। यह दोनों कार्य वही कर सकता है, जिसमें स्वाध्याय की सहज प्रवृत्ति हो।

२. उसकी वाणी मुखर हो-संदेशवाहक का दूसरा गुण यह होना चाहिए कि वह अपनी बात विनम्रतापूर्वक कह सके। यदि वह अपनी बात व्यक्त ही न कर पायेगा, तो बात कैसे बनेगी? यदि बात बतलाता तो है, लेकिन यदि उसमें उसका अहंकार झलकता है, तो भी बात बनती नहीं। अच्छी स्वादिष्ट खीर में यदि थोड़ी-सी रेत डाल दी जाय, तो फिर खाने वाले का सारा मजा किरकिरा हो जाता है। फिर वह उसे खा नहीं पाता, भले ही वह कितनी ही स्वादिष्ट और पौष्टिक हो।

ऋषिसंदेश स्वादिष्ट-पौष्टिक खीर जैसा होता है और वक्ता का अहंकार किरकिरी रेत की तरह। इसीलिए संदेशवाहक ऐसा होना चाहिए कि खीर तो पहुँचाए, पर उसमें रेत न मिलाये। संदेश तो जरूर दे, पर उसमें अपना अहंकार न बघारे।

३. जीवन साधना में उसकी आस्था हो- जो संदेशवाहक ऋषि का विचार लोगों तक पहुँचाता है, उसे लोग ध्यान से देखते हैं। लोग दूध के जले बैठे हैं, छाछ भी फूँक-फूँक कर, डर-डर कर पीते हैं। तमाम उपदेशक उन्हें रटी-रटाई-अव्यावहारिक बातें सुनाते-समझाते रहते हैं। जो बात कही जा रही है, व्यावहारिक है, उसका सबसे अच्छा प्रमाण यही है कि बताने वाला स्वयं उसके प्रति आस्थावान है, वह भी उस दिशा में ईमानदारी से सक्रिय है। जो सूत्र मुख से बोले जा रहे हैं, वे थोड़ी-बहुत मात्रा में जीवन से भी बोलने चाहिए।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! सारे का सारा दुःख अज्ञान का है, जिसका कोई इलाज नहीं और किसी के पास इलाज नहीं है। अज्ञान का इलाज भगवान के पास भी नहीं है। किसी के पास नहीं है। आदमी की ख्वाहिशें और हवस इतनी ज्यादा हैं कि सारे सारे देवी-देवता,संत और महात्मा इकट्ठे होकर के एक आदमी की हवस पूरी करना चाहें तो भी पूरी नहीं हो सकती। सिकन्दर की हवस पूरी न हो सकी, रावण की हवस पूरी न हो सकी। आज तक किसी की भी हवस पूरी नहीं हुई है। इस हवस को पूरी करने का एक ही तरीका है कि अपने आप को समेट लें तो हवस खतम हो सकती है। रामायण में सुरसा की कहानी इसी तरह की आती है। सुरसा मुँह फाड़ करके हनुमान जी को खाने के लिए दौडी। बड़ा सा मुँह फाड़ लिया और हनुमान जी को पकड़ कर चबाने लगी। हनुमान जी ने अपना शरीर बढ़ा दिया। फिर सुरसा ने अपना मुँह बढ़ाया। तब हनुमान जी ने अपना शरीर बढ़ा दिया। सुरसा का मुँह बढ़ता ही चला गया। हनुमान जी ने देखा कि भाई! यह तो बहुत तंग करेगी। हनुमान जी ने एक बहुत अच्छा तरीका निकाला-**मसक समाना रुप कपि धरी।** मच्छर के समान रूप बनाकर मुँह में से निकल कर भाग गए। ले खा, कैसे खाएगी? कैसे पकड़ेगी? मित्रो! मनुष्य की तृष्णाओं का कोई अंत नहीं हो सकता। उनको कोई पूरा नहीं कर सकता और मै समझता हूँ कि पूरा करने की जरूरत भी नहीं है कि आदमी की हवस पूरी की जाए। महाराज जी ! हमारी मनोकामना पूरी कर दीजिए। नहीं बेटे! अगर हमने तेरी एक मनोकामना पूरी कर दी तो जिस तरीके से मिट्टी का तेल डालने से आग भड़कती है, उसी तरीके से तेरी मनोकामना दूनी, चौगुनी, सौगुनी भड़केगी। फिर तू हमारे प्राण खाएगा। इस साल अगर हम यह पूरी कर देंगे तो अगले साल और आ जाएगा। अगले वर्ष और लहु पीएगा। हमारे पुण्य और तप का अनावश्यक लाभ उठाने का तेरी दाढ़ में खून सा लग जाएगा। हम तेरे ऊपर दो बूँद टपका देंगे, फिर तू छह बूँद माँगेगा, फिर इक्यासी बूँद माँगेगा। अभी चवन्नी की माला पहनाकर गया है, अगले वर्ष बारह आने वाली माला

दिनाँक-०८/१२/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! उपासना माने-नजदीक बैठना, पास बैठना। अगर आप पास बैठ जाएँ किसी के, तो उसके गुण, उसके कर्म, उसका स्वभाव व उसकी विशेषताएँ आपके भीतर आना शुरू हो जाएँगी। आग की भट्ठी के नजदीक अगर आप बैठने लगें तो आपका शरीर गर्म हो जाएगा। बर्फ की फैक्ट्री के भीतर अगर आप धुस जाएँ, तो आपका शरीर ठण्डा होने लगेगा। ऐसी दृष्टि से आपको किसी के साथ में जुड़ना चाहिए। उपासना का अर्थ है-पास बैठना। आगे चलकर इसी को जुड़ जाना भी कहते हैं। पास बैठने का उदाहरण आप समझिए। चन्दन के पेड़ के नजदीक जब बहुत सारे झाड़-झंखाड़ उगते हैं,तो उन झाड़ियों में भी चन्दन की विशेषताएँ पैदा हो जाती हैं। यह उपासना हो गई-नजदीक बैठना हो गया। पारस के नजदीक बैठते ही, स्पर्श करते ही लोहा सोना बन गया है। महान शक्ति का साथ छू करके कौन नहीं बन जाएगा महान ! आप स्वाति की बूँद के बारे में जानते हैं? स्वाति की बूँद कितनी महान होती हैं? वह सीप के मुँह में जा पड़ती है, तो मोती पैदा हो जाते हैं। नजदीक न हों तब? आपस में न मिलें तब? तब सीप के लिए सम्भव नहीं है कि वह मोती पैदा कर सके। यही बात भगवान के सम्बन्ध में भी है। भगवान को कल्पवृक्ष बताया गया है, भगवान को पारस बताया गया है, भगवान को अमृत बताया गया है। अमृत को पी करके आदमी अजर-अमर हो जाते हैं; कल्पवृक्ष के नीचे बैठ करके आदमी अपनी कामनाओं को पूरा कर लेते हैं और पारस को छू करके लोग सोना हो जाते हैं। मनुष्य के बारे में भी यही बात है।

पूज्यवर की अमृतवाणी-१-पृष्ठ-३.३५

आज का सद्चिंतन

चुंबकत्व जहाँ होता है, वहाँ सजातीय पदार्थ खिंचते चले आते हैं। वृक्षों का चुंबकत्व बादलों को बरसने के लिए बाध्य करता है। धातुओं में काम करने वाला चुंबकत्व दूर-दूर तक रेत में बिखरे पड़े धातुकणों को घसीटकर अपने पास बुलाने और जमा करने का काम करता है। फूल का आकर्षण मधुमक्खियों, तितलियों को जमा कर लेता है। उपासना से अंतःचेतना में उच्चस्तरीय आकर्षण उत्पन्न होता है। उससे ब्रह्मचेतना के महासमुद्र में से अपने लिए आवश्यक विभूतियों को आकर्षित कर लेने में सफलता मिलती है। उपासना-प्रक्रिया का तात्त्विक रहस्य अंतःचेतना को परिष्कृत करना है। भजन के साबुन से अंतःकरण पर जमे हुए कषाय-कल्मषों, दोष-दुर्गुणों का परिशोधन होता है। स्वच्छ वस्त्र पर रँगाई करने में कुछ कठिनाई नहीं होती। स्वच्छ दर्पण सामने होने से आकृति स्पष्ट दीखती है। उपासना से आंतरिक स्वच्छता का उद्देश्य पूरा होता है और उस पर आराध्य परब्रह्म का प्रतिबिंब स्पष्ट दीखने लगता है।

दिनाँक-१०/१२/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! गायत्री मंत्र, ज्ञान गंगा, का स्थूल रूप वह है जो हमारी कल्पना के अनुसार एक महिला है कोई, कहीं आसमान में रहती है, हंस की सवारी करती है। हमारी आपकी स्थूल कल्पना है कि वह देवी खुशामद से प्रसन्न हो जाती है। हम जब आरती करते हैं उसकी, तो देवी फूलकर कुप्पा हो जाती है और कहती है-वाह भाई ! वाह, यह आरती करने वाला चेला खूब मिला और हम जब माला धुमाते हैं तो देवी बहुत खुश होती है कि हमारी जय बोलने वाला, पूजा-प्रशंसा करने वाला दुनिया में कोई नहीं था। अब यह भगत पैदा हो गया है। कैसी हमारी जय बोलता है, आरती उतारता है? वह यही देखती है कि भगत दे रुपया, दे पैसा, दे औलाद, कर इम्तिहान में पास, इस सबके अलावा और कुछ नहीं माँगता। यह स्थूल गायत्री है। इस स्थूल गायत्री के लाभों से मै इनकार करता हूँ। यह यदि रहे होते तो हर मंदिर के पूजा करने वाले पुजारी को वे लाभ मिले होते। आप में से नब्बे फीसदी ऐसे हैं, जो गायत्री मंत्र को जप करते है। आपकी यह माला स्थूल माला है, स्थूल पूजा है। इसके बारे में मै इनकार नहीं करता। मैं कहूँगा कि यह भी उपयोगी है। जितने समय आप पत्ते खेलते है, यहाँ-वहाँ मटरगश्ती करते हैं, उतने समय आप बैठ जाइए और भगवान का नाम लीजिए। मैं क्यों इससे इनकार करूँगा? लेकिन जो लाभ-माहात्म्य बताया गया है, उसे यदि ग्रहण करना हो, वास्तव में अनुभव करना हो जैसा कि मैंने किया तो आपको उसके सूक्ष्म अंतरंग में प्रवेश करना होगा जिसका नाम गायत्री है।

पूज्यवर की अमृतवाणी-१-पृष्ठ-२.७१

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! हम योगी हैं, योगी। योगी का मतलब है-मिला देने वाला, देने वाला। पाने वाला नहीं-देने वाला। भगवान से पाना क्या? बेटे ! हमारी अक्ल, हमारी काया, हमारा धन और हमारी बुद्धि, सब कुछ भगवान के सुपुर्द है। यह क्या है? यह योगी का तरीका है। योगी माँगते नहीं हैं। योग में माँगने की गुंजाइश नहीं है, देने की गुंजाइश है। अतः क्या करना पड़ेगा? आपको भगवान को खरीदने के लिए अपने आप को सौंपना पड़ेगा। तब भगवान हमारी मनोकामना पूरी करें, ऐसा आप नहीं कह सकते। भगवान को आप समझते नहीं। भगवान विशिष्ट शक्ति का नाम है। आप अपनी मनोकामना को पूरी कराने के लिए देवता को जलील करना चाहते हैं। ऐसा करने की जरूरत नहीं है। कष्ट उठाकर देखिए, तभी बात बन सकती है। नहीं साहब ! हमारी मनोकामना पूरी कर दीजिए, हम आपको मिठाई देंगे, फूलमाला देंगे और आपको चावल खिला देंगे, धूपबत्ती खिला देंगे। बड़ा पागल, बड़ा छोटा आदमी है, आदमी कितना जाहिल है कि वह सेवा-सहायता करने से पहले यह तय कर लेना चाहता है कि कहीं ये नकली देवता तो नहीं हैं? जिसका हम हुकुम मानें, आखिर वो है क्या? आदमी यह तलाश करना चाहता है।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! गरीबी एक शान है। गरीबी एक परंपरा है, एक सिद्धांत है, अगर यह गरीबी स्वेच्छा से स्वीकार की गई हो तब। गरीबी अगर अपनी बेवकूफी और कमजोरी से स्वीकार की गई तो बेटे ! वह एक लानत है। लेकिन अगर स्वेच्छा से स्वीकार की गई है तो हम उसे तपश्चर्या कहेंगे, योग-साधना कहेंगे। संत तपस्वी होते हैं। उनका व्यक्तिगत जीवन गरीबों जैसा होता है, कम खरच का होता है, लेकिन जब वे अपने वैभव को बाँटते हैं तो लोगों को निहाल कर देते हैं। यही है अध्यात्म की वह परंपरा, जिसमें कि आधार स्वयं संपन्न दिखाई नहीं देते, लेकिन संपन्नता बिखेरते फिरते हैं। ऐसा अध्यात्म प्राचीनकाल में था और ऐसा अध्यात्म अभी भी हो सकता है; अगर उसको सही तरीके से अपनाया जाए।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! अध्यात्म बड़े बहादुरों का, शूरवीरों का, कलेजे वालों का रास्ता है। लोगों की रस्म और रिवाज, लोगों के विचार और चिंतन बड़े घटिया हैं, बड़े कमीने हैं। सिवाय पेट पालने के,सिवाय सामान इकट्ठा करने के और अपने शरीर की खुदगरजी पूरी करने के अलावा न इनके पास कोई दिशा है और न कोई लक्ष्य है, न कोई उद्देश्य है। इनके पास कुछ भी नहीं है। आगे बढ़ने, ऊँचा उठने के लिए शीर्षासन करना पड़ता है, उलटा खड़ा होना पड़ता है। टाँगें ऊपर को करनी पड़ती हैं और सिर नीचे करना पड़ता है। अर्थात लोग जिस तरीके से विचार करते हैं, लोगों का जो सोचने का तरीका है, लोगों के काम करने की जो शैली है, योगी की वह नहीं हो सकती। उसकी शैली अलग तरह की होती है। तो महाराज जी ! आप शीर्षासन इसीलिए कराते हैं ? हाँ बेटे ! इसीलिए कराते हैं। तो क्या इससे कोई फायदा नहीं है ? शरीर का फायदा होता होगा। जिस तरह से मुगदर भाजने के, पहलवानी करने के बहुत से फायदे होते हैं, उसी तरह शीर्षासन के भी होते होंगे, लेकिन योगाभ्यास का जहाँ तक ताल्लुक है, वहाँ केवल संकेत हैं, दिशाएँ हैं। जितने भी क्रिया-कृत्य हम करते हैं, वे सब दिशाएँ हैं, मार्गदर्शन हैं, संकेत हैं।

दिनाँक-१४/१२/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! आध्यात्मिक सम्पदा का दूसरा वाला चरण है- ‘‘ब्रह्मवर्चसम्’’। ब्रह्मवर्चस् किसे कहते हैं? ब्रह्मवर्चस् भी एक ताकत है। दुनिया में बहुत सारी ताकतें हैं। एक ताकत वह है, जो शरीर की ताकत कहलाती है। एक ताकत वह है जो पैसे की ताकत कहलाती है। एक ताकत वह है जो अक्ल की ताकत कहलाती है। एक ताकत वह है जो होशियारी की ताकत कहलाती है। एक ताकत वह है जो मनुष्य की संघबद्धता की, मनुष्यों के समूह की और समुदाय की ताकत कहलाती है। पाँच ताकतें दुनिया की हैं, लेकिन सबसे बड़ी ताकत जो आदमी की है वह है-रूहानी ताकत, ब्रह्मवर्चस् की ताकत। ब्रह्मवर्चस् की कैसे होती है? ब्रह्मवर्चस् की ताकत के बारे में पुराने ऋषियों की बात बताऊँ आपको। पुराने ऋषियों की बात जाने दीजिए, कल-परसों की बात मैं बता सकता हूँ। एक दुबला-पतला छियानवे पौण्ड का आदमी, कमजोर जैसा आदमी एक हंटर और एक चाबुक लेकर खड़ा हो गया। जिस तरीके से सर्कस का रिंग मास्टर चाबुक लेकर खड़ा हो जाता है और शेर को कहता है कि तमाशा दिखाइए, दो पैर से खड़े हो जाइए। उसने ब्रिटेन के शेर को कहा-‘क्विट इण्डिया’ हिन्दुस्तान छोड़िए। हिन्दुस्तान के सर्कस के रिंग मास्टर का हण्टर देखकर अँग्रेज काँप गए और अपना बोरिया-बिस्तर बाँध करके हिन्दुस्तान के बाहर चले गये। ये कौन-सी ताकत थी? ये रूहानी ताकत थी। ये आध्यात्मिक ताकतें थीं।

पूज्यवर की अमृतवाणी-पृष्ठ-२.२०

दिनाँक-१५/१२/२००७

आज का सद्‌चिंतन

मित्रो ! गायत्री माता क्या हो सकती है? अब मैं उसकी शक्ल की व्याख्या करूँगा। गायत्री माता बेटे, एक जवान स्त्री का नाम है जैसे कि हमने फोटो में छापा है और मंदिर में स्थापित किया है। जवान स्त्री इसलिए कि उसके प्रति तेरे भीतर मातृबुद्धि पैदा हो, आँखों में शुद्ध पवित्रता का भाव पैदा हो, क्योंकि मनुष्य, भावना और ईमान इन दो बातों में सबसे ज्यादा गंदा हो जाता है। एक धन को देखकर आदमी भ्रष्ट हो जाता है। दूसरे विपरीत सैक्स की जवानी देखकर न जाने कैसा शैतान दिमाग में आ जाता है कि आदमी सब कुछ भूल जाता है, यहाँ तक कि अपने कर्तव्यों को भी भूल जाता है। कामिनी और कंचन-दोनों को देख करके जो अपने ईमान को सही रख सकता है, उसे कह सकते हैं कि यह आदमी बहादुर है, शूरवीर है। इसके पास वह शक्ति है जिसका नाम ब्रह्मवर्चस है। जिसके पास ब्रह्मवर्चस है वह भगवान को भी मजबूर कर सकता है कि आप आइए जमीन पर और हमारे सामने खड़े होइए। भगवान को इसके सामने नत होना पड़ता है। मित्रो, ब्रह्मवर्चस और ब्रह्मतेजस वह शक्ति है जो भगवान को अपना भक्त बना लेने के लिए मजबूर कर देती है। यह ब्रह्मतेजस आता कहाँ से है? चरित्र में से आता है। पूजा चरित्र के लिए है। पूजा से भगवान नहीं मिल सकते। पूजा हमारा माध्यम है, लक्ष्य नहीं। पूजा के माध्यम से हम अपनी चरित्रनिष्ठा, विचारशीलता और आंतरिक उदात्तता का विकास करते हैं। उपासना इसी के लिए की जाती है।

पूज्यवर की अमृतवाणी-पृष्ठ-२.६३

दिनाँक-१६/१२/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! देवासुर-संग्राम की अनेक कथाओं में उसी 'साधना समर' का अलंकारिक निरूपण है। असुर प्रबल होते हैं, देवता अपने को हारता-सा अनुभव करते हैं, वे भगवान के पास जाते हैं, प्रार्थना करते हैं, भगवान उनकी सहायता करते हैं। अन्त में असुर सारे मारे जाते हैं, देवता विजयी होते हैं। देवासुर संग्राम के अगणित पौराणिक उपाख्यानों की पृष्ठभूमि यही है। **हमारा अन्तःप्रदेश ही वह धर्म क्षेत्र है, जिसमें महाभारत होता रहता है। असुर मायावी है। तमोगुण का असुर हमें माया में फँसाये रहता है। इन्द्रिय सुखों का लालच देकर वह अपना जाल फैलाता है और अपने मायापाश में जीव को बाँध लेता है। उस असुर के और भी कितने ही अस्त्र-शस्त्र हैं, जिनसे जीव को अपने वशवर्ती करके पद-दलित करने में वह सफल होता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर यह छः ऐसे ही सम्मोहन अस्त्र हैं, जिसमें मूर्छित होकर जीव बँध जाता है और वह मूर्च्छा ऐसी होती है कि उससे निकलने की इच्छा भी नहीं होती है, वरन् उसी स्थिति में पड़े रहने को जी चाहता है।**

आत्मा का कल्याण उस तम प्रवृत्ति में पड़े रहने से नहीं हो सकता, जिसमें माया-मोहित अगणित जीव पाशबद्ध स्थिति में पड़े रहते हैं। इन बन्धनों को काटे बिना कल्याण का और कोई मार्ग नहीं। आत्मा की पुकार **'तमसो मा ज्योतिर्गमय'** की है। वह अन्धकार से प्रकाश की ओर जाना चाहती है। तम अन्धकार और सत ही प्रकाश है, उसको धारण करने का प्रयत्न ही **'साधना'** है। साधना को जीवन की अनिवार्य आवश्यकता माना गया है। तम की दुष्प्रवृत्तियों से छुटकारा केवल इस एक ही उपाय से हो सकता है। सच्ची शांति और प्रगति का मार्ग भी यही है।

युग निर्माण योजना-दर्शन,स्वरूप व कार्यक्रम वाङ्मय से-पृष्ठ-२.६७

दिनाँक-१७/१२/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! मन की शक्ति उस जल-प्रपात की तरह है जो साधारणतः यों ही मुद्दतों से गिरता और बहता रहता है, पर यदि उसी से पनचक्की या बिजली बनाने का कार्य किया जाय तो आश्चर्यजनक लाभ प्राप्त होने की सुविधा बन जाती है और वह निरर्थक दीखने वाला झरना बहुत लाभदायक एवं उपयोगी सिद्ध होता है। मन में जो प्रचण्ड शक्ति भरी है उसका महत्त्व जिन्होंने जान लिया वे अपना सारा ध्यान मन को नियन्त्रित करने में लगाते हैं। उसकी चंचलता को रोकते और एकाग्रता को बढ़ाते हैं। अच्छे नम्बरों से, ऊँची डिवीजनों से पास होने वाले विद्यार्थी, महत्त्वपूर्ण अन्वेषण करने वाले वैज्ञानिक, मेधावी वकील, डॉक्टर, इंजीनियर और कारीगर एकाग्रता के बलबूते पर ही गौरवान्वित होते हैं। कवि,लेखक, चित्रकार, गायक, कलाकारों में जो प्रतिभा दीख पड़ती है, वह उनकी तन्मयता का ही प्रतिफल है। कुशल व्यापारी अपने कारोबार में अपने को घुला देता है। लक्ष को वही वेध पाता है, जिसे अर्जुन की तरह बाण की नोंक और चिड़िया का मस्तक ही दिखाई देता है। भक्त और साधकों को अपने इष्टदेव में तन्मय हो जाने पर ही साक्षात्कार का लाभ मिलता है। समाधि और कुछ नहीं चित्त को एकाग्र करने की परिपूर्ण सफलता का ही दूसरा नाम है।

प्राण शक्तिः एक दिव्य विभूति वाङ्मय-१७ से-पृष्ठ-२.३०

दिनाँक-१८/१२/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! पनडुब्बे गहरे समुद्र में डुबकी लगाकर मोती बीनते हैं। बहुमूल्य खनिज प्राप्त करने के लिए धरती को गहराई तक खोदते जाने और उस विभीषिका के मुख में प्रवेश करने का साहस जुटाना पड़ता है। अपनी प्रसुप्त शक्तियों के जागृत करने के लिए, अन्तःचेतना की गहरी पर्तों में उतरने के लिए, अद्भुत धैर्य और अविचल प्रयत्न करने होते हैं। यह सब अनायास ही नहीं हो जाता, वरन् अग्नि परीक्षा में गुजरने पर ही सफलता का श्रेय प्राप्त होता है। सोते सर्प और सोते सिंह को जगाने में जितना पराक्रम चाहिए, उतना ही अन्तःचेतना के सूक्ष्म संस्थानों को जगाते समय भी चाहिए। वन्य पशुओं को पालतू और प्रशिक्षित करना धैर्यवान लोगों का काम है। मरुस्थल को उर्वर बना लेने के लिए दूरदर्शिता, अथक श्रमशीलता और साधन सामग्री जुटानी पड़ती है। अनगढ़ व्यक्तित्व सुगढ़ और सुसंस्कृत बनाने के लिए कलाकारों जैसा कौशल विकसित करना पड़ता है। शत्रु को मित्र बना लेने की प्रशंसा है। अनर्थ में संलग्न विकृत कुसंस्कारों को आमूल-चूल परिवर्तित करके श्रेय साधक बना देना विष से अमृत निकालने के समतुल्य है। ऐसे मार्ग पर चलने के लिए अजस्र प्राण शक्ति चाहिए।

प्राण शक्तिः एक दिव्य विभूति वाङ्मय-१७ से-पृष्ठ-२.३५

दिनाँक-१९/१२/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! दूध में मक्खन घुला होता है, पर उसे अलग निकालने के लिए उबालने, मथने जैसे कई कार्य संपन्न करने पड़ते हैं। प्राणवान् प्रतिभाओं की इन दिनों अतिशय आवश्यकता पड़ रही है, ताकि इस समुद्र मंथन जैसे युगसंधि पर्व में अपनी महती भूमिका निभा सकें। अनिष्ट के अनर्थ से मानवीय गरिमा को विनष्ट होने से बचा सकें। उज्ज्वल भविष्य की संरचना में ऐसा प्रचंड पुरुषार्थ प्रदर्शित कर सकें, जैसे-गंगा अवतरण के संदर्भ में मनस्वी भगीरथ द्वारा संपन्न किया गया था।

इन दिनों यह ढूँढ़-खोज ही बड़ा काम है। सीता को वापस लाने के लिए वानर समुदाय विशेष खोज में निकला था। समुद्र-मंथन भी ऐसी खोज का एक इतिहास है। गहरे समुद्र में उतरकर मणि-मंथन भी ऐसे ही खोजे जाते हैं। कोयले की खदानों में से खोजने वाले हीरे ढूँढ़ निकालते हैं, धातुओं की खदान इसी प्रकार धरती को खोद-खोदकर ढूँढ़ी जाती हैं। दिव्य औषधियों को सघन वन प्रदेशों में खोजना पड़ता है। वैज्ञानिक प्रकृति के रहस्यों को खोज लेने का काम करते हैं। हाड़-माँस की काया में से देवत्व का उदय, साधना द्वारा गहरी खोज करते हुए ही संभव किया जाता है। महाप्राणों की इन दिनों इसी कारण भारी खोज हो रही है कि उनके बिना, युगसंधि का महाप्रयोजन पूरा भी तो नहीं हो सकेगा। आज तो व्यक्ति की सामयिक एवं क्षेत्रीय समस्याओं का निराकरण भी वातावरण बदले बिना संभव नहीं हो सकता। संसार में निकटता बढ़ जाने से, गुत्थियाँ भी वैयक्तिक न रहकर सामूहिक हो गई हैं। उनका निराकरण व्यक्ति को कुछ ले-देकर नहीं हो सकता। चेचक की फुंसियों पर पट्टी कहाँ बाँधते हैं? स्थायी उपचार तो रक्त-

युग की माँग प्रतिभा परिष्कार-१ से-पृष्ठ-१०

दिनाँक-२०/१२/२००७

आज का सद्चिंतन

युग की माँग प्रतिभा परिष्कार-१ से-पृष्ठ-१५

दिनाँक-२१/१२/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! रेल का इंजन एकाकी चलता है। स्वयं दौड़ता है और अपने साथ भरे डिब्बों की लंबी श्रृंखला को घसीटते हुए निर्धारित लक्ष्य की दिशा में पटरी पर दौड़ता चला जाता है। सर्वविदित है कि डिब्बों की तुलना में इंजन को अधिक महत्त्व मिलता है। अधिक मूल्यांकन भी होता है। यह और कुछ नहीं साहस भरी व्यवस्था का परिचय देने वाली ऊर्जा की ही परिणति है। प्रतिभाओं में यह सद्गुण उनके द्वारा स्वउपार्जित स्तर का, बड़ी मात्रा में पाया जाता है। वे औरों का मुँह ताकते हुए नहीं बैठे रहते, वरन् आगे बढ़कर औरों को अपने चुंबकत्व के कारण जोड़ते और साथ चलने के लिए बाधित करते हैं। सफलताओं का यही स्रोत है।

यों प्रतिभा का दुरुपयोग भी हो सकता है। धन का, बल का, सौंदर्य का, कौशल का, नियोजन यदि भ्रष्ट- चिंतन और दुष्ट आचरण में किया जाए तो वैसा भी हो सकता है। आतंकवादी, अनाचारी, उच्छृंखल, उद्धत लोग प्रायः वैसा करते भी हैं। इतने पर भी यह निश्चित है कि कोई इस आधार पर न तो स्थिर प्रगति कर सकता है और न ही कोई ऐसी परंपरा पीछे छोड़ सकता है, जिसे सराहा जा सके। आज नहीं तो कल-परसों ऐसे लोग आत्मप्रताड़ना, लोकभर्त्सना से लेकर राजदंड और दैवी प्रकोप के भाजन बनते ही हैं। लालच और घृणा तो भीतर-बाहर से उन पर निरंतर बरसी ही रहती है।

युग की माँग प्रतिभा परिष्कार-१ से-पृष्ठ-२१

दिनाँक-२२/१२/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! भगवान् शंकर ने परशुराम को काल कुठार थमाया था, उन्होंने पृथ्वी को इक्कीस बार अनाचारियों से मुक्त कराया। सहस्रबाहु की अदम्य समझी जाने वाली शक्ति का दमन उसी के द्वारा संभव हुआ था। प्रजापति ने दधीचि की अस्थियाँ माँगकर इंद्र को वज्रोपम प्रतिभा प्रदान की थी, जिससे वृत्रासुर जैसे अजेय दानव से निपटा जा सका। अर्जुन को गांडीव देवताओं से मिला था। क्षत्रपति शिवाजी की भवानी तलवार देवी द्वारा प्रदान की गई बताई जाती है। वस्तुतः यह किन्हीं अस्त्र-शस्त्रों का उल्लेख नहीं है, वरन् उस समर्थता का उल्लेख है, जो लाठियों या ढेलों से भी अनीति को परास्त कर सकती है। गाँधी के सत्याग्रह में उसी स्तर के अनुयायियों की आवश्यकता पड़ी थी।

ऋद्धियों-सिद्धियों द्वारा किसी को न तो बाजीगर बनाया जाता है और न कौतुक दिखाकर मनोरंजन किया जाता है। विश्वामित्र राम-लक्ष्मण को यज्ञ के बहाने अपने आश्रम में ले गए थे। वहाँ उन्हें बला-अतिबला विद्या प्रदान की थी। उनके सहारे वे शिव धनुष तोड़ने, सीता स्वयंवर जीतने, लंका की असुरता मिटाने और रामराज्य के रूप में सतयुग की वापसी संभव कर दिखाने में समर्थ हुए थे। विश्वामित्र ने ही अपने एक दूसरे शिष्य हरिश्चंद्र को ऐसा कीर्तिमान स्थापित करने का साहस प्रदान किया था, जिसके आधार पर वे तत्कालीन युगसृजन योजना को सफल बनाने में समर्थ हुए थे साथ ही साथ हरिश्चंद्र के यश को भी उस स्तर तक पहुंचा सके थे, जिसकी सुगंध पर मोहित होकर देवता भी आरती उतारने धरती पर आए।

युग की माँग प्रतिभा परिष्कार-१ से-पृष्ठ-२६

दिनाँक-२३/१२/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! देवताओं ने सिद्धार्थ को राजकुमार न रहकर धर्म-चक्र-प्रवर्तन में संलग्न होने का परामर्श दिया था। सिद्ध पुरुष माने जाने वाले गोरखनाथ, मत्स्येंद्र नाथ के तप-वैभव के अधिकारी बने थे। रामानंद ने, कबीर को स्वर्ण खान कहीं नहीं सौंपी थी? वरन् वह प्रतिभा प्रदान की थी जिसके कारण कुलीनता और विद्वत्ता के अभाव में भी अपने समय के प्रचंड प्रवर्तक के रूप में प्रख्यात् हुए। भगवान् के भक्तों में सर्वोपयोगी नारद माने जाते हैं। उन्हें वह ललक मिली थी कि जन-जन में भाव-संवेदना का बीजारोपण करते हुए अनवरत रूप से संलग्न रह सकें। पवन ने अपने पुत्र हनुमान को वह वर्चस् प्रदान किया था कि रामचरित्र में मेरुदंड जैसी भूमिका का निर्वाह कर सके।

गाँधी ने अपने प्रिय विनोबा को महान् प्रयोजनों के लिए मर मिटने की भाव-संवेदना प्रदान की थी। उनके संपर्क में आने वाले अन्य लोगों ने भी जुझारू प्रतिभा पाई और अपने चरित्र तथा कर्तृत्त्व से जनमानस पर गहरी छाप छोड़ने में सफल हो सके। महर्षि अगस्त्य ने भगीरथ का राज-पाट छोड़कर गंगावतरण के महाप्रयास में संलग्न होने के लिए नियोजित किया था। लक्ष्य इतना उच्चस्तरीय था कि उनकी सफलता में योगदान देने के लिए स्वयं शंकर जी को कैलाश छोड़कर आना पड़ा था। योगी भर्तृहरि ने अपने भाई विक्रमादित्य को आदर्श शासक और भाँजे गोपीचंद को तत्त्वदर्शन के अवगाहन में संलग्न किया था। इससे अधिक और कुछ कोई अपने स्वजन संबंधियों को दे ही क्या सकता है?

सम्राट् अशोक ने जो प्रेरणा पाई थी उसी को अपनाने के लिए अपने सुपुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा को परिव्राजक के रूप में धर्मप्रचार के लिए समर्पित कर दिया था। स्वयं बुद्ध भी तो अपने पुत्र राहुल को इसी स्तर की दीक्षा दे चुके थे। बुद्ध परंपरा में आम्बपाली से लेकर कुमारजीव तक ऐसे अनेकों प्रतिभाशाली हुए जो भौतिक सुख भोगों से कोसों दूर रहकर धर्म प्रयोजनों में ही लगे रहते थे। मध्यपूर्व को भारतीय संस्कृति की छत्रछाया में लाने के श्रेय महाभाग कौडिन्य को जाता है, जिन्होंने उच्च लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जीवन भर प्रयास जारी रखा।

युग की माँग प्रतिभा परिष्कार-१ से-पृष्ठ-२८

दिनाँक-२४/१२/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! इन दिनों दिव्य चेतना, सेवाभावी सज्जनों के समुदाय को अधिक विस्तृत करने में जुट गई है। युग का मत्स्यावतार इन्हीं दिनों अपने कलेवर को विश्वव्यापी बनाने के लिए आकुल-व्याकुल है। अच्छा हो, हम उसी की महती योजना में भागीदार बनें और अपनी मर्जी की पूजा-उपासना करके मनचाहे वरदान की विडम्बना पर अंकुश ही लगाए रखें।

अपेक्षा की गई है कि इन पंक्तियों के पाठक, नर-पामरों से ऊँचे उठकर, विचारशीलता की दृष्टि से अपेक्षाकृत अधिक परिष्कृत बन चले होंगे। वे एक से पाँच, पाँच से पच्चीस, पच्चीस से एक सौ पच्चीस वाली गुणन प्रक्रिया अपनाकर, चार और साथी ढूँढें तथा उन्हें भी अपनी जैसी कर्म पद्धति अपनाने के लिए सहमत करें। करने का तो एक ही कार्य है- ''**विवेक-विस्तार**''। इसके कितने ही कार्यक्रम बन चुके हैं। इनमें से कुछ भी अपनी इच्छानुसार अपनाया जा सकता है। आत्मपरिष्कार, सत्प्रवृत्ति संवर्द्धन के अतिरिक्त इन दिनों जिस पुण्य-प्रक्रिया को उतने ही उत्साह से अपनाया जाना है, वह है-एक से पाँच की रीति-नीति अपनाते हुए समस्त विश्व को नव जीवन की विचारधारा से अनुप्राणित करना। इसी क्रम में अपने जीवन का असाधारण परिष्कार और विकास भी सुनिश्चित रूप से हो सकेगा।

जीवन साधना के स्वर्णिम सूत्र में से-पृष्ठ-३३

दिनाँक-२५/१२/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! बादल बरसते सभी जगह समान रूप से हैं, पर उनका पानी उतनी ही मात्रा में वहाँ जमा होता है, जहाँ जितनी गहराई या पात्रता होती है। वर्षा के अनुग्रह से व्यापक भू-क्षेत्र में हरियाली उगती और लहराती है, पर रेगिस्तानों और चट्टानों में एक तिनका तक जमता दृष्टिगोचर नहीं होता है, उसमें बादल का पक्षपात नहीं, भूमि की अनुर्वरता ही प्रमुख रूप से उत्तरदायी है।

धुलाई के बिना रंगाई निखरती कहाँ है? गलाई के बिना ढलाई किसने कर दिखाई है? मल-मूत्र से सने बच्चे को माता तब ही गोद में उठाती है, जब उसे नहला-धुला कर साफ-सुथरा बना देती है। मैला-गंदला पानी पीने के काम कहाँ आता है? मैले दर्पण में छवि कहाँ दीख पड़ती है? जलते अंगारे पर यदि राख की परत जम जाए, तो न उसमें गर्मी का आभास होता है, न चमक का। बादलों से ढँक जाने पर सूर्य-चन्द्र तक अपना प्रकाश धरती तक नहीं पहुँचा पाते। कुहासा छा जाने पर दिन में भी लगभग रात जैसा अंधेरा छा जाता है और कुछ दूरी की वस्तुएँ तक सूझ नहीं पड़तीं।

इन्हीं सब उदाहरणों को देखते हुए अनुमान लगाया जा सकता है कि मनुष्य यदि लोभ की हथकड़ियों, मोह की बेड़ियों और अहंकार की जंजीरों में जकड़ा हुआ रहे, तो उसकी समस्त क्षमताएँ नाकारा बन कर रह जाएँगी। बँधुआ मजदूर रस्सी में बँधे पशुओं की तरह बाधित और विवश बने रहते हैं। वे अपना मौलिक पराक्रम गँवा बैठते हैं और उसी प्रकार चलने-करने के लिए विवश होते हैं, जैसा कि बाँधने वाला उन्हें चलने के लिए दबाता-धमकाता है। कठपुतलियाँ अपनी मर्जी से न उठ सकती हैं, न चल सकती हैं। मात्र मदारी ही उन्हें नचाता-कुदाता है।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! हर नागरिक के पास कुछ समय रहता है। आजीविका कमाने और शरीर यात्रा के दैनिक कार्यों के अतिरिक्त हर व्यक्ति के पास कुछ समय बचता है। यदि बचता न होता तो गपशप, यारबाजी, सिनेमा, शतरंज, ताश, यात्रा, मेले-ठेले आदि के लिए समय कहाँ से मिलता है ? लेखा-जोखा लेने पर हर आदमी के पास कुछ न कुछ ऐसा समय जरूर मिलेगा, जिसे वह नित्य-कर्म और रोटी कमाने के अतिरिक्त अपनी मन-मर्जी के कामों में लगाता है। यह मन-मर्जी यदि हलके और ओछे कामों में न लगे, जन-जागरण और नव-निर्माण के रचनात्मक कामों में लगे तो व्यस्त से व्यस्त व्यक्ति भी इतना कार्य कर सकता है, जिस पर वह आत्म-संतोष और आत्म-गौरव अनुभव कर सके। आवश्यकता केवल अभिरुचि बदलने भर की है। दूसरों को उपदेश करने या आलोचना करने की अपेक्षा अब अपने को रचनात्मक कार्य करने में संलग्न करना चाहिए और अपनी आदर्शवादिता की सच्चाई को प्रमाणित करना चाहिए। जिनमें आदर्शवादिता के प्रति आस्था एवं ममता है, जो उसे बढ़ते और आकर्षित होते देखना चाहते हैं, उन्हें अपने समय का एक अंश राष्ट्रीय पुनरुत्थान के लिए, कुछ करने के लिए लगाना ही चाहिए।

धर्म तत्त्व का दर्शन और मर्म वाङ्मय-५३ -पृष्ठ ६.५४

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! युग समस्या के समाधान में युगमनीषा को अग्रिम पंक्ति में खड़ा होना चाहिए। कृष्ण आगे थे; पाण्डवों के सहयोग से महाभारत में विजय मिली। राम आगे थे, वानर सेना ने लंका को जीता। वशिष्ठ के नेतृत्व में रघुवंशियों की पीढ़ियाँ सतयुगी व्यवस्था बनाती रहीं। चाणक्य ने चंद्रगुप्त के सहयोग से भारत को चक्रवर्ती बनाया। समर्थ के नेतृत्व में छत्रपति शिवाजी छत्रपति बने। सप्तऋषियों ने अपने समय में समस्त संसार की प्रगति और समृद्धि की ओर धकेला और जगद्गुरु की भूमिका निभाई। शंकराचार्य को मान्धाता का, बुद्ध को हर्षवर्धन, अशोक का समर्थन मिला और बड़े काम सम्पन्न हुए। सहयोग सभी का चाहिए। भौतिक क्षेत्र की हर सामर्थ्य का भी इतने पर भी जनमानस के अन्तस् की भाव-श्रद्धा का स्पर्श करते उसे भ्रान्तियों की तमिस्रा से उबार कर अरुणोदय के आलोक से सम्बद्ध करने का काम मनीषा के हिस्से में रहता है। उसके द्वारा उपेक्षा बरतने पर समाधान मिलेगा नहीं और बिल्ली के गले में घण्टी बाँधने में असमर्थ चूहों की सभा बिना किसी निर्णय के विसर्जित होगी।

दिनाँक-२८/१२/२००७

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! जीवन्तों, जाग्रतों और प्राणवानों में से प्रत्येक को अनुभव करना चाहिए कि यह ऐसा विशेष समय है जैसा कि हजारों-लाखों वर्षों बाद कभी एक बार आता है। गाँधी के सत्याग्रही और बुद्ध के परिव्राजक बनने का श्रेय, समय निकल जाने पर अब कोई किसी भी मूल्य पर नहीं पा सकता। हनुमान और अर्जुन की भूमिका हेतु फिर से लालायित होने वाला कोई व्यक्ति चाहे कितने ही प्रयत्न करें, अब दुबारा वैसा अवसर हस्तगत नहीं कर सकता। समय की प्रतीक्षा तो की जा सकती है, पर समय किसी की भी प्रतीक्षा नहीं करता। भागीरथ, दधीचि और हरिश्चन्द्र जैसा सौभाग्य अब उनसे भी अधिक त्याग करने पर भी पाया नहीं जा सकता।

समय बदल रहा है। प्रभातकाल का ब्रह्ममुहूर्त अभी है। अरुणोदय के दर्शन अभी हो सकते हैं। कुछ घण्टे ऐसे हैं जिन्हें यदि प्रमाद में गँवा दिये जाएँ, तो अब वह गया समय लौटकर फिर किस प्रकार आ सकेगा? युग परिवर्तन की वेला ऐतिहासिक असाधारण अवधि है। इसमें जिनका जितना पुरुषार्थ होगा, वह उतना ही उच्चकोटि का शौर्य पदक पा सकेगा। समय निकल जाने पर, साँप निकल जाने पर लकीर को लाठियों से पीठना भर ही शेष रह जाता है।

धर्म तत्त्व का दर्शन और मर्म वाङ्मय-५३ -पृष्ठ ६.११७

आज का सद्चिंतन

अमीरी जताने का उद्धत अहंकार यदि काबू में रहे, तो धन-कुबेर बनने की हविस क्यों सभी पर बेतरह छाई रहे? औसत नागरिक स्तर का निर्वाह करने में क्या किसी के बड़प्पन में कमी आएगी? वरन् सच तो यह है कि उसे अपेक्षाकृत अधिक नीतिवान, अधिक प्रसन्न और अधिक संयमी-उदारचेता कहलाने का अवसर मिलेगा। जो पैसा और समय तथाकथित बड़प्पन का लबादा ओढ़ने में खर्च होता है, सादगी द्वारा उसे बचाया जा सके, तो उस बचत से ही पिछड़े हुओं का इतना काम चल सकता है कि कहीं किसी को भी गई-गुजरी स्थिति में पड़े रहने के लिए बाधित न होना पड़े।

सेना में सभी सैनिकों को एक जैसी सुविधा मिलती है, इससे न किसी की इज्जत घटती है और न बढ़ती है। समानता प्रकारांतर से शालीनता का ही एक लक्षण है। संतों की जमात एक जैसा ही निर्वाह करती है। उनमें से कोई सदस्य असाधारण सजधज अपनाए तो उसकी प्रतिष्ठा घटेगी ही, बढ़ेगी नहीं। कोई समय था, जब शान ठाठ-बाट के साथ जुड़ती थी, पर अब राजा-सामंतों के जैसा स्वांग बनाने वाले को नाटक का नट होने जैसी ही भर्त्सना मिलेगी। साम्यवादी-समाजवादी विचारधारा ने लोकमानस को ऐसा ढाल दिया है कि असाधारण अमीरों पर आए दिन ढेरों लांछन लगते हैं। उन्हें चोर, बेईमान कहने तक में लोग नहीं चूकते, भले ही उनकी कमाई औचित्य की मर्यादा में ही आती हो। ऐसों पर निष्ठुरता और संकीर्ण-स्वार्थपरता का आरोप तो लग ही जाता है। निश्चित रूप से इस प्रकार दौलत फूँकना रोका जा सकता है और उतने भर से असंख्यों को ऊँचा उठाने का अवसर मिल सकता है।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! भगवान् ने अपने बाद चेतना का दूसरा स्तर मनुष्य का ही बनाया है। मनुष्य की ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ इतनी समर्थ हैं कि उसे सृष्टि का सर्व समर्थ प्राणी कहा जाना उचित है। यह उसके काय-कलेवर की विशेषता है। सचेतन अदृश्य सत्ता का, यदि लेखा-जोखा लिया जाए, तो प्रतीत होगा कि न केवल भौतिक जगत् पर, वरन् अदृश्य क्षेत्र के रूप में जाने जाने वाले सूक्ष्म जगत् पर भी उसका असाधारण अधिकार है। दृश्य और अदृश्य दोनों ही लोकों पर उसका अधिकार होने से मानवी सत्ता को सुर-दुर्लभ भी कहा जाता है। किसी ने सच ही कहा है कि 'मनुष्य भटका हुआ देवता' है। उसके अंतराल में दैवी शक्तियों का तत्त्वतः समग्र निवास है, पर दृश्य जगत् के जाल जंजाल में स्वयं को भूल जाने के कारण ठोकरें खाता और जहाँ-तहाँ भटकता है।

गड़बड़ी वहाँ से प्रारंभ होती है, जहाँ वह अपने वास्तविक स्वरूप को भूल कर अपने को कलेवर मात्र समझता है। वाहन को अधिपति मान बैठता है और गोबर भरी मशक में अपने को समाया भर मानता है। दर्पण में अपनी छवि तो होती है, व्यक्तित्व नहीं। शरीर कुछ तो है, पर सब कुछ नहीं। उसकी इच्छा, आवश्यकता को भी पूरा किया जाना चाहिए, पर मात्र उसी के लिए सब कुछ निछावर कर देना भूल है। अच्छा होता सवार और घोड़े का संबंध भी समझ लिया होता। भेड़ों के झुण्ड में पले सिंह ने अपने को भेड़ मान लिया था। यह कथा सुनी तो बहुतों ने है, पर यह अनुभव कोई बिरले ही करते हैं कि उपहासास्पद कथा-उक्ति सीधी अपने ही ऊपर लागू होती है।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! इस समय की विषम विडंबना से छूटने का एक ही उपाय है कि दोष-दुर्गुणों की जो भारी चट्टानें सिर पर लदी हैं, उन्हें किसी भी कीमत पर हटाया-गिराया जाए, अन्यथा उतनी बोझिल विपन्नता को सिर पर लादे हुए, कुछ दूर तक भी आगे चल सकना सम्भव न होगा। वासनाएँ आदमी को नीबू की तरह निचोड़ लेती हैं। जीवन में से स्वास्थ्य, संतुलन , आयुष्य जैसा सब कुछ निचोड़ कर, उसे छिलके जैसा निस्तेज बनाकर रख देती हैं।

तृष्णाओं की खाई इतनी गहरी है, जिसे रावण, हिरण्य-कश्यपु, वृत्तासुर जैसे प्रबल पराक्रमी भी समूचा पौरुष दाँव पर लगा देने के बाद भी पाट सकने में तनिक भी समर्थ न हुए। सिकंदर जैसे सफलताओं के धनी भी मुट्ठी बाँधे आए और हाथ पसारे चले गए। अहंकार प्रदर्शित करने के दर्प में, संसार भर को चुनौती देने और ताल ठोकने वाले किसी समय के दुर्दान्त दैत्यों में से अब कोई कहीं दीख नहीं पड़ता। राजाओं के मणि-मुक्तकों से जड़े राजमुकुट और सिंहासन, न जाने धराशायी होकर कहाँ धूलचाट रहे होंगे? यह करतूतें उन्हीं पैशाचिक दुष्प्रवृत्तियों की हैं, जो मनुष्य पर उन्माद की तरह हैं और उसकी बहुमूल्य जीवन-सम्पदा को कौड़ी के मोल गँवा देने के लिए दिग्भ्रमित करती रहती हैं।

दिनाँक-०१/०१/२००६

आज का सद्चिंतन

आत्मपरिवर्तन के साथ-साथ यही जाग्रत आत्माएँ विश्व परिवर्तन की भूमिका प्रस्तुत करेंगी। प्रकाशवान ही प्रकाश दे सकता है। आग से आग उत्पन्न होती है। जागा हुआ ही दूसरों को जगा सकता है। जागरण की भूमिका जाग्रत आत्माएँ ही निभाएँगी। आत्मपरिवर्तन की चिनगारियाँ ही युग परिवर्तन के प्रचण्ड दावानल का रूप धारण करेंगी। यही सब तो इन दिनों हो रहा है। जाग्रत आत्माओं में एक असाधारण हलचल इन दिनों उठ रही है। उनकी अन्तरात्मा उन्हें पग-पग बेचैन कर रही हैं, ढर्रे का पशु जीवन नहीं जिएँगे, पेट और प्रजनन के लिए-वासना और तृष्णा के लिए जिन्दगी के दिन पूरे करने वाले नरकीटों की पंक्ति में नहीं खड़े रहेंगे, ईश्वर के अरमान और उद्देश्य को निरर्थक नहीं बनने देंगे। लोगों का अनुकरण नहीं करेंगे, उनके लिए स्वतः अनुकरणीय आदर्श बनकर खड़े होंगे। यह आन्तरिक समुद्र मन्थन इन दिनों हर जीवित और जाग्रत आत्मा के अन्दर इतनी तेजी से चल रहा है कि वे सोच नहीं पा रहे कि आखिर यह हो क्या रहा है वे पुराने ही हैं पर भीतर कौन घुस पड़ा जो उन्हें ऊँचा सोचने के लिए ही नहीं, ऊँचा करने के लिए भी विवश, बेचैन कर रहा है। निश्चित रूप से यह ईश्वरीय प्रेरणा का अवतरण है।

युग निर्माण योजना दर्शन, स्वरूप व कार्य पृष्ठ-२.१४

आज का सद्चिंतन

निविड़ अंधकार से निपटने के लिए जब माचिस की एक तीली अपने को जलाने का साहस सँजोकर प्रकट होती है तो दीपक उस तीली के बुझने से पहले ही अपने को ज्योर्तिमय कर लेते हैं। इतना ही नहीं, दीवाली जैसे विशेष पर्वों पर प्रज्ज्वलित दीपकों की विशालकाय वाहिनी तक स्थान-स्थान पर जगमगाती दृष्टिगोचर होती है। अकेले चल पड़ने वालों का उपहास और विरोध आरंभ में ही होता है, पर जब स्पष्ट हो जाता है कि उच्चस्तरीय लक्ष्य की दिशा में कोई चल ही पड़ा तो उसके साथी-सहयोगी भी क्रमशः मिलते और बढ़ते जाते हैं।

निष्ठा भरे पुरुषार्थ में अद्भुत आकर्षण होता है। उनका प्रभाव भले-बुरे दोनों तरह के प्रयोगों में दिखाई देता है। जब चोर-उचक्के, लवार-लफंगे, दुराचारी, व्यभिचारी, नशेबाज, धोखेबाज मिल-जुलकर अपने-अपने सशक्त गिरोह बना लेते हैं तो कोई कारण नहीं कि सृजन संकल्प के धनी, प्रामाणिक और प्रतिभाशालियों को अंत तक एकाकी ही बना रहना पड़े। भगीरथ ने लोकमंगल के लिए सुरसरि को पृथ्वी पर बुलाया तो ब्रह्मा-विष्णु ने गंगा को प्रेरित करके भेजा और धारण करने के लिए शिवजी तत्काल तैयार हो गए। नवसृजन में संग्लन व्यक्तियों की कोई सहायता न करे, यह हो ही नहीं सकता। जब हनुमान्, अंगद, नल-नील जैसे रीछ-वानर मिलकर राम को जिताने का श्रेय ले सकते हैं, तो कोई कारण नहीं कि नवसृजन के कार्यक्षेत्र में जुझारू योद्धाओं की सहायता के लिए अदृश्य सत्ता, दृश्य घटनाक्रमों के रूप में सहायता करने के लिए दौड़ी चली न आए?

दिनाँक-०३/०१/२००६

आज का सद्चिंतन

महापरिवर्तन जब भी कभी आरंभ होगा, तब उसका स्वरूप एक ही होगा कि विद्या को जीवित-जागृत किया जाए। उसके प्रचार- विस्तार का इतना प्रचंड प्रयास किया जाए कि लंबे समय से छाए हुए कुहासे को हटाया जा सके और उस प्रकाश को उभारा जाए, जो हर वस्तु का यथार्थ स्वरूप दिखाता और किसका, किस प्रकार सहयोग होना चाहिए- यह सिखाता है।

प्राचीनकाल में साक्षरता का, भाषा और लिपि का महत्त्व तो सभी समझते थे और उसे पुरोहित-यजमान मिलजुल कर हर जगह सुचारु रूप से पूरा कर लेते थे। पुरोहितों की आजीविका हेतु शिक्षार्थियों के अभिभावक दान-दक्षिणा के रूप में जो दे दिया करते थे, वही अपरिग्रही, मितव्ययी जीवन जीने वाले ब्राह्मणों के लिए पर्याप्त होती थी। शिक्षा-साक्षरता के लिए कोई विशेष योजना या व्यवस्था नहीं बनानी पड़ती थी।

संजीवनी विद्या का दायित्व ऋषि वर्ग के मनीषी उठाते थे। जो अधिकारी होते थे, उन्हें अपने आश्रमों, गुरुकुलों एवं आरण्यकों में बुलाते थे। उपयुक्त वातावरण में उपयुक्त अभ्युदय की समुचित योजना चलाते थे।

समस्याएँ आज की समाधान कल के पृष्ठ-३४

दिनाँक-०४/०१/२००६

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! युग परिवर्तन की भाव चेतना पहले सुसंस्कारी जाग्रत आत्माओं के अन्तःकरण में अवतरित हो तो यह सर्वथा उचित और उपयुक्त ही है। भगवान राम कौशिल्या की कोख में जन्मे और कृष्ण देवकी के गर्भ में आये। वे महान आत्माएँ थीं। घृणित और ओछे स्तर के नागरिक जीव दिव्य प्रकाश का तेज धारण ही नहीं कर पाते। नव जागरण का प्राथमिक श्रेय निश्चित क्रम से सुसंस्कारी जाग्रत आत्माओं को मिलेगा। वे ही आगे आवेंगी, मशाल की तरह जलेंगी और सर्वत्र प्रकाश उत्पन्न करेंगी। अविवेक और अनौचित्य के बन्धनों से वे स्वयं मुक्त होंगी और अपने आदर्शों से असंख्य लोगों को अनुगमन के लिए प्रभावित ही नहीं बाध्य भी करेंगी।

युग निर्माण परिवार ऐसी ही जाग्रत और सुसंस्कारी आत्माओं का समूह है। संयोग ही कहना चाहिए कि उसे इन बिखरे हुए मणि-माणिक्यों को एक सूत्र में आबद्ध होकर एक बहुमूल्य माला के रूप में गुँथ जाने का अवसर मिल गया। अगले ही दिनों युग निर्माण परिवार का प्रत्येक घटक अपनी वह भूमिका प्रस्तुत करेगा जिसका विस्तार युग परिवर्तन के रूप में असंदिग्ध रूप में दृष्टिगोचर हो सके।

वांङमय-६६ यु.यो.दर्शन स्वरूप व कार्यक्रम पृष्ठ-२.१५

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! शरीर और उनकी शक्तियों के भले-बुरे पराक्रम आए दिन देखने को मिलते रहते हैं। समर्थता, कुशलता और संपन्नता की जय-जयकार होती है, पर साथ ही यह भी मानना ही पड़ेगा कि इन्हीं तीन क्षेत्रों में फैली अराजकता ने वे संकट खड़े किए हैं जिनसे किसी प्रकार उबरने के लिए व्यक्ति और समाज छटपटा रहा है।

इन तीनों से ऊपर उठकर एक चौथी शक्ति है-भाव-संवेदना। यही दैवी अनुदान के रूप में जब मनुष्य की इच्छा अंतरात्मा पर उतरती है तो उसे निहाल बनाकर रख देती है। जब यह अंतःकरण के साथ जुड़ती है तो उसे देवदूत स्तर का बना देती है। वह भौतिक आकर्षणों, प्रलोभनों एवं दबावों से स्वयं को बचा लेने की भी पूरी-पूरी क्षमता रखता है। इस एक के आधार पर ही साधक में अनेकानेक दैवी तत्त्व भरते चले जाते हैं।

युग परिवर्तन के आधार को यदि एक शब्द में व्यक्त करना हो तो इतना कहने भर भी काम चल सकता है कि अगले दिनों निष्ठुर स्वार्थपरता को निरस्त करके उसके स्थान पर उदार भाव-संवेदनाओं को अतंःकरण की गहराई में प्रतिष्ठित करने की, उभारने की, खोद निकालने की अथवा बाहर से सराबोर कर देने की आवश्यकता पड़ेगी।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! मनुष्य वास्तव में अकेला है। अकेला ही आया है और अकेला ही जाएगा। उसका सारा धर्म-कर्म एकांतमय है। उसे अपनी परिस्थितियों पर स्वयं विचार करना पड़ता है, अपने लाभ-हानि का निर्णय भी उसे स्वयं करना पड़ता है, अपने उत्थान-पतन के साधन स्वयं उपलब्ध करने होते हैं। इस संघर्षमय दुनिया में जो भी अपने पैरों पर खड़ा होकर अपने बलबूते चल पड़ता है, वह चल लेता है, बढ़ जाता है और अपना स्थान प्राप्त कर लेता है। मनुष्य के वास्तविक सुख-दुःख, हानि-लाभ, उन्नति-पतन, बंधन-मोक्ष का जहाँ तक संबंध है, वह सब एकांत के साथ जुड़ा हुआ है।

अपने को अकेला अनुभव करो। नित्य अभ्यास करो, शरीर को निश्चेष्ट पड़ा रहने दो। मन को पूरी योग्यता, तर्क, बुद्धि के साथ यह समझने दो कि मैं अकेला हूँ। केवल बुद्धि द्वारा सोच लेना ही पर्याप्त न होगा। यह भावना मन के ऊपर गहरी अंकित हो जानी चाहिए। अभ्यास इतना बढ़ जाना चाहिए कि जब अपने बारे में सोचो तो सोचो कि मै अकेला हूँ। हर घड़ी अपने को संसार की समस्त वस्तुओं से ऊँचा कमलपत्रवत् ऊपर उठा समझो। मैं कहता हूँ कि यह साधना तुम्हें मनुष्य से देवता बना देने में पूरी समर्थ है।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! इतिहास साक्षी है कि आपत्तिकाल में राजपूत घरानों से एक-एक सदस्य सेना में भरती होता था। सिख धर्म जिन दिनों चला था, तब भी उस विपन्न वेला में, उस प्रभाव क्षेत्र में आए हर परिवार ने अपने परिवार में से एक को 'सिख' सेना का सदस्य बनने के लिए प्रोत्साहित किया था। आज की वेला, तब की अपेक्षा कम विपन्न नहीं है। नवसृजन में संलग्न होने के लिए हर घर से एक प्रतिभा को आगे आना चाहिए और भारतभूमि की सतयुगी की वापसी वाली संभावनाएँ सुस्पष्ट हैं। कुछेक चिह्न पहले से ही प्रकट हो रहा है। ऐसे व्यक्तित्व उभर रहे हैं, जो लोकनिर्वाह में कटौती करके अपनी भाव-संवेदनाएँ, आकांक्षाएँ एवं गतिविधियों को सृजन प्रयोजनों में समर्पित कर सकें, जिससे उनका समर्पण अंधकार में जलती मशाल की भूमिका निभाते हुए सबकी आँखें में चमक पैदा कर सके।

युग की माँग प्रतिभा परिष्कार-१ पृष्ठ-२४

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! च्यवनप्राश-आँवला। इसको खाइये, हजम कीजिये ताकि आपको ताकत आ सके और आपकी खाँसी भी ठीक हो सके। नहीं साहब ! हम तो खाएँगे नहीं। तो आप क्या करना चाहते हैं। च्यवनप्राश और आँवले का? च्यवनप्राश तथा आँवले का हम दो काम करेंगे, एक तो हम करेंगे इसका जप और एक करेंगे इसका पूजन। कैसे-कैसे पूजन करेंगे? दिखाइये।

देखिये साहब ! च्यवनप्राश-आँवला रखा हुआ है। हाँ, रखा हुआ है। देखिये, अभी हमने इसको छुआ नहीं है। हाँ साहब ! आपने छुआ नहीं है। तो आप क्या करेंगे? देखिये हमारा जादू और देखिये हमारा चमत्कार। सारे के सारे फायदे हो जाएँगे च्यवनप्राश आँवले से। कैसे क्या घुमाते हैं- च्यवनप्राश आँवलाय नमः, च्यवनप्राश आँवलाय नमः। बेटे ! ऐसे कैसे काम चलेगा? नहीं साहब ! हम खाएँगे तो नहीं, इसके नाम का जप करेंगे। नाम का जप करेगा और क्या करेगा? डिब्बे को? बेटे ! खोल उसे। नहीं साहब ! खोलूँगा तो नहीं । तब क्या करेगा? इसके चावल चढ़ाऊँगा, पुष्प चढ़ाऊँगा-पुष्पं समर्पयामि, नैवेद्यं समर्पयामि, अक्षतानि समर्पयामि, पाद्यं समर्पयामि च्यवनप्राशः नमो नमः। खाँसी अच्छी हो जाएगी। खाँसी अच्छी करने के लिए इसको खाता जा। ब्रह्मचर्य, ब्रह्म को चर जाना, चर जाना कैसे? गाय होती है, घास को चर जाती है न? हाँ। घास चरके हजम कर लेती है, इसलिए तू क्या करेगा? ब्रह्मचर्य का उद्देश्य केवल वीर्य की रक्षा ही नहीं है। ब्रह्मचर्य का आगे जा करके जो अर्थ आता है, वह होता है ब्रह्म को चर जाना। ब्रह्म माने घास और चर्य माने गाय। गाय जैसे घास को चर जाती है, ऐसे ही तू ब्रह्म को चर जा और चर करके हजम कर, हजम करके बना उसका दूध और फिर बना खून, फिर देख तू ब्रह्मचारी होता है कि नहीं, फिर तुझे भगवान मिलता है कि नहीं भगवान के नाम को, राम के नाम को अपने जीवन में घुला लेना पड़ता है। जब राम हमारे जीवन के रोम-रोम में समा लेते हैं, जब राम हमारे जीवन में समाधिस्थ हो जाता है और घुल जाता है, तब वह फायदे मिलते हैं। कौन-से? जिनकी महत्ता गायी गई है? जिनका यश गाया गया है, जिनकी महिमा बतायी गई है, जिनका गुण गाया

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! शांतिकुंज को युग चेतना की गंगोत्री कहा जा सकता है। सूर्य सर्वप्रथम पूर्वांचल से निकलता है और वहाँ से आगे बढ़ते-बढ़ते समस्त संसार को आभा से आच्छादित करता है। गंगोत्री से आरंभ होने वाला निर्झर, बंगाल पहुँचते-पहुँचते सहस्त्र धाराओं में विकसित हुआ दीख पड़ता है। इस युग साधना का शुभारंभ शांतिकुंज से होते हुए भी, उसका विस्तार देश के कोने-कोने और विश्व के हर भाग में व्यापक होते हुए देखा जा सकेगा। उसका प्रभाव भी युग परिवर्तन की पृष्ठभूमि में आंशिक स्तर की असाधारण भूमिका निबाहते हुए देखा जा सकेगा। प्रत्यक्ष रूप से सृजनात्मक हलचलों का उभार इस आधार पर उभरकर आने की सँभावना आँकी जा सकती है, जो गोवर्धन उठाने जैसे महान कार्य को लाठियों की सहायता मिल जाने से संपन्न हो जाने के समान है।

शांतिकुंज का निर्माण ही इसके लिए उपयुक्त स्थान खोजकर किया गया है। गंगा की गोद, हिमालय की छाया, सप्त ॠषियों की तपोभूमि, दिव्य सान्निध्य, अखण्ड दीप, निरंतर चलने वाली साधना का नियोजन जैसे संयोग, एक

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! इक्कीसवीं सदी को जीन डिक्सन ने उज्ज्वल संभावनाओं से भरपूर बताया है। वे बताती हैं कि सन् २००० तक ''नीति और अनीति'' का संघर्ष तो चलता रहेगा, पर अंततः नीति की, सत्प्रवृत्तियों की ही विजय होगी। सन् २०२० तक धरती पर स्वर्ग की कल्पना साकार होने लगेगी। तब न प्रदूषण की समस्या रहेगी और न बीमारी-भुखमरी से किसी को त्रस्त होना पड़ेगा। चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में अद्भुत उन्नति होगी। अंतरिक्षीय यात्राएँ प्रकाशगति से भी तीव्र गति से चलने वाले यानों द्वारा संपन्न हुआ करेंगी। सन् २०२० तक सारी मानव जाति का क्रिया-व्यापार एक ही विश्व सत्ता के अधीन संचालित होता हुआ दृष्टिगोचर होगा।

अपनी प्रसिद्ध कृति ''माई लाइफ एंड प्रोफेसीज'' के आठवें अध्याय में जीन डिक्सन लिखतीं हैं कि ''इक्कीसवीं सदी नारी प्रधान होगी। विभिन्न क्षेत्रों का नेतृत्व महिलाएँ संभालेंगी।'' विश्व शांति स्थापना की दिशा में भारत की भूमिका का उन्होंने विशेष उल्लेख किया है और कहा है कि अपने आध्यात्मिक मूल्यों एवं वैचारिक क्रांति के माध्यम से वह समस्त विश्व में समतावादी शासन का सूत्रपात करेगा। उनके भविष्य कथन के अनुसार राष्ट्रसंघ का कार्यालय अगले दिनों भारत में बनेगा।

इक्कीसवीं सदी उज्जवल भविष्य-१ पृष्ठ-४०

आज का सद्चिंतन

संकल्प जागा तो निष्ठुर भी बदला

श्रद्धांजलि उसी को अर्पित की जाती है, जिसने अपने अंदर की इस दिव्य संपदा को जीवन की सतह पर उभारा हो। जिसके जीवन को देखकर औरों के मन में कभी करुणा का प्रवाह उमगने लगे। हर किसी के जीवन में वैसे अवसर आते हैं, यहाँ तक कि नीरस-निष्करुण-निष्ठुर कहे जाने वाले पाषाण के भी, जिस क्षण से वह अपने समूचे क्रम के उलटने के लिए हो जाता है। अद्‌भुत्‌ होता है वह क्षण, जब अभी तक जो चोट पहुँचाने-सिर फोड़ने का काम करता था, वह संकल्प लेता है कि अब से वह घनीभूत भावपुंज बनेगा, दूसरों की दिव्यता को उमगाने-छलकाने में सहायक बनेगा। संकल्पित होते ही हथौड़ी की चोट से धारदार छैनी के हर घात के साथ निकाल फेंकता है-अपनी क्रूरता को, निष्ठुरता को और उत्पीड़न की वृत्ति को। लगातार की यह अनोखी तपश्चर्या उसे भावों की प्रतिमा का रुप देती है। जन-जन को दिखाई देता है यह अनोखा परिवर्तन। हर कोई आश्चर्य व हर्ष से विभोर हो कहता है-‘‘अरे उत्पीड़क अब घावों पर मरहम लगाने वाला हो गया ! चलकर हम भी सीखें यह अनोखी कला।’’ आकर फूल चढ़ाते हैं, माथा नवाते हैं और आशीर्वाद माँगते हैं। बदले में वह एक ही बात कहता है-मेरी ओर देखो। हर क्षण हो सकता है परिवर्तन का पर्व। इसी पल से अपने को बदलना शुरू कर दो।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! अशोक की जाग्रत आत्मचेतना ने महत्त्वाकांक्षा को ठोकर मारकर स्वयं के व्यक्तित्व से बाहर निकाल फेंका था। क्रूरता को तोड़-मरोड़ कर कूड़े के ढेर में डाल दिया और जुट गया शांति और सद्भाव की भावधारा बहाने में। समूचे साम्राज्य को प्रेम के शीतल जल से सींचना शुरू किया। साम्राज्य का संचालन ही नहीं, व्यक्तिगत जीवन भी अब अपने परिवर्तित स्वरूप में था। सभी के कहने-सुनने मना करने के बाद भी उसने अपनी आवश्यकताओं को कम कर लिया। समाज का सबसे गरीब अधिकतर जिस तरह जीता है, सम्राट् उसी तरह जीने लगा। ऐतिहासिक विवरण के अनुसार उसकी कुल संपत्ति थी-एक चीवर और एक सुई, केशों के लिए एक छुरा, जल छानने के लिए एक छलनी और एक तूंबा जो उसका अभिन्न संगी बना। उसने एक शिलालेख में कहा है-मैं सभी जनों के मंगल के लिए कार्य करूँगा। सभी के हित में मेरा हित है, इससे मैं कभी विमुख न रहूँगा। जीवन की सफलता के यही सूत्र हैं।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! अग्नि के साथ एकात्मता प्राप्त करने के लिए ईंधन को आत्मसमर्पण करना पड़ता है और अपना स्वतन्त्र अस्तित्व मिटाकर तद्रूप होने का साहस जुटाना पड़ता है। ईश्वर और जीव के मिलन की यही प्रक्रिया है। नाले को नदी में अपना विलय करना पड़ता है। पानी को दूध में घुलना पड़ता और वैसा ही स्वाद स्वरूप धारण करना पड़ता है,पति और पत्नी इस समर्पण की मानसिकता को अपनाकर ही द्वैत से अद्वैत की स्थिति में पहुँचते हैं। मनुष्य भी जब देवत्व से सम्पन्न होता है, तो देवता बन जाता है और जब उसमें परमात्मा जैसी व्यापकता ओत-प्रोत हो जाती है, तो आत्मा की स्थिति परमात्मा जैसी हो जाती है। उसमें बहुत कुछ उलट-फेर करने की अलौकिकता भी समाविष्ट हो जाती है। ऋषियों और सिद्ध पुरुषों को इसी दृष्टि से देखा-परखा और उन्हें प्रायः उसी आधार पर ही श्रेय-सम्मान दिया जाता है।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! पूजा-अर्घ्य में जल, अक्षत, पुष्प, चंदन, धूप, दीप, नैवेद्य आदि को सँजोकर रखा जाता है। इसका तात्पर्य उन माध्यम संकेतों को ध्यान में रखते हुए अपनी रीति-नीति का निर्धारण करना है। जल का अर्थ है-शीतलता। अमन शान्त, सौम्य और संतुलित रहें। धूप के पीछे दिशा निर्देशन यह है कि हम वातावरण को सत्प्रवृत्तियों से भरा-पूरा सुगंधित बनाएँ। दीपक का संकेत है कि ज्ञान का प्रकाश व्यापक बनाने के लिए हम अपने साधनों विभूतियों में से कुछ भी उत्सर्ग करने के लिए तैयार रहें। चंदन अर्थात् हँसते-हँसाते, खिलते-खिलाते रहने की प्रकृति अपना लेना। अक्षत अर्थात् अपने उपार्जन का एक अंश दिव्य प्रयोजनों के लिए नियोजित करने में अटूट निष्ठा बनाए रखना, उदार बने रहना आदि। भगवान को इन वस्तुओं की कोई आवश्यकता पड़ रही हो, ऐसी बात नहीं है। इन प्रतीक-समर्पणों के माध्यम से हम अपने को ही प्रशिक्षित करते हैं कि देवत्व के अवतरण हेतु व्यक्तित्व को पात्रता से सुसज्जित रखें।

गार्ड लाल और हरी झण्डियाँ दिखाता है। यों रंगों का अपना कोई महत्त्व नहीं, पर झण्डियाँ देखने पर जो खड़ा होने और चल पड़ने का संकेत मिलता है, उसी को समझने और क्रियान्वित करने पर रेल व्यवस्था बन पड़ती है। उपासनापरक क्रिया-कृत्यों में, भगवान् को रिझाने-फुसलाने सा पात्रता प्रदर्शित किए बिना, पुरुषार्थ अपनाए बिना मनचाही कामनाएँ पूरी करा लेने जैसा कुछ भी सन्निहित नहीं है। आमतौर से लोग भ्रम में ही उलझे रहते हैं। फिर चाहे अनुनय-विनय जैसी कुछ भी उछल-कूद क्यों न की जाती रहे।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! प्रकाश जीवन के विकास की प्रारम्भिक अवस्था भी है और अन्तिम भी। आरम्भ इसलिये है कि जीव शक्तियों का विस्तार यहीं से प्रारम्भ होता है। इस ज्ञान के उदय के साथ ही मनुष्य के अन्तःकरण से आत्मज्ञान की तीव्र आकांक्षा जागृत होती है। जब तक वह अज्ञान ग्रस्त रहता है। थोड़े से क्षणिक सुखों की पूर्ति को ही अपने जीवन का उद्देश्य समझता है और भोग में ही लिप्त रहता है। भोग शारीरिक रोग-शोक पैदा करने वाले होते हैं। उसमें इन्द्रियों की दक्षता नष्ट होती है और मनुष्य वृद्धावस्था तथा मृत्यु की ओर अग्रसर होता है। भोगों से जहाँ शारीरिक व्याधियाँ बढ़ती हैं वहाँ मानसिक चिन्तायें भी बढ़ती हैं। यह चिन्तायें मनुष्य को बन्धनों से बाँधती है और दुःखी करती है। पर जैसे ही परमात्मा का प्रकाश जीवन में प्रवेश करता है, वह सांसारिक भोगों की निःसारता को समझने लगता है। अब तक जिस शरीर को जीवन व प्राण समझता था, उससे अब उसे विरक्ति होने लगती है। विरक्ति का अर्थ यह नहीं कि वह शारीरिक क्रियायें छोड़ देता है वरन् अब इसे साधन या परमात्मा के मन्दिर के रूप में प्रतिष्ठित हुआ देखता है। इन्द्रिय लिप्सायें और शारीरिक विकृतियाँ उन्हें परेशान नहीं करती। यह शरीर नाशवान है, यह कभी भी नष्ट हो सकता है- यह अनुभव होने लगता है। इसका सदुपयोग किया जाना चाहिए। आत्मिक प्रगति के लिये साधना पद्धति सही और सुनिश्चित

दिनाँक-१६/०१/२००६

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! फुन्सी का मवाद घरेलू सुई चुभोकर भी निकाला जा सकता है, पर मस्तिष्क या हृदय में घुसी गोली को निकालने के लिए कुशल सर्जन और बहुमूल्य उपकरणों की जरूरत पड़ती है। मकड़ी का पेट एक मक्खी से भर जाता है, पर हाथी को मनों गन्ना रोज चाहिए। घोंघे जलाशय की तली में जा बैठते हैं, पर समुद्र सोखने के लिए अगस्त्य ऋषि जैसा चुल्लू चाहिए। कुएँ से घड़ा भरकर पानी कोई भी निकाल सकता है, पर स्वर्ग से गंगा का अवतरण धरती पर करने के लिए भगीरथ जैसा तप और शिव जटाओं का आधार चाहिए। वृत्रासुर वध के लिए ऊर्जामयी अस्थियों से वज्र बनाना पड़ा था। छोटे काम साधारण मनुष्यों की साधारण हलचलों से, स्वल्प साधनों से बन पड़ते हैं, पर महान कार्यों के लिए महान व्यवस्था बनानी पड़ती है। धरती की प्यास बादल बुझाते और समुद्र की सतह यथावत बनाए रखने के लिए सहस्त्रों नदियों की असीम जलराशि का निरन्तर समर्पित होते रहना आवश्यक होता है।

अच्छा हो इस गोवर्द्धन को मिल-जुलकर उठाया जाए। अच्छा हो इस समुद्र-सेतु बाँधने की घड़ी में कंकड़-पत्थर ढोने मात्र से श्रेय लूटा और यशस्वी बना जाए। प्रज्ञा परिजनों के लिए इस योजना में हाथ बँटाना उनके निज के हित में है, जो खोएँगे उससे हजार गुना अधिक पाएँगे। बीज को कुछ क्षण ही गलने का कष्ट उठाना पड़ता है। इसके उपरान्त तो बढ़ने, हरियाने और फूलने-फलने का आनन्द ही आनन्द है, वैभव ही वैभव है। स्वतन्त्रता संग्राम में जो अग्रगामी बने, वे मिनिस्टर बनने से लेकर स्वतंत्रता सेनानियों वाली पेन्शन, सम्मान सहित प्राप्त कर सके। यह अवसर भी ऐसा ही है, जिसमें ली हुई भागीदारी मणि-मुक्तकों की खदान कौड़ी मोल खरीद लेने के समान है।

युगदृष्टा का जीवन दर्शन-पृष्ठ-७.६६

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! ''इस आड़े वक्त में संस्कृति ने ब्राह्मणत्व को पुकारा है। यदि वह कहीं जीवित हो, तो आगे आये। जाति और देश में हम वर्ण का सम्बन्ध नहीं जोड़ते। ब्राह्मण हम उन्हें कहते हैं कि जिनके मन में आदर्शवादिता के लिए इतना दर्द मौजूद हो कि वह अपनी वासना-तृष्णा से बचाकर शक्तियों का एक अंश अध्यात्म की प्राणरक्षा के लिए लगा सकें।''

''ब्राह्मणत्व एक साधना है। मनुष्यता का सर्वोच्च सोपान है। इस साधना की ओर उन्मुख होने वाले क्षत्रिय विश्वामित्र और शूद्र ऐतरेय भी ब्राह्मण हो जाते हैं। साधना से विमुख होने पर ब्राह्मण कुमार अजामिल और धुंधकारी शूद्र हो गए। सही तो है, जन्म से कोई कब ब्राह्मण हुआ है? ब्राह्मण वह जो समाज से कम से कम लेकर उसे अधिकतम दे। स्वयं के तप, विचार और आदर्श जीवन के द्वारा अनेकों को सुपथ पर चलना सिखाए।''

''हमारा जीवन-प्रयोग प्रत्यक्ष है। हमने सारे जीवन ब्राह्मण बनने की साधना की। इसके लिए पल-पल तपे, इंच-इंच बढ़े। जिंदगी में यज्ञोपवीत संस्कार का वह क्षण कभी नहीं भूला, जब महामना मदनमोहन मालवीय ने गायत्री महामंत्र सुनाने के साथ ही कहा था-गायत्री ब्राह्मण की कामधेनु है।''

''ब्राह्मण की सही माने में पूँजी तो विद्या और तप है-जो उसे गायत्री मंत्र की साधना से मिलती है। भौतिक सुविधाओं के मामले में तो उसे सर्वथा अपरिग्रही होना चाहिए।''

युगदृष्टा का जीवन दर्शन-पृष्ठ-८.३५

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! ''आज तो ब्राह्मणबीज ही इस धरती पर से समाप्त हो गया है। मेरे बेटो ! तुम्हें फिर से ब्राह्मणत्व को जगाना और उसकी गरिमा का बखान कर स्वयं जीवन में उसे उतारकर जन-जन को उसे अपनाने को प्रेरित करना होगा। यदि ब्राह्मण जाग गया तो सतयुग सुनिश्चित रूप से आकर रहेगा।''

''यह जो कलियुग दिखाई देता है, मानसिक गिरावट से आया है। मनुष्य की अधिक संग्रह करने की, संचय की वृत्ति ने ही वह स्थिति पैदा की है जिससे ब्राह्मणत्व समाप्त हो रहा है। प्रत्येक के अंदर का वह पशु जाग उठा है, जो उसे मानसिक विकृति की ओर ले जा रहा है। आवश्यकता से अधिक संग्रह मन में विक्षोभ, परिवार में कलह तथा समाज में विग्रह पैदा करता है। कलियुग मनोविकारों का युग है एवं ये मनोविकार तभी मिटेंगे जब ब्राह्मणत्व जागेगा।''

''ब्राह्मण सूर्य की तरह तेजस्वी होता है, प्रतिकूल परिस्थितियों में भी चलता रहता है। वह कहीं रुकता नहीं, कभी आवेश में नहीं आता तथा लोभ, मोह पर सतत नियंत्रण रखता है। ब्राह्मण शब्द ब्रह्मा से बना है तथा समाज का शीर्ष माना गया है। कभी यह शिखर पर था तो वैभव गौण व गुण प्रधान माने जाते थे। जलकुंभी की तरह छा जाने वाला यही ब्राह्मण सतयुग लाता था। आज की परिस्थितियाँ इसलिए बिगड़ीं कि ब्राह्मणत्व लुप्त हो गया। भिखारी बनकर, अपने पास संग्रह करने की वृत्ति मन में रखकर उसने अपने को पदच्युत कर दिया है। उसी वर्ण को पुनः जिंदा करना होगा एवं वे लोकसेवी समुदाय में से ही उभर कर आयेंगे, चाहे जन्म से वे किसी भी जाति के हों।''

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! उपासना कारतूस है, साधना बंदूक। अच्छी बंदूक होने पर ही कारतूस का चमत्कार देखा जा सकता है। बंदूक रहित अकेला कारतूस तो थोड़ी आवाज करके फट ही सकता है। इससे सिंह, व्याघ्र का शिकार नहीं किया जा सकता। अनैतिक गतिविधियाँ और अवांछनीय विचारणाएँ यदि भरी रहें तो कोई साधक आत्मिक प्रगति का वास्तविक और चिरस्थाई लाभ न ले सकेगा। आत्म-बल से सम्बन्धित सिद्धियाँ और आत्म-कल्याण के साथ जुड़ी हुई विभूतियाँ प्राप्त करने के लिए साधना अनिवार्य है। अपने गुण-कर्म-स्वभाव पर गहरी दृष्टि डालते हुए जो छिद्र हों उन्हें बंद करना चाहिए। फूटे हुए बर्तन में जल भरा नहीं रह सकता, छेद वाली नाव तैर नहीं सकती, दुर्बुद्धि और दुश्चरित्र व्यक्ति इन छिद्रों से अपना सारा उपासनात्मक उपार्जन गँवा बैठता है और उसे छूँछ बनकर खाली हाथ रहना पड़ता है। उपासना और साधना का फलितार्थ आराधना में होता है। आराधना स्वयं को व्यापक बनाने, विराट पुरुष से स्वयं को एकात्म करने की कला है।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! सृजन इतना, इस स्तर का होना है, मानों खंडहरों को बटोरकर उस स्थान पर नए सिरे से भव्य खड़े किए जा रहे हों। इसके लिए बादलों जैसे सशक्त समुदाय की आवश्यकता है, जो तपते धरातल को अपनी वर्षा से जलमग्न कर दे। धरित्री पर हरी घास उगाकर उसे मखमली हरीतिमा से महिमा मंडित कर दे।

सैन्य शिक्षण, व्यवसाय, विद्यालय,व्यायामशालाओं, विद्यालयों, कला केंद्रों की कमी नहीं, पर दुर्भाग्य इसी एक बात का है कि प्रतिभा परिष्कार की सांगोपांग व्यवस्था कहीं पर नहीं है। कठिनाई इस मार्ग में यही एक है कि प्राण चेतना अंतः करण के अंतराल में से उभरती नहीं, किन्तु उस गहन गह्वर तक पहुँचने, कुरेदने, उभारने वाले उपकरणों का एक प्रकार से सर्वथा अभाव ही हो गया। इस कमी के रहते अन्य किसी क्षेत्र का विकास भले ही हो जाए, पर प्रचंड प्रतिभा संपन्न ऐसे व्यक्तियों का दर्शन हो नहीं सकेगा, जो नवयुग की महती आवश्यकताओं को देखते हुए, अनय से जूझने और सृजन को साकार बनाने में अपने अतिरिक्त पौरुष का पचिय दे सके। इन दिनों इन्हीं महामानवों को, सुगढ़ व्यक्तित्वों-प्रतिभावानों को ढूँढ़ निकालने की प्रक्रिया संपन्न होनी है।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! यदि विचार बदल जाएँगें तो कार्यों का बदलना सुनिश्चित है। कार्य बदलने पर भी विचारों का न बदलना सम्भव है, पर विचार बदल जाने पर उनसे विपरीत कार्य देर तक नहीं होते रह सकते। विचार बीज हैं, कार्य अंकुर; विचार पिता हैं, कार्य पुत्र। इसलिए जीवन परिवर्तन का कार्य विचार परिवर्तन से आरम्भ होता है। जीवन-निर्माण का, आत्म-निर्माण का अर्थ है-'विचार-निर्माण'।

युग-निर्माण का सत्संकल्प नित्य दुहराना चाहिए। स्वाध्याय से पहले इसे एक बार भावनापूर्वक पढ़ना और तब स्वाध्याय आरम्भ करना चाहिए। सत्संगों और विचार गोष्ठियों में इसे पढ़ा और दुहराया जाना चाहिए। एक व्यक्ति संकल्प का एक-एक वाक्य पढ़े और बाकी लोग उसे दुहरावें। इस सत्संकल्प का पढ़ा जाना हमारे नित्य-नियमों का एक अंग रहना चाहिए।

युग निर्माण योजना के प्रत्येक परिजन को:-

(१)अपने दैनिक जीवन में उपासना को स्थान देना चाहिए।

(२) स्वाध्याय के लिए कोई निश्चित समय निर्धारित करना चाहिए।

(३) नित्य युग निर्माण का सत्संकल्प याद रखना चाहिए।

(४) सोते समय आत्मनिरीक्षण का कार्यक्रम नियमित रुप से चलाना चाहिए।

(५) दिन में समय-समय पर कुविचारों से लड़ते रहने की तैयारी करनी चाहिए। यह पाँच कार्यक्रम आत्म-निर्माण की दृष्टि से अत्यन्त आवश्यक हैं। युग-निर्माण अपने आप से ही आरम्भ करना है।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! सरकार मोरचे पर सैनिकों को लड़ने भेजती है, तो उनके लिए आवश्यक अस्त्रों, उपकरणों, वाहनों की, भोजन-आच्छादन की व्यवस्था भी करती है और उनके घर-परिवार के सदस्यों के निर्वाह हेतु वेतन भी प्रदान करती है। युगसृजन के लिए कटिबद्ध होने वालों को आवश्यक प्रतिभा से लेकर उपयुक्त परिस्थितियाँ उपलब्ध न हों, ऐसा हो ही नहीं सकता। नवसृजन की संभावना तो पूरी होने ही वाली है, क्योंकि उसके न बन पड़ने पर 'महाप्रलय' ही शेष रह जाता है, जो कि स्त्रष्टा को अभी स्वीकार नहीं।

व्यक्ति और समाज अब इस कदर गुँथ गए हैं। दोनों का पारस्परिक तालमेल पानी और मछली जैसा अविच्छिन्न हो गया है। कोई निजी उन्नति से, निजी सुविधा संपादन भर से सुखी नहीं रह सकता। संबद्ध वातावरण यदि विपन्न है तो किसी सज्जन की भी शांति सुरक्षित नहीं रह सकती। अग्नि और महामारी किसी घर विशेष तक सीमित नहीं रहती। गुंडागर्दी एक जगह पनपेगी तो समूचे क्षेत्र में विग्रह खड़ा करने का निमित्त कारण बनेगी। बढ़ी हुई जनसंख्या और आधुनिक प्रगति के फलस्वरूप अब इसलिए जनमानस के गिरे हुए स्तर को उभारना प्रकारांतर से अपनी और अपने परिकर की सुरक्षा करना है। सामूहिक जीवन मनुष्य की नियति है। इन दिनों सामूहिकता और भी अनिवार्य हो गई है। अपने मतलब से मतलब की नीति अपनाने वाले यह नहीं समझते कि समुन्नत समाज के घटक ही वास्तव में सुखी रह सकते हैं।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! तप किसे कहते हैं ? तप कहते हैं गरम करने को। हमको अपने आप को गरम करना पड़ता है। सुविधा का जीवन, सुख का जीवन, चैन का जीवन, प्रसन्नता का जीवन, हँसी-खुशी का जीवन, मौज-मजे का जीवन-यह हमारे भाग्य में बदा हुआ नहीं है। तपस्वी के भाग्य में यह सब बदा हुआ नहीं है। सिद्धांतवादी के भाग्य में बदा हुआ नहीं है। यह किनके भाग्य में बदा हुआ है ? यह बेटे वेश्याओं के भाग्य में बदा हुआ है। अय्याशों के भाग्य बदा है। सेठों के भाग्य में बदा हुआ है। वे एयरकंडीशंड कमरों में रहें और अपनी मौज करें और मजा करें। यह योगी के भाग्य में बदा हुआ नहीं है। अगर आप योगी बनना चाहते हों, भगवान के भक्त बनना चाहते हों तो अपनी जिंदगी में से यह ख्याब निकाल दीजिए, हटा दीजिए कि हमें मौज की जिंदगी काटनी है, मजे की जिंदगी काटनी है। बेटे! इसमें मौज-मजे की जिंदगी नहीं काटी जा सकती। सिद्धांतवादियों का इतिहास आदि से लेकर अंत तक यही है कि उन्होंने मुसीबतों की जिंदगी जी है और कष्टों की जिंदगी जी है।

आज का सद्‌चिंतन

मित्रो ! सिद्धांतवादियों का इतिहास आदि से लेकर अंत तक यही है कि उन्होंने मुसीबतों की जिंदगी जी है और कष्टों की जिंदगी जी है। कष्टों को उन्होंने जान-बूझकर आमंत्रित किया है, जान-बूझकर बुलाया है। कष्ट नहीं आए तो उन्होंने बुलाया है। क्यों? क्या मतलब है? मतलब यह है कि हमारे लिए तप कई तरीके से आवश्यक है और कई जरूरतों को पूरा करता है। पहली बात-इस जरूरत को पूरा करता है कि हमारे शरीर और अक्ल में, बुद्धि में जो महत्त्वपूर्ण हिस्से सोए पड़े रहते हैं, उनको जगाने के लिए गरम करना पड़ता है। गरम किए बिना दूध में से घी नहीं निकलता। गरम किए बिना कोई व्यक्ति मजबूत नहीं बनता। गरम किए बिना हर आदमी कमजोर रहता है। इसलिए आदमी को बलवान बनने के लिए, और सामर्थ्यवान बनने के लिए मेहनत करनी पड़ती मुसीबतों को जान-बूझकर आमंत्रित करना पड़ता है। अपने दिल और दिमाग को इस बात के लिए तैयार करना पड़ता है। कि हम मुसीबतों के साथ में, कठिनाइयों के साथ में जद्‌दोजहद करेंगे। हम मुसीबतों के साथ खिलवाड़ करेंगे।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! प्रतिभा त्रिवेणी की तरह है, जिसमें शारीरिक ओजस्, मानसिक तेजस् और अंतराल में सन्निहित वर्चस् को जगाना, उभारना और प्रखरता संपन्न बनाने के स्तर तक उठाना पड़ता है। संयम सध सके तो स्वस्थ रहने की गारंटी मिल जाती है। उपयुक्त काम का चुनाव करके, उसमें अभिरुचि, एकाग्रता और तत्परता का नियोजन किए रखा जाए, तो साधारण काम-काज भी इस अभ्यास के सहारे अधिकाधिक बुद्धिमत्ता और कुशलता प्रदान करते चलते हैं। इसी आधार पर शारीरिक ओजस् और मानसिक तेजस् की उतनी मात्रा उपलब्ध हो सकती है, जिस पर संतोष और गर्व अनुभव किया जा सके। सदाशयता पर सघन श्रद्धा के होने का नाम ही वर्चस् है। आदर्शवादिता इसी अवलंबन को अपनाती है और उत्कृष्टता को इससे कम में चैन नहीं पड़ता। वर्चस् जिसके भी अंतराल में उभरता है उसमें शालीनता की, सदाशयता की, सज्ज्नता की कमी नहीं रहती।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! हवा का रुख पीठ पीछे हो तो गति में अनायास ही तेजी आ जाती है। वर्षा के दिनों में बोया गया बीज सहज ही अंकुरित होता है और उस अंकुर को पौधे के रूप में लहलहाते देर नहीं लगती। वसंत में मादाएँ गर्भधारण के कीर्तिमान बनाती हैं। किशोरावस्था बीतते-बीतते जोड़ा बनाने की उंमग अनायास ही उभरने लगती है। वातावरण की अनुकूलता में, उस प्रकार के प्रयास गति पकड़ते हैं और प्रायः सफल भी होते हैं।

दिव्यदर्शी अंतः स्फुरणा के आधार पर यह अनुभव करते हैं कि समय के परिवर्तन की ठीक यही वेला है। नवयुग के अरुणोदय में अब अधिक विलंब नहीं है। जनमानस वर्तमान अवांछनीयताओं से खीझ और ऊब उठा है। उसकी आकुलता, आतुरता के साथ वह दिशा अपना रही है, जिस पर चलने से घुटने से मुक्ति मिल सके और चैन की साँस लेने का अवसर मिल सके। साथ ही विश्व वातावरण ने भी अपना ऐसा निश्चय बनाया है कि अनौचित्य को उलटकर को प्रतिष्ठित करने में अनाश्यक विलंब न किया जाए। उथल-पुथल के ऐसे चिह्न प्रकट हो रहे हैं जो बताते हैं कि नियति की अवधारण-सदाशयता की ज्ञानगंगा का अवतरण, आज की आवश्यकता के अनुरूप इन्हीं दिनों बन पड़ना सुनिश्चित है।

दिनाँक-२७/०१/२००६

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! पतन को उत्थान में, विनाश को विकास में बदलने का नाम युग परिवर्तन है। यह लड़ाई पाँच मोर्चों पर लड़ी जाती है। महाभारत पाँच पाण्डवों द्वारा लड़ा गया था। लंका दमन हनुमान, अंगद, नल, नील, जामवंत नाम के पाँच सेनापतियों द्वारा लड़ा गया है। जीवनरथ को खींचकर किनारे पर लगाने अथवा उसे गहरे गर्त में डुबो देने के लिए पाँच ज्ञानेन्द्रियों को ही उत्तरदायी बताया जाता है। वे सन्मार्ग पर चलें तो मनुष्य ऋषि और देवता बन सकता है। कुमार्ग अपनाएँ तो पशु-पिशाच बनते देर नहीं लगती। अध्यात्म का युद्ध पाँच मोर्चों पर लड़ा जाता है। इनमें विजय प्राप्त करने वाले अपने भीतर प्रसुप्त स्थिति में पड़े हुए पाँच देवताओं को जाग्रत कर लेते हैं। पाँच रत्न, पंचामृत के नाम से जिन दैवी शक्तियों का स्मरण किया जाता है, पंचोपचार के विधि-विधान में जिन्हें जगाया जाता है, वे ही परम कल्याण-कारक, परमानन्ददायक हैं। देवता यों तो तैंतीस कोटि, या तैंतीस भी हैं, पर उनमें प्रमुख पाँच ही हैं। ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेश और भवानी। इनका अनुग्रह प्राप्त कर लेने के बाद और कुछ प्राप्त करना शेष नहीं रह जाता। इन पाँचों के प्रतीक सूक्ष्मशरीर में सन्निहित पाँच कोश हैं। कोश अर्थात् भण्डार। भण्डार किसके? ऋद्धि-सिद्धियों के। यह जिनके पास हैं समझना चाहिए कि विश्ववैभव उसके करतलगत है।

युगदृष्टा का जीवन दर्शन-पृष्ठ-६.१६

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! जब आवेश की ऋतु आती है तो जटायु जैसे जीर्ण-शीर्ण भी रावण जैसे महायोद्धा के साथ निर्भय होकर लड़ पड़ते हैं। गिलहरी श्रद्धामय-श्रमदान देने लगती है और सर्वथा निर्धन शबरी अपने संचित बेरों को देने के लिए भाव-विभोर होती है। सुदामा को भी तो अपनी चावल की पोटली समर्पित करने में संकोच बाधक नहीं हुआ था। यह अदृश्य में लहराता दैवी-प्रवाह है, जो नव-सृजन के देवता की झोली में समयदान, अंशदान ही नहीं, अधिक साहस जुटाकर हरिश्चंद्र की तरह अपना राजपाट और निज का, स्त्री-बच्चों का शरीर तक बेचने में आगा-पीछा नहीं सोचता। दैवी आवेश जिस पर भी आता है, उसे बढ़-चढ़ कर आदर्शों के लिए समर्पण कर गुजरे बिना चैन ही नहीं पड़ता।

यही है महाकाल की वह अदृश्य अग्नि शिखा, जो चर्मचक्षुओं से तो नहीं देखी जा सकती है, पर हर जीवंत व्यक्ति से समय की पुकार कुछ महत्त्वपूर्ण पुरुषार्थ कराए बिना छोड़ने वाली नहीं है। ऐसे लोगों का समुदाय जब मिलजुलकर अवांछनीयताओं के विरुद्ध निर्णायक युद्ध छेड़ेगा और विश्वकर्मा की तरह नई दुनिया बनाकर खड़ी करेगा, तो अंधे भी देखेंगे कि कोई चमत्कार हुआ। पतन के गर्त में तेजी से गिरने वाला वातावरण किसी वेधशाला से छोड़े गए उपग्रह की तरह ऊँचा

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! विद्या का, प्रज्ञा का युग इन्हीं दिनों तूफानी गति से बढ़ता चला आ रहा है। उसका लक्ष्य निश्चित और निर्धारित है। हर मस्तिष्क में नए सिरे से नई हलचल उत्पन्न करना। अपनाई हुई मान्यताएँ, धारणाएँ कितनी ही पुरातन या अभ्यस्त हों, वह उन्हें उखाड़ कर ही रहेगा। साथ ही वह दूरदर्शी विवेकशीलता की ऐसी वर्षा करेगा, जिसके प्रभाव से औचित्य का ही सर्वत्र स्वागत किया जाएगा। विवेक और औचित्य के दो आधार ही नवयुग की स्थापना करेंगे। हर कोई उन्हीं को स्वीकार-अंगीकार करेगा, भले ही उन्हें समय की अनिवार्य आवश्यकता ने नए सिरे से ही प्रतिपादित क्यों न किया हो?

अंतरिक्ष से धरती पर उतरने वाली युग चेतना गंगावतरण की तरह धरती पर गिरेगी, मत्स्यावतार को पीछे छोड़ देने वाली गति से आगे बढ़ेगी। उसका कार्यक्षेत्र असीम होगा। जल, थल और नभ की समूची परिधि उसकी पकड़ में होगी।

फिर होगा क्या? उत्तर एक ही है- विचार-परिवर्तन। करुणा से ओत-प्रोत भावसंवेदना, व्यक्तियों में संयम और कार्यक्रम में आदर्शवादी पराक्रम। बस इतने भर नवगठन से अपनी दुनिया का काम चल जाएगा। उससे वे सभी समस्याएँ, जो इन दिनों सुरसा, सिंहिका, ताड़का और सूर्पणखा जैसी विकरालता धारण किए हुए हैं, अपना अस्तित्व गँवाती चली जाएँगी। फिर सृजन, अभ्युदय, उत्थान ने तो निश्चय किया है कि साधनों के अभाव वाले सतयुग की तुलना में आज अपेक्षाकृत अधिक साधन-संपन्न और बुद्धि-कौशल प्राप्त होने के कारण वह मात्र सतयुग की पुनरावृत्ति न करेगा, वरन् धरती पर स्वर्ग उतार कर रहेगा।

आज का सद्‍चिंतन

मित्रो ! अपने युग का अवतार हर किसी को दो संदेश सुनाएगा, एक आत्म परिष्कार और दूसरा सत्प्रवृत्तियों का संवर्धन। ध्वंस और सृजन की यह दुहरी प्रक्रिया इन्हीं दिनों तेजी से चलेगी और निरर्थक टीलों को गिराती, भयंकर खड्डों को पाटती हुई सब कुछ समतल करती चली जाएगी, ऐसा समतल जिस पर नंदनवन और चंदनवन जैसे अगणित उद्यान लगाए जा सकें।

लगता है,विश्व चेतना ने अपनी रीति-नीति और दिशाधारा में उज्ज्वल भविष्य की संरचना कर सकने वाले सभी तथ्यों का परिपूर्ण समावेश कर लिया है। उसी का उद्‍घोष दसों-दिशाओं में गूँज रहा है, उसी की लालिमा का आभास अंतरिक्ष के हर प्रकोष्ठ में परिलक्षित हो रहा है। न जाने किसका पाँचजन्य बज रहा है और एक ही ध्वनि निःसृत कर रहा है-बदलाव-बदलाव, उच्चस्तरीय बदलाव, समग्र बदलाव। यही होगी अगले समय की प्रकृति और नियति। मनुष्यों में से जिनमें भी मनुष्यता जीवित होगी, वे यही सोचेंगे-यही करेंगे। उसकी परिवर्तन-प्रक्रिया अपने आप से आरंभ होगी और परिवार-परिकर को प्रभावित करती हुई समूचे समाज को महाकाल के अभिनव निर्धारण से

दिनाँक-३१/०१/२००६

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! यदि विचार बदल जाएँगें तो कार्यों का बदलना सुनिश्चित है। कार्य बदलने पर भी विचारों का न बदलना सम्भव है, पर विचार बदल जाने पर उनसे विपरीत कार्य देर तक नहीं होते रह सकते। विचार बीज हैं, कार्य अंकुर; विचार पिता हैं, कार्य पुत्र। इसलिए जीवन परिवर्तन का कार्य विचार परिवर्तन से आरम्भ होता है। जीवन-निर्माण का, आत्म-निर्माण का अर्थ है-'विचार-निर्माण।'

लोहे से लोहा काटा जाता है, काँटे से काँटा निकलता है, विष से विष मरता है, सशस्त्र सेना का मुकाबला करने के लिए वैसी ही सेना चाहिए। कुविचारों का शमन सद्विचारों से ही संभव है। इसलिए यह नितान्त आवश्यक है कि अपने गुण, कर्म, स्वभाव में जो त्रुटियाँ एवं बुराइयाँ दिखाई दें, उनके विरोधी विचारों को पर्याप्त मात्रा में जुटा कर रखा जाय और उन्हें बार-बार मस्तिष्क में स्थान मिलते रहने का प्रबंध किया जाए। जब आलस्य घेर रहा हो तब परिश्रम, उत्साह, स्फूर्ति और तत्परता को प्रोत्साहन देने वाले विचारों पर देर तक मनन-चिंतन करना चाहिए, आलस्य हट जाएगा। जब कामुकता जग रही हो तो ब्रह्मचर्य, मातृ-भावना एवं चारित्रिक पवित्रता की विचारधारा को मन में स्थान देना चाहिए, वासना शांत हो जाएगी। क्रोध का आवेश चढ़ रहा हो तो शांति, प्रेम, क्षमा, मैत्री, सहानुभूति उदारता की दृष्टि से विचार करना शुरू कर देना चाहिए, गुस्सा ठंडा हो जाएगा। शोक, निराशा और चिंता घेरने लगे तब साहस, आशा, पुरुषार्थ और पुनर्निर्माण की बात सोचनी चाहिए। मन संतुलित होने लगेगा। यदि निकृष्ट विचार मनुष्य को गिरा सकते हैं तो उत्कृष्ट विचार उसे ऊँचा भी उठा सकते हैं।

युग निर्माण योजना दर्शन, स्वरूप एवं कार्यक्रम २.१४

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! अपनी दुर्बलताएँ छोड़ने के लिए यह आवश्यक है कि उनकी हानियों पर अधिक से अधिक विचार किया जाए। साथ ही वह बुराई छोड़ देने पर जो लाभ मिलेगा, उसका आशापूर्णक चित्र भी मन में बनाना चाहिए। नशा छोड़ना हो तो उसके द्वारा जो शारीरिक, आर्थिक और मानसिक हानियाँ होती हैं, उन पर विचार करना और उसे छोड़ने पर स्वास्थ्य-सुधार, पैसे की बचत तथा मनोबल बढ़ने का सुनहरा चित्र मनःक्षेत्र में स्थापित करना आवश्यक है। कुछ दिन लगातार यह उपक्रम चलने लगे तो नशे के प्रति घृणा हो जाएगी और वह अवश्य छूट जाएगा, किन्तु यदि इस प्रक्रिया को पूर्ण किए बिना ही किसी जोश-आवेश में नशा छोड़ देने की प्रक्रिया कर ली है तो यह आशंका बनी ही रहेगी कि वह उत्साह ठंडा होने पर पुरानी आदत फिर से सबल हो उठे और नशा करना फिर शुरू हो जाए। इसलिए इस सुनिश्चित तथ्य को भली प्रकार समझ लेना चाहिए कि जीवन को सुधार की दिशा में मोड़ने के लिए उत्कृष्ट कोटि की विचारधारा को मनोभूमि में नियमित रूप से स्थान देते रहना नितान्त आवश्यक है। इस अनिवार्य आवश्यकता की उपेक्षा करके कभी कोई व्यक्ति न अब तक आत्म-निर्माण कर सका है और न आगे कर सकेगा।

यदि हम अपने व्यक्तित्व को श्रेष्ठता के ढाँचे में ढालने के लिए सचमुच ही उत्सुक एवं उद्यत हों तो अपने दैनिक कार्यक्रम में उत्कृष्ट विचारधाराओं को मस्तिष्क में ठूँसने का एक नियमित विभाग हमें बना ही लेना चाहिए। मन लगे चाहे न लगे, फुरसत मिले चाहे न मिले, इसके लिए बलपूर्वक, हठपूर्वक समय निकलना ही चाहिए। नित्य कितने ही काम अनिच्छापूर्वक भी करने पड़ते हैं और समय न रहने पर भी आकस्मिक स्थिति के अनुरूप समय निकालना पड़ता है। विचार-निर्माण को भी ऐसी ही एक अनिवार्य आवश्यकता मानना चाहिए और उसके लिए हठपूर्वक कटिबद्ध हो जाना चाहिए। थोड़े ही समय में यही क्रम बहुत ही रुचिकर लगने लगेगा, संतोष और आनन्ददायक प्रतीत होगा।

युग निर्माण योजना दर्शन, स्वरूप एवं कार्यक्रम २.१४

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! गरम करने में जो तप है, उस तप से हथियार में तीखापन आता है। औजारों पर जो धार आती है, उसको टेंपर कहते हैं। जो बसुले होते हैं, तलवार होती है, चाकू होते हैं, इनकी धार मजबूत बनी रहे, नोक जल्दी न घिसने पाए, भोंथरी न होने पाए और तीखी बनी रहे, इसको कहते हैं टेंपर। टेंपर किस तरह रखा जाता है? इसी तरह गरम करके रखा जाता है। ज्यादा गरमी दी, बस, वह टेंपर हो जाता है। लोहा मजबूत हो जाता है और धार निकल पड़ती है। हमें भी अपने आप को गरम करके, तपा करके टेंपर करना पड़ता है। बिजली के बल्ब में प्रकाश कहाँ से पैदा होता है? यह जलने से पैदा होता है। गरमी से बल्ब जलते रहते हैं और गरमी से दीपक जलते रहते हैं। रोशनी किससे होती है? जलने से होती है। जलने का अर्थ क्या हो गया? 'तपाना' हो गया। बेटे ! ये सारी की सारी चीजें इस बात को सिखाती और समझाती हैं कि हमारा जीवन कष्टमय जीवन होना चाहिए। प्रत्येक आध्यात्मिक व्यक्ति को यह मानकर चलना चाहिए कि हमको अपना जीवन मुसीबतों के साथ खिलवाड़ करने वाला बनाना चाहिए; ताकि भीतर दबी हुई शक्तियों को हम इससे गरम कर सकें और बाहर निकाल सकें।

दिनाँक-०३/०२/२००८

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! अपने भीतर दबी हुई शक्तियों को गरम करने के लिए दो तरीके ऐसे हैं, जो आपको अख्तियार करने चाहिए और जिन्हें हमने भी अख्तियार किया है। पहला तरीका है-अपने आप को नियंत्रण करना, रोकना, मारना, पीसना, गरम करना और तपाना। पहले वाली गरमी जो अपनी भीतर पैदा करनी चाहिए, वह कैसे पैदा होती है? रोकने से पैदा होती है, घिसने से पैदा होती है, रगड़ से पैदा होती है। हम अपनी शक्तियों के बिखराव को यदि रोक दें तो हम शक्तिशाली बन सकते हैं। हम तपस्वी कहला सकते हैं। भगवान बन सकते हैं और मनुष्य भी हो सकते हैं, तेजस्वी हो सकते हैं और दूसरी चीज हो सकते हैं। पहले तप का छोटा वाला हिस्सा इंद्रिय-निग्रह से शुरू होता है। इंद्रियाँ कौन सी हैं? बेटे ! इंद्रियाँ दस हैं, लेकिन इनमें सबसे खराब और सबसे बागी इंद्रियाँ दो हैं। इनमें से एक का नाम है-जीभ और दूसरी का नाम है-कामेन्द्रिय। इन दोनों के ऊपर जब हम नियंत्रण लगाते हैं, निग्रह लगाते हैं, इनकी शक्ति को जब हम रोकते हैं, बाँध बनाने के तरीके से हम पानी को जमा कर लेते हैं और उसमें से बिजली पैदा कर देते हैं। इन दोनों इंद्रियाँ को रोककर हम शक्ति पैदा कर सकते हैं।

आज का सद्चिंतन

आज का सद्चिंतन

वस्तुतः मनुष्य का चिंतन, चरित्र और व्यवहार बुरी तरह गड़बड़ा गया है। उसकी स्थिति तो विक्षिप्तों जैसी हो गई है, उसी से ऐसे ऊटपटांग काम होने लगे हैं, जिनके कारण अपने और दूसरों के लिए विपत्ति ही विपत्ति उत्पन्न हो गई है। पगलाए हुए व्यक्ति द्वारा की गई तोड़-फोड़ की मरम्मत तो होनी चाहिए, पर साथ ही उस उन्माद की रोकथाम भी होनी चाहिए, जिसने भविष्य में भी वैसी ही उद्दंडता करते रहने की आदत अपनाई है।

मनुष्य को अड़चनों से निपटने के लिए योजना बनानी और तैयारी करनी चाहिए। निराश होने से मात्र आशंकाओं का आतंक ही बढ़ेगा। यहाँ यह तथ्य भी स्मरण रखने योग्य है कि सामान्य-जन अपनी निजी समस्याओं को ही किसी प्रकार सँभालते, सुधारते रहते हैं, पर व्यापक विपत्ति से मिलजुल कर ही निपटना पड़ता है। बाढ़ आने, महामारी फैलने जैसे अवसरों पर सामूहिक योजनाएँ ही काम देती हैं। पुरातन भाषा में ऐसे ही महत्त्वपूर्ण परिवर्तन को युग परिवर्तन अथवा अवतार-अवतरणों जैसे नामों से पुकारा जाता रहा है। ऐसे तूफानी परिवर्तनों को महाक्रांति भी कहते हैं। क्रांतियाँ प्रतिकूलताओं से निपटने के लिए संघर्ष रूप में उभरती हैं, पर महाक्रांतियों को दूरगामी योजनाएँ बनानी पड़ती हैं। अनीति के विरुद्ध संघर्ष छेड़ने के साथ-साथ नव-सृजन के निर्धारण करने एवं कदम उठाने पड़ते हैं। इस अपने समय में अदृश्य में पक रही खिचड़ी को महाक्रांति के रूप में जाना जाए और युग परिवर्तन कहा जाए, इक्कीसवीं सदी के उज्ज्वल भविष्य की संरचना जैसा कुछ नाम दिया जाए, तो भी कोई

आज का सद्चिंतन

दूध में मक्खन घुला होता है, पर उसे अलग निकालने के लिए उबालने, मथने जैसे कई कार्य संपन्न करने पड़ते हैं। प्राणवान् प्रतिभाओं की इन दिनों अतिशय आवश्यकता पड़ रही है, ताकि इस समुद्र मंथन जैसे युगसंधि पर्व में अपनी महती भूमिका निभा सकें। अनिष्ट के अनर्थ से मानवीय गरिमा को विनष्ट होने से बचा सकें। उज्ज्वल भविष्य की संरचना में ऐसा प्रचंड पुरुषार्थ प्रदर्शित कर सकें, जैसे-गंगा अवतरण के संदर्भ में मनस्वी भगीरथ द्वारा संपन्न किया गया था।

इन दिनों यह ढूँढ़-खोज ही बड़ा काम है। सीता को वापस लाने के लिए वानर समुदाय विशेष खोज में निकला था। समुद्र-मंथन भी ऐसी खोज का एक इतिहास है। गहरे समुद्र में उतरकर मणि-मंथन भी ऐसी खोजे जाते हैं। कोयले की खदानों में से खोजने वाले हीरे ढूँढ़ निकालते हैं, धातुओं की खदान इसी प्रकार धरती को खोद-खोदकर ढूँढ़ निकालते हैं। दिव्य औषधियों को सघन वन प्रदेशों में खोजना पड़ता है। वैज्ञानिक प्रकृति के रहस्यों को खोज लेने का काम करते हैं। हाड़-माँस की काया में से देवत्व का उदय, साधना द्वारा गहरी खोज करते हुए ही संभव किया जाता है। महाप्राणों की इन दिनों इसी कारण भारी खोज हो रही है कि उनके पके बिना, युगसंधि का महाप्रयोजन पूरा भी तो नहीं हो सकेगा। आज तो व्यक्ति की सामयिक एवं क्षेत्रीय समस्याओं का निराकरण भी वातावरण बदले बिना संभव नहीं हो सकता। संसार में निकटता बढ़ जाने से, गुत्थियाँ भी वैयक्तिक न रहकर सामूहिक हो गई हैं। उनका निराकरण व्यक्ति को कुछ ले-देकर नहीं हो सकता। चेचक की फुंसियों पर पट्टी कहाँ बाँधते हैं ? स्थायी उपचार तो रक्त-शोधन की प्रक्रिया से ही बन पड़ता है।

आज का सद्चिंतन

पूज्यवर ने कार्यकर्त्ताओं को निर्देश दिया है कि हम स्वयं बदलें, प्रवाह को पलटें, प्रवाह में न बहें। कोई न कोई बात प्रज्ञा परिवार के परिजनों में विशेष रही होगी कि पूज्यवर ने उन्हें चुना, अपना पार्षद-सहयोगी बनाया। उन पर विश्वास कर उनके कंधों पर युग निर्माण जैसी महती जिम्मेदारी भरा कार्य सौंपा। वे कहते हैं कि 'प्रज्ञा परिजन अपनी आकांक्षाएँ-अभिलाषाएँ वैभव-बड़प्पन से हटाकर व्यक्तित्व को महान बनाने और जीवनक्रम को अनुकरणीय, अभिनंदनीय स्तर तक ले जाने की योजना बनाएँ।' हमें स्वयं सोचना है कि कहीं हम दूसरों की आँखों में चकाचौंध उत्पन्न करने, सस्ती वाहवाही लूटने की पगडंडी में तो नहीं भटक गए। हमें अग्रगामी बनना है, लोक-प्रवाह से तनिक भी प्रभावित हुए बिना कार्य करना है। सभी के लिए आत्ममंथन की वेला है कि क्या इस कसौटी पर हम खरे उतरते हैं?

युगशिल्पियों-कार्यकर्त्ताओं से गुरुदेव की अपेक्षा है कि हम अहंमन्यता के विषधर से बचें एवं अध्यात्म-क्षेत्र की वरिष्ठता का आधार विनम्रता मानें। सेवाक्षेत्र में प्रवेश करने वाले हर कार्यकर्त्ता के लिए यह एक संजीवनी मंत्र है। हमें 'मैं' शब्द का नहीं, 'हम' का प्रयोग करते हुए संघ को वरीयता देनी है। इसमें अहंकार गलता है एवं सम्मिलित प्रयासों को श्रेय मिलता है। गायत्री परिवार सबसे अलग है, राजनीति से भी कोसों दूर है। ऐसे में हमारा लक्ष्य हो कि ऐसी कोई स्थिति हमारे संगठन में आने भी न पाए। हम यह बात सभी 'अखण्ड ज्योति' पाठकों को गायत्री परिवार का ही एक अंग अवयव मानकर लिख रहे हैं।

आज का सद्चिंतन

शुरुआत हम 'युग निर्माण सत्संकल्प' से करते हैं, जिसे इक्कीसवीं सदी का संविधान, नवयुग का मैनिफेस्टो कहा गया है। अपनी द्वितीय हिमालय यात्रा (१९६०-६१) के बाद उनने युग निर्माण सत्संकल्प की घोषणा की थी। हममें पहला सूत्र है-''हम ईश्वर को सर्वव्यापी, न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन को अपने जीवन में उतारेंगे।'' ईश्वरीय अनुशासन को मानना यानी आस्तिक बन जाना। हम पाठकों में से कितने हैं, जो ईश्वरीय अनुशासन को जीवन में उतारने का प्रयास करते हैं। वस्तुतः सारी विश्व-वसुधा को धर्मधारणा से अनुप्राणित करने हेतु यह एक महत्त्वपूर्ण सूत्र है। हर बात में भयभीत रहना, असुरक्षित रहना, उसके न्याय में विश्वास न कर अपना न्याय थोपने की कोशिश करना-यह हर किसी के जीवन का हिस्सा हो गया है। यदि यह एक ही सूत्र हमारे जीवन में आ जाए तो हम अनुशासित-योगमय जीवन जी सकेंगे। फिर हमारा विश्वास दृढ़ होता जाएगा कि हमारी हर क्रिया पर 'उनकी'-भगवान की दृष्टि है; क्योंकि वे सर्वव्यापी हैं, अचिंत्य-अगोचर हैं, पर वे न्याय करते हैं, अतः कभी भी हमारे प्रति अन्याय नहीं होगा। एक और सूत्र है-''इंद्रियसंयम, अर्थसंयम, समयसंयम और विचारसंयम, का हम सतत अभ्यास करेंगे।'' शब्दों का चयन बड़ी सूझ-बूझ के साथ आराध्य सत्ता ने किया है। सातत्य एवं अभ्यास ही हमें किसी प्रयास में रवाँ करता है। हमें पूर्ण संयमी बनने में देर लगेगी, पर एक कोशिश तो करके देखें-कितना हम अपने विचारों पर, खान-पान पर, कामुक चिंतन पर, इंद्रियों के दुरुपयोग पर, समय व धन के अपव्यय पर रोक-थाम लगा सकते हैं। शुरुआत एक प्रतिशत से होगी तो आगे एक और बाद में दो शून्य लगने की पूरी संभावनाएँ हैं।

आज का सद्चिंतन

बड़ा विरला ही सौभाग्य होता है, जब गुरु एवं भगवान एक साथ आते हैं। द्वापर में ऐसा सुयोग आया था, जब श्रीकृष्ण अर्जुन के लिए गुरु बनकर एवं सारे विश्व के लिए जगद्गुरु बनकर आए थे। तब वे भगवान भी थे। विष्णु के आठवें अवतार के रूप में दिव्य जन्म व कर्म वाले श्रीकृष्ण लीलावतार, लीला पुरुषोत्तम कहे जाते हैं, जिनकी गीता ने सारे विश्व को जीवन जीने का ज्ञान दिया। इस कलियुग में भी ऐसा ही सुयोग हम सभी को मिला। एक सामान्य ब्राह्मण वेशधारी, वैसा ही चिंतन करने वाला साधक, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, एक संगठक हम सबके बीच आया। सहज ही वह हमारा पिता, अभिभावक एवं सद्गुरु बन गया। मातृसत्ता उनके साथ सहज संवेदना लुटाने आईं। यह ऋषियुग्म अद्भुत कुशलता के साथ संगठन को एक माला के रूप में पिरोता चला गया एवं हम सब सहज ही गुँथते चले गए। कितना बड़ा सौभाग्य है हमारा कि हम वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं शक्तिस्वरूपा, स्नेहसलिला माता भगवती देवी से जुड़े। आज सशरीर वे नहीं हैं, पर अभी भी व आगे भी कई दशकों तक लाखों को प्रेरणा दे रहे हैं, देते रहेंगे। हम अपने सौभाग्य को सराहते हैं व जिनने उन्हें प्रत्यक्ष देखा, उनकी अनुभूतियों में आप्लावित हुए वे उसी में निहाल होते रहते हैं।

हमारे गुरुदेव एक सद्गुरु के रूप में धराधाम पर अवतरित हुए एवं अपने जीवन से आचरण की प्रेरणा देकर आचार्य रूप में प्रतिष्ठित हुए। वे बहुत कुछ लिख गए (लगभग तीन हजार से अधिक छोटी-बड़ी किताबें)। इसी कारण वेदमूर्ति, तपस्वी ब्राह्मण का जीवन जीकर गए। इसी कारण तपोनिष्ठ बहुत कुछ कह गए (अपनी अमृतवाणी द्वारा), पर क्या हमारा उन पर विश्वास है? आइये एक आत्मचिंतन करें कि हम उनकी बातों पर कितना विश्वास करते हैं, कितना उन्हें जीवन में उतारते हैं? यदि नहीं करते तो क्यों नहीं करते व उनके दिए अनुदान पाकर भी एक सामान्य-सा जीवन क्यों जीते हैं? क्या वे एक प्रतिशत भी हमारे जीवन में उतर पाए हैं? यदि वे हमारे इष्ट-आराध्य हैं तो क्या हम अपने इष्ट (लक्ष्य या रोल मॉडल या आइकॉन) के जैसा थोड़ा भी कुछ बन पाए हैं? यदि नहीं तो

आज का सद्चिंतन

युगशिल्पियों-कार्यकर्त्ताओं से गुरुदेव की अपेक्षा है कि हम अहंमन्यता के विषधार से बचें एवं अध्यात्म-क्षेत्र की वरिष्ठता का आधार विनम्रता मानें। सेवाक्षेत्र में प्रवेश करने वाले हर कार्यकर्त्ता के लिए यह एक संजीवनी मंत्र है। हमें 'मैं' शब्द का नहीं, 'हम' का प्रयोग करते हुए संघ को वरीयता देनी है। इसमें अहंकार गलता है एवं सम्मिलित प्रयासों को श्रेय मिलता है। गायत्री परिवार सबसे अलग है, राजनीति से भी कोसों दूर है। ऐसे में हमारा लक्ष्य हो कि ऐसी कोई स्थिति हमारे संगठन में आने भी न पाए।

परमपूज्य गुरुदेव का लिखा एक पत्रक है-'अपने अंग-अवयवों से।' इसमें हम सभी शामिल हैं-एक सामान्य पाठक भी, पुराने से पुराना वरिष्ठतम कार्यकर्त्ता भी। वे लिखते हैं- ''इस विशालकाय योजना में प्रेरणा दिव्यसत्ता ने दी है। योजना बड़ी है, उतनी ही बड़ी, जितना कि बड़ा इसका नाम है-'युग-परिवर्तन'। श्रेय किसी को भी क्यों न मिले, पर अनेकों, का योगदान इसमें लगना है। आप सबकी समन्वित शक्ति का नाम ही वह व्यक्ति है, जो इन पंक्तियों को लिख रहा है। यह विराट योजना पूरी होकर रहेगी। देखना इतना भर है कि इस अग्निपरीक्षा की वेला में आपका शरीर, मन और व्यवहार कहीं गड़बड़ाया तो नहीं।'' इन शब्दों पर यदि हमें विश्वास है तो वह क्रिया में क्यों नहीं दिखाई देता? यदि दिखाई देने लगे तो आगामी तीन वर्षों में हम वह कार्य करके दिखा सकते हैं, जिसकी तुलना सेतु बंधन से होगी।

आज का सद्चिंतन

गायत्री के विषय में पूज्यवर कहते हैं- "आप देखना, सारे विश्व का जो यह नवीनीकरण होने जा रहा है, उसमें गायत्री की फिलॉसफी और यज्ञ की कार्यपद्धति-यज्ञीय जीवन ही मुख्य भूमिका निभाएँगे। मनुष्य का चिंतन कैसा होगा, यह प्रेरणा हमें गायत्री से मिलेगी और व्यवहार कैसा होगा, यह प्रेरणा हमें यज्ञ से मिलेगी। आप तो यज्ञ व गायत्री का वह स्वरूप लिए बैठे हैं, जिसमें मनोकामनाएँ पूरी होती हैं।"-(अमृतवाणी, वाङ्मय २.११०) हमें स्वयं निर्णय करना है कि कहीं हम गायत्री को वहीं तक सीमित करके तो नहीं बैठ गए; कहीं यज्ञ हमारे लिए बेड़ी तो नहीं बन गया; कहीं हम सस्ते पंडित तो नहीं बन गए। ये दोनों तो हमारे दर्शन-व्यवहार के, हमारी संस्कृति के मूल आधार हैं। इनको तो सभी को भली प्रकार समझना ही होगा। आज हमें विज्ञानसम्मत ढंग से इनकी पूज्यवर द्वारा दी गई व्याख्याएँ ही सबके समक्ष रखनी होंगी, ताकि नवयुग की आधारशिला रखी जा सके।

'प्रज्ञोपनिषद्' द्वारा युगऋषि ने नवयुग की संहिता की रचना की। इसका एक-एक सूत्र मार्मिक है, जीवन में उतारने योग्य है, चाहे वह अध्यात्म दर्शनप्रधान प्रथम खंड हो, गुणों के विवेचन द्वारा द्वितीय देवमानव प्रकरण, परिवार-नारीप्रधान तीसरा खंड, देव संस्कृतिप्रधान चौथा खंड। प्रत्येक में कथाओं का प्रयोग तो तत्त्व दर्शन को समझाने के लिए है, पर जो विवेचन है, वह बड़ा मार्मिक है। प्रथम खंड के दूसरे अध्याय के २४, २५वें श्लोक में वे लिखते हैं-"भगवान ने मनुष्य को जहाँ शक्ति और सुविधाएँ दी हैं, वहीं उसे एक विशेष सुविधा स्वतंत्र चयन करने की भी दी है। इस स्वतंत्रता का प्रयोग कौन किस प्रकार करता है, यही परीक्षापद्धति हरेक के समक्ष है।" हमें भी सोचना है कि स्वतंत्र चयन के क्रम में कहीं हम गलत मार्ग पर तो नहीं चल रहे? सही मार्ग क्यों नहीं चुन पा रहे, विवेक का अवलंब [illegible]

आज का सद्चिंतन

'युग निर्माण योजना-दर्शन, स्वरूप व कार्यक्रम' (वाङ्मय, खंड ६६) में पूज्यवर ने मिशन के सारे कार्यक्रमों का, भावी परिस्थितियों को देखते हुए क्या किया जाना चाहिए, सारा मार्गदर्शन कर दिया है। हम उन्हें आधार मानकर अपने क्रिया-कलापों को अंजाम दें, उन पर पूर्ण विश्वास रखकर कार्य करें तो कोई आश्चर्य नहीं कि जल्दी ही युग निर्माण होता हमें दिखाई देने लगे। क्रांतिधर्मी साहित्य (१९८८ से १९९०) में पूज्यवर ने जीवन का सार, आज की सभी समस्याओं का समाधान, इक्कीसवीं सदी के समाज की पूरी रूपरेखा लिखकर दे दी है। छोटी-छोटी ये २४ किताबें सभी के लिए, भले ही वे सक्रिय कार्यकर्त्ता न हों, पठनीय हैं, मननीय हैं। गुरु के वाक्य को ब्रह्मवाक्य मानकर यदि उस पर विश्वास करके चलें तो सारे समाधान सहज ही मिलते चले जाते हैं; यह सुनिश्चित तथ्य है।

'समस्याएँ आज की-समाधान कल के' एक ऐसी ही पुस्तिका है, जिसमें पूज्यवर ने भविष्य की सारी समस्याओं का समाधान लिखा है। 'परिवर्तन के महान क्षण' एवं 'सतयुग की वापसी' ऐसी ही दो पुस्तिकाएँ हैं, जिनकी एक-एक पंक्ति हम सबके लिए प्रेरणादायी है। हमें अपने पूरे चिंतन की धुरी इसी दर्शन को बनानी चाहिए। व्यसनों पर, बेरोजगारी पर, बहुप्रजनन, पर्यावरण संकट, नारीजागरण पर जो उनकी लेखनी चली है, उसका कोई मुकाबला, नहीं। 'शादियों के नाम पर बरबादी का समर्थ प्रतिरोध'-यह एक कार्यक्रम उनने हर परिजन को दिया है। शुरुआत अपने घर से ही होगी। हमें स्वयं यह देखना होगा कि कहीं हम तो ऐसा नहीं कर रहे? कर रहे हैं तो हम प्रज्ञा परिजन कहलाने योग्य नहीं। अंत में उनकी अमृतवाणी के माध्यम से इतना ही कहने का मन है-''हम शरीर छोड़ने के बाद देखते रहेंगे कि हमारे अनुयायियों ने हमारी परंपरा को निभाया कि नहीं, कहीं व्यक्तिगत ताना-बाना, बुनना तो नहीं शुरू कर दिया। यदि ऐसा हुआ तो हमारी आँखों से आँसू टपकेंगे और आपको चैन से नहीं बैठने देंगे। आपका अपयश होगा और अधःपतन होगा।'' (गुरुवर की धरोहर प्रथम भाग, पृष्ठ ८०-२५/३/८७ का प्रवचन)।

आज का सद्चिंतन

युगसंधि की वर्तमान दसवर्षीय अवधि में शांन्तिकुंज से दो अत्यंत प्रचंड संकल्प उभरे हैं। एक-दीपयज्ञीय माध्यम से एक लाख सृजन-साधक खड़े करना। दूसरा-उभरे प्रयास में सहभागी बनने के लिए एक करोड़ व्यक्तियों को जुटाना। दोनों प्रयोजन जिस गति से संपन्न होते चलेंगे, उसी अनुपात से नवयुग की, सतुयग की वापसी के अनुरूप वातावरण बनता चला जाएगा। इसमें प्रयोग और प्रयास के सफल होने की संभावनाएँ अभियान का आरंभ करते-करते ही दीख पड़ रही है। भविष्य के संबंध में आशापूर्वक विश्वास किया गया है कि नवयुग के अवतरण की महती संभावना नियत समय पर होकर रहेगी। पुरुषार्थ अपनी जगह और परमार्थ अपनी जगह। दोनों के समन्वय से, एक और एक के अंक बराबर रखने पर, दो नहीं वरन् ग्यारह बन जाते हैं, इस कथनी की यथार्थता वर्तमान दीपयज्ञ समारोहों से फलित होती देखी जा सकती है। एक लाख संगठित आध्यात्मिक प्रयोग और प्रयोग और एक करोड़ व्यक्तियों द्वारा अपनाए गए सृजन-पुरुषार्थ, दोनों मिलकर नवयुग का अवतरण संभव बनाएँ और उसे मत्स्यावतार की तरह विश्वव्यापी बनाएँ तो इसमें किसी को भी आश्चर्य नहीं करना चाहिए।

आज का सद्‌चिंतन

यह मान्यता सभी विचारशीलों एवं सभी युगमनीषियों द्वारा स्वीकारी गई है कि इन दिनों व्यक्ति और समाज के सामने जो संकट और विग्रहों के घटाटोप छाए हुए हैं, उनका मुख्य कारण बुद्धि का भटकाव है। भ्रष्ट चिंतन से दुष्ट आचरण और उसके फलस्वरूप अनर्थों की बाढ़ आई हुई है। उसकी निराकरण करने के लिए विचारक्रांति ही एकमात्र उपचार है। जनमानस को परिष्कृत किए बिना विग्रहों के अनेकानेक स्वरूपों का निराकरण संभव नहीं हो सकेगा। विचारक्रांति अपने युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है। इसे संपन्न करने के लिए गायत्री यज्ञ में सन्निहित तत्वज्ञान जनमानस में प्रतिष्ठित किया जाना चाहिए, साथ ही यह भी आवश्यक है कि आद्यशक्ति व समग्रशक्ति के रूप में जानी जाने वाली गायत्री-उपासना को भी प्रश्रय दिया जाए। यह पर्याप्त न होगा कि कुछ ही लोग उसकी कठोर तपश्चर्या संपन्न करने कर्तव्य की अतिश्री कर लें वरन् आवश्यक यह भी है कि इसके साथ-साथ जन-जन की प्राण-चेतना का समन्वय हो। अधिकाधिक लोग एक स्तर की साधना-पद्धति अपनाएँ और उसके सहारे बन पड़ने वाली सामूहिक प्राण-ऊर्जा का विस्तार करते हुए प्रक्रिया संपन्न करें, जिसे सीमित रखने से काम नहीं चलेगा वरन् उसकी, व्यापकता, बहुलता ही अभीष्ट प्रयोजनों की पूर्ति वाला लक्ष्य पूरा कर सकेगी।

आद्यशक्ति की समर्थ साधना- पृष्ठ-२६

आज का सद्चिंतन

ईश्वर पर न किसी की प्रशंसा का कोई असर पड़ता है और न निंदा का। पुजारी नित्य प्रशंसा के पुल बाँधते और नास्तिक हजारों गालियाँ सुनाते हैं। इनमें से किसी की भी बकझक का उस पर कोई असर नहीं पड़ता। गिड़गिड़ाने, नाक रगड़ने पर भी चयन आयोग किसी को ऑफीसर नियुक्त नहीं करता। छात्रवृत्ति पाने के लिए नम्बर लाने और प्रतिस्पर्द्धा जीतने से कम में किसी प्रकार भी काम नहीं चलता। ईश्वर की भी यही सुनिश्चित रीति-नीति है। उसकी प्रसन्नता भी एक केन्द्र-बिन्दु पर केन्द्रित है कि किसने उसके विश्व उद्यान को सुंदर समुन्नत बनाने के लिए कितना अनुदान प्रस्तुत किया? उपासनात्मक कर्मकाण्ड इसी एक सुनिश्चित व्यवस्था को जानने-मानने के लिए किए और अपनाए जाते हैं। यदि कर्मकाण्ड लकीर भर पीटने की तरह पूरे किए जाएँ और परमात्मा के आदेशानुशासन की अवज्ञा की जाती रहे, तो समझना चाहिए कि यह मात्र बाल-क्रीड़ा, खेल-खिलवाड़ ही है। उतने भर से किसी का कुछ भला होने वाला है नहीं।

आज का सद्चिंतन

यदि औसतन १० दिनों में न्यूनतम ५ व्यक्तियों को भी यह क्रांतिधर्मी सैट पढ़ाया जाए, तो एक माह में १५ तथा एक वर्ष में १८० व्यक्तियों तक एक ही परिजन द्वारा नवचेतना का संदेश पहुँच सकता है। इस प्रकार पाँच वर्ष में यह ९०० हो जाएगी। इस क्रम में एक लाख परिजनों द्वारा, पाँच वर्ष में ९ करोड़ व्यक्तियों का युगचेतना से अनुप्राणित किया जा सकेगा। यह संख्या आश्चर्यजन लगती है, पर यह न्यूनत्तम के आँकड़े हैं, नैष्ठिक पुरुषार्थी १० दिन में १० व्यक्तियों को भी पढ़ा-सुना सकता है। तब यह संख्या दो गुनी हो जाएगी-अर्थात् पाँच वर्ष में १८ करोड़। अगले पाँच वर्ष में नैष्ठिकों की संख्या बढ़ेगी ही। अस्तु, उस पाँच वर्षीय पुरुषार्थ से और भी अधिक लोगों को अनुप्राणित किया जा सकेगा। सफलता का प्रतिशत कितना भी घटे, हर पाँच वर्ष में करोड़-दो-करोड़ भागीदारी खड़े कर लेना जरा भी कठिन नहीं है।

इस संबंध परिकर को दैनिक जीवन में कई काम सुपुर्द किये गए हैं। इनमें से एक है-१०८ बार गायत्री-मंत्र का जाप। उतने ही समय तक प्रातःकालीन सूर्योदय का ध्यान जिसमें अनुभव करना कि वह तेजस् अपने कण-कण में, रोम-रोम में समाविष्ट होकर समूची काया को ओजस्वी, तेजस्वी और वर्चस्वी बना रहा है। यह अनुभव साधक के उत्साह एवं साहस को कई गुना बढ़ा देता है।

आज का सद्चिंतन

इसी साधना का एक पक्ष यह है कि उद्गम-केंन्द्र शांतिकुंज की एक मानसिक परिक्रमा लगा ली जाए और विगत ६५ वर्ष से अखंड लौ में जल रह दीपक के समीप बैठकर उसस निस्तृत होने वाली प्राणचेतना का अपने में अवधारण करते रहा जाए।

विचारक्रांति ज्ञानयज्ञ है, इसका हर दिन अवगाहन किया जाए। इक्कीसवीं सदी संबंधी जो पुस्तकें हैं, जो इन दिनों छपती जा रही हैं, उस क्रम में हर महीने छह पुस्तकें छापने की योजना है। बीस पैसा नित्य का अंशदान निकालने रहने पर एक महीने में छह रुपये की राशि जमा हा जाती है। इसी पैसे से हर महीने का नया प्रकाशन एक लाख पाठकों को मिलता रहेगा। इन्हें एक से लेकर दस तक को पढ़ा देना या सुना देना कठिन का नहीं है, जिसे कि एक घंटे समयदान करने वाला पूरा न कर सके। यह पढ़ाने या सुनाने का क्रम नियमित रूप से चलता रहे तो एक वर्ष में ही वह संख्या पूरी हो सकती है, जो पाँच वर्ष के लिए निर्धारित की गई है। 'अधिकस्य अधिक फलम्' की सूक्ति के अनुसार युगचेतना का स्वरूप जितने अधिक लोग समझ सकें, हृदयगम कर सकें और व्यावहारिक जीवन में उतार सकें, उतना ही उत्तम है।

वसंत पंचमी पर गुरुसत्ता का भावभरा स्मरण
अध्यात्म का मर्म जिनने घूँटी की तरह पिलाया

''आध्यात्मिक जीवन-पथ पर आगे बढ़ना और बढ़ते रहना दुःसाहसिक लोगों का काम है। लोग बातें करते हैं, परंतु जिंदगी जीने की बारी आती है तो बहानेबाजी के भोंडे नाटक करने लगते हैं।''

''भगवान तो तुम्हारे भीतर उतरने के लिए तैयार है, परंतु तुम्हारा अहं उसे घुसने दे तब न !'' अंतस की करुणा आँसू बनकर आँखों से छलक उठी और भर्राए गले से कहने लगे-''तुम लोग मेरे बच्चे हो। मैं तुम सबको बहुत-बहुत-बहुत ज्यादा प्यार करता हूँ। मैं तो बस, केवल इतना चाहता हूँ कि तुममें से किसी का यह मनुष्य जीवन बरबाद न होने पाए। तुम सब वहाँ तक पहुँच सको, जहाँ तक मैं पहुँच पाया हूँ। मेरी चाहत है कि विगत अनेक जन्मों से चले आ रहे इस काफिले को कोई भी सदस्य बिछड़ने न पाए।'' पाँच-सात मिनट इधर-उधर टहलकर वे फिर से उस चारपाई पर बैठ गए और अपने ही दाएँ हाथ से बाएँ हाथ की त्वचा पकड़ते हुए बोले-''जानते हो कि माया क्या है? जानना चाहते हो कि भ्रम कहाँ से पैदा होते हैं? जानना चाहोगे कि वासनाएँ कहाँ वास करती हैं? तो सुनो! सब कुछ इस चौथाई मिलीमीटर की खाल का कमाल है। यही है माया, यही है भ्रमों का पिटारा, इसी में है वासनाओं का विष।''

उस समय कितना प्रगाढ़ वैराग्य धधक रहा था उनके मुख पर, इसे कहकर बताया नहीं जा सकता। वे बिना रुके कहे जा रहे थे-''जब कभी माया मन को छलना चाहे, वासनाओं के विषैले दंश चेतना का चैतन्य निगलना चाहें, जब कभी भ्रम चिंतन को भटकाए, तब सिर्फ एक पल के लिए आँखें बंद करना और पहले अपने आप से, अपने शरीर से इस चौथाई मिलीमीटर की त्वचा को उघेड़ कर देखना फिर अनुभव करना, तुम कैसे दिख रहे हो, सब मायाजाल एक ही पल में खतम हो जाएगा। यही अनुभूति सामने खड़े व्यक्ति के लिए करना, सभी वासनाएँ तिरोहित हो जाएँगी। चिंतन-चेतना की निर्मलता पुनः निखर उठेगी।''

आज का सद्चिंतन

''स्वाध्याय और सत्संग। युगावतार भगवान् तथागत के चिंतन को पियो। जिन्होंने उनके चिंतन के अनुरूप जीना शुरू किया है, उनका सत्संग करो। रोज न सही तो साप्ताहिक ही सही। ऐसे परिव्राजकों को आज बड़ी संख्या में तैयार किया जा रहा है, जो घूम-घूमकर जनमानस को युग की भावधारा से अनुप्राणित करे-उनके मर्म को स्पर्श कर संवेदनाओं को उभारें ।''

बात समझ में आ गई। अशोक के उत्साह का पारावार न था। चंड-अशोक के कदम अब अशोक महान् की ओर बढ़ने लगे। उसने भलीभाँति जान लिया था कि करुणा की दिव्यता और महत्त्वाकांक्षाओं की मलीनता, दोनों परस्पर विरोधी हैं। जहाँ एक रहेगी, वहाँ दूसरे का ठहरना-टिकना बिलकुल असंभव है। एक की प्रेरणा है कि अपनी सामर्थ्य के कण-कण को जनहित में लगाओ, जबकि दूसरी यही सिखाती रहती है कि किस चालाकी से दूसरों की आवश्यकताओं को भी हड़पकर अपने और लड़के-नातियों के लिए जमा किया जाए।

अशोक की जाग्रत आत्मचेतना ने महत्त्वाकांक्षा को ठोकर मारकर स्वयं के व्यक्तित्व से बाहर निकाल फेंका था। क्रूरता को तोड़-मरोड़ कर कूड़े के ढेर में डाल दिया और जुट गया शांति और सद्भाव की भावधारा बहाने में। समूचे साम्राज्य को प्रेम के शीतल जल से सींचना शुरू किया। साम्राज्य का संचालन ही नहीं, व्यक्तिगत जीवन भी अब अपने परिवर्तित स्वरूप में था। सभी के कहने-सुनने मना करने के बाद भी उसने अपनी आवश्यकताओं को कम कर लिया। समाज का सबसे गरीब अधिकतर जिस तरह जीता है, सम्राट् उसी तरह जीने लगा। ऐतिहासिक विवरण के अनुसार उसकी कुल संपत्ति थी-एक चीवर और एक सुई, केशों के लिए एक छुरा, जल छानने के लिए एक छलनी और एक तूंबा जो उसका अभिन्न संगी बना। उसने एक शिलालेख में कहा है-मैं सभी जनों के मंगल के लिए कार्य करूँगा। सभी के हित में मेरा हित है, इससे मैं कभी

आज का सद्चिंतन

''स्वयं सूटेड-बूटेड, कुत्तों को मोटरों में घुमाने वाले और नौकरों को फटकारने वालों को आप लोग बड़ा कहते हैं। मुझे तरस आता है आप की समझ पर।'' गाँधी जी का स्वर तीखा था-'' यह आप नहीं, आपके अंदर की हीनता बोल रही है। लोकसेवी के गौरव-बोध का अभाव बोल रहा है। बड़े ये नहीं हैं। बड़े वे हैं, जिनका मन सर्व-सामान्य की समस्याओं से व्याकुल रहता है, जिनकी बुद्धि इन समस्याओं के नित नए प्रभावकारी समाधान खोजती है। जिनके शरीर ने अहिर्निशं सेवामहे का व्रत ले लिया है। झूठे बड़प्पन और सच्ची महानता में से एक ही को ही चुना जा सकता है, दोनों एक साथ नहीं। महानता प्राप्ति का एक ही उपाय है-जनसामान्य की व्यथा समझना और उसके निवारण के लिए बिना किसी बहानेबाजी के जुट पड़ना।'' साथी बड़प्पन और महानता का अंतर समझ चुके थे। गाँधी जी ने कहा-''इन साधारण अँगरेजों की बात करते हो, अगर मुझे इंग्लैंड के सम्राट् से मिलना पड़ा तो भी इसी पोशाक में मिलूँगा।''

घटना का पटाक्षेप हुआ । कुछ वर्षों के बाद सचमुच सम्राट् की ओर से बुलावा आ पहुँचा। बुलावे के साथ निर्देश भी-गाँधी जी अँगरेजी वेष-भूषा में आएँ। विरोधियों ने सोचा-अब देखें, कैसे नहीं पहनते हैं अँगरेजी पोशाक। सारी महात्मागिरी धरी रह जाएगी!

किन्तु गाँधी जी का मानस वैसा ही दृढ़ था। उन्होंने स्पष्ट कहला भेजा-मिलना सम्राट् को है, मुझे नहीं। यदि उन्हें स्वीकार हो तो मैं इसी पोशाक में मिलूँगा अन्यथा नहीं। गाँधी जी के आदर्शों के सामने सम्राट् को झुकना पड़ा। वे गए-सम्राट् जॉर्ज पंचम ने उनके इस विचित्र वेश को देखकर पूछा-''आखिर ऐसा क्या आ पड़ा, जो आपने यह वेश धारण किया ?''

''निष्ठुर ही वैभव और विलास जुटा सकता है-भावनाशील के लिए यह

आज का सद्चिंतन

संवेदना के बाद का चरण है-सक्रियता। बेचैन तो रोगी भी होता है, पर वह चारपाई पर पड़ा पैर पटकता और कराहता रहता है। उससे कुछ करते-धरते नहीं बन पड़ता। दूसरों को उसकी सेवा में जुटना पड़ता है। भाव-चेतना के जागरण से उपजी बेचैनी इससे भिन्न है। वह शक्ति को सक्रिय होने के लिए विवश करती है।

महात्मा गाँधी के जीवन में यही सक्रियता पनपी और विकसित हुई। उन्होंने अपने जीवन-चक्र को इतनी तेजी से घुमाया कि एक साथ अनेक काम कर डाले। स्वराज्य, स्वावलंबन, ग्राम-सुधार के साथ उन्होंने एक इतना अधिक महत्त्वपूर्ण काम किया कि इतिहास उन्हें कभी भुला न सकेगा। वह है-समाज को लोकसेवी देना। विनोबा, नेहरु, पटेल, कृपलानी जैसे सैकड़ों गढ़ दिए। उनका एक ही स्वप्न था-रामराज्य लाने का, जो अधूरा पड़ा है। यह और कुछ नहीं, ऐसे समाज की स्थापना है, जिसमें मनुष्य की पहचान उसकी भाव-चेतना के आधार पर हो। अगले दिनों यही होने को है, जिसमें उसका वास्तविक स्वरुप निखरकर आएगा। उसकी आज की दशा और भविष्य की दशा में कायाकल्प जैसा अंतर हर किसी को दीख पड़ेगा। हर किसी में उदार आत्मीयता हिलोरें लेती दीख पड़ेगी। ऐसी दशा में परमार्थ ही सच्चा स्वार्थ सिद्ध हो जाएगा। परिवर्तन के इस महापर्व में हम स्वयं भी बदलें। निष्ठुरता के झूठे लबादे को उतार फेंके। सरसता के उमगते ही

दिनाँक-२१/०२/२००६

आज का सद्चिंतन

कहा जा चुका है कि विश्व के शक्ति-भण्डार में सर्वोपरि आत्मबल है। उसकी तुलना धनबल, शस्त्रबल, सत्ताबल आदि से नहीं हो सकती। वे सभी छोटे और बौने पड़ते हैं। जो कार्य आत्मबल संपन्न कर सके, वे दूसरों से नहीं बन पड़े। पुरुषार्थ का अपना प्रयोजन तो है, पर यदि उसके पीछे आत्मबल का समावेश न हो तो फिर समझना चाहिए कि वह फुलझड़ी की तरह तमाशा मात्र बनकर रह जाएगा। असुरों में से अनेकों ने साधनाबल के सहारे कई प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त कीं, पर वे न तो अधिक समय टिकीं और न अंततः सुखद परिणाम ही प्रस्तुत कर सकीं। भस्मासुर, महिषासुर, वृत्तासुर, रावण आदि की सिद्धियाँ अंततः उनके संबंधियों के लिए विनाश और विपत्ति का कारण ही बनीं। इसके विपरीत उस दिशा में उद्देश्यपूर्ण कदम बढ़ाने वाले स्वल्प साधनों में भी उच्चस्तरीय एवं प्रशंसनीय सफलता प्राप्त कर सके बुद्ध, गाँधी, अरविन्द, रमण, रामकृष्ण, चाणक्य, रामदास, विवेकानन्द, दयानन्द आदि की साधनाएँ जहाँ उन्हें मनस्वी बना सकीं, वहीं उनके कर्तृत्व ने समाज का असाधारण हितसाधन किया। ऋषियों की समस्त श्रंखला उसी प्रकार की है। वे स्वयं तो आकाश में नक्षत्रों की तरह अभी भी चमकते हैं, साथ ही उनके समय में उनके साथ जो भी रहे, वे भी सत्संगजन्य लाभों से निहाल होकर रहे और उच्चकोटि के अनुदान-वरदान प्राप्त करके कृत-कृत्य हो सके।

स्रष्टा परम प्रसाद : प्रखर प्रज्ञा पृष्ठ-१४

आज का सद्चिंतन

इक्कीसवीं सदी में मानवीय पुरुषार्थ की आवश्यकता तो बहुत पड़ेगी। सतयुग की तरह साधु, ब्राह्मण, वानप्रस्थी, परिव्राजकों की तरह असंख्यों को आत्मोत्कर्ष की सेवा-साधनाओं में भी अपने को खपाना पड़ेगा, किन्तु यह नहीं समझा जाना चाहिए कि इतना बड़ा काम मात्र मानवीय भागदौड़ से पूरा हो जाएगा। जब अपने छोटे-से कुटुम्ब के थोड़े से दायरे में वाद-विवाद, मनोमालिन्य व लोकव्यवहार के झगड़े काबू में नहीं आ पाते, तो ६०० करोड़ मनुष्यों में से प्रत्येक के पीछे लगी हुई ढेरों दुष्प्रवृत्तियों के कुप्रचलन कुछ थोड़े से व्यक्ति थोड़ी-सी योजनाएँ बनाकर हलके-फुलके व्यक्तियों के सहारे उसे पूरा कर सकेंगे, यह आशा कैसे की जा सकती है ? इतने प्रबल पुरुषार्थ और समाधान के पीछे दैवी शक्ति को समावेश भी होना चाहिए अन्यथा मानवीय पुरुषार्थ अपनी भूलों, कमजोरियों एवं प्रतिकूल परिस्थतियों के कारण ही सफलता के स्थान पर असफलता प्राप्त करते देखते गए हैं।

दिनाँक-२३/०२/२००६

आज का सद्चिंतन

विचार क्रांति की सर्वोपरि आवश्यकता है। हेय चिंतन ही दरिद्रता, अशिक्षा, अस्वस्थता, कुचेष्टा और दुष्प्रवृत्तियों का निमित्त है। इन बीमारियों का अलग-अलग इलाज कारगर नहीं हो सकता। रक्त शोधक उपचार करने से ही आए उगने वाले-फोड़े-फुंसियों से छुटकारा मिलता है। जड़ सींचने से ही पेड़ हरा होता है। वह कार्य पत्तों को पोसने से पूरा होना संभव नहीं। विकास और सुधार के लिए तो अनेकानेक के काम करने को पड़े हैं, पर यदि उन सबको समेटने की अपेक्षा विचारों का तारतम्य सही बिठा लिया जाए तो अन्यान्य बहुमुखी विकृतियों पर सहज काबू पाया जा सकता है। विचारों से ही कार्य विनिर्मित होते हैं। इन्हीं कारण उत्थान-पतन की भूमिका दृष्टिगोचर होती है। यदि विचारों को शालीनता, सज्ञनता, नीति-निष्ठा, कर्त्तव्यपरायणता और समाजनिष्ठा की दिशा में उन्मुख किया जा सके तो फिर शरीर एवं साधनों के माध्यम से मात्र वे ही कार्य बन पड़ेगे, जो सुधार एवं विकास के लिए आवश्यक हैं।

स्रष्टा परम प्रसाद : प्रखर प्रज्ञा पृष्ठ-४४

दिनाँक-२४/०२/२००८

आज का सद्‌चिंतन

इन दिनों एक ही बड़ा काम सामने है कि जन-जन के मन-मस्तिष्क पर छाई हुई दुर्भावना के निराकरण के लिए कितना बड़ा, कितना कठिन और कितने शौर्य-पराक्रम की अपेक्षा रखने वाला पुरुषार्थ जुटाया जाना चाहिए? यह कार्य मात्र उपदेशों से नहीं होगा। इसके लिए तदनुरूप वातावरण चाहिए। फिर उपदेष्टा का व्यक्तित्व ऐसा चाहिए जो अपने कथन व अपने व्यवहार में उतरने की कसौटी पर हर दृष्टि से खरा उतरता हो। बढ़िया बंदूक ही सहज निशाना लगाने में समर्थ होती है, टेढ़ी-मेढ़ी अनगढ़ नहीं, बालक का तमंचा प्रायः असफल निशाना ही लगाता रहता है। सदाशयता और सद्‌भावना का निजी जीवन में परिचय देने वाले ही दूसरों को ऊँचा चढ़ाने, आगे बढ़ाने और सृजनात्मक प्रयाजनों को पूरा कर पाने में समर्थ हो पाते हैं।

स्रष्टा परम प्रसाद : प्रखर प्रज्ञा पृष्ठ-४४

आज का सद्चिंतन

करने को तो काम एक ही है, पर वह है इतना बड़ा और व्यापक, जिसकी तुलना हजार छोटे-बड़े कामों के समूह से की जा सकती है। बदलाव पदार्थों का सरल है-लोहे तक को गलाकर दूसरो साँचे में ढाला जा सकता है, वेश-विन्यास से कुरूप को भी रूपवानों की पंक्ति में बिठाया जा सकता है, पर विचारों का क्या किया जाए, जो चिरकाल से बन पड़ते रहे कुकर्मों के कारण स्वभाव का अंग बन गए हैं और आदतों की तरह बिना प्रयास के चरितार्थ होते रहते हैं। सभी जानते हैं कि नीचे गिराने में तो पृथ्वी की आकर्षण-शक्ति ही पूरा-पूरा जोर हर घड़ी लगाए रहती है, पर ऊँचा उठने या उठाने के लिए तो आवश्यकता के अनुरूप समर्थ साधना चाहिए। इस निमित्त सामर्थ्य भर जोर लगाना पड़ता है। श्रेष्ठ काम कर गुजरने वालो में - आततायी-वर्ग द्वारा प्रयुक्त होने वाली शक्ति की तुलना में-सैकड़ों गुनी अधिक सामर्थ्य चाहिए। किसी मकान को एक दिन में-नष्ट किया जा सकता है और इसके लिए एक फावड़ा ही पर्याप्त हो सकता है, पर यदि उसे नए सिरे से बनाना हो तो उसके लिए कितना समय व कितना कौशल लगाना पड़ेगा, इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। श्रेय ध्वंस को नहीं, सृजन को ही मिलता रहा

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! इतिहास साक्षी है कि जब-जब, जिन वर्गों ने जिस क्षेत्र में पराक्रम सँजोया है, उसने उसी क्षेत्र में आशातीत सफलताएँ पाई हैं। अग्नि प्रज्वलन से लेकर पहिए के आविष्कार तक उसकी प्रथम कृति थी, जिसने अनेकानेक साधनों-वाहनों का उद्‌भव आसान कर दिया। कभी उसने कृषि, पशुपालन, वस्त्र निर्माण, भवन निर्माण, व्यवसाय आदि के सहारे प्रगति के नए आयाम खोजे होंगे। भाषा और लिपि का आविष्कार अपने समय में अति क्रांतिकारी माध्यम माना गया होगा। वानरों की तरह यायावर जीवन बिताते आदिमकाल की उपहासास्पद स्थिति में रहते थे। वैज्ञानिक आविष्कारों से सुसज्जित दुनिया जब गढ़ी जाने लगी तब तो मानो प्रकृति पर विजय पाने का नगाड़ा ही बजने लगा। अब तो ऐसे अणु-आयुधों के जखीरे जमा हो गए हैं जिनसे स्रष्टा की इस सुंदर संरचना धरित्री को देखते-देखते धूल बनाकर अंतरिक्ष में उड़ा दिया जाए, यहाँ प्राणी या वनस्पति वर्ग के सभी सदस्य सर्वथा लुप्त प्रायः हो जाएँ। इस प्रकार मनुष्य ईश्वर का समर्थ सहायक भी सिद्ध होता है और दुर्धर्ष प्रतिद्वन्द्वी भी। उसकी यह शक्ति चेतना से जानी जाने वाली किसी प्रचंड संकल्पबल की वशवर्ती है और उसी के सहारे कठपुतली की तरह नाचती रहती है। इसी की न्यूनाधिकता से मनुष्य क्षुद्र और महान् बनता है। उसके उच्चस्तरीय होने पर देव और निकृष्टता अपनाने पर दैत्य का उद्‌भव होता है। दैवी शक्तियों से संपन्न व्यक्ति ही सिद्ध पुरुष या देवमानव कहलाता है।

युग की माँग प्रतिभा परिष्कार-२ पृष्ठ-४२

आज का सद्चिंतन

लोगों को पैसे का, रूप-सौंदर्य का, शिक्षा का, पद का, सम्मान-सहयोग का मूल्य तो मालूम है और उनके लिए ललचाते हुए सिर पर पैर रखकर दौड़ने जैसी भगदड़ भी मचाते हैं, पर कहने लायक कुछ उपलब्धि उन्हीं के हाथ आती है जो अपने को अर्द्ध-मूर्च्छित, अर्द्ध-मृतक, आलसी, प्रमादी, निराश, हताश स्तर की कीचड़ में फँसे रहने से इनकार कर देते हैं। भीतर से उभरी शक्ति बाहर के हर क्षेत्र में वर्चस्व का प्रभाव-परिचय पग-पग पर प्रस्तुत करती है। सभी प्रजातियाँ, सभी संरचनाएँ यह प्रमाण-परिचय देती हैं कि वे अपने संकल्पबल से उभरी और अनुकूल रूप धारण करने में समर्थ हुई हैं। उनने अपने निर्वाह साधन इसी आधार पर जुटाए हैं और प्रकृति की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किसी अज्ञात प्रेरणा से बाधित होकर अपने आपको ढाला है। यह संकल्पशक्ति ही है जो प्राणियों और पदार्थों में विद्यमान् रहकर अपनी अद्भुत शक्ति का परिचय देता है। प्राणियों में मनुष्य सचमुच महान् है। सृष्टि को ईश्वर की संरचना माना जाता है, पर ईश्वर के वर्तमान स्वरूप को किसने जाना? इसका उत्तर खोजते समय इसी निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है कि उसे मनुष्य बनाया।

आज का सद्चिंतन

झाड़ी, अँधेरे में भूत बनकर दिल दहला देती है। रस्सी को साँप समझने वाले की अँधेरे के माहौल में घिग्गी बँध जाती है। ''शंका डायन मनसा भूत'' की कहावत सोलहों आने सच है। हिम्मत वाले लंबी दुर्गम यात्राएँ एकाकी पूरी करते हैं, पर कायरों को रात के समय पेशाब करने बाहर जाना पड़े, तो किसी साथी को जगाना पड़ता है। राणा सांगा को लड़ाई के मैदान में अस्सी से अधिक घाव लगे थे, पर वे कुछ भी परवाह किए बिना तब दोनों हाथों से तलवार चलाते रहे, जब तक कि उनके प्राण नहीं निकल गए। भीष्म पितामह का शरीर चुभे हुए बाणों के ऊपर टँगा हुआ था, पीड़ा बहुत थी, पर उन्होंने मौत से स्पष्ट कह दिया था कि उत्तरायण सूर्य होने में अभी बहुत दिन हैं, तब तक मृत्यु को वापस लौटना चाहिए, जब तक इच्छित मुहूर्त्त न आ जाए। मौत को मनस्वी का कहना मानना ही पड़ा। किसी ने सच ही कहा है बहादुर जिंदगी में एक बार मरते हैं, पर कायरों को तो पग-पग पर मरना पड़ता है।

आज का सद्चिंतन

अभावग्रस्तों को कठिनाइयों का सामना करना पड़े तो बात समझ में आती है, पर आश्चर्य तब होता है जब विपुल साधन अपने अधिकार में होने पर भी, जानकारी के अभाव में लोग हैरान फिरते पाए जाते हैं। ऐसी घटनाएँ जब सुनने को मिलती हैं तो उस अनजानेपन को दुर्भाग्य का प्रतीक मानकर खेद व्यक्त किया जाता है।

कहते हैं कि किसी अनाड़ी ने बाप के छोड़े हीरे को काँच समझ कर अनाड़ी के हाथों बेच दिया और खुद जीवन भर दरिद्री बना रहा। लाल मणियों की माला पड़ी मिलने पर एक भीलनी उन्हें कौड़ियों के मोल बेच आई थी। कस्तूरी हिरन की नाभि में कस्तूरी रहती है, पर वह सुगंध की तलाश में निरंतर दौड़धूप करता और थककर प्राण गँवा देता है। माचिस जेब में होने की बात याद न रहने पर ढेरों घास फूँस, पास रहने पर भी एक यात्री ठण्ड में सिकुड़कर मर गया था। घर के आँगन में खजाना गड़ा होने की बात ज्ञात न होने पर, उस झोपड़ी के निवासी को जब- तब मजूरी मिलने पर आधे पेट सोना पड़ता था। ऐसी घटनाएँ पायः कौतूहलपूर्वक सुनी जाती हैं, तो सुनने वालों तक को हैरानी होती है।

आज का सद्चिंतन

ईश्वर का अविश्वास ही पापों की जड़ है। इस अविश्वास से प्रेरित होकर ही मनुष्य मर्यादाओं का उल्लंघन करके स्वार्थ और अहंकार की पूर्ति के लिए स्वेच्छाचारी बन जाता है। आत्म-नियंत्रण के लिए ईश्वर-विश्वास की अनिवार्य आवश्यकता मानी गई है। व्यक्तिगत सदाचार और सामूहिक कर्त्तव्य परायणता के पालन के लिए ईश्वरीय विश्वास के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं हो सकता। इसीलिए मनीषियों ने मनुष्य के दैनिक आवश्यक कर्त्तव्यों में ईश्वर उपासना को सबसे प्रमुख और अनिवार्य माना है।

खेद है कि आज नास्तिकता की सत्यानाशी बाढ़ तेजी से बढ़ती चली जा रही है। भौतिकवादी विचारधाराओं ने यह प्रतिपादित किया है कि ईश्वर न तो आँखों से दिखाई पड़ता है और न प्रयोगशालाओं की जाँच द्वारा सिद्ध होता है इसलिए उसे मानने की आवश्यकता नहीं। अति उत्साही लोग इतनी बात से बहक जाते हैं, न तो वे कर्म-आस्था पर विश्वास करते हैं और न उपासना की कोई आवश्यकता अनुभव करते हैं।

आज का सद्चिंतन

आस्तिकता का असली स्वरूप भुलाकर जो अविवेकपूर्ण धारणा हमने अपनाई, उसके कारण हम वस्तुतः ईश्वर से अधिकाधिक दूर होते गये। आस्तिकता के नाम पर हमने दिखावटी पूजा-पाठ का जो भाव अपनाया, उससे हमने पाया कुछ नहीं, केवल खोया ही खोया। युग-निर्माण योजना के अन्तर्गत जिस आस्तिकता का प्रसार किया जा रहा है, उसमें जप, तप, हवन, पूजन, भजन, ध्यान, कथा, कीर्तन, तीर्थ, पाठ, व्रत, अनुष्ठान आदि के लिए परिपूर्ण स्थान है, पर साथ ही समस्त शक्ति लगाकर हर आस्तिक के मन में यह संस्कार जमाये जा रहे हैं कि ईश्वर को निष्पक्ष, न्यायकारी और घट-घट वासी समझते हुए कुविचारों और दुष्कर्मों से डरें और उनसे बचने का प्रयत्न करें। प्रत्येक प्राणी में ईश्वर को समाया हुआ समझकर उसके साथ सज्जनतापूर्ण सद्व्यवहार किया जाए। कर्त्तव्यपालन को ही ईश्वर की प्रसन्नता का सबसे बड़ा उपहार मानें और प्रभु की इस सुरम्य वाटिका-पृथ्वी में अधिकाधिक सुख-शान्ति विकसित करने के लिए एक ईमानदार माली की तरह सचेष्ट बने रहें। अपना अन्तःकरण इतना निर्मल और पवित्र बनाया जाए कि उसमें ईश्वर का प्रकाश स्वयमेव झिलमिलाने लगे। प्रार्थना केवल सद्बुद्धि, सद्गुण, सद्भावना, सहनशीलता, पुरुषार्थ, धैर्य, साहस और सहिष्णुता के लिए आवश्यक क्षमता प्राप्त करने की ही की जाए। परिस्थितियों को सुलझाने और अभावों की पूर्ति के लिए जो साधन हमें मिले हुए हैं, उन्हें ही प्रयोग में लाया जाए और संघर्ष का जीवन हँसते-खेलते बिताते हुए मन को संतुलित रखा जाए। ये ही सब आस्तिकता के सच्चे लक्षण हैं। युग निर्माण योजना का प्रयत्न यह है कि इन लक्षणों से युक्त भक्ति और पूजा की भावना को जन-मानस में स्थान मिले और सच्ची आस्तिकता को अपनाने के लिए मानव मात्र का अन्तःकरण

आज का सद्चिंतन

आज का सद्चिंतन

आज का सद्चिंतन

आज का सद्चिंतन

आज का सद्चिंतन

शंकर का भक्त जब अपने भगवान के चरणों में जाता है, तब वह देखता है कि उस ठप्पे पर मुझको भी अपने को ढालना चाहिए। शंकर भगवान क्या हैं-एक ठप्पा। ठप्पा उसे कहते हैं, जिसमें गीली मिट्टी को चिपकाकर कुम्हार बर्तन बनाता चला जाता है। शंकर भगवान के लिए पूजा और आरती ही काफी नहीं है, बल्कि यह भी आवश्यक है कि उनका भक्त उनके जैसा हो जाए। उपासना का मतलब ही होता है, पास बैठना। पास बैठने का मतलब है-उनसे सीखना, उनके साथ सम्बन्ध जोड़ना। लकड़ी जब तक आग के समीप नहीं बैठती, अग्नि नहीं बन सकती। हमको शंकर भगवान के पास तक जाना पड़ेगा, दूर रहकर ही प्रणाम करने से काम चलने वाला नहीं है। शंकर जी से चिपक जाना चाहिए और अपने आपको ठप्पा बना लेना चाहिए। हमको अपनी तीसरी आँख खोलनी चाहिए और दूर की बात सोचनी चाहिए।

आज का सद्चिंतन

हिन्दू समाज के पूज्य जिनकी हम दोनों वक्त आरती उतारते हैं, जप करते हैं, शिवरात्रि के दिन पूजा और उपवास करते हैं और न जाने क्या-क्या प्रार्थनाएँ करते-कराते हैं। क्या वे भगवान शंकर हमारी कठिनाइयों का समाधान नहीं कर सकते? क्या हमारी उन्नति में कोई सहयोग नहीं दे सकते? भगवान को देना चाहिए, हम उनके प्यारे हैं, उपासक हैं। हम उनकी पूजा करते हैं, वे बादल के तरीके से हैं। अगर पात्रता हमारी विकसित होती चली जाएगी तो वह लाभ मिलते चले जाएँगे जो शंकर भक्तों को मिलने चाहिए।

शंकर भगवान के स्वरूप का जैसा कि मैंने आपको निवेदन किया, इसी प्रकार के सारे पौराणिक कथानकों, सारे देवी-देवताओं में संदेश और शिक्षाएँ भरी पड़ी है। काश ! हमने उनको समझने की कोशिश की होती, तो हम प्राचीनकाल के उसी तरीके से नर-रत्नो में एक रहे होते जिनको कि दुनिया वाले तैंतीस करोड़ देवता कहते थे। ३३ करोड़ आदमी हिन्दुस्तान में रहते थे और उन्हीं को लोग कहते थे कि वे इनसान नहीं देवता हैं, क्योंकि उनके ऊँचे विचार और ऊँचे कर्म होते थे। वह भारत भूमि जहाँ से आप लोग पधारे हैं।

वह देवताओं की भूमि थी और रहनी चाहिए। देवता जहाँ कहीं भी जाते हैं, वहाँ शांति, सौंदर्य, प्रेम और सम्पति पैदा करते हैं। आप लोग जहाँ कहीं भी जाएँ वहाँ आपको ऐसा ही करना

आज का सद्चिंतन

दुष्कर्मों के कारण चित्त पर जमे हुए कुसंस्कारों की मोटी परतें आत्मिक प्रगति के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा हैं। उन्हें हटानें को परिशोधन कहते हैं। उपासना का महत्त्व कृषि कर्म करने-उद्यान लगाने जैसा है, जिसके लिए बीजारोपण से भी पूर्व भूमि शोधन की आवश्यकता है। अच्छी तरह जोतना, भूमि के कंकड़, पत्थर हटाना, खरपतवार उखाड़ना, नमी रखना, खाद देना जैसे कई काम करके भूमि को इस योग्य बनाया जाता है कि उसमें बोया हुआ बीज ठीक तरह उग सके। अंकुरों को बढ़ने और फलने-फूलने की स्थिति तक पहुँचने के लिए उपयुक्त भूमि की आवश्यकता होती है। यदि उसके बनाने में आनाकाना की गई है और जल्दी फसल कमाने के लोभ में भूमि-साधना का श्रम निरर्थक समझाा गया है तो श्रम बचाने की बुद्धिमत्ता समझा गया था, पर पीछे उसमें बीज भी गँवा बैठने की निराशा ही हाथ लगती है।

आज का सद्चिंतन

युगसन्धि का जो यह समय है, उसमें एक ओर मालूम पड़ता है कि विनाश अपनी आखिरी बाजी लगाने जा रहा है। हारा हुआ जुआरी अन्त में जो कुछ भी मिलता है उसी को दाँव पर लगा देता है, यहाँ तक कि बीबी को भी दाँव पर लगा देता है। वह बागी हो जाता है और क्या करता है? चरम-सीमा पर जा पहुँचता है। दैत्य भी इन दिनों चरम-सीमा पर जा पहुँचेगा। अब वह समय निकट आ गया, जिसमें दैत्य अपनी चरम-सीमा पर होगा। आपने देखा होगा कि प्रातःकाल जब सूर्य उदय होने वाला होता है तो अँधेरा सबसे ज्यादा उसी वक्त होता है। रात्रि घनीभूत कब होती है, जब प्रातःकाल नजदीक आ जाता है। दीपक की सबसे बड़ी लौ कब होती है, जब दीपक बूझना शुरु होता है। चीटी के पंख कब उगते हैं? जब उसके मरने के दिन नजदीक आते हैं। जब आदमी मरने को होता है तो बहुत जोर से साँस लेता है और चेहरे पर चमक मालूम पड़ती है।

मित्रो ! युगसन्धि के बारे में कई तरह के विचार है, कितनी ही तरह की मान्यताएँ है? उसमें एक यह कि एक पक्ष नष्ट होने वाला है और एक पक्ष जीवित होने वाला है। ऐसे समय को 'प्रसव पीड़ा' कहते हैं, जिसमें एक ओर प्रसूता के ऊपर जान की बन रही है। वह जीवन और मौत के झूले में झूल रही है। दूसरी ओर है खुशी, उमंग, मुसकान कि नया बच्चा गोदी में आनेवाला है। एक ओर खुशी भी होती है, सन्तोष होता है कि नया बच्चा आनेवाला है और दूसरी ओर प्रसव-पीडा में जान भी निकलती है। यह प्रसव पीड़ा का समय हे, युग-पीड़ा का समय है, जिसमें हम और आप रह रहे हैं। इसमें दैत्य मरने जा रहा है और देव अपना जन्म लेने जा रहा है, उदय होने जा रहा है।

दिनाँक-११/०३/२००८

आज का सद्चिंतन

युग निर्माण योजना-दर्शन, स्वरूप व कार्यक्रम,वां-६६ पृष्ठ-

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! एक देव ऐसा भी है, जिसके बारे में हमको कोई शिकायत नहीं है। वो कौन है? वो महादेव हैं। महादेव के बारे में हमको कोई शिकायत नहीं है। महादेवजी मिलेंगे, तो हम उनको बहुत प्यार करेंगे। उनकी जिन्दगी में हमने कोई ऐसी खुराफात नहीं देखी, जिससे हमको गुस्सा आये और नाराजगी हो। शंकर भगवान के बारे में जो चित्र और तस्वीर बना-बनाकर के हमारे सामने रखी गयी हैं, वो बड़ी मजेदार हैं और बड़ी शानदार हैं। हम उन तस्वीरों सँभालकर के रखेंगे। कैसी-कैसी तस्वीरें! शानदार तस्वीरें! अलंकारों से भरी हुई, शिक्षाओं से भरी हुई, प्रेरणाओं से भरी हुई, दिशाओं से भरी हुई शंकर भगवान की तस्वीर। शंकर भगवान की तस्वीर जब हम देखते हैं, तो हमारा मन निहाल हो जाता है। हम उनके मस्तिष्क में से एक गंगा की धारा निकलते हुए देखते हैं। हमारे मस्तिष्क में गंगा की धारा निकलनी चाहिए। कैसी धारा? ज्ञान की धारा; जो कलुष मिटा दे; जिससे हमारा उद्धार हो जाए। हमारे मस्तिष्क में से वो किरणें फूटती हुई चली जाएँ उस जल की, जो तरावट देता है, शीतलता देता है, ठण्डक देता है और सरसता देता है। ऐसा ज्ञान अगर हमारे मस्तिष्क में से फुब्बारे की तरह से फूटने लगे, तो हम कहेंगे शंकर भगवान सही हैं और शंकर भगवान के जो भक्त और शिष्य हैं, उनकी हम पूजा करने वाले हैं।

आज का सद्चिंतन

मिशन की अगणित गतिविधियों के निमित्त पग-पग पर अर्थ साधनों की आवश्यकता पड़ी है। इसका हल बीस-बीस पैसे जमा करने वाले ज्ञान-घट और एक-एक मुट्ठी अनाज संग्रह करने वाले धर्मघट हो सकते हैं, इस बात पर कौन विश्वास करेगा? जब सहयोग की व्यवस्था और गंभीरता रहने पर बूँद-बूँद सहयोग से घड़ा भर सकता है यह बात लोकोक्ति के रूप में ही सुनी गई है। किसी ने अब तक इसका प्रयोग नहीं किया। ऐसे संग्रह की कल्पना तो कई करते रहे हैं पर किसी ने उसे व्यवहार में उतारा हो और इस स्तर तक सफल बनाया हो, यह अब तक कहीं भी देखने में नहीं आया। लोग श्रीमंतों के सम्मुख पल्ला पसारते रहते हैं। सरकारी सहायता के लिए ताने-बाने बुनते रहते है, पर जनशक्ति के सहारे इतना सुदृढ़ ढाँचा खड़ा कर दिखाना यह सिद्ध करता है कि जनसहयोग की शक्ति ही प्रत्यक्ष दुर्गा है। उस सिंहवाहिनी की अनुकंपा अर्जित कर लेने पर महिषासुरों, मधुकैटभों, सुंद-उपसुंदों के द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले संकटों का निराकरण होने में देर नहीं लगती। वह जिस पर अनुग्रह करती है उसे निहाल कर देती है। जनसहयोग एवं शक्ति की गरिमा पौराणिक काल में समुद्र सेतु बाँधने और गोवर्धन उठाने वालों ने देखी थी। पिछले दिनों उसे बुद्ध, गाँधी ने प्रत्यक्ष कर दिखाया था। वर्तमान में उसका अभिनव प्रयोग प्रज्ञा अभियान के रूप में किया गया है। वह पूर्व परीक्षाओं की तुलना में किसी प्रकार पीछे नहीं रहा है। यही है वह दैवी चमत्कार जिसे युगांतरीय चेतना भी कहा जा सकता है। इसी को प्रतीक चिह्न बनाकर 'लाल मशाल' की कल्पना और निर्धारणा की गई है।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! इस समय मनुष्य जाति के भाग्य का उदय होने वाला है। इनसान फिर सिर उठाकर चलेगा। इनसान का गर्दन झुकाकर चलना मुझे पसन्द नहीं है। आदमी की कमर झुकी हो तो कोई बात नहीं, किन्तु सिर झुका हुआ नहीं रहना चाहिए। आग की लौ की तरह से, अग्नि देव की लपटों के तरीके से आदमी होगा, युगशक्ति का चमत्कार होगा तो कमजोर से कमजोर आदमी में इतनी हिम्मत, इतनी ताकत आ जाएगी कि वह सिर उठाकर चलना सीख लेगा। युगशक्ति का अवतार अर्थात् एक ऐसी जीवट का पैदा होना है, जिसमें सिद्धान्तों की और आदर्शों के परिपालन की बहादुरी आदमी में पैदा हो सके। दूसरा चमत्कार होने जा रहा है धरती पर स्वर्ग के अवतरण का। धरती स्वर्ग बनने जा रही है। जिसमें आदमी, आदमी से प्यार करना सीखेगा। प्यार के साथ सहयोग भी करेगा। सहयोग और प्यार जब साथ-साथ रहें तो मैं समझता हूँ कि धरती पर स्वर्ग आ गया, खुशहाली आ गई। गरीबी रहेगी तो रहे, कोई हर्ज की बात नहीं हैं, किन्तु कृपणता नहीं रहनी चाहिए। संतों में से हर एक के पास गरीबी थी, पर वे कृपण नहीं थे। गरीबी से आदमी दुःखी नहीं होता। दुःखी कृपणता से होता है। कृपण कौन? तंगदिल, प्यार-मोहब्बत न बाँटकर संकीर्णता फैलाने वाला दरिद्र व्यक्ति जो बाहर से न सही, चिंतन की दृष्टि से

दिनाँक-१५/०३/२००८

आज का सद्चिंतन

गुरुजी ! आप कैसे मनुष्यों का निर्माण करेंगे? उनमें किस चीज का निर्माण करेंगे? उन्हें क्या सिखाएँगे? क्या आप उन्हें इंजीनियरिंग सिखाएँगे? नहीं, इंजीनियरिंग नहीं सिखाएँगे। हम दो तरह के आदमी बनायेंगे-एक का नाम होगा-मनस्वी और दूसरे का नाम होगा-तपस्वी। तो क्या आप मनस्वी और तपस्वी केवल इसी जगह बनाएँगे या और कहीं अन्यत्र भी? नहीं बेटे, यह तो हमारी नर्सरी है। इस नर्सरी में हम छोटे-छोटे पौधे उगायेंगे और फिर उनको सारे संसार भर में भेज देंगे। यहाँ हम एक नमूने की मॉडल की, चीजें तैयार करेंगे और फिर सारे विश्व का ध्यान आकर्षित करने के लिए-हर आदमी को विचार देने के लिए उन्हें भेज देंगे। नये युग के लिए इन मॉडलों को हमने देवता कहा है। देवता की शर्त क्या होती है? देवता के दो हिस्से हैं-एक मनस्वी और दूसरा तपस्वी। मनस्वी पूर्वार्द्ध है और तपस्वी उत्तरार्द्ध। मनस्वी मैट्रिक स्कूल, हाईस्कूल है तो तपस्वी कॉलेज कोर्स है। तपस्वी स्तर के मनुष्य जिसको हम देवत्व सम्पन्न कहते हैं, अगले दिनों तैयार करने पड़ेंगे। उन्हें तैयार करने के लिए हम शिक्षण करेंगे। क्या-क्या शिक्षण करेंगे इस ब्रह्मवर्चस में जिसका, उद्घाटन कराया है आपसे? बेटे इसके पीछे हमारे बड़े-बड़े ख्वाब हैं। यद्यपि कम्पनी जरा-सी है, कारखाना जरा-सा है, इमारत जरा-सी है, लेकिन हम जो काम करने वाले हैं, वह केवल इस इमारत भर के लायक नहीं, हिन्दुस्तार के लायक नहीं , हिन्दुओं के लायक नहीं, वरन् सारे विश्व के लिए है। यह जगह हमारे बैठने को लिए है। बैठने के लिए-खड़े होने के लिए कहीं न कहीं तो जगह चाहिए। यह हमारे खड़े होने की जगह है, लेकिन हमें जो काम करना है, वह थोड़े-से दायरे में नहीं करना है, वरन् सारे संसार में करना है। व्यापक रूप से विस्तृत रूप से करना है।

पूज्यवर की अमृतवाणी पृष्ठ-२.१३९

आज का सद्चिंतन

व्यक्ति के विचार और आचरण में आगामी समय में लगभग आमूलचूल परिवर्तन होने जा रहा है। हम ऐसे समाज में रहना चाहते हैं, जहाँ सब लोग एक-दूसरे को प्यार करें, सद्भाव रखें और परस्पर उदारता एवं सहायता का मधुर व्यवहार किया करें। हर व्यक्ति परिश्रमी और सन्तोषी हो। ईमानदारी और सच्चाई की नीति अपनाते हुए सादगी का जीवन उच्च आदर्शों के साथ बितावें। कोई किसी का न अनहित चाहे, न द्वेष करे और न अनधिकार चेष्टा करके किसी के स्वत्वों का अपहरण किया जाय।

सुख और दुःख को मिल-बाँटकर भोगें, अपना ही नहीं दूसरों का सुख-दुःख भी सब लोग अपना ही मानें। जितनी इच्छा अपनी उन्नति एवं सुविधा की रहती है उतनी ही दूसरों की भी रहे। नर-नारियों के बीच पवित्र भावनाओं की गंगा जैसी निर्मल धारा बहती रहे। दम्पति-जीवन की मर्यादाओं से बाहर कोई किसी को विकार की दृष्टि से न देखे। तृष्णा और वासना को, ख्याति और पदवी को तुच्छता की दृष्टि से देखा जाय। कर्त्तव्य पालन के आत्मसंतोष में परिपूर्ण तृप्ति अनुभव हो। अपराध कहीं देखने-सुनने को भी न मिलें। कोई किसी का अहित न चाहे, कोई किसी को दुःखी न करे। संयम और व्यवस्था का जीवन बिताते हुए लोग निरोग रहें और दीर्घकाल तक सुखपूर्वक जिएँ। जब मनुष्य इस प्रकार की जीवन-नीति अपना लेंगे तो रोग-शोक, भय, क्लेश, अभाव, युद्ध, दुर्भिक्ष, प्रकृति-प्रकोप जैसे उत्पात भी कहीं देखने को न मिलेंगे। ऐसा समय ही सतयुग कहलाता है।

आज का सद्चिंतन

पूजा, उपासना का अध्यात्मवाद में प्रमुख स्थान है, पर इसके साथ ही यह भी साधना का अनिवार्य अंग माना जाता है कि मनुष्य अपने गुण, कर्म, स्वभाव को उत्कृष्ट और आदर्श बनावे। जीवन के हर क्षेत्र में अध्यात्मवाद का समावेश करके ऐसी जिन्दगी जिये जैसी कि मानव शरीरधारी को जीनी चाहिए। पूजा को औषधि और जीवन विकास की परम्पराओं को पथ्य, परिचर्या माना गया है। औषधि तभी लाभ करेगी जब परहेज भी ठीक रखा जाए। चिकित्सक के बतलाये सारी नियमों का उल्लंघन करते रहने पर भी यदि कोई आशा करे कि औषधि सेवन मात्र से बीमारी दूर हो जाए तो यह उसकी गलती ही मानी जाएगी। इसी प्रकार जीवन-विकास, समाज-कल्याण के सारे प्रयत्नों की उपेक्षा करके जो भजन मात्र से लक्ष्य की प्राप्ति चाहता है उसे भूला-भटका ही माना जाएगा। किसी धर्मग्रंथ में यदि पूजा, भजन का वर्णन बढ़ा-चढ़ाकर अलंकारिक भाषा में लिख दिया गया है कि अमुक पूजा से सब कुछ प्राप्त हो जाता है, तो मनुष्य की श्रद्धा बढ़ाने के उद्देश्य के अलंकारिक उक्ति ही मानना चाहिए। सच्चे भक्त-जनों में भक्ति-भावना के साथ-साथ कर्त्तव्य परायणता, परोपकार, उदारता आदि को प्रवृत्तियाँ भी पूर्ण मात्रा में होती है और इन्हीं के आधार पर उनको दैवी शक्तियाँ और जीवन की चरम सफलता प्राप्त होती हैं।

आज का सद्चिंतन

हम विचार-क्रान्ति, सामाजिक-क्रान्ति और नैतिक-क्रान्ति को राजनैतिक-क्रान्ति की ऐसी सहेली मानते हैं जिसके बिना अपूर्णता ही बनी रहेगी। स्वराज्य तब तक अधूरा है जब तक हम बौद्धिक और सामाजिक मूढ़ता के नागपाश से छुटकारा नहीं पा लेते। इसलिए अपनी योजनाओं में आर्थिक प्रगति को गौण और भावनात्मक प्रगति, सामाजिक-स्वच्छता और नैतिक-उत्कृष्टता की अभिवृद्धि को अति आवश्यक तुरन्त ध्यान दिये जाने योग्य कार्य माना गया है। इसका तात्पर्य आर्थिक उन्नति की उपेक्षा नहीं-केवल इतना भर है कि उस एक पक्ष को दूसरे सब मिलकर सँभालें किन्तु उनकी ओर किसी का ध्यान नहीं है। उस उपरोक्त त्रिविध-क्रान्ति के कार्यक्रम को हम लोग सँभालें और आगे बढ़ायें। युग-निर्माण योजना को उपरोक्त मान्यताओं के आधार विनिर्मित किया गया है। यदि उसे समुचित सहयोग मिल सका तो निस्सन्देह वर्तमान जटिल परिस्थितियों को अगले दिनों सुख-शान्ति, समृद्धि और प्रगति से भरा-पूरा बनाया जा सकता है।

दिनाँक-१९/०३/२००८

आज का सद्चिंतन

विश्व-भाषा, विश्व-धर्म और विश्व-शासन इन तीनों का समन्वय विश्व-मानव की एकता को सम्भव बना सकता है और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का आदर्श केवल कल्पना न रहकर मूर्तिमान हो सकता है। इसके लिये अभी से हमें जनमानस तैयार करना चाहिए। अपने पक्ष की विशेषता प्रतिपादित करते रहने और अपनी मान्यताओं को सर्वश्रेष्ठ बनाने का आग्रह छोड़ना यह इस दिशा की प्रथम तैयारी का प्रथम चरण है। 'जो हमारा सो सही' का दुराग्रह आज सर्वत्र व्याप्त है। इसी आधार पर लोग अपने सम्प्रदाय, मत, देश, भाषा आदि की श्रेष्ठता प्रतिपादित करते हैं और अपनी ही नीति परम्परा के लिये आग्रह करते हैं। पक्षपात से पक्षपात बढ़ता है और दुराग्रह से दुराग्रह का जन्म होता है। आज सभी सम्प्रदायों वाले दूसरों से यह आशा करते हैं कि अपना मत छोड़कर उनका मत स्वीकार कर लें। ऐसे आग्रह से केवल कटुता और घृणा बढ़ती है। होना यह चाहिए कि 'हमारा सो अच्छा के स्थान पर अच्छा सो हमारा की नीति' अपनाई जाय और जहाँ जो अच्छाई दिखाई दे उसे स्वीकार किया जाय।

पक्षपात रहित मस्तिष्क ही विश्व-राज्य, विश्व-धर्म, विश्व-संस्कृति और विश्व-भाषा की बात व्यावहारिक बना सकते हैं। आग्रह छोड़कर यदि उपयोगिता और विवेकशीलता को ही कसौटी रखा जाय तो जो सर्वोत्तम हो उसे स्वीकार करने से किसी को भी झिझक न होगी और एकात्म भाव की दिशा में बढ़ सकने और उसका ठोस ढाँचा खड़ा करने का समय जल्दी ही आ जायगा।

वाङ्मय-६६ पृष्ठ-४.२२

आज का सद्‌चिंतन

मित्रो ! मनुष्य की मूल शक्ति विचारणा है। उसी के आधार पर इतनी प्रगति कर सकना उसके लिए संभव हुआ है। विचारों की उत्कृष्टता और निकृष्टता ही उसे ऊँचा उठाती एवं नीचा गिराती है। समस्याएँ विचारों की विकृति से उत्पन्न होती हैं और उनका समाधान दृष्टिकोण बदलने से निकलता है। हम जो कुछ भले-बुरे काम होते देखते हैं उन्हें विचार-पद्धति की प्रतिक्रिया मात्र कहा जा सकता है। हम रोज ही देखते हैं कि एक प्रकार के विचार दूसरे को देवता बनाते हैं और दूसरे प्रकार के विचार दूसरे को दानव की पंक्ति में लाकर खड़ा कर देते हैं। सचमुच जो जैसा सोचता है, वह वैसा ही बनकर रहता है। सोचने की दिशा में ही क्रिया बनती है और उसी की परिणति परिस्थितियों के रूप में सामने आती है। परिस्थितियों का अपने आप में कोई स्वतंत्र आधार नहीं है। वे हमारे कर्त्तृव्य का परिणाम मात्र हैं। इसी प्रकार कर्त्तृव्य भी अपने आप नहीं बन जाता हैं, विचारों की प्रेरणा ही हमारी कार्य पद्धति के लिये पूरी तरह उत्तरदायी होती है। इस तथ्य को समझ लेने पर ही आज की मानवीय समस्याओं का कारण और निवारण ठीक तरह समझा जा सकता है।

दिनाँक-२२/०३/२००८

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! साधु-बाबा जिस दिन घर से निकलते हैं, उस दिन यह श्रद्धा लेकर निकलते हैं कि हमको संत बनना है, महात्मा बनना है, ऋषि बनना है, तपस्वी बनना है। लेकिन थोड़े दिनों बाद यह जो उमंग होती है वह ढीली पड़ जाती है और ढीली पड़ने के बाद में संसार के प्रलोभन उनको खींचते हैं। किसी की बहन-बेटी की ओर देखते हैं, किसी से पैसा लेते हैं। किसी को चेला-चेली बनाते हैं। किसी की हजामत बनाते हैं। फिर जाने क्या से क्या हो जाता है। पतन का मार्ग यही से आरंभ होता है। ग्रेविटी-गुरुत्वाकर्षण पृथ्वी की हर चीज को ऊपर से नीचे की ओर खींचती है। संसार भी एक ग्रेविटी है जो ऊपर से नीचे की ओर खींचती है। आप लोगों से सबसे मेरा यह कहना है कि आप ग्रेविटी से खिंचना मत। रोज सबेरे उठकर भगवान के नाम के साथ में यह विचार किया कीजिए कि हमने किन सिद्धांतों के लिए समर्पण किया था। और पहला कदम जब उठाया था तो किन सिद्धांतों के आधार पर उठाया था। उन सिद्धांतों को रोज याद कर लिया कीजिए। रोज याद किया कीजिए कि हमारी उस श्रद्धा में और उस निष्ठा में, उस संकल्प में और उस त्यागवृत्ति में कहीं फर्क तो नहीं आ गया। संसार ने हमको खींच तो नहीं लिया। वातावरण ने हमको गलीज तो नहीं बना दिया। कहीं हम कमीने लोगों की नकल तो नहीं करने लगे। आप यह मत करना।

पूज्यवर की अमृतवाणी वाङ्मय-६८ पृष्ठ-

दिनाँक-२३/०३/२००८

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! अब हम आपको उपासना के लिए तैयार करेंगे। नहीं गुरुजी, आप तो ऐसी ही अपनी ऋद्धि-सिद्धि हमें दे दीजिए। ऐसे कैसे दे देंगे? तेरे पास उससे लड़ने का माद्दा है कि नहीं। हमारे गुरु ने चौबीस साल तक हमारा इम्तिहान लिया। चौबीस साल तक जौ की रोटी और छाछ खाने का आदेश दिया। जौ की रोटी और छाछ के अलावा भी दुनिया में कोई चीज होती है या नहीं- यह हमने नहीं जाना। हमारी इन्द्रियों ने कहा, जीभ ने कहा कि जब सब लोग शक्कर, दाल, नमक आदि खाते है, तो आप क्यों नहीं खाते? हमने कहा-हम लोगों के रास्ते पर नहीं चल सकते हैं। लोगों के कहने पर हम चलेंगे, तो वे हमारे जीवन को तबाह कर देंगे। लोगों के बताये हुए रास्ते पर हम चलते, तो अध्यात्म की ओर हम बढ़ नहीं सकते थे। लोग तो बड़े निकम्मे होते हैं। लोग डॉक्टर हैं, इन्जीनियर हैं तुरन्त मकान का नक्शा बना देते हैं, इंजेक्शन दे देते हैं, पर जहाँ तक सिद्धाँतों, आदर्शों का सम्बन्ध है, वे इस रास्ते पर नहीं चल सकते हैं और न ही ऊँचा उठ सकते हैं। लोगो की सलाह पर चलकर हम अपने जीवन को ऊँचा नहीं उठा सकते हैं। अगर आपको आध्यात्मिकता के रास्ते पर चलना है, तो हम आपको मोहब्बत करते हैं, प्रशंसा करते हैं और यकीन दिलाते हैं कि हम आपकी सहायता करेंगे, लेकिन आप एक बात मत करना-अपनी अकल तथा दबाव हमारे ऊपर लादने की कोशिश मत करना।

पूज्यवर की अमृतवाणी वाङ्मय-६८ पृष्ठ-

दिनाँक-२४/०३/२००८

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! हमने यहाँ जो कुछ भी बनाया है-आपके लिए बहुत कुछ बनाकर रखा है, वह बहुत सुन्दर और शानदार है, लेकिन उसे महसूस तो आपको ही करना है। हमारी करने की जो सीमा थी वह हमने पूरे तरीके से कर दिया। क्या कर दिया? आपके लिए एक वातावरण बनाकर के हमने रख दिया यहाँ शान्तिकुंज में। यहाँ क्यों बुलाया है आपको? वातावरण का लाभ उठाने के लिए बुलाया है। यहाँ जो भी क्रिया-कृत्य आपसे कराये जा रहे हैं, वह तो आप अपने घर पर भी कर सकते हैं। कौन-सी ऐसी चीच है जो आप घर पर नहीं कर सकते थे? खान-पान सम्बन्धी जो नियम-बन्धन आपको बताये गये हैं, क्या आप उसे घर पर नहीं कर सकते थे? क्यों नहीं कर सकते थे? यहाँ जो जप और अनुष्ठान कराया जाता है, क्या आप उसे घर पर नहीं कर सकते थे? जरूर कर सकते थे। जो नियम और मर्यादा पालन करने के लिए यहाँ कहा गया है, वह हमारी पुस्तकें पढ़कर आप घर पर भी कर सकते थे, लेकिन यहाँ क्यों करना पड़ा? यहाँ का वातावरण ही ऐसा है। इस वातावरण को बनाने के लिए हमने बहुत मेहनत की है। आप वातावरण की कीमत समझिये। वातावरण की कीमत यदि आप नहीं समझते तो बहुत बड़ी भूल करते हैं।

पूज्यवर की अमृतवाणी वाङ्मय-६८ पृष्ठ-

दिनाँक-२५/०३/२००८

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! जिस प्रकार हम दूसरे लोगों की समीक्षा करते हैं दोष ढूँढ़ते और आलोचना, निन्दा किया करते हैं। इसी तरह वरन् उससे भी अधिक कड़ाई के साथ अपने विचार संस्थान की-गुण, कर्म, स्वभाव की परख करनी चाहिए। व्यक्तिगत दुर्गुणों पर भी नजर रखनी चाहिए और उन्हें हटाकर प्रतिपक्षी सद्विचारों और सद्भावना को मनोभूमि में प्रतिष्ठापित करने का वैसा ही प्रयत्न करना चाहिए जैसा चतुर किसान अपने सबसे अच्छे खेत में सबसे अच्छा बीज बोकर सबसे अच्छी फसल उगाने का लाभ प्राप्त करता है।

चोर पर निगाह रखने से उसे चोरी करने का अवसर नहीं मिलता और अपनी हानि बच जाती है। उसी प्रकार अपने दुर्गुणों पर भी सतर्क रहा जायें और उनके आक्रमण का अवसर न आने देने के लिए पहले से ही सावधानी रखी जाये तो वे ईंधन न मिलने पर बुझ जाने वाली आग की तरह समाप्त हो जाते हैं। जो विचार अभ्यास में आते और क्रियान्वित होते हैं उन्हीं की जड़ जमती है। बुरे विचारों को चित्तक्षेत्र में प्रवेश न करने दिया जाय और उनके स्थान पर तुरन्त प्रतिरोधक उच्च विचार प्रस्तुत कर दिये जायें तो चोर जैसी स्थिति के आसुरी विचारों को पलायन करते ही बनेगा। वे तभी तक ठहरते हैं जब तक कि उनका प्रबल प्रतिरोध नहीं होता, क्षेष्ठ विचारों को चिन्तन क्षेत्र में स्थान मिले और उन्हें कार्यान्वित होने के अवसर मिलते रहें तो कोई कारण नहीं कि वे हमारे गुण, कर्म, स्वभाव में सम्मिलित न हो जायें और उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत न करें।

वाङ्मय-६६ पृष्ठ-६.५०

दिनाँक-२६/०३/२००८

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! समाज रूपी जंजीर की मनुष्य एक कड़ी मात्र है। छड़ का एक सिरा आग में तपाया या बर्फ में ठंडा किया जाए तो उसका दूसरा सिरा भी गर्म या ठंडा हो जाता है। ऐसा नहीं हो सकता कि छड़ का जितना स्थान तपाया जाए उतना ही गर्म हो बाकी ज्यों का त्यों बना रहे। मनुष्य समाज भी एक छड़ की तरह है। यदि किसी समाज में दोष-दुर्गुण उत्पन्न होते हैं तो शान्ति प्रेमी लोग उसके कुप्रभाव से बच नहीं सकते और सद्प्रवृत्तियों से सारा समाज भरा रहता है तो एक व्यक्ति दुर्गुणी हो तो भी उसे समाज के दबाव से सुधारने को विवश होना पड़ता है। विश्व-शान्ति और युग-निर्माण के जिस महान लक्ष्य को लेकर हम अग्रसर होते हैं वह केवल कुछ व्यक्तियों के सन्त बन जाने से संभव न होगा, वरन् जन-समूह में व्याप्त प्रवृत्तियों का ध्यान रखना होगा और दोष-दुर्गुणों को, द्वेष-दुर्भावों को हटाकर उनके स्थान पर सद्विचारों और सत्कर्मों की स्थापना करनी पड़ेगी।

पूज्यवर की अमृतवाणी वाङ्मय-६८ पृष्ठ-

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! युग-निर्माण के सत्संकल्प में विवेक को विजयी बनाने का शंखनाद है। हम हर बात को उचित-अनुचित की कसौटी पर कसना सीखें। जो उचित हो वही करें, जो ग्राह्य हो वही ग्रहण करें, जो करने लायक हो उसी को करें। लोग क्या कहते हैं, क्या कहेंगे, इस प्रश्न पर विचार करते समय हमें सोचना होगा कि लोग दो तरह के हैं? एक विचारशील दूसरे अविचारी। विवेकशील पाँच व्यक्तियों की सम्पत्ति अविचारी पाँच लाख व्यक्तियों के समान वजन रखती है। विवेकशीलों की संख्या सदा ही कम रही है। वन में सिंह थोड़े और सियार बहुत रहते हैं। एक सिंह की दहाड़, हजारों सियारों की हुआ-हुआ से अधिक महत्त्व रखती है। विचारशील वर्ग के थोड़े से व्यक्ति, विवेकसम्मत कदम बढ़ाने का दृढ़ निश्चय कर लें तो व्याप्त विकृतियाँ उसी प्रकार छिन्न-भिन्न हो जावेंगी जैसे प्रचण्ड सूर्य के उदय होते ही कुहरा। मनुष्य की शक्तियाँ, क्षमताओं को वांछित दिशा में लगाने के लिए यह करना होगा।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! नन्हा-सा बीज विकसित होने के बाद बन जाता है विशाल वृक्ष। बरगद का जरा-सा बीज होता है छोटा-सा, लेकिन आपने देखा होगा जब वह विकसित होता है फैलता-फूलता है; तब यह कितना बड़ा विशाल वृक्ष बन जाता है। छोटी चीजें विकसित होती है और कितनी माइक्रोफिल्म एक छोटी-सी डिब्बी में होती है और कितनी बड़ी-बड़ी पुस्तकों-ग्रंथों का सारे का सारा हवाला एक छोटी-सी फिल्म में भरा होता है। आदमी का सारा का सारा जिस्म एक छोटे-से शुक्राणु के भीतर जमा हुआ रहता है। हमारी ये वंश परम्पराओं के इतिहास एक छोटे-से जीन्स के भीतर बैठे रहते हैं; जो हमको दिखाई भी नहीं पड़ते। इतने छोटे जीन्स होते हैं, इनके अन्दर न जाने कितनी पीढ़ियाँ भरी पड़ी होती हैं। एटम छोटा-सा होता है और एटम के भीतर भी बहुत सारे हिस्से होते है। उसके भीतर सारे के सारे सौरमण्डल का नक्शा छिपा हुआ पड़ा रहता है। गायत्री मंत्र छोटा-सा बीज मंत्र है। छोटा-सा, नन्हा-सा बीज मंत्र है, इसी में से सारा का सारा विस्तार होता हुआ चला गया। अगर आप बीज को समझ पाये होते, तो अपने विस्तार को समझने में कोई कठिनाई आपको नहीं होनी चाहिए।

दिनाँक-२९/०३/२००८

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! भारतीय संस्कृति वह संस्कृति है, जिसे देव-संस्कृति कहना चाहिए,जिसको ऋषि-संस्कृति कहना चाहिए। जिसके केवल हिन्दू समाज को नहीं, केवल हिन्दू धर्म को नहीं, इस भारत भूमि के छोटे-से जमीन के हिस्से को ही नहीं, सारे संसार को ज्ञान दिया। सारे संसार को विज्ञान दिया। सारे संसार को जानवर से भगवान बनाने तक के सारे रास्ते खोल करके साफ किए। इतनी बड़ी यह संस्कृति आखिर कहाँ से आती है? यह आती है-गायत्री महामंत्र से। गायत्री मंत्र छोटे-सा बीज मंत्र है। छोटा-सा, नन्हा-सा बीज मंत्र है, इसी में से सारा का विस्तार होता हुआ चला गया है। अगर आप बीज को समझ पाये तो अपने विस्तार को समझने में कोई कठिनाई आपको नहीं होनी चाहिए। गंगोत्री से गंगा जरा-सी निकलती है, गंगोत्री से नहीं गोमुख से। आप लोगों में से कोई भी गोमुख गए होंगे, मैं गोमुख गया हूँ और वहाँ देखा है, जहाँ से पानी का बहाव निकलता है। फायर ब्रिग्रेड की धार की तरह से कैसे छह फुट लम्बा और पाँच-छह फुट चौड़ा इतना बड़ा सुराख है ग्लेशियर में, वहीं से पानी की धार निकलती है। छोटी-सी धार गोमुख से निकलती है और फैलते-फैलते गंगासागर में पहुँचते-पहुँचते सहस्त्र धाराएँ बन जाती हैं। गाँव-गाँव में आप गंगा को देख सकते हैं। सब जगह देख सकते हैं। पटना में अगर आप जाएँ तो लम्बा वाला गंगा का चौड़ा वाला विस्तार देख सकते है। यहाँ से बिहार में सोनपुर आप जाएँ तो, गंगा का विस्तार आप देख सकते हैं। शुरुआत जहाँ से हुई थीं-छोटी-सी हुई थी, लेकिन धीरे-धीरे बढ़ते-बढ़ते न जाने कहाँ जा पहुँची? और गायत्री मंत्र से निकलने वाली भारतीय संस्कृति न जाने फैलते-फैलते कहाँ जा पहुँची है? इतना ज्यादा विस्तार हो गया है। धर्म-ग्रंथों के रूप में, उपासनाओं के रूप में, ज्ञान और विज्ञान के रूप में।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! आपको एक काम टॉनिक-सेवन का करना चाहिए। टॉनिक-सेवन का क्या मतलब है? टॉनिक-सेवन का मतलब है जिन विचारों का अभाव रहा हो, उन विचारों को फिर से सेवन करना शुरू कीजिए, टॉनिक की तरह। टॉनिक तो आपको मिला ही नहीं। आप तो कुपोषण के शिकार रहे हैं अथवा विकृत भोजन करते रहे हैं, इसलिए आपका सारा का सारे मानसिक स्वास्थ्य गड़बड़ा गया है। भविष्य में आपको ऐसी विचाराधारा के साथ ऐसे लोगों के साथ, ऐसी मति के साथ, ऐसी महान सत्ता के साथ अपने आपको सम्पर्क में लाना है, जो कि आपको महान बनाने में समर्थ है, जो आपको सहारा दे सकती है, ऊँचा उठा सकती है। अभी तक आपका सम्बन्ध कुसंस्कारों के साथ रहा है, घटिया लोगों के साथ रहा है। चारों ओर का वातावरण गिरावट के अलावा और क्या नसीहत देगा? यहाँ ऋषिओं के साथ सम्बन्ध मिलाइए,सन्तों के साथ सम्बन्ध मिलाइए, देवताओं के साथ सम्बन्ध मिलाइए, भगवान के साथ सम्बन्ध मिलाइए। यह समय बिलकुल आप के साथ ही है। आप देख नहीं रहे हैं, जिस कोठरी में आप यहाँ रहते हैं, उसमें चारों ओर सन्त छाया हुआ है, चारों ओर ऋषि छाया हुआ है, चारों ओर भगवान छाया हुआ है तथा आदर्श छाये हुए हैं। उदात्त दृष्टिकोण छाये हुए हैं, प्रेरणाएँ छायी हुई हैं और आपको ऊँचा उठाने के लिए जो दिशाधारा आवश्यक है, वह भी छायी हुई है। आप इनके साथ सम्बन्ध मिला लीजिए, पीछे की तरफ मुड़कर मत देखिए। एक ही तरह विचार कीजिए, महानता के साथ जुड़ जाइए।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! हमारे पास कुछ चीज है, हम आपको देंगे। आपके पास कुछ है, हमको दीजिये। आदान-प्रदान का सिलसिला बनाइये। अन्धे और पंगे की नसीहत ग्रहण कीजिये, नाव पार कर लेंगे। हमारे गुरु और हमारे बीच में यही रिश्ता चला था। हमारे गुरु ने हमको असीम दिया और हमने अपने गुरु को असीम दिया। वे कहते हैं-हम आपको ज्यादा देंगे, हम कहते हैं-हम आपको ज्यादा देंगे। आप हमको दीजिये; हमको बहुत जरूरत है। आपका समय हमको बहुत चाहिए, आपका धन हमको बहुत चाहिए, आपका सहयोग हमको बहुत चाहिए। आप अपना घर शांतिकुंज में बनाके जाइये और यहाँ के कर्मचारी के रूप में या कि यहाँ के परिवार के रूप में अपना घर सँभालिये, छत सँभालिये, दुकान सँभालिये। आप हमारे होकर रहिये, हम आपके होकर रहेंगे।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! आपको भी पचास प्रतिशत मूर्छित पड़ी स्त्रियों के लिए लक्ष्मण जी की तरह संजीवनी बूटी लाकर देनी होगी। मरी हुई मातृशक्ति को जिंदा करने के लिए आपको हनुमान की तरह से काम करना होगा। अगर आप ऐसा करने में सफल हो जाएँगे तो हम लोग भारत में तीस करोड़ व्यक्ति पैदा कर सकते हैं। भारत का विकास कर सकते हैं। इस प्रकार तीस करोड़ जिंदा आदमी की जगह साठ करोड़ दिमाग, साठ करोड़ हो जाएँगे। हम चाहते है कि भारत में एक सौ बीस करोड़ हाथ, एक सौ बीस करोड़ पैर काम करें। साठ करोड़ दिमाग, साठ करोड़ दिल काम करें। हम देश की समृद्धि को बढ़ाना चाहते हैं। हम भावनात्मक शक्ति को बढ़ाना चाहते हैं। इस चेतनात्मक शक्ति को बढ़ाए बिना हमारी प्राचीन संस्कृति की खोयी हुई गरिमा को वापस लाने का कोई दूसरा उपाय नहीं है। आप कदम से कदम मिलाइए और कंधे से कंधा मिलाकर हमारे साथ चलिए। आप हमारी अँगुलियाँ हैं। हम अकेले कुछ काम नहीं कर सकते हैं। आप हमारी अँगुलियाँ बन जाइए, ताकि हम और आप बढ़-चढ़कर महिला-जागरण का कार्य कर सकें और महाकाल की योजना को सफल बना सकें।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! युग निर्माण योजना की कार्यपद्धति तीन भागों में विभक्त है। (१) प्रचारात्मक (२) रचनात्मक (३) संघर्षात्मक। सेना को तीन भागों में विभक्त किया जाता है (१) थल सेना, (२) जल सेना और (३) वायु सेना तीन। साधनों से संयुक्त सेवा ही सर्वाङ्गीण पूर्ण सेना कहलाती है। इसमें से कोई एक अंग ही किसी देश के पास हो तो उसे सैन्य दृष्टि से अपूर्ण ही माना जाएगा।

जनमानस का परिष्कार भी एक महाभारत है, धर्मयुद्ध है। उसे कुरुक्षेत्र में कृष्ण के मार्गदर्शन और अर्जुन के पुरुषार्थ से लड़ा जायगा। भगवान कृष्ण ने पाञ्चजन्य शंख बचाकर युद्ध की घोषणा की थी और उसके लिए शौर्य, साहस का संचार किया था। अर्जुन ने गाण्डीव उठाकर शर सन्धाने थे। पुरुषार्थ और प्रयत्न, त्याग और बलिदान का इस पक्ष में उदय हुआ था। गीता का ज्ञानयोग और अर्जुन का कर्मयोग एक स्थान पर लाकर खड़ा किया गया था, दोनों का समन्वय किया गया था। द्वापर के अन्त में जो हुआ था उसी की पुनरावृत्ति आज फिर हो रही है। जनमानस धर्मक्षेत्र है। ज्ञान, भूमिका और कर्म भूमिका के समस्त सूत्र इसी केन्द्र में समाविष्ट हैं। यही सौ कौरवों का साम्राज्य है। अगणित दोष-दुर्गुण, अनाचार, कुविचार सौ असुरताओं का यहाँ बोलबाला है। मानवता की, नैतिकता की, दूरदर्शिता की, धर्मनिष्ठा की, पुरुषार्थ की पाँचों पाण्डवों की एक ही पत्नी द्रौपदी, संस्कृति आज भरी सभा में नंगी की जा रही है। किसी एक देश पर नहीं समस्त विश्व पर सुशासन उठ गया। कहीं रामराज्य, धर्मराज्य दिखाई नहीं पड़ता सर्वत्र दुष्प्रवृत्तियों का दुःशासन अपना आधिपत्य जमाए बैठा है। इन परिस्थितियों में महाभारत के अतिरिक्त और क्या उपाय रह जाता है। शस्त्रों से नहीं भावनाओं से लड़ा जाने वाला यह महा अभियान प्रकारान्तर से समूल महाभारत की सूक्ष्म पुनरावृत्ति ही है।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! जिस विश्व क्रान्ति का, युग निर्माण का लक्ष्य लेकर हम अग्रसर हो रहे हैं वह तभी संभव है जब मनुष्य समाज में आदर्शवाद, कर्त्तव्य परायणता, आत्मीयता, उदारता, सेवा-भावना जैसे गुणों का विकास हो। श्रेष्ठ गुणों से ही मनुष्य की महानता प्रकाश में आती है। सम्पति, शिक्षा, स्वास्थ्य, सत्ता-संगठन आदि विभूतियाँ कितनी ही बड़ी मात्रा में उपलब्ध हो जाने से मनुष्य श्रेष्ठ नहीं बन सकता और यदि उसका अन्तःकरण दुष्टता से भरा रहा तो इनके द्वारा वह और भी अधिक अनर्थ करेगा। इसलिए विश्व-शान्ति की दृष्टि से श्रेष्ठ सद्गुणों की सम्पदा को ही इस संसार में बढ़ाया जाना आवश्यक है। इसका ही गीताकार ने 'दैवी-सम्पदा' के रूप में वर्णन किया है। इस संसार की सबसे बड़ी सम्पत्ति एवं विभूति, दैवी संपदा ही है। इसकी जितनी अभिवृद्धि होगी; उतना ही मानव जीवन में सुख-शान्ति का आधार सुदृढ़ होता चला जाएगा।

आज का सद्‌चिंतन

मित्रो ! आत्म-कल्याण का लक्ष्य निश्चित रूप में तब तक पूरा नहीं हो सकता जब तक बाह्य परिस्थितियाँ अनीति एवं अव्यवस्था से भरी रहेंगी। त्रेता युग में रावण की अनीति ने बेचारे तपस्वियों को तप करना दुर्लभ कर दिया था, उनकी हड्डियों के बड़े-बड़े ढेर भगवान राम ने वनवास के समय जहाँ-तहाँ पड़े देखे तो उनकी आँखें बरसने लगीं और तत्काल उन्होंने भुजाएँ उठाकर 'निशाचर हीन करौं महिं' की प्रतिज्ञा कर डाली। इस कार्य को सम्पन्न किये बिना भगवान राम अपना अवतार लक्ष्य पूरा भी नहीं कर सकते थे। धर्म की स्थापना के साथ-साथ अधर्म का उन्मूलन भी तो अवतार का लक्ष्य होता है। यदि वे केवल ऋषियों कों भक्ति-भावना का उपदेश मात्र ही देते रहते और उधर असुर अपने उपद्रव यथावत् जारी रखते तो रामचन्द्रजी का उद्देश्य कैसे पूरा होता? बेचारे तपस्वी उसी प्रकार सताये जाते और असुरों द्वारा खाये जाते रहते। बन्धन में बँधे हुए देवता रावण के बन्दीगृह में कराहते रहते। ऐसी दशा में ऋषियों का ज्ञान-ध्यान और देवताओं की पूजा-अर्चना से भी कितना प्रयोजन सिद्ध होता? इन तथ्यों को समझते हुए भगवान ने असुरता का उन्मूलन ही अपना

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! इसे दुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि मनुष्य अपनी मानसिक क्षमता का मात्र सात प्रतिशत ही शरीर यात्रा के साधन जुटाने भर में आजीवन गँवाता-खपाता रहता है। जबकि उसकी ९३ प्रतिशत सामर्थ्य, सोई, खोई, मरी मूर्छित या अविज्ञात स्थिति में ही पड़ी रहती है। अपनी दौलत भरी तिजोरी की चाबी खो देने पर कोई दरिद्रियों की तरह दुर्गतिग्रस्त स्थिति में फिरे, तो उसके लिए कोई क्या कुछ करे? यदि आत्मनिर्माण में जुटा जा सके, बुरी आदतों को कूड़े करकट की तरह बुहारा जा सके, दृष्टिकोण में मानवी गरिमा के अनुरूप मान्यताओं का समावेश किया जा सके, तो समझना चाहिए कि वन मानुष के नर-नारायण में बदल जाने जैसा कायाकल्प उपलब्ध हो गया। उसे प्रकारान्तर से व्यवस्था बुद्धि का विकास कहा जा सकता है। अपना एवं दूसरों का प्रबंध कर सकना यों एक बहुत मामूली व्यवस्था मालूम पड़ती है, पर सही बात यह है कि उससे बढ़कर और कोई गौरवास्पद वैभव-वरदान है नहीं।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! नवरात्रि अनुष्ठान में यहाँ हमने आपको दबोचा है, क्यों? क्योंकि आप अपने सोचने के तरीके से लेकर रहन-सहन, आहार-विहार के तरीकों को जब तक इस गलत प्रकार से अख्तियार किए रहेंगे, सुधार और हेर-फेर नहीं करेंगे तब तक आपकी एक भी समस्या हल नहीं होने वाली। नहीं गुरुजी! आप तो वरदान-आशीर्वाद देते हैं। सिद्ध पुरुष हैं। हाँ, हैं। हम वरदान भी देते हैं व आशीर्वाद भी। लोगों को चमत्कार भी दिखा देते हैं, यह बात भी सही है। पर हम देते उन्हीं को हैं जो अपनी सहायता स्वयं करते हैं, पहले अपने आपको ठीक करने के लिए एक कदम आगे बढ़ाते हैं। चमत्कार तो सिरदर्द के लिए एस्पीरिन की दवा की तरह है। आप ठीक हो जाते हैं? नहीं, आप तब तक ठीक नहीं हो सकते, जब तक पेट ठीक नहीं करेंगे। टाइमली रिलीफ हम देते हैं पर ताकत तो ठीक होने की अंदर से उभारनी पड़ेगी। खून हम बाहर का आपको इसलिए लगाते हैं ताकि आपका अपना सिस्टम काम करना आरंभ कर दे। वरदान-चमत्कार किसी को परावलम्बी बनाने के लिए नहीं, उसे सहारा देने के लिए ताकि वह अपने पैरों पर खड़ा हो सके।

नवरात्रि अनुष्ठान में यही अध्यात्म के मूलभूत सिद्धांत मैंने आपको समझाने का प्रयास किया कि आप अपने पैरों पर खड़ा होना सीखिए। आपकी अब तक की जिंदगी वहमों में बीत गई। अब उनसे मुक्ति पाना सीखिए। अपने आपको दबोचना सीखिए। यह नवरात्रि अनुष्ठान का तपश्चर्या वाला हिस्सा है, जिससे हमने आपको अपने आप पर नियंत्रण करना सिखाया।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! भक्त भगवान से सदा अनुग्रह माँगते रहते हैं, पर अब की बार इन दिनों ऐसा समय है, जिसमें निर्माणकर्ता को ही बड़ी बैचेनी से सत्पात्रों की खोजबीन करनी पड़ रही है। काम तो नियन्ता का ही रुका पड़ा है। उसे ही उतावली है। जैसी सड़ी-गली परिस्थितियाँ आज हैं, वैसी अधिक दिनों नहीं रहने दी जा सकतीं। बदलाव में बढ़-चढ़कर जो भूमिका निभाई जानी है, उसके लिए सत्पात्र तेजी से ढूँढे जा रहें हैं। विशेष अनुदान और उपहार भी उन्हीं को अविलम्ब मिलने वाले हैं। औसत स्तर के व्यक्तियों से लेकर प्रतिभावानों तक को, इस अभिनव सृजन में भाव-भरा योगदान प्रस्तुत करने के लिए समुचित अनुदान उदारतापूर्वक दिये जाने हैं।

देखा गया है कि ऐसे विभूतिवान भी मात्र लिप्सा, लालसा, तृष्णा, वासना, अहंता और संकीर्ण स्वार्थपरता जैसे हेय प्रयोजनों में अपनी उन उपलब्धियों को खपा देते हैं, जिनका उपयोग यदि लोक कल्याण के लिए हो सका होता, तो उतने पौरुष से निर्माण की दिशा में इतना कुछ बन पड़ा होता, जिनकी कीर्ति-गाथा चिरकाल तक गाई जाती और उनका अनुकरण करके कितने ही लोग अनुकरणीय आदर्श उपस्थित कर सके होते।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! हमारे गुरुदेव सूक्ष्म शरीर से हिमालय में रहते हैं। विगत ६1 वर्षों में हमने निरन्तर उनका सान्निध्य अनुभव किया है। जो आँखों से देखने की बात मात्र जीवनभर में तीन बार ही, तीन-तीन दिन के लिए सम्भव हुई है। भाव सान्निध्य में श्रद्धा की उत्कृष्टता रहने से उसकी परिणति एकलव्य के द्रोणाचार्य, मीरा के कृष्ण, रामकृष्ण परमहंस के कालीदर्शन जैसी होती है। हमें भी वे भविष्य में हमारी निकटता अपेक्षाकृत और भी अच्छी तरह अनुभव करते रहेंगे।

बच्चे बड़ों से कुछ चाहते हैं, सो ठीक है पर बड़े बदले में कुछ न चाहते हों ऐसी बात भी नहीं। नियत स्थान पर मल-मूत्र त्यागने, शिष्टाचार समझने, हँसने-हँसाने, वस्तुएँ न बिखरने, पढ़ने जाने जैसी अपेक्षाएँ वे भी करते हैं। जितना सम्भव है उतना तो उन्हें भी करना चाहिए। हमारी अपेक्षाएँ भी ऐसी ही हैं। गोवर्धन उठाने वाले ने अपने अनगढ़ ग्वाल-बालों के सहारे ही गोवर्धन उठाकर दिखाया था। हनुमान की बात किसी ने नहीं सुनी तो अपने सहचर रीछ-वानरों को ही समेट लाये। नव-निर्माण के कन्धे पर लदे उत्तरदायित्व को वहन करने में हम अकेले समर्थ नहीं हो सकते थे। यह मिल-जुलकर सम्पन्न हो सकते वाला कार्य था। सो समझदारों में से कोई हाथ न लगा तो अपने इसी बाल-परिवार को लेकर जुट पड़े और जो कुछ, जितना कुछ सम्भव हो सका करते रहे। अब तक की प्रगति का यही सार संक्षेप हैं।

दिनाँक-०९/०४/२००८

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! हममें से प्रत्येक को ईश्वर की भावनात्मक उपासना करने के लिए स्वाध्याय को एक आवश्यक धर्म कर्तव्य बना लेना चाहिए। ईश्वर की प्राथमिक पूजा, मूर्ति, चित्र आदि के ध्यान और अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, दीप आदि उपकरणों के साथ होती है, पर आगे चलकर माध्यमिक उपासना उच्च विचारधारा रूपी प्रतिमा को मन मंदिर में स्थापित करके ही अग्रगामी बनाई जाती है। संयम, साहस, विवेक, सेवा, दया, करुणा, मैत्री, उदारता, सौजन्य, पवित्रता आदि सद्‌गुण विशुद्ध रूप से ईश्वर की भावनात्मक प्रतिमा ही है। स्वाध्याय-सत्संग और चिंतन-मनन द्वारा जितनी देर मन मंदिर में इन सद्‌गुणों का प्रकाश बना रहे और उतनी देर उच्च स्तरीय ईश्वर पूजन होता रहा। प्रतिमायें ईश्वर की प्रतीक हैं पर उच्च भावनायें तो प्रभु की प्रतिनिधि ही मानी गयी हैं। इसलिये स्वाध्याय हमारी उपासनात्मक आवश्यकता को पूर्ण करने का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम भी है। जो हमें आज की स्थिति के अनुरूप उच्चस्तरीय मार्गदर्शन एवं परामर्श दे सकें, ऐसे मनीषी महापुरुषों का सत्संग सान्निध्य हर घड़ी, चाहे जहाँ उपलब्ध नहीं हो सकता, पर सद्‌ग्रन्थों के माध्यम से हम जिस भी महापुरुष को, जिस समय, जिस भी विषय पर परामर्श देने के लिये बुलाना चाहें वह बिना किसी कठिनाई के सामने उपस्थित होगा। इतना सरल और दूसरा कोई साधन नहीं हो सकता जितना कि स्वाध्याय। अस्तु हमें मानसिक परिष्कार के इस अमोघ माध्यम को अपने दैनिक जीवन में दृढ़ता, स्थिरता और श्रद्धापूर्वक स्थान देना चाहिये। स्वाध्याय में प्रमाद न करने की शास्त्राज्ञा को एक धर्मनिष्ठ व्यक्ति की तरह हमें निश्चित रूप से शिरोधार्य ही करना चाहिए।

सूक्ष्मीकरण साधना एवं उज्ज्वल भविष्य -वाङ्मय-२८ पृष्ठ-

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! दीवाली, दशहरा जैसे महापर्व वर्ष में एक बार आते हैं। स्वाति-वर्षा साल में एक बार ही होती है। उसका लाभ जिन सीपियों को, केलों को, बाँसों को उठाना होता है, वे उन्हीं दिनों उठा लेते हैं। बाद में तो बात गयी-आयी हो जाती है। ब्रह्मकमल और संजीवनी बूटी भी एक वर्ष में एक बार ही फूलती है। प्रतियोगिताएँ भी निर्धारित समय पर ही होती हैं। राजनैतिक चुनाव पाँच वर्ष में एक बार होते हैं। यह अवसर है, जिन्हें महत्त्वपूर्ण माना और चूका नहीं जाता।

हर दूरदर्शी को यह अनुभव भी करना चाहिए कि युग परिवर्तन की वर्तमान बेला ऐसी है, जिसकी पुनरावृत्ति बार-बार नहीं होगी। गाँधी जी के सत्याग्रह आन्दोलन में जो लोग स्वतंत्रता सेनानी के रूप में सम्मिलित हो गये, उन्हें इतने दिन बीत जाने के उपरान्त भी अभी तक समुचित सम्मान, पेन्शन, फ्री पास आदि की सुविधा मिलती है। शासनसत्ता भी वही लोग प्रायः ४० वर्ष तक चलाते रहे। यदि समय निकल जाने पर अब कोई उत्सुक हो, तो भी उस सुयोग को नहीं पा सकता। अब कोई बन्दर, हनुमान नहीं बन सकता। हर किसी रीछ को जामवन्त, किसी गिद्ध को जटायु बनने का अवसर नहीं मिल सकता। युग देवता ने उन्हीं को पुकारा है। महाकाल उन्हीं को खोजने के लिए टकटकी लगाये ढूँढ-खोज में निरत है।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! चेचक की फुन्सियों पर अलग-अलग पट्टियाँ कौन, कहाँ तक बाँधेगा? दसों दिशाओं में संव्याप्त अगणित समस्याओं का समाधान कोई कहाँ तक करेगा? गिरते हुए स्वास्थ्य को देखते हुए हर व्यक्ति के लिए एक डाक्टर और एक अस्पताल चाहिए। आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए हर घर में कुबेर का खजाना गढ़ा मिलना चाहिए। परिवारों का विग्रह शान्त करने के लिए घर-घर कल्प-वृक्ष उगाये जाने चाहिये। यह सब सम्भव नहीं। छुटपुट उपाय मनोरंजन के लिए अच्छे हैं। गत २२ वर्षों में हम तरह-तरह की योजनाएँ बनाकर-तरह-तरह के उत्पादन भी कर रहे हैं पर अस्वस्थता से लेकर निर्धनता तक और अपराधों से लेकर राष्ट्रीय समर्थता तक एक भी प्रयोजन पूरा न हो सका। जड़ की उपेक्षा कर पत्तों को सींचने का जो फल मिलना चाहिए उतना ही मिला है, मिल रहा है।

व्यक्ति और समाज की समग्र प्रगति के लिए चिन्तन की स्वस्थ दिशा एवं उत्कृष्ट दृष्टिकोण का होना अनिवार्य आवश्यक है। इसकी पूर्ति चाहे आज की जाय चाहे आज से हजार वर्ष बाद। प्रगति का प्रभात उसी दिन उदय होगा जिस दिन यह भली-भाँति अनुभव कर दिया जायगा कि दुर्दशा से छुटकारा पाने के लिए दुर्बुद्धि का परित्याग आवश्यक है। आज की स्थिति में सबसे बड़ा शौर्य, साहस, पराक्रम और पुरुषार्थ यह है कि हम पूरा मनोबल इकट्ठा करके अपनी और अपने से सम्बन्धित व्यक्तियों की विचार शैली में ऐसा प्रखर परिवर्तन प्रस्तुत करें जिसमें विवेक की ही प्रतिष्ठापना हो और अविवेकपूर्ण दुर्भावनाओं एवं दुष्प्रवृत्तियों को पैरों तले कुचल कर रख दिया जाय।

सूक्ष्मीकरण साधना एवं उज्ज्वल भविष्य -वाङ्मय-२८ पृष्ठ-

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! यह परिवर्तन का महान पर्व है। तमिस्त्रा के पलायन और दिनमान के ऊर्जा विस्तार का यह मध्यवर्ती प्रभात है। युग सन्धि के इन बीस वर्षों में मनुष्य जाति के भविष्य में असाधारण उलट-पुलट होने जा रही है। महाकाल की गलाने और ढालने वाली भट्ठी प्रचण्ड दावानल की तरह गगनचुम्बी होती जा रही है। वर्तमान प्रचलनों की अवांछनीयता अगले दिनों ठहर न सकेगी। उसके स्थान पर आदर्शवादी उत्कृष्टता को सिंहासनारूढ़ होने का अवसर मिलेगा।

इस प्रभात परिवर्तन का प्रथम दर्शन पर्वत शिखरों पर दृश्यमान किरणों की तरह होना चाहिए। इन दिनों कोई जागृत आत्मा मूक दर्शक बनकर न रहे। अग्रिम पंक्ति में खड़ा हो और महाकाल के अनुशासन को सर्वप्रथम धारण करके मूर्धन्यों, वरिष्ठों की तरह श्रेयाधिकारी बनें। (क्रमशः)

आज का सद्‌चिंतन

मित्रो ! इन दिनों जिनके अन्तराल में स्त्रष्टा के युग परिवर्तन के प्रति उत्साह जगता हो, भागीदार बनने के लिए उमंग उठती हो, उन्हें इस हलचल को दैवी प्रेरणा एवं आत्मा की पुकार की तरह महत्त्व देना चाहिए। सोचना चाहिए कि जब असंख्यों के कान पर जूँ तक नहीं रेंगती तो उन्हीं को यह कसक क्यों कचोटती है? पूर्व जन्मों के संचित सुसंस्कार ही आदर्शवादी प्रयासों में अग्रिम भूमिका निभाने की प्रेरणा देते हैं। पिछले अभ्यास एवं अनुभव ही परमार्थ प्रयोजनों का उत्तरदायित्व कंधों पर उठाने का साहस प्रदान करते हैं। जागृत आत्माओं की इन उठती उमंगों के आधार पर अपनी वरिष्ठता अनुभव करनी चाहिए। दूसरों से भिन्न मानकर चलना चाहिए। उथले परामर्श स्वीकार करने के स्थान पर अपना स्थान असंख्यों को मार्गदर्शन कर सकने वाले मूर्धन्यों की पंक्ति में निर्धारित करना चाहिए। ऐसी दशा में उनके सोचने का स्तर एवं कार्य लोगों के उपहास, परामर्श, मतभेद, असहयोग, विरोध की परवाह न करते हुए मूर्धन्य एकाकी चलते हैं और सूर्य, चन्द्र की तरह अपने बलबूते पर अपना मार्ग चुनते हैं। वही मनःस्थिति जागृत आत्माओं की भी होनी चाहिए। महानता के श्रेयाधिकारी, देवदूतों के उत्तराधिकारी बनने का लाभ उन्हें ही मिलता है जो आदर्शवादियों की अग्रिम पंक्ति में खड़े होते हैं और बिना किसी के समर्थन, विरोध की परवाह किये आत्म-प्रेरणा के सहारे स्वयमेव अपनी दिशा धारा का निर्माण निर्धारण करते हैं।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! राम और कृष्ण भारतीय संस्कृति के आकाश में चमकने वाले सूर्य-चन्द्र हैं। ऋषि प्रकाश बिखेरते हैं। देवता अनुदान बिखेरते हैं और अवतार अपने चरित्र एवं कतृर्त्व से जनसाधारण को आदर्शवादी गतिविधियाँ अपनाने का अनुकरणीय पथ प्रशस्त करते हैं। कथनी से करनी कठिन है। इस कठिन मार्ग पर जो चलते हैं आपत्तियों की अग्नि परीक्षा में अपनी आदर्शवादिता को जो सुरक्षित रख सके वही सच्चे लोकनायक हैं। जन मानस को ऊँचा उठाने का, युग को बदलने का महान प्रयोजन उन्हीं के द्वारा सम्पन्न होता है।

भगवान राम और कृष्ण के चरित्र इस कसौटी पर खरे उतरते हैं। इसीलिए उन्हें ईश्वर तुल्य सम्मान प्रदान किया गया है। उनकी हम पूजा-अर्चना करते हैं, ताकि उनके गुणों और कतृर्त्वों को अपनाने के लिए अन्तःचेतना को तत्पर कर सकें। उनकी लीला गाथाओं का बार-बार श्रद्धा-भक्ति के साथ पठन-श्रवण करते हैं ताकि पतनोन्मुख पशु प्रवृत्तियाँ पलट कर देव-संस्कृति को अपनाने का शौर्य साहस उपलब्ध कर सकें। अनुगमन से यह विश्वास रहता है कि इस राह पर चलते हुए पूर्ववर्ती महाभागों की तरह हम भी मानव जीवन के चरम लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं।

राम नवमी का विशेष संदेश

होली का विशेष संदेश

अनावश्यक और हानिकारक वस्तुओं को हटा देने और मिटा देने की हिन्दूधर्म में बहुत ही महत्त्वपूर्ण समझा गया है और इस दृष्टिकोण को क्रियात्मक रूप देने के लिए होली का त्यौहार बनाया गया है। रास्तों में फैले हुए कांटे, शूल, झाड़ झंखाड़, मनुष्य समाज की कठिनाइयों को बढ़ाते हैं, रास्ते चलने वालों को कष्ट देते हैं, ऐसे तत्वों को ज्यों को त्यों नहीं पड़ा रहने दिया जा सकता, उनकी ओर से न आँख चुराई जा सकती है और न उपेक्षा की जा सकती है। इसलिए हर वर्ष होली पर लोग मिल जुलकर रास्तों में पड़े हुए कँटीले अनावश्यक झाड़ों को बटोरते हैं और उन्हें जलाते हुए उत्सव का आनन्द मनाते हैं। इसी प्रकार नाली, गड्ढ, कीचड़, धूलि, कचरा आदि की सफाई करके जमी हुई गन्दगी को हटाते हैं। गली मुहल्लों के कोने-कोने को छान डाला जाता है कि कहीं गन्दगी छिपी हुई तो नहीं पड़ी है, जहाँ होता है वहाँ से उसे हटाकर दूर कर देते हैं।

होली के त्यौहार का छिपा हुआ संदेश यह है कि जमी हुई गन्दगी को दूर करो, रास्ते में बिछे हुए कष्टदायक तत्वों को हटाओ। बाहर की गली मुहल्लों की गन्दगी को साफ करके स्वच्छता और शुद्धता का वातावरण उत्पन्न करना आवश्यक है अन्यथा चैत्र में ऋतु परिवर्तन के साथ-साथ यह गंदगी विकृत रूप धारण करके चेचक आदि बीमारियों को और भी अधिक बढ़ावा दे सकती है। सफाई का यह बाहरी दृष्टिकोण हुआ भीतरी सफाई करना, मानसिक दोष दुर्गुणों को हटाना भी इस प्रकार आवश्यक है अन्यथा अनेक मार्गों के असंख्य प्रकार के अनिष्ट होने की सम्भावना है।

रास्ते में काँटे आते रहने का नियम प्रकृति प्रदत्त है। यदि काँटे सामने न आवें, विघ्न-बाधाओं का अस्तित्व न रहे तो मनुष्य की जागरूकता, क्रियाशीलता, चैतन्यता और विचारकता नष्ट हो जायेगी, रगड़ में वह शक्ति है कि हथियार को तेज बनाती है, यदि हथियार घिसा न जाये तो वह कुन्द हो जायेगा और जंग लगकर कुछ समय बाद वह निकम्मा बन जायेगा। मनुष्य जीवन में रगड़ और संघर्ष की बड़ी भारी आवश्यकता है अन्यथा जीवित रहते हुए भी मृत अवस्था के दृश्य देखने पड़ेगें। जो जातियाँ अपनी सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक विकृत्तियों को संघर्षपूर्वक हटाती रहती हैं, वे जीवित रहती हैं और जो भाग्य भरोसे शुतुर मुर्ग की तरह बालू में मुँह गाढ़कर निश्चित एवं निष्क्रिय बनती हैं, वे गरीबी, गुलामी, बीमारी, बेइज़्ज़ती आदि के दुःख भोगती हुई नष्ट हो जाती हैं।

हिन्दू धर्म जीवित और पुरुषार्थी जाति का धर्म है। उसका हर एक त्यौहार जागरूकता ओर क्रियाशीलता का सन्देश देता रहता हौ। होली का सन्देश यह है कि भीतरी और बाहरी गन्दगी को ढूँढ़-ढूँढ़कर साफ कर डालें और चतुर्मखी पवित्रता की स्थापना करें एवं मानसिक सामाजिक राजनैतिक विकृत विकारों के कंटक जो रास्ते में बिछे हुए हैं उन्हें सब मिल-जुलकर ढूँढ़-ढूँढ़कर लावें और उनमें आग लगाकर उत्सव मनावें। होली मनाने का यही सच्चा तरीका है। अश्लील अपशब्द बकना, कीचड़, मिट्टी मनुष्यों पर फेंकना यह तो पशुता का चिन्ह एवं असभ्यता है इससे तो दूर ही रहना चाहिए।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! लोक-सेवा के क्षेत्र में प्रवेश करने वाले के सम्बन्ध में जन-साधारण की श्रद्धा उमड़ती है। परमार्थ की साहसिकता अपनाने वाले पर सम्मान बरसता है। उसकी प्रशंसा होती है। प्रशंसा भी एक सम्पदा है। सम्पदाओं की उपयोगिता तो हे पर उनके पीछे एक ऐसा आवेश भी रहता है जो हजम न हो सके तो लाभ के स्थान पर विनाश ही उत्पन्न करता है। धन हजम न हो तो दुर्व्यसन उत्पन्न करेगा। बुद्धि हजम न हो तो कुचक्र षड्यंत्र रचेगी। बल हजम न हो तो उद्दण्डता के रूप में प्रकट होगा। हजम न होने पर अमृत भी विष बन जाता है। यश हजम न हो तो ऐसा अहंकार बनता है जिसकी तुष्टि के लिए लोक सेवी को अपना चिन्तन, चरित्र, व्यक्तित्व एवं भविष्य को हेय स्तर का बनाकर उतना पतित बनना पड़ता है जितना कि सेवा से सर्वथा दूर रहने वाले सामान्य श्रमिक भी नहीं गिरते। लोक-सेवियों में से अधिकांश को अपने व्यक्तित्व और सेवा क्षेत्र में ऐसे विग्रह उत्पन्न करते देखा जाता है जिसे दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना ही कहा जा सकता है और सोचना पड़ता है कि यदि यश हजम कर सकने में असमर्थ लोग लोक-सेवा के क्षेत्र में न आया करें तो वे अपनी और समाज की अधिक सेवा कर सकते

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! लोक-सेवा के क्षेत्र में प्रवेश करने वाले के सम्बन्ध में जन-साधारण की श्रद्धा उमड़ती है। परमार्थ की साहसिकता अपनाने वाले पर सम्मान बरसता है। उसकी प्रशंसा होती है। प्रशंसा भी एक सम्पदा है। सम्पदाओं की उपयोगिता तो है पर उनके पीछे एक ऐसा आवेश भी रहता है जो हजम न हो सके तो लाभ के स्थान पर विनाश ही उत्पन्न करता है। धन हजम न हो तो दुर्व्यसन उत्पन्न करेगा। बुद्धि हजम न हो तो कुचक्र षड्यंत्र रचेगी। बल हजम न हो तो उद्दण्डता के रूप में प्रकट होगा। हजम न होने पर अमृत भी विष बन जाता है। यश हजम न हो तो ऐसा अहंकार बनता है जिसकी तुष्टि के लिए लोक सेवी को अपना चिन्तन, चरित्र, व्यक्तित्व एवं भविष्य को हेय स्तर का बनाकर उतना पतित बनना पड़ता है जितना कि सेवा से सर्वथा दूर रहने वाले सामान्य श्रमिक भी नहीं गिरते। लोक-सेवियों में से अधिकांश को अपने व्यक्तित्व और सेवा क्षेत्र में ऐसे विग्रह उत्पन्न करते देखा जाता है जिसे दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना ही कहा जा सकता है और सोचना पड़ता है कि यदि यश हजम कर सकने में असमर्थ लोग लोक-सेवा के क्षेत्र में न आया करें तो वे अपनी और समाज की अधिक सेवा कर सकते

आज का सद्चिंतन

इक्कीसवीं सदी के सौ वर्ष नया संसार, नया मनुष्य, नया प्रचलन परिपूर्ण स्तर तक पहुँचने का समय है। इसके लिए आरंभिक उपचार युग संधि के शेष वर्षों को समझा जा सकता है। बच्चे की आयु उसके जन्म दिन से गिनी जाती है, पर वह गर्भ में तो प्रायः नौ महीने पहले ही पहुँच जाता है और काया का महत्त्वपूर्ण निर्माण उन्हीं दिनों में पूरा कर लेता है। युग संधि की बेला भी ऐसे ही परम पुरुषार्थ की अवधि है जिसमें अनौचित्य का उन्मूलन एवं औचित्य के संस्थापन की द्विविध प्रक्रिया एक साथ चलती देखी जा सकती है। श्वास-प्रश्वास में, रक्त संचार में, ग्रहण-विसर्जन में, श्रम-निद्रा में शरीर भी तो यही प्रयास अनवरत रूप से करता रहता है।

हौसले बुलन्द हों तो कठिनाइयों के बीच भी व्यक्ति मिल जुल कर थोड़े ही समय में इतना कुछ कर सकता है, जिसे देखकर आश्चर्य चकित रहा जा सके। पनामा की नहर, स्वेज कैनाल, चीन की दीवार, मिश्र के पिरामिड जैसे अनेकों प्रबल प्रयास उत्साह भरे वातावरण में ही सम्पन्न हुए हैं। बड़ा वजन जब श्रमिक मिल जुल कर आगे धकेलते हैं तो उनकी 'हेइशा' जैसी हुंकार जादुई असर दिखाती हैं। युद्ध के बाजे सैनिकों में नया जोश भर देते हैं और वे दूने उत्साह में मोर्चा संभालते हैं।

आज का सद्चिंतन

जामवन्त के उद्बोधन से हनुमान् को शक्तिबोध हुआ और समुद्र लाँघने, पर्वत उखाड़ने में वे सफल हो गए। कृष्ण के उद्बोधन ने अर्जुन से गाण्डीव उठवाया और थोड़े साधन रहते हुए भी महाभारत जीत दिखाया। चाणक्य, समर्थ रामदास, रामकृष्ण परमहंस ने भी अपने शिष्यों में प्रेरणा भर के उन्हें चक्रवर्ती चन्द्रगुप्त, छत्रपति शिवाजी और भारतीय संस्कृति के विश्व विख्यात विवेकानन्द के रूप में ऐसा कुछ कर दिखाने में समर्थ बनाया जिसे कभी विस्मरण नहीं किया जा सकता। बुद्ध का धर्मचक्र प्रवर्तन प्रसिद्ध है। उनके एकांकी अग्रगमन ने लाखों धर्म प्रचारकों को विश्व के भावनात्मक कायाकल्प में जुटाया था। गाँधी ने ''करो या मरो'' के नारे से जन-जन का खून खौलाया व सोये भारत को जगाया।

आज की घड़ी में समस्त विश्व के लिए विशेषतया भारत के नवीन अभ्युदय के लिए ''इक्कीसवीं सदी बनाम उज्ज्वल भविष्य'' का नारा सर्वथा उपयुक्त एवं तथ्यपूर्ण है। इक्कीसवीं सदी के सम्बन्ध में भविष्य वक्ताओं, मनीषियों, दिव्यदर्शी एवं आकलन कर्त्ताओं ने बहुत कुछ कहा और बताया है कि अँधेरे का समापन और अभिनव प्रभात पूर्व के अरुणोदय का यही सबसे महत्त्वपूर्ण अवसर है। इन दिनों सृजेता की ऐसी दिव्य प्रेरणा का अवतरण होगा जो जन-जन के मन-मन में से निराशाजन्य अशक्ति को तो दूर करेगा ही और ऐसा उल्लास जगायेगा कि उसके प्रभाव में हर किसी को उज्ज्वल भविष्य की संरचना में बढ़-चढ़ कर

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! इतिहास साक्षी है कि आपत्ति काल में राजपूत घरानों से एक-एक सदस्य सेना में भर्ती होता था। सिख धर्म जिस दिनों चला था, तब भी उस विपन्न वेला में, उस प्रभाव क्षेत्र में आए हर परिवार ने अपने परिवार में से एक को 'सिख' सेना का सदस्य बनने के लिए प्रोत्साहित किया था। आज की वेला, तब की अपेक्षा कम विपन्न नहीं है। नव सृजन में संलग्न होने के लिए हर घर से एक प्रतिभा को आगे आना चाहिए और भारत भूमि की सतयुगी गरिमा को जीवन्त रखने का श्रेय लेना चाहिए। इक्कीसवीं सदी में सतयुग की वापसी वाली संभावनाएँ सुस्पष्ट हैं। कुछेक चिह्न पहले से ही प्रकट हो रहे हैं। ऐसे व्यक्तित्व उभर रहे हैं, जो लोक निर्वाह में कटौती करके अपनी भाव संवेदनाएँ, आकांक्षाएँ एवम् गतिविधियों के सृजन प्रयोजनों में समर्पित कर सकें, जिससे उनका समर्पण अन्धकार में जलती मशाल की भूमिका निभाते हुए सबकी आँखों में चमक

दिनाँक-१९/०४/२००८

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! जागृत आत्माओं में उच्चस्तरीय आत्मबल कैसे जागे ? और वे किस प्रकार सच्चे अर्थों में स्वार्थ परमार्थ की साधना करते हुए आत्म-सन्तोष एवं ईश्वरीय अनुग्रह के भागी बन सकें ? इसका उपाय युग प्रवाह के सूत्र-संचालकों को यह सूझा है कि सत्पात्रों को अतिरिक्त प्राण चेतना का अनुदान दिया जाय और उन्हें बाहर से सामान्य रहते हुए भी भीतर से असामान्य बनाया जाय। शक्ति और प्रगति का मूलभूत आधार अन्तरंग में ही रहता है, इसे सभी विज्ञजन भली-भाँति जानते हैं।

अनुदान उपलब्ध करना और कराना भी अध्यात्म क्षेत्र की एक महान् परम्परा है। उसे साधनात्मक पुरुषार्थ से कम नहीं वरन् अधिक ही महत्त्व दिया जा सकता है। साधना दीर्घकालीन तपश्चर्या के आधार पर फलित होती है, किन्तु अनुदानों का लाभ तत्काल मिलता है। युग सन्धि की इस पुण्य वेला में उच्च सत्ता ने सत्पात्रों को दिव्य प्रयोजनों के लिए अनुदान वितरण का क्षेत्र और भी अधिक बढ़ा दिया है। अब तक वह नैष्ठिकों के लिए था, अब उसे जागृतों के लिए भी उपलब्ध किया जा रहा है।

सूक्ष्मीकरण साधना एवं उज्ज्वल भविष्य -वाङ्मय-२८ पृष्ठ-४.२१ से

दिनाँक-२०/०४/२००८

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! प्रतिभा, तेजस्विता को कहते हैं। यह चेहरे की चमक या चतुरता नहीं, वरन् मनोबल पर आधारित ऊर्जा है। गाँधी जी ९६ पौण्ड वजन और ५ फुट दो इंच के थे। रंग के काले और कुरूप भी, पर उनका तेजस् ऐसा था कि जन-साधारण से लेकर देश के वरिष्ठ मूर्धन्यों तक को उनका आदेश शिरोधार्य करते देखा जा सकता था। यहाँ तक कि विशाल साम्राज्य के अधिपति अंग्रेज भी उनसे प्रभावित होकर बिस्तर गोल करके चले ही गये। यह तेजस् निजी और सामूहिक जीवन के हर पक्ष को जगमगाता है। उसे प्रखरता भरी ऊर्जा से जाज्वल्यमान बना देता है।

तेजस्विता तपश्चर्या की उपलब्धि है, जो निजी जीवन में संयम साधना और सामाजिक जीवन में परमार्थ परायणता के फलस्वरूप उद्भूत होती है। संयम अर्थात् अनुशासन का, आत्म-नियंत्रण का कठोरतापूर्वक परिपालन। इसके लिए मनुष्य को तृष्णा-वासना और अहंता के त्रिविध नागपाशों से छूटना पड़ता है। सादा जीवन-उच्च विचार का ब्राह्मणोचित औसत नागरिक स्तर का जीवन-यापन करना पड़ता है। जो इतना कर सके, उन्हीं से परमार्थ सधता है और योगियों में पाई जाने वाली सिद्धियों, शक्तियों और विभूतियों का अन्तराल में उद्भव और अखिल अन्तरिक्ष से अभिवर्षण होता है। दैवी अनुग्रह या वरदान भी इसी को कहते हैं।

सूक्ष्मीकरण साधना एवं उज्ज्वल भविष्य -वाङ्मय-२८ पृष्ठ-२.१२

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! विश्व का भावी नवनिर्माण मानवीय उत्कृष्टता के अभिवर्धन पर अवलम्बित होगा। इसके लिये प्रेरक केन्द्र कोई भी क्यों न हो, उसे सहस्त्रों सहयोगियों की आवश्यकता पड़ेगी। वे भले ही ऊँची योग्यताओं के न हों पर आत्मिक उत्कृष्टता की विशेषता तो अनिवार्य रूप से होनी ही चाहिये। इन दिनों इसी उत्पादन को सबसे बड़ा कार्य माना जाना चाहिये।

पूर्व जन्मों की अनुपम आत्मिक सम्पत्ति जिनके पास संग्रहीत है ऐसी कितनी ही आत्मायें इस समय मौजूद हैं। पिछले कुछ समय से अनुपयुक्त परिस्थितियों में पड़े रहने से इन फौलादी तलवारों पर जंग लग गयी। इस जंग को छुड़ाने की प्रक्रिया युग निर्माण योजना के प्रस्तुत कार्यक्रमों के अन्तर्गत चल रही है। आशा करनी चाहिये कि अगले तीन वर्षों में यह प्रयोजन पूर्ण कर लिया जायेगा। इन दिनों जो व्यक्ति बिल्कुल साधारण स्तर के दिखाई पड़ते हैं और जिनसे किसी बड़े काम की सम्भावना नहीं मानी जा सकती, ऐसे कितने ही व्यक्ति असाधारण प्रतिभा और क्षमता लेकर कार्यक्षेत्र में उतरेंगे और नव-निर्माण का महान् कार्य जो आज एक स्वप्न मात्र दिखाई पड़ता है, कल मूर्तिमान सचाई के रूप में प्रस्तुत करते परिलक्षित होंगे।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! बुद्ध जन्मजात अवतार नहीं थे। यदि होते तो उन्हें आरम्भ से ही अपने उद्देश्य का ज्ञान होता और विवाह करने, बच्चा उत्पन्न करने और उन्हें बिलखता छोड़ने की भूल न करते। गांधी जी जन्मजात अवतार नहीं थे। यदि होते तो उनको लगभग तीस वर्ष तक की आयु तक इधर-उधर भटकना न पड़ता। रामायण के पात्रों में हनुमान, अंगद, सुग्रीव, जामवन्त, जटायु आदि की भूमिकायें बड़ी महत्त्वपूर्ण हैं, पर वे लोग यदि जन्मजात महापुरुष होते तो उनका जीवन-क्रम आरम्भ से ही निर्धारित दिशा में चल रहा होता। वाल्मीकि, अंगुलिमाल, अम्बपाली, सूरदास, सम्राट अशोक आदि के जीवन आरम्भ में कलुषित ही तो थे। अगणित सन्त महात्माओं एवं महापुरुषों के जीवन-क्रम ऐसे ही हैं जिन्हें ध्यानपूर्वक देखने से स्पष्ट होता है कि वे जन्मजात रूप से कोई महानता लेकर नहीं आये थे। समयानुसार उनकी अन्तःचेतना ने पल्टा खाया, दिशा बदली और फिर वे कुछ से कुछ हो गये।

सूक्ष्मीकरण साधना एवं उज्ज्वल भविष्य -वाङ्मय-२८ पृष्ठ-२.८४

दिनाँक-२३/०४/२००८

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! प्रकाश स्तम्भों के बुझ जाने पर अन्धकार फैल जाना स्वाभाविक है। जैसे-जैसे उच्च आत्म-बल सम्पन्न हस्तियाँ घटती गयीं, वैसे-वैसे जन मानस की उत्कृष्टता भी गिरती गयी। इस गिरावट को ओछे लोग प्रचारात्मक साधनों से रोक नहीं सकते थे और वे रोक भी नहीं सके। हम अपने लम्बे इतिहास पर दृष्टिपात करते हैं तो उच्च आत्म-बल सम्पन्न आत्माओं के अवतरण-अवसाद के साथ-साथ जन मानस का उत्थान-पतन भी जुड़ा हुआ देखते हैं। जिन दिनों महापुरुष जन्मे, उन दिनों कोई भी युग बीत रहा हो सतयुग का वातावरण उत्पन्न हुआ है। भगवान् राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, शंकराचार्य, गाँधी आदि की विचारधारा से कोटि-कोटि लोग प्रभावित हुए। समर्थ गुरु गोविन्दसिंह आदि की प्रेरणा से लोगों ने एक-से एक बढ़े-चढ़े त्याग, बलिदान प्रस्तुत करने में प्रतिस्पर्द्धा उपस्थित कर दी। अभी कल परसों गाँधी की आँधी में लाखों लोगों ने जिस आदर्शवादिता का परिचय दिया, उससे यह मान्यता सार्थक सिद्ध हुई है कि उच्चस्तरीय आत्म-बल सम्पन्न आत्मायें ही जन-मानस की दिशा बदल देने में समर्थ हो सकती हैं। मामूली प्रचार साधन उपयोगी तो हैं, पर उतने भर से इस दिशा में कोई प्रभावी परिणाम नहीं हो सकता।

सूक्ष्मीकरण साधना एवं उज्ज्वल भविष्य -वाङ्मय-२८ पृष्ठ-२.५५

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! उत्कृष्टता के क्षेत्र में प्रवेश करने वालों के लिए मनीषियों ने वित्तेषणा (लोभ), पुत्रेषणा (मोह) और लोकेषणा (अहंकार-बड़प्पन) की त्रिविध एषणाओं का परित्याग करने के उपरान्त ही श्रेय मार्ग पर पैर बढ़ाने की सलाह दी हैं। लोकसेवी में नम्रता, निरहंकारिता उत्पन्न करने के लिए प्राचीन काल में दरवाजे-दरवाजे भिक्षा माँगने के लिए जाना पड़ता था। यों घर बैठे भी भोजन मिलने का प्रबन्ध ऐसे लोगों के लिए कठिन नहीं है। पर, अहंकार गलाने को तो कोई न कोई चाहिए ही। इसके बिना साधु कैसा? ब्राह्मण कैसा? लोकसेवी कैसा?

सिक्ख गुरुओं में रामदास की बड़ी ख्याति है। उन्हें आश्रम के बर्तन साफ करने का काम सौंपा गया और बिना किसी प्रकार की बेइज़्ज़ती अनुभव किए बड़े चाव से करते रहे। जबकि उनके अन्य साथी बड़प्पन के पद पाने के लिए मिन्नतें करते, तिकड़म भिड़ाते और झंझट खड़े करते देखे गये। उनके गुरु ने उत्तराधिकारी का चुनाव करते समय आध्यात्मिकता की वास्तविक गुण सम्पदा निरहंकारिता रामदास से पाई और उन्हीं को मूर्धन्य स्थान पर बिठा दिया।

गाँधीजी के आश्रम में निवासियों को टट्टी साफ करने, झाड़ू लगाने जैसे छोटे समझे जाने वाले कार्य परिपूर्ण श्रद्धा और तत्परता के साथ करने पड़ते थे। प्रज्ञा मिशन की परम्परा भी यही है। प्रत्येक आश्रमवासी को श्रमदान अनिवार्यतः करना पड़ता है और उसमें नाली साफ करने, झाड़ू लगाने, कूड़ा ढोने जैसे कार्य ही करने होते हैं।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! दूध पानी में मिलकर तदाकार हो जाता है। लकड़ी आग में गिरकर स्वयं अग्नि बन जाती है। बूँद समुद्र में मिल कर समुद्र की विशालता अपना लेती है। नाला नदी में मिलकर अपना नाम रूप गँवा देता है। किन्तु स्वयं नदी बनने का गौरव प्राप्त करता है और नमक पानी में मिलकर एकता स्थापित कर लेता है। पतंगा दीपक में अपने प्राणों की लौ मिला देता है। पत्नी अपना सर्वस्व पति में घुला देती हैं। यही समर्पण भाव अध्यात्म साधना का चरम लक्ष्य है। इसी स्थिति में आदान-प्रदान का द्वार खुलता है। सर्वतोभावेन समर्पित भक्त ईश्वरत्व प्राप्त कर लेता है। पत्नी का समर्पण उसे पति के शरीर मन और साधनों का स्वामित्व दिला देता है। लकड़ी अग्नि में गिरकर अपना स्वरूप तो खोती है पर साथ ही अग्नि बन जाने का श्रेय भी प्राप्त करती है।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! चंद्रगुप्त जब विश्व विजय की योजना सुनकर सकपकाने लगा तो चाणक्य ने कहा-''तुम्हारी दासी पुत्र वाली मनोदशा को मैं जानता हूँ। उससे ऊपर उठो ! और चाणक्य के वरद् पुत्र जैसी भूमिका निभाओ। विजय प्राप्त कराने की जिम्मेदारी तुम्हारी नहीं मेरी है।'' शिवाजी जब अपने सैन्य बल को देखते हुए असमंजस में थे कि इतनी बड़ी लड़ाई कैसे लड़ी जा सकेगी, तो समर्थ रामदास ने उन्हें भवानी के हाथो अक्षय तलवार दिलाई थी और कहा था तुम छत्रपति हो गये। पराजय की बात ही मत सोचो। राम-लक्ष्मण को विश्वामित्र यज्ञ की रक्षा के बहाने बला और अतिबला का कौशल सिखाने ले गये थे, ताकि वे युद्ध लड़ सकें। असुरता के समापन और रामराज्य के रूप में ''सतयुग की वापसी'' सम्भव कर सकें। महाभारत लड़ने का निश्चय सुनकर अर्जुन सकपका गया था और कहने लगा था कि ''मैं अपने गुजारे के लिए कुछ भी कर लूंगा, फिर हे केशव ! आप इस घोर युद्ध में मुझे नियोजित क्यों कर रहे हैं?'' इसके उत्तर में भगवान ने एक ही बात कही थी कि-''इन कौरवों को तो मैंने पहले से ही मार कर रख दिया है। तुझे यदि श्रेय लेना है तो आगे आओ, अन्यथा तेरे सहयोग के बिना भी यह सब हो जायेगा जो होने वाला है। घाटे में तू ही रहेगा। श्रेय गंवा बैठेगा और उस गौरव से भी वंचित रहेगा, जो विजेता और राजसिंहासन के रूप में मिला करता है।'' अर्जुन ने वस्तुस्थिति समझी और कहने लगा-''करिष्ये वचनं तव'' अर्थात् आपका आदेश मानूँगा। ऐसी ही हिचकिचाहट हनुमान, अंगद, नल-नील आदि की रही होती तो वे अपनी निजी शक्ति के बल पर किसी प्रकार जीवित तो रहते पर उस अक्षय कीर्ति से वंचित ही बने रहते जो उन्हें अनंत काल तक मिलने वाली है।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! अर्जुन वस्तुस्थिति को समझ नहीं रहा था। उसकी दूर दृष्टि कुण्ठित हो गई थी फलतः वह तात्कालिक एवं व्यक्तिगत लाभ को कसौटी मानकर अपने ढंग से यह सोचने लगा कि क्या करूँ, क्या न करूँ? यह खोटा दृष्टिकोण जिस किसी ने जब कभी अपनाया है तब उसे संकीर्ण स्वार्थपरता के ही गर्त में गिरना पड़ा है। ऐसे व्यक्ति मात्र सुविधा संचय की बात सोच सकते हैं। आदर्शों के परिपालन का प्रथम चरण परिशोधन और परिष्कार से आरम्भ होता है। इसे वरण करने में तात्कालिक घाटा उठाने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं। संसार के सभी महामानवों को इस प्राथमिक परीक्षा में प्रवेश करने और उत्तीर्ण होने का श्रम पराक्रम करना पड़ा है। इससे बच निकलने की सस्ती तरकीब कोई है नहीं क्षुद्र अपने ढंग से सोच सकते हैं। वे विलास वैभव को यथावत जकड़े रहकर किसी मंत्र-यंत्र के सहारे गगन चुम्बी विभूतियों को झटकने की, स्वर्ग मुक्ति की, ऋद्धि-सिद्धि की बात सोचते रह सकते हैं। कल्पना जल्पनाओं पर कोई प्रतिबन्ध नहीं सोने के पंख लगाकर ब्रह्माण्ड के सात चक्कर लगाने का सपना तो जाले में जकड़ी मकड़ी भी देख सकती है, पर जिन्हें यथार्थता से वास्ता पड़ा है वे जानते हैं कि महानता की विभूतियाँ उपलब्ध करने के लिए साधु ब्राह्मणों जैसा उदार अपरिग्रह अपनाना पड़ता है और प्रखरता खरीदने के लिए तपश्चर्या की आग में होकर गुजरना पड़ता है। अर्जुन पर ऐसा ही दिग्भ्रम उस घड़ी आ चढ़ा जैसा कि हेय स्तर के नर पामरों के सिर पर भूत बन कर अहिर्निश छाया रहता है।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! महाभारत में दोनों सेनाओं के बीच खड़े अर्जुन का रथ देखने में शस्त्र सज्जा से भरा पूरा और हर दृष्टि से समर्थ सशक्त प्रतीत होता था, पर भीतर ही भीतर उसके असमंजस का अदृश्य दिग्भ्रम इतना अधिक संव्याप्त था कि सूत्र संचालक का माथा ही ठनकने लगा। गाण्डीवधारी महा पराक्रमी अर्जुन बाहर से महाप्राण दीखने पर भी भीतर ही भीतर दीन दयनीय और कृपण कायरों की तरह अवसाद ग्रस्त हो रहा था। कारण परिस्थितियों की प्रतिकूलता नहीं, मनःस्थिति में अदूरदर्शिता घुस पड़ने के कारण उत्पन्न हुई दिग्भ्रान्ति थी। जिसके भी दृष्टिकोण में संकीर्ण सीमाबद्धता एवं निजी इच्छा लिप्सा की निकृष्टता घुसती है, उसे ऐसा ही दीन दयनीय बना देती है। जैसा कि उन घड़ियों में अर्जुन अपने को असमंजस में घिरा हुआ अनुभव कर रहा था।

महाभारत का उद्देश्य भाइयों के झगड़े झंझट का निपटारा कराना नहीं, सामन्तवादी बिखराव के कारण भारत के स्तर, भविष्य एवं आकार के निरन्तर चिन्ताजनक बनते जाने की जटिल समस्या का दूरगामी समाधान प्रस्तुत करना था। अतीत में भारत विस्तार और गौरव की दृष्टि से विशाल था। भविष्य में भी उसे उतना ही नहीं उससे भी बढ़ा चढ़ा होना चाहिए। इसी की आरम्भ में कटु किन्तु अन्त में मधुर प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न करने वाला दुस्साहस भरा महायुद्ध खड़ा किया गया था। उसकी सफलता के साथ दूरगामी सत्परिणामों की विशालकाय योजना और कल्पना काम कर रही थी। ऐसे आयोजन सदा उच्चस्तरीय होते हैं।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! मजबूत किलों को विस्मार करने के लिए अष्टधातु की तोपों की गोलाबारी ही काम आती है। पहाड़ों को समतल बनाने के लिए डायनामाइट की सुरंगों का प्रयोग करना पड़ता है। रेल के डिब्बे पटरी से उतर जाने पर, उन्हें उठाने के लिए बड़ी ताकत वाली क्रेन ही अभीष्ट उद्देश्य पूरा कर सकती है। कठिन मोर्चे जीतने के लिए प्रवीण-पारंगत दुस्साहसी सेनापति ही विजय वरण करते हैं। ऐसे बड़े कामों के लिए छिटपुट साधनों का उपयोग तो निरर्थक ही होता है।

तलवार का वार सहने के लिए गेंडे की खाल वाली ढाल चाहिए। सहस्रों टन भार लाद ले जाने जलयान जो काम करते हैं, वह छोटी डोगियों से नहीं लिया जा सकता। भयंकर अग्निकाण्ड से निपटने के लिए, बड़े आकार वाले फायर ब्रिगेड चाहिए। ऊबड़-खाबड़ क्षेत्रों को समतल बनाने के लिए बुलडोजरों से कम में काम नहीं चलता। दलदल में फँसे हाथी को उससे भी बड़े आकार वाला गजराज जल्दी खींच कर किनारे पर लगाता है। नये नगरों और बड़े बाँधों के नक्शे, सूझ-बूझ वाले वरिष्ठ इन्जीनियर ही बनाकर देते हैं।

बड़े कामों का दायित्व उठाने और उन्हें करने की जिम्मेदारी असाधारण क्षमता सम्पन्नों को ही सौंपी जाती है। यों महत्त्व तो टट्टुओं और बकरों का भी है, पर उनकी पीठ पर हाथी वाली अम्बारी नहीं रखी जा सकती। सौ खरगोश मिलकर भी एक चीते से दौड़ में नहीं निकल सकते। बड़े कामों के लिए बड़ों की ही तलाश करनी पड़ती है।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! मनुष्य अन्य जीवधारियों से भिन्न है। उसकी शारीरिक संरचना इतनी अद्‌भुत है कि वह कला-कौशल के क्षेत्र में न जाने क्या-क्या चमत्कार दिखा सकता है। उसका बुद्धि संस्थान इतना अद्‌भुत है कि सुविधा साधनों की बात ही क्या, वह उसके बलबूते वैज्ञानिक के रूप में प्रकृति का रहस्योद्‌घाटन और प्राणि-जगत् का भाग्य निर्माता होने तक का दावा कर रहा है। विद्या-बुद्धि से सम्बन्धित अनेकानेक तत्वदर्शन उसने विनिर्मित किये हैं। शासन और समाज की संरचना उसी की सूझ-बूझ का प्रतिफल है। साहित्य का अक्षर भंडार उसी का सृजा हुआ है। उसी ने देवी-देवताओं की सृष्टि की है। कहने को तो यह भी कहा जाता है ईश्वर ने भले ही सृष्टि को बनाया हो, पर ईश्वर जिस भी रूप में आज लोक मानस में स्थान पा सकता है, वह मनुष्य की ही प्रतिस्थापना है। इस दृष्टि से तो वह सृष्टा का भी सृष्टा हुआ न? कैसा अद्‌भुत है यह गले न उतरने वाला सत्य और तथ्य। मनुष्य सचमुच महान् है। दार्शनिकों ने उसे ''भटका हुआ देवता'' कहा है। शास्त्रकार कहते हैं कि मनुष्य से श्रेष्ठ इस संसार में और कुछ नहीं है।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! शांतिकुंज को युग चेतना की गंगोत्री कहा जा सकता है। सूर्य सर्वप्रथम पूर्वांचल से निकलता है और वहाँ से आगे बढ़ते-बढ़ते समस्त संसार को आभा से आच्छादित करता है। गंगोत्री से आरंभ होने वाला निर्झर, बंगाल पहुँचते-पहुँचते सहस्र धाराओं में विकसित हुआ दीख पड़ता है। इस युग साधना का शुभारंभ शांतिकुंज से होते हुए भी, उसका विस्तार देश के कोने-कोने और विश्व के हर भाग में व्यापक होते हुए देखा जा सकेगा। उसका प्रभाव भी युग परिवर्तन की पृष्ठभूमि में आंशिक स्तर की असाधारण भूमिका निबाहते हुए देखा जा सकेगा। प्रत्यक्ष रूप से सृजनात्मक हलचलों का उभार इस आधार पर उभरकर आने की सँभावना आँकी जा सकती है, जो गोवर्धन उठाने जैसे महान कार्य को लाठियों की सहायता मिल जाने से संपन्न हो जाने के समान है।

शांतिकुंज का निर्माण ही इसके लिए उपयुक्त स्थान खोजकर किया गया है। गंगा की गोद, हिमालय की छाया, सप्त ऋषियों की तपोभूमि, दिव्य सान्निध्य, अखण्ड दीप, निरंतर चलने वाली साधना का नियोजन जैसे संयोग, एक साथ एक स्थान पर अन्यत्र कदाचित ही कहीं देखे जा

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! समझदारी का अर्थ है, तात्कालिक आकर्षण पर संयम बरतना, अंकुश लगाना और दूरगामी, चिरस्थायी, परिणतियों, प्रतिक्रियाओं का स्वरूप समझना, तदनुरूप निर्णय करना, उपक्रम अपनाना। चटोरेपन की ललक में लोग अभक्ष्य-भक्षण करते और कामुकता के उन्माद में शरीर और मस्तिष्क को खोखला करते रहते हैं। ऐसे ही दुष्परिणाम अन्य अदूरदर्शिताएँ उत्पन्न करते हैं। उन्हीं की प्रेरणा से लोग, अदूरदर्शिता के कारण ही लोग मछली की तरह सामान्य से प्रलोभनों के लोभ में बहुमूल्य जीवन गँवा देते हैं। समझदारी यदि साथ देने लगे, तो इंद्रिय संयम, समय संयम, अर्थ संयम अपनाते हुए इन छिद्रों को सरलतापूर्वक रोका जा सकता है, जो जीवन संपदा को अस्त-व्यस्त करके रख देते हैं।

ईमानदारी बरतना सरल है, जबकि बेईमानी बरतने में अनेक प्रपंच रचने और छल-छद्म अपनाने पड़ते हैं। स्मरण रखने योग्य तथ्य यह है कि ईमानदारी के सहारे ही कोई व्यक्ति प्रामाणिक और विश्वासी बन सकता है। उन्हीं को जन-जन का सहयोग एवं सम्मान पाने का अवसर मिलता है।

उत्कर्ष अभ्युदय के लिए इतना अवलम्बन बहुत है, आगे की गतिशीलता तो अनायास ही चल पड़ती है। बेईमान वे हैं, जिन्होंने अपना विश्वास गँवाया और जिनकी मित्रता मिलती रह सकती थी, उन्हें अन्यमनस्क एवं विरोधी बनाया। बेईमान व्यक्ति भी ईमानदार नौकर रखना चाहता है। इससे प्रकट है कि ईमानदारी की सामर्थ्य कितनी बढ़ी-चढ़ी है। जिनकी प्रतिष्ठा एवं गरिमा अन्त तक अक्षुण्ण बनी रहती है, उनमें से प्रत्येक को ईमानदारी की रीति-नीति ही सच्चे मन से अपनानी पड़ी है। झूठों की बेईमानी तो काठ की हाँडी की तरह एक बार ही चढ़ती है।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! इक्कीसवीं सदी को जीन डिक्सन ने उज्ज्वल संभावनाओं से भरपूर बताया है। वे बताती हैं कि सन् २००० तक ''नीति और अनीति'' का संघर्ष तो चलता रहेगा, पर अंततः नीति की, सत्प्रवृत्तियों की ही विजय होगी। सन् २०२० तक धरती पर स्वर्ग की कल्पना साकार होने लगेगी। तब न प्रदूषण की समस्या रहेगी और न बीमारी-भुखमरी से किसी को त्रस्त होना पड़ेगा। चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में अद्भुत उन्नति होगी। अंतरिक्षीय यात्राएँ प्रकाशगति से भी तीव्र गति से चलने वाले यानों द्वारा संपन्न हुआ करेंगी। सन् २०२० तक सारी मानव जाति का क्रिया-व्यापार एक ही विश्व सत्ता के अधीन संचालित होता हुआ दृष्टिगोचर होगा।

अपनी प्रसिद्ध कृति ''माई लाइफ एंड प्रोफेसीज'' के आठवें अध्याय में जीन डिक्सन लिखतीं हैं कि ''इक्कीसवीं सदी नारी प्रधान होगी। विभिन्न क्षेत्रों का नेतृत्व महिलाएँ संभालेंगी।'' विश्व शांति स्थापना की दिशा में भारत की भूमिका का उन्होंने विशेष उल्लेख किया है और कहा है कि अपने आध्यात्मिक मूल्यों एवं वैचारिक क्रांति के माध्यम से वह समस्त विश्व में समतावादी शासन का सूत्रपात करेगा। उनके भविष्य कथन के अनुसार राष्ट्रसंघ का कार्यालय अगले दिनों भारत में बनेगा।

आज का सद्‌चिंतन

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! इतिहास साक्षी है कि जब-जब, जिन वर्गों ने जिस क्षेत्र में पराक्रम सँजोया है, उसने उसी क्षेत्र में आशातीत सफलताएँ पाई हैं। अग्नि प्रज्वलन से लेकर पहिए के आविष्कार तक उसकी प्रथम कृति थी, जिसने अनेकानेक साधनों-वाहनों का उद्भव आसान कर दिया। कभी उसने कृषि, पशुपालन, वस्त्र निर्माण, भवन निर्माण, व्यवसाय आदि के सहारे प्रगति के नए आयाम खोजे होंगे। भाषा और लिपि का आविष्कार अपने समय में अति क्रांतिकारी माध्यम माना गया होगा। वानरों की तरह यायावर जीवन बिताते आदिमकाल की उपहासास्पद स्थिति में रहते थे। वैज्ञानिक आविष्कारों से सुसज्जित दुनिया जब गढ़ी जाने लगी तब तो माना प्रकृति पर विजय पाने का नगाड़ा ही बजने लगा। अब तो ऐसे अणु-आयुधों के जखीरे जमा हो गए हैं जिनसे स्रष्टा की इस सुंदर संरचना धरित्री को देखते-देखते धूल बनाकर अंतरिक्ष में उड़ा दिया जाए, यहाँ प्राणी या वनस्पति वर्ग के सभी सदस्य सर्वथा लुप्त प्रायः हो जाएँ। इस प्रकार मनुष्य ईश्वर का समर्थ सहायक भी सिद्ध होता है और दुर्घर्ष प्रतिद्वन्द्वी भी। उसकी यह शक्ति चेतना से जानी जाने वाली किसी प्रचंड संकल्पबल की वशवर्ती है और उसी के सहारे कठपुतली की तरह नाचती रहती है। इसी की न्यूनाधिकता से मनुष्य क्षुद्र और महान् बनता है। उसके उच्चस्तरीय होने पर देव और निकृष्टता अपनाने पर दैत्य का उद्भव होता है। दैवी शक्तियों से संपन्न व्यक्ति ही सिद्ध पुरुष या देवमानव कहलाता है।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! प्रस्तुत समय, जिससे हम गुजर रहे हैं-संधिकाल है। यह युगसंधि का समय, अवसर न चूकने जैसा है। आपत्तिकाल में लोग निजी व्यवसाय छोड़कर दुर्घटना से निपटने के लिए दौड़ पड़ते हैं। अग्निकांड, भूकंप, दुर्भिक्ष, महामारी, दुर्घटना जैसे अवसरों पर उदार सेवाभावना की परीक्षा होती है। भावनाशील इस अवसर पर चूकते नहीं। उपेक्षा करने वाले तिरष्कृत जैसे होते और सेवा-साधना में जुट पड़ने वाले सदा-सर्वदा के लिए लोगों के मन पर अपनी प्रामाणिकता की गहरी छाप छोड़ते हैं, जो कालांतर में उन्हें महत्त्वपूर्ण वरिष्ठता प्रदान कराती है।

इतिहास साक्षी है कि आपत्तिकाल में राजपूत घरानों से एक-एक सदस्य सेना में भरती होता था। सिक्ख धर्म जिन दिनों चला था, तब भी उस विपन्न वेला में, उस प्रभाव क्षेत्र में आए हर परिवार ने अपने परिवार में से एक को 'सिक्ख' सेना का सदस्य बनने के लिए प्रोत्साहित किया था। आज की वेला, तब की अपेक्षा कम विपन्न नहीं है। नवसृजन में संलग्न होने के लिए हर घर से एक प्रतिभा को आगे आना चाहिए और भारतभूमि की सतयुग की वापसी वाली संभावनाएँ सुस्पष्ट हैं। कुछेक चिह्न पहले से ही प्रकट हो रहे हैं। ऐसे व्यक्तित्व उभर रहे हैं, जो लोकनिर्वाह में कटौती करके अपनी भाव-संवेदनाएँ, आकांक्षाएँ एवं गतिविधियों को सृजन-प्रयोजनों में समर्पित कर सकें, जिससे उनका समर्पण अंधकार में जलती मशाल की भूमिका निभाते हुए सबकी आँख में चमक पैदा कर सके।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! इन दिनों को कार्य प्रमुख हैं- विपन्नता से जुझना और निरस्त करना, साथ ही नवसृजन की ऐसी आधारशिला रखना, जिससे अगले ही दिनों संपन्नता, बुद्धिमत्ता, कुशलता और समर्थता का सुहावना माहौल बन पड़े। इक्कीसवीं सदी को दूरदर्शी लोग सर्वतोमुखी प्रगति की संभावनाओं से भरी-पूरी मानते हैं। उस अवधि में सतयुग की वापसी पर विश्वास करते हैं। इस मान्यता के अनेकों कारण भी हैं। उनमें से एक यह है कि इन्हीं दिनों समर्थ प्रतिभाओं का सृजन, उन्नयन और प्रखरीकरण तेजी से हो रहा है। संभवतः अदृश्य शक्ति का ही इसमें हाथ हो? ऐसी शक्ति का जो समय-समय पर आड़े समय में बिगड़ता संतुलन संभालने के लिए अपने वर्चस्व का प्रकटीकरण करती रही है। कहना न होगा कि तेजस्वी प्रतिभाएँ ही भौतिक समृद्धि बढ़ाने, प्रगति का वातावरण उत्पन्न करने और अंधकार भरे वर्तमान को उज्ज्वल भविष्य में परिणत करने का श्रेय संपादित करती रही हैं। उन्हें ही किसी देश, समाज एवं युग की वास्तविक शक्ति एवं संपदा माना जाता है। स्पष्ट है कि वे उदीयमान वातावरण में ही उगती और फलित होती हैं। वर्षा में हरीतिमा और वसंत में सुषमा का प्राकट्य होता है। प्रतिभाएँ अनायास ही नहीं बरस पड़ती, न वे उद्भिजों की तरह उग पड़ती हैं। उन्हें प्रयत्नपूर्वक खोजा, उभारा और खरादा जाता है। इसके लिए आवश्यक एवं उपयुक्त वातावरण का सृजन किया जाता है।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! प्रतिभा परिष्कार की आरंभिक शर्त है-अपने आपसे जूझना, इस हेतु आलस्य और प्रमाद से सर्वप्रथम लड़ना पड़ता है। उसके स्थान पर चुस्त-दुरुस्त रहने की जागरूकता को धारण करना पड़ता है। निराशा, अनुत्साह, चिंता, खिन्नता जैसे मानसिक दुर्गुणों के साथ तब तक संघर्ष करना पड़ता है, जब तक कि उनके स्थान पर आशा, प्रसन्नता, उमंग, निश्चिंतता, निर्भयता और शिष्टता जैसी सत्प्रवृत्तियाँ अपने आपको प्रतिष्ठित न कर लें। यह नित्य ध्यान रखने और निरंतर अभ्यास करने का विषय है, जिसे बिना रुके, बिना हारे, अनवरत रूप से क्रियान्वित ही किए रखना चाहिए।

प्रतिभा त्रिवेणी की तरह है, जिसमें शारीरिक ओजस्, मानसिक तेजस् और अंतराल में सन्निहित वर्चस् को जगाना, उभारना और प्रखरता संपन्न बनाने के स्तर तक उठाना पड़ता है। संयम सध सके तो स्वस्थ रहने की गारंटी मिल जाती है। उपयुक्त काम का चुनाव करके; उसमें अभिरुचि, एकाग्रता और तत्परता का नियोजन किए रखा जाए, तो साधारण काम-काज भी इस अभ्यास के सहारे अधिकाधिक बुद्धिमत्ता और कुशलता प्रदान करते चलते हैं। इसी आधार पर शारीरिक ओजस् और मानसिक तेजस् की उतनी मात्रा उपलब्ध हो सकती है, जिस पर संतोष और गर्व अनुभव किया जा सके। सदाशयता पर सघन श्रद्धा के होने का नाम ही वर्चस् है। आदर्शवादिता इसी अवलंबन को अपनाती है और उत्कृष्टता को इससे कम में चैन नहीं पड़ता। वर्चस् जिसके भी अंतराल में उभरता है उसमें शालीनता की, सदाशयता की, सज्जनता की कमी नहीं रहती।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! मानवीय सत्ता के तीन पक्ष हैं-शरीर, मस्तिष्क और अंतःकरण। इन्हीं को स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर कहते हैं। इनमें काम करने वाली जीवट को ही प्राणाग्नि, लोगोस, बायो इलेक्ट्रीसिटी, जीवनी शक्ति, विद्युत् चेतना आदि नामों से जाना जाता है। यही क्रमशः ओजस्, तेजस् और वर्चस् कहलाते हैं। उनका सामान्य संतुलन आरोग्य के नाम से जाना जाता है। इसे सही स्थिति में रखे रखना ही स्वास्थ्य रक्षा, समर्थता, बलिष्ठता आदि नामों से जाना जाता है। आंतरिक स्तर पर उसका सुनियोजन ही प्रतिभा के रूप में प्रकट होता है। इसे गिरा देना, सँभाले रखना या प्रखर बनाना, पूर्णतया मनुष्य के अपने हाथ में है। यह प्रक्रिया किसी बाहरी सहायता पर निर्भर नहीं होती। भाग्य, आनुवांशिकी, शाप या वरदान इसमें हस्तक्षेप नहीं कर पाते। पिछला कर्म आज के भाग्य के रूप में सुख-दुख भर दे सकता है। प्रतिभावान् दुःख को भी विकास का आधार बना लेते हैं तथा प्रमादी सुख को भी पतन का कारण बना लेते हैं। जीवट प्राणाग्नि के विकास की प्रक्रिया हर स्थिति में चलती रह सकती है।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! वस्तुतः मनुष्य का चिंतन, चरित्र और व्यवहार बुरी तरह गड़बड़ा गया है। उसकी स्थिति तो विक्षिप्तों जैसी हो गई है, उसी से ऐसे ऊटपटांग काम होने लगे हैं, जिनके कारण अपने और दूसरों के लिए विपत्ति ही विपत्ति उत्पन्न हो गई है। पगलाए हुए व्यक्ति द्वारा की गई तोड़ फोड़ की मरम्मत तो होनी चाहिए, पर साथ ही उस उन्माद की रोकथाम भी होनी चाहिए, जिसने भविष्य में भी वैसी ही उद्दंडता करते रहने की आदत अपनाई है।

मनुष्य को अड़चने से निपटने के लिए योजना बनानी और तैयारी करनी चाहिए। निराश होने से मात्र आशंकाओं का आतंक ही बढ़ेगा। यहाँ यह तथ्य भी स्मरण रखने योग्य है कि सामान्य जन अपनी निजी समस्याओं को ही किसी प्रकार संभालते, सुधारते रहते हैं, पर व्यापक विपत्ति से मिलजुल कर ही निपटना पड़ता है। बाढ़ आने, महामारी फैलने जैसे अवसरों पर सामूहिक योजनाएँ ही काम देती हैं। पुरातन भाषा में ऐसे ही महत्वपूर्ण परिवर्तन को युग परिवर्तन अथवा अवतार अवतरणों जैसे नामों से पुकारा जाता रहा है। ऐसे तूफानी परिवर्तनों को महाक्रांति भी कहते हैं। क्रांतियाँ प्रतिकूलताओं से निपटने के लिए संघर्ष रूप में उभरती हैं, पर महाक्रांतियों को दूरगामी योजनाएं बनानी पड़ती हैं। अनीति के विरुद्ध संघर्ष छेड़ने के साथ साथ नव सृजन के निर्धारण करने एवं कदम उठाने पड़ते हैं। इस अपने समय में अदृश्य में पक रही खिचड़ी को महाक्रांति के रूप में जाना जाए और युग परिवर्तन कहा जाए इक्कीसवीं सदी के उज्ज्वल भविष्य की संरचना जैसा कुछ नाम दिया जाए, तो भी कोई हर्ज नहीं।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! पञ्चशील और चार वर्चस्, इस प्रकार यह नौ की संख्या युग धर्म के अनुरूप बैठती है। सौर मण्डल के ग्रह नौ हैं। नवरत्न और ऋद्धि-सिद्धियाँ भी नौ की संख्या में ही प्रख्यात है। इन नौ गुणों में से, जो जितनों को जिस अनुपात में अपना सके, वे उतने ही बड़े ईश्वर भक्त और धर्मात्मा कहलाए। इन्हें यदि योगाभ्यास और तप-साधना कहा जाए, तो भी कुछ अत्युक्ति न होगी।

धर्म और कर्म में उतारी-अपनाई गई उत्कृष्टता -आदर्शवादिता ही प्रकारांतर से स्वर्ग जैसा उल्लास भरा मानस और जीवन मुक्ति जैसी तृप्ति, तुष्टि एवं शान्ति प्रदान कर सकने में हाथों-हाथ समर्थ होती है। उनके लिए देर तक किसी को भी प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती। किम्वदन्तियों के अनुसार मरने के उपरान्त ही स्वर्ग मुक्ति जैसी उपलब्धियों को प्राप्त किया जा सकता है, किन्तु यदि कल्पनाओं की उड़ान से नीचे उतर कर व्यावहारिक धर्म-कर्म में नौ सूत्री उत्कृष्टता का समावेश किया जाए, तो जीवित रहते हुए भी स्वर्गीय अनुभूतियों और मुक्ति स्तर की विभूतियों का हर घड़ी रसास्वादन करते रहा जा सकता है। इतना ही नहीं, इन दो के अतिरिक्त एक और तीसरा लाभ भी प्राप्त किया जा सकता है। सिद्धियों के चमत्कार भी हस्तगत हो जाते हैं। सफलताएँ खिंचती हुई चली आती हैं और मनस्वी के पैरों तले लोटने लगती हैं।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! इतिहास बताता है कि हर कल्पना, हर अप्रत्याशित घटनाक्रम को मूर्त रूप देने का कार्य दैवी चेतना ने मानवी प्रज्ञा के माध्यम से ही किया है। राजनीतिज्ञ, समाज सुधारक, चिंतक, प्रकृति के रहस्यों की खोज करने वाले तथ्यान्वेषी, लेखक, कवि, संगीतकारों को भी भावी कार्यों संबंधी प्रेरणा इसी आधार पर मिलती रही है। यहाँ तक कि असंभव को संभव कर दिखाने वाली प्रकृति प्रेरणा भी अचेतन में ही जन्मी व मिस्र के पिरामिड, चीन की दीवार, पनामा-स्वेज नहर, ताजमहल, हालैण्ड द्वारा समुद्र में डूबी धरती पर खेती आदि जैसे काम संपन्न होते चले गए, जिन्हें युगांतरकारी कहा जाता है। जिन्हें डाक व्यवस्था, नोट करेंसी का प्रचलन करने की सूझी अथवा समाज व्यवस्था हेतु प्रचलन परंपराएँ बनानी पड़ीं, उन्हें भी अंतर्प्रथा ने बोध कराया होगा, परब्रह्म की प्रेरणा उन्हें मिली होगी। पैगम्बरों देवदूतों की बात करते हैं, तो आशय ऐसी ही विभूतियों से होता है, जिन्हें इलहाम होता रहा है। जिनकी विकसित चेतना भविष्य को पढ़ पाने में समर्थ रही है।

वही अंतःप्रेरणा, विकसित चेतना आज भविष्य पर दृष्टि डाले कुछ कहने पर उतारू है। आज संकटों से भरी वेला में दोनों ही प्रकार के भविष्य कथन हमारे सामने हैं। एक वे जिनमें आगामी वर्ष व इक्कीसवीं सदी के पूर्वार्ध को खतरों-संकटों से घिरा बताया गया है, दूसरी वे जिनमें भविष्य के संबंध में उज्ज्वल संभावनाएँ प्रकट की गइ हैं। इन्हीं का कहना है कि यदी मानवी प्रयास क्रम उलट दिए जाएँ, दिशा बदल ली जाए, गलती सुधार ली लाए, तो संभावित विपत्तियों के घटाटोप छँट सकते हैं। घटा कितनी ही काली एवं डरावनी क्यों न हो, तेज आँधी उसे कहीं से कहीं पुहँचा देती है, उसकी भयावहता को निरस्त कर देती है। यही बात मानवी पुरुषार्थ के बारे में भी लागू होती है। वह चाहे तो हर भवितव्यता को बदल सकता है।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! क्रिया की प्रतिक्रिया होना सुनिश्चित है। घड़ी को पेंडुलम एक सिरे तक पहुँचने के बाद वापस दूसरे सिरे की ओर लौट पड़ता है। अति बरतने वाले कुछ ही समय बाद पछताते और सही स्थिति प्राप्त करने के लिए तरसते देखे गए हैं। विषैले पदार्थ खा बैठने पर उल्टी-दस्त तो लगते ही हैं, जन जोखिम तक का खतरा सामने खड़ा होता है। क्रोधी को बदले में प्रतिशोध सहना पड़ता है। दुर्व्यसनी अपनी सेहत, खुशहाली और इज्ज़त तीनों ही गँवा बैठता है। अपव्ययी लोग तंगी भुगतते देखे गए हैं। कुकर्मी, लोक और परलोक दोनों ही बिगाड़ लेते हैं। इसके विपरीत परिश्रमी, अनुशासित और मनोयोगपूर्वक व्यस्त रहने वाले अभीष्ट उद्देश्य की पूर्ति में दिन-रात सफल होते चले जाते हैं।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! धुलाई के बिना रंगाई निखरती कहाँ है? गलाई के बिना ढलाई किसने कर दिखाई है? मल-मूत्र से सने बच्चे को माता तब ही गोद में उठाती है, जब उसे नहला-धुला कर साफ-सुथरा बना देती है। मैला-गंदला पानी पीने के काम कहाँ आता है? मैले दर्पण में छवि कहाँ दीख पड़ती है? जलते अंगारे पर यदि राख की परत जम जाए, तो न उसमें गर्मी का आभास होता है, न चमक का। बादलों से ढँक जाने पर सूर्य-चन्द्र तक अपना प्रकाश धरती तक नहीं पहुँचा पाते। कुहासा छा जाने पर दिन में भी लगभग रात जैसा अंधेरा छा जाता है और कुछ दूरी की वस्तुएँ तक सूझ नहीं पड़तीं।

इन्हीं सब उदाहरणों को देखते हुए अनुमान लगाया जा सकता है कि मनुष्य यदि लोभ की हथकड़ियों, मोह की बेड़ियों और अहंकार की जंजीरों में जकड़ा हुआ रहे, तो उसकी समस्त क्षमताएँ नाकारा बन कर रह जाएँगी। बँधुआ मजदूर रस्सी में बँधे पशुओं की तरह बाधित और विवश बने रहते हैं। वे अपना मौलिक पराक्रम गँवा बैठते हैं और उसी प्रकार चलने-करने के लिए विवश होते हैं, जैसा कि बाँधने वाला उन्हें चलने के लिए दबाता-धमकाता है। कठपुतलियाँ अपनी मर्जी से न उठ सकती हैं, न चल सकती हैं। मात्र मदारी ही उन्हें नचाता-कुदाता है।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! तृष्णाओं की खाई इतनी गहरी है, जिसे रावण, हिरण्यकश्यपु, वृत्तासुर जैसे प्रबल पराक्रमी भी समूचा पौरुष दाँव पर लगा देने के बाद भी पाट सकने में तनिक भी समर्थ न हुए। सिकंदर जैसे सफलताओं के धनी भी मुट्ठी बाँधे आए और हाथ पसारे चले गए। अहंकार प्रदर्शित करने के दर्प में, संसार भर को चुनौती देने और ताल ठोकने वाले किसी समय के दुर्दान्त दैत्यों में से अब कोई कहीं दीख नहीं पड़ता। राजाओं के मणि-मुक्तकों से जड़े राजमुकुट और सिंहासन, न जाने धराशायी होकर कहाँ धूलचाट रहे होंगे? यह करतूतें उन्हीं पैशाचिक दुष्प्रवृत्तियों की हैं, जो मनुष्य पर उन्माद की तरह हैं और उसकी बहुमूल्य जीवन-सम्पदा को कौड़ी के मोल गँवा देने के लिए दिग्भ्रमित करती रहती हैं।

स्वार्थ सिद्धि की ललक-लिप्सा वस्तुतः अनर्थ के अतिरिक्त और कुछ हाथ लगने नहीं देती। स्थिति उस जादुई राजमहल जैसी बन जाती है, जिसमें प्रवेश करने पर दुर्योधन को जल के स्थान पर थल और थल के स्थान पर जल दीखने लगा था। जो करना चाहिए, उसका निरन्तर तिरस्कार-बहिष्कार ही होता रहता है और अपनी चतुरता की डींग हाँकने वाले निरन्तर वह करते रहते हैं, जो नहीं कहीं करना चाहिए। इस मानसिकता को, व्यामोह या सम्मोहन नाम देने के अतिरिक्त और क्या कहा जाए? क्या यह दुर्गति और दुर्गंध से भरी दुर्दशा ही मानव जीवन की नियति

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! पञ्चशील और चार वर्चस्, इस प्रकार यह नौ की संख्या युग धर्म के अनुरूप बैठती है। सौर मण्डल के ग्रह नौ हैं। नवरत्न और ऋद्धि-सिद्धियाँ भी नौ की संख्या में ही प्रख्यात है। इन नौ गुणों में से, जो जितनों को जिस अनुपात में अपना सके, वे उतने ही बड़े ईश्वर भक्त और धर्मात्मा कहलाए। इन्हें यदि योगाभ्यास और तप-साधना कहा जाए, तो भी कुछ अत्युक्ति न होगी।

धर्म और कर्म में उतारी-अपनाई गई उत्कृष्टता -आदर्शवादिता ही प्रकारांतर से स्वर्ग जैसा उल्लास भरा मानस और जीवन मुक्ति जैसी तृप्ति, तुष्टि एवं शान्ति प्रदान कर सकने में हाथों-हाथ समर्थ होती है। उनके लिए देर तक किसी को भी प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती। किम्बदन्तियों के अनुसार मरने के उपरान्त ही स्वर्ग मुक्ति जैसी उपलब्धियों को प्राप्त किया जा सकता है, किन्तु यदि कल्पनाओं की उड़ान से नीचे उतर कर व्यावहारिक धर्म-कर्म में नौ सूत्री उत्कृष्टता का समावेश किया जाए, तो जीवित रहते हुए भी स्वर्गीय अनुभूतियों और मुक्ति स्तर की विभूतियों का हर घड़ी रसास्वादन करते रहा जा सकता है। इतना ही नहीं, इन दो के अतिरिक्त एक और तीसरा लाभ भी प्राप्त किया जा सकता है। सिद्धियों के चमत्कार भी हस्तगत हो जाते हैं। सफलताएँ खिंचती हुई चली आती हैं और मनस्वी के पैरों तले लोटने लगती हैं।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! राजमार्ग पर चलने वाले भटकते नहीं। झाड़-झंखाड़ों में वे उलझते हैं, जिन्हें छलांग लगाकर तुर्त-फुर्त, बिना पुरुषार्थ का परिचय दिए ही बहुत कुछ पा लेने की ललक सताती है। आकुल-व्याकुल मनःस्थिति में आनन-फानन इन्द्र जैसा वर्चस् और कुबेर जैसा वैभव कहीं से भी उड़ा लाने की मानसिकता ही लोगों को हैरान करती रहती है। ऐसे ही व्यक्ति साधना से सिद्धि के सिद्धान्त पर लांछन लगाते और आरोप थोपते हुए देखे गए हैं। नौ गुणों का नौ सूत्रों वाला यज्ञोपवीत धारण करने की विधा इसी संकेत पर ध्यान केन्द्रित किए रहने के लिए विनिर्मित की गई है कि पञ्च तत्त्वों से बनी, रक्त ,मांस, अस्थि जैसे पदार्थों से अंग-प्रत्यंगों को जड़-गाँठ कर खड़ी की गई, इस मानव काया को यदि नौलखा हार से सुसज्जित करना हो, तो उन नौ गुणों को चिंतन, चरित्र, व्यवहार में-गुण, कर्म, स्वभाव में गहराई तक समाविष्ट किया जाए। उन्हें क्रियाकलाप में, अभ्यास में शामिल करने के लिए प्राण-प्रण से प्रयत्न करना चाहिए।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! गायत्री-उपासना द्वारा अनेक भौतिक सिद्धियों व उपलब्धियों के मिलने का इतिहास पुराणों में वर्णित है। वशिष्ठ के आश्रम में विद्यमान नंदिनी रूपी गायत्री ने राजा विश्वामित्र की सहस्त्रों सैनिकों वाली सेना की कुछ ही पलों में भोजन-व्यवस्था बनाकर, उन सबको चकित कर दिया था। गौतम मुनि को माता गायत्री ने अक्षय पात्र प्रदान किया था, जिसके माध्यम से उन दिनों की दुर्भिक्ष-पीड़ित जनता को आहार प्राप्त हुआ था। दशरथ का पुत्रेष्टि यज्ञ संपन्न कराने वाले शृंगी ऋषि को गायत्री का अनुग्रह ही प्राप्त था, जिसके सहारे चार देवपुत्र उन्हें प्राप्त हुए। ऐसी ही अनेक कथा-गाथाओं से पौराणिक साहित्य भरा पड़ा है, जिसमें गायत्री-साधना के प्रतिफलों की चमत्कार भरी झलक मिलती है।

गायत्री के चौबीस अक्षरों का अलंकारिक रूप से अन्य प्रसंगों में भी निरूपण किया गया है। भगवान् के दस ही नहीं, चौबीस अवतारों का भी पुराणों में वर्णन है। ऋषियों में सप्त ऋषियों की तरह उनमें से चौबीस को प्रमुख माना गया है-ये गायत्री के अक्षर ही हैं। देवताओं में से त्रिदेवों की ही प्रमुखता, है पर विस्तार में जाने पर पता चलता है कि वे इतने ही नहीं वरन् चौबीस की संख्या में भी मूर्द्धन्य प्रतिष्ठा प्राप्त करते रहे हैं। महार्षि दत्तात्रेय ने ब्रह्माजी के परामर्श से चौबीस गुरुओं से अपनी ज्ञान-पिसासा को पूर्ण किया था। ये चौबीस गुरु प्रकारांतर से गायत्री के चौबीस अक्षर ही हैं।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! एक विलक्षणता गायत्री महामंत्र में यह है कि इसके अक्षर, शरीर एवं मनः तंत्र के मर्मकेन्द्रों पर ऐसा प्रभाव छोड़ते हैं कि कठिनाइयों का निराकरण एवं समृद्धि-सुविधाओं का सहज संवर्द्धन बन पड़े। टाइपराइटर पर एक जगह कुंजी दबाई जाती है और दूसरी जगह संबद्ध अक्षर छप जाता है। बहिर्मन पर, विभिन्न स्थानों पर पड़ने वाला दबाव एवं कंठ के विभिन्न स्थानों पर विभिन्न शब्दों का उच्चारण अपना प्रभाव छोड़ता है और इन स्थानों पर पड़ा दबाव सूक्ष्म-शरीर के विभिन्न शक्ति-केंन्द्रों को उद्वेलित-उत्तेजित करता है। योगशास्त्रों में षट्चक्रों, पंचकोशों, चौबीस ग्रंथियों, उपत्यिकाओं और सूक्ष्म नाड़ियों का विस्तारपूर्वक वर्णन है, उनके स्थान, स्वरूप के प्रतिफल आदि का भी विवेचन मिलता है,साथ ही यह भी बताया गया है कि इन शक्ति-केंद्रों को जागृत कर लेने पर साधक उन विशेषताओं-विभूतियों से संपन्न हो जाता है। इनकी अपनी-अपनी समर्थता, विशेषता एवं प्रतिक्रिया है। गायत्री मंत्र के २४ अक्षरों का इनमें से एक-एक से संबंध है। उच्चारण से मुख, तालु, ओष्ठ कंठ आदि पर जो दबाव पड़ता है, उसके कारण ये केंन्द्र अपने-अपने तारतम्य के अनुरूप वीणा के तारों की तरह, झंकृत हो उठते हैं- सितार के तारों की तरह, वायलिन-गिटार की तरह, बैंजो-हारमोनियम की तरह झंकृत हो उठते और एक ऐसी स्वरलहरी निःसृत करते हैं, जिससे प्रभावित होकर शरीर मे विद्यमान दिव्य-ग्रंथियाँ जाग्रत होकर अपने भीतर उपस्थित विशिष्ट शक्तियों के जाग्रत एवं फलित होने का परिचय देने लगती हैं। संपर्क साधने के मंत्र का उच्चारण टेलेक्स का काम करता है। रेडियो या दूरदर्शन -प्रसारण की तरह शक्तिधाराएँ यों सब ओर निःसृत होती हैं, पर उस केंद्र का विशेषतः स्पर्श करती हैं, जो प्रयुक्त अक्षरों के साथ शक्ति-केंद्रों को जोड़ता है।

आज का सद्‌चिंतन

मित्रो ! भारतीय संस्कृति के बहूमूल्य निर्धारणों और अनुशासनों का सारतत्व खोजना हो तो उसे चौबीस अक्षरों वाले गायत्री महामंत्र का मंथन करके जाना जा सकता है। भारतीय संस्कृति का इतिहास खोजने से पता लग सकता है कि प्राचीनकाल में इस समुद्रमंथन से कितने बहुमूल्य रत्न निकले थे तथा भारतभूमि को 'स्वर्गादपि गरीयसी' बनाने में उस मंथन से निकले नवनीत ने कितने बड़ी भूमिका निबाही थी। मनुष्य में देवत्व का उदय कम-से कम भारतभूमि का कमलपुष्प तो कहा ही जा सकता है। जब वह फलित हुआ तो उसका अमरफल इस भारतभूमि को स्वर्गादपि 'गरीयसी' बना सकने में समर्थ हुआ।

भारत को जगद्‌गुरू, चक्रवर्ती व्यवस्थापक और दिव्य संपदाओं का उद्‌गम कहा जाता है। समस्त विश्व में इसी देश के अजस्त्र अनुदान अनेक रूपों में बिखरे हैं। यह कहने में कोई अत्युक्ति प्रतीत नहीं होती कि संपदा, सभ्यता और सुसंस्कारिता की प्रगतिशीलता इसी नर्सरी में जमी और उसने विश्व को अनेकानेक विशेषताओं और विभूतियों से सुसंपन्न किया।

भारतीय संस्कृति का तत्वदर्शन गायत्री महामंत्र के चौबीस अक्षरों की व्याख्या-विवेचना करते हुए सहज ही खोजा और पाया जा सकता है। गायत्रीगीता, गायत्रीस्मृति, गायत्रीसंहिता, गायत्रीरामायण, गायत्री-लहरी आदि संरचनाओं को कुरेदने से अंगारे का वह मध्य भाग प्रकट होता है, जो मुद्‌दतों से राख की मोटी परत जम जाने के कारण अदृश्य- अविज्ञात स्थिति में दबा हुआ पड़ा था।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! आने वाले दिन हमको बहुत शानदार दिखलाई पड़ रहे हैं। आपको दिखाई पड़ रहा है या नहीं, हम नहीं कह सकते। इस बार गायत्री माता सभी को देवता बनाना चाहती हैं। वे सभी को महान बनाना चाहती हैं। इस समय आप लोगों को कुछ विशेष काम करने हैं। आप सब लोग लोभ, मोह की बेड़ियों को काट डालिये। अरे ये हथकड़ियाँ आपके हाथों में लगी हैं, उसे काटिये। ढेरों की ढेरों अकल, समय हर आदमी के पास है। आपने अभी तक इसे बेकार में खर्च किया है तथा बर्बाद किया है। अब आप समझदार आदमी बन जाएँ तथा इसका उपयोग अब आप सही ढंग से करना सीखें। आप कम में गुजारा करना सीखिये। औसत भारतीय का जीवन जीना सीखिये, ताकि कुछ राष्ट्र एवं समाज के लिए भी खर्च कर सकें।

आप अपने बच्चों को संस्कारवान बनाने का प्रयास करें। आपका बच्चा लुहार, बढ़ई हो जाए तो कोई हर्ज की बात नहीं है। अगर आप बड़े आदमी, जैसे-वकील, दरोगा, डॉक्टर, इंजीनियर न बनाकर उसे संस्कारवान बनाएँ तो बेहतर है। ये बड़े आदमी आपके लिये, अपने लिये, समाज के लिये समस्या बन जाएँगे तथा तबाही लाएँगे। आप उन्हें संस्कारवान बनाएँ। आप अपने विचारों में अगर परिवर्तन कर सकें, तो बहुत मजा आयेगा।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! भगीरथ एक राजकुमार था। उसके राजपाट थे, परन्तु उसने आदमी की खुशहाली के लिए अपना स्वार्थ, लोभ त्याग दिया। भगवान की भक्ति आती है तो करुणा के रूप में आती है, दया के रूप में आती है। भगीरथ के हृदय में भी माता का उदय हुआ था। उसके सीने में, कलेजे में करुणा बही होगी। यह भावना की गंगा थी, जो विशाल होती चली गयी। भगीरथ ने गंगा को मजबूर कर दिया कि आप स्वर्ग में बैठी हैं तथा धरती के लोग एक-एक बूँद पानी के लिए मजबूर हो रहे हैं, आपको शर्म आनी चाहिए। स्वर्ग की गंगा जो महलों में रहती थी, आराम का जीवन जीती थी, वह भगीरथ की करुणा, त्याग एवं परमार्थ की भावना को देखकर मजबूर हो गई इस धरती पर आने के लिये। गंगा ने सारे समाज को धन्य कर दिया। हम किसी औरत की जयंती मनाने नहीं आये हैं। उदारता की, इन्सानियत की जयंती मनाने आये हैं। गायत्री को हम माता कहते हैं, गंगा को भी हम माता कहते हैं। माता कोई देवी या औरत का नाम नहीं है। माता एक आदर्श का नाम है, सिद्धान्त का नाम है।

मित्रो ! अगले दिनों लोगों को खाने से ज्यादा मजा खिलाने में आयेगा। अकेले खाने वालों को अगले दिनों लोग यह कहेंगे कि आपको शर्म नहीं आती है, आप खाते चले जाते हैं, खाते चले जाते हैं। आपको शर्म आनी चाहिए। पड़ोसी तथा पीड़ित-पतित एवं भूखे लोग आपको दिखलाई नहीं पड़ते हैं। केवल अपना पेट, अपनी बीबी, अपने बच्चे ही दिखलाई पड़ते हैं। आपके भीतर से जब गायत्री माता उदय होंगी तो आपको चमकाकर रख देंगी। आपके विचारों में परिवर्तन कर देंगी। आपको सारा परिवार, समाज देश दिखलाई पड़ेगा। आप देवता बनते चले जाएँगे।

आज का सद्चिंतन

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! ''आतंकवाद'' वस्तुतः कुछ गिने चुने दहशतगर्जों की कारस्तानी है जो पूरे विश्व में फैले हैं। इस पर पूज्यवर का मत है कि इसके लिए समूह मन जगाना होगा। भ्रष्ट चिन्तन बदलेगा। समूह साधना के प्रयोगों से-जनमानस के जागरण से, सृजेताओं की एक नई पीढ़ी के विकास से जो हममें से ही विकसित होगी। गायत्री साधना में बड़ी शक्ति है एवं इसके सबके लिए सद्बुद्धि वाले प्रयोग स्थान-स्थान पर चलने चाहिए। आगे वे कहते हैं कि ''अपव्यय इन दिनों चरम सीमा पर है। नशेबाजी (शराब की खपत बड़ी तेजी से बढ़ी है)से, फैशनपरस्ती और आभूषणों की सज-धज से, खर्चीली शादियों से कितना धन और समय बरबाद होता है, वह किसी से छिपा नहीं है। श्रृंगारिक सजधज से न केवल पैसा बरबाद होता है वरन् कामुक उत्तेजना को प्रश्रय मिलता है, व्यभिचार का पथ प्रशस्त होता है।'' आज पूज्यवर के इस कथन से प्रत्यक्ष देखा जा सकता है कि कितनी तेजी से प्रदर्शनवृत्ति, फैशनपरस्ती, ब्यूटीपार्लर्स, कामुक उत्तेजना भड़काने का तथा इससे जुड़े उपभोक्तावाद एवं पार्टीबाजी, व्यभिचार आदि को बढ़ावा मिला है। फैशन परेड अब कस्बे स्तर पर होने लगती है। देहवादी मानसिकता बढ़ती जा रही है। अनावश्यक पैसा शरीर पर खर्च हो रहा है। अगणित मात्रा में भोजन जो गरीबों में बाँटा जा सकता था, शादी-विवाह की अन्य रस्मों व अन्य पार्टियों में व्यर्थ फेंका जा रहा है। यह तब है जब बहुत बड़े तबके के पास खाने के लिए एक समय का भी भोजन नहीं है। इसके लिए भी एक जन आंदोलन चलाना होगा-हमें ही समाधान देना होगा।

दिनाँक-२१/०१/२००८

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! जीवंतों, जाग्रतों और प्राणवान् में से प्रत्येक को अनुभव करना चाहिए कि यह ऐसा विशेष समय है, जैसा कि हजारों लाखों वर्षों बाद कभी एक बार आता है। गाँधी के 'सत्याग्रही' और बुद्ध के 'परिव्राजक' बनने का श्रेय समय निकल जाने पर अब कोई किसी भी मूल्य पर नहीं पा सकता। हनुमान और अर्जुन की भूमिका हेतु फिर से लालायित होने वाला कोई व्यक्ति कितने ही प्रयत्न करे, अब दुबारा वैसा अवसर हस्तगत नहीं कर सकता। समय की प्रतीक्षा तो की जा सकती है, पर समय किसी की भी प्रतीक्षा नहीं करता। भगीरथ, दधीचि और हरिश्चंद्र जैसा सौभाग्य अब उनसे भी अधिक त्याग करने पर भी पाया नहीं जा सकता।

समय बदल रहा है। प्रभातकाल का ब्रह्ममुहूर्त्त अभी है। अरुणोदय के दर्शन अभी हो सकते हैं। कुछ घण्टे ऐसे हैं, वे यदि प्रमाद में गँवा दिये जाएँ तो अब वह गया समय लौटकर फिर किस प्रकार आ सकेगा? युगपरिवर्तन की वेला ऐतिहासिक और असाधारण अवधि है। इसमें जिनका जितना पुरुषार्थ होगा, वह उतना ही उच्चकोटि का शौर्यपदक पा सकेगा। समय निकल जाने पर-साँप निकल जाने पर-लकीर को लाठियों से पीटना भर ही शेष रह जाता है।

इन दिनों मनुष्य का भाग्य और भविष्य नए सिरे से लिखा और गढ़ा जा रहा है। ऐसा विलक्षण समय कभी हजारों-लाखों वर्षों बाद आता है। इसे चूक जाने वाले सदा पछताते ही रहते हैं और जो उसका सदुपयोग कर लेते हैं, वे अपने आपको सदा-सर्वदा के लिए अजर-अमर बना लेते हैं। गोवर्धन एक बार ही उठाया गया था। समुद्र पर सेतु भी एक ही बार बना था। कोई यह सोचता रहे कि ऐसे समय तो बार-बार आते ही रहेगें और हमारा जब भी मन करेगा, तभी उसका लाभ उठा लेंगे तो ऐसा समझने वाले भूल ही कर रहे होंगे। इस भूल का परिमार्जन फिर कभी

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! वासना और तृष्णा की खाई इतनी चौड़ी और गहरी है कि उसे पाटने में कुबेर की संपदा और इंद्र की समर्थता भी कम पड़ती है। तृष्णा की रेगिस्तानी जलन को बुझाने के लिए साधन सामग्री का थोड़ा-सा पानी, कुछ काम नहीं करता। अतृप्ति जहाँ की तहाँ बनी रहती है। थोड़े से उपभोग तो उस ललक को और भी तेजी से आग में ईंधन पड़ने की तरह भड़का देते हैं।

मन के छुपे रुस्तम का तो कहना ही क्या? वह यक्ष राक्षस की तरह अदृश्य तो रहता है, पर कौतुक-कौतूहल इतने बनाता-दिखाता रहता है कि उस व्यामोह में फँसा मनुष्य दिग्भ्रांत बनजारे की तरह, इधर-उधर मारे-मारे फिरने में ही अपनी समूची चिंतन क्षमता गँवा-गुमा दे। तृष्णा तो समुद्र की चौड़ाई और गहराई से भी बढ़कर है। उसे तो भस्मासुर, वृत्रासुर, महिषासुर जैसे महादैत्य भी पूरी न कर सके, फिर बेचारे मनुष्य की तो विसात ही क्या है, जो उसे शांत करके संतोष का आधार प्राप्त कर सके।

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! दैवी अनुग्रह के संबंध में भी लोगों की विचित्र कल्पनाएँ हैं। वे उन्हीं छोटी संभावनाओं को दैवी अनुकंपा मानते रहते हैं, जो सामान्य पुरुषार्थ से अथवा अनायास ही संयोगवश लोगों को उपलब्ध होती रहती है। मनोकामनाओं तक ही उनका नाक रगड़ना, गिड़गिड़ाना सीमित रहता है, जिसे वे दैवी अनुकंपा मानते हैं। आत्मबल एवं आत्मविश्वास न होने से जो कुछ प्राप्त होता, है, उसे पुरुषार्थ का प्रतिफल मानकर उनका मन संतुष्ट ही नहीं होता, उनके लिए हर सफलता दैवी अनुग्रह और हर असफलता दैवी प्रकोप मात्र प्रतीत होती है। ऐसे दुर्बल चेताओं की बात छोड़ दें तो यथार्थता समझ में आ जाती है पर अंततः एक ही तथ्य सामने आता है कि मनुष्य जब आदर्शवादी अनुकरणीय-अभिनंदनीय कर्मों को करने के लिए उमंगों-तरंगों से भर जाता है तो वह असाधारण कदम उठाने लगता है। रावण की सभा में अंगद का पैर उखाड़ना तक असंभव प्रतीत होने लगा था। औसत आदमी को तो हर काम असंभव लगता है। ऐसे छोटा त्याग करना भी उसे पहाड़ उठाने जैसा भारी पड़ता है, जो वस्तुतः हलके-फुलके ही होते हैं और हिम्मत के धनी आदर्शवादी, जिन्हें आए दिन करते रहते हैं।

दिनाँक-२८/०५/२००८

आज का सद्चिंतन

आत्मपरिवर्तन के साथ-साथ यही जाग्रत आत्माएँ विश्व परिवर्तन की भूमिका प्रस्तुत करेंगी। प्रकाशवान ही प्रकाश दे सकता है। आग से आग उत्पन्न होती है। जागा हुआ ही दूसरों को जगा सकता है। जागरण की भूमिका जाग्रत आत्माएँ ही निभाएँगी। आत्मपरिवर्तन की चिनगारियाँ ही युग परिवर्तन के प्रचण्ड दावानल का रूप धारण करेंगी। यही सब तो इन दिनों हो रहा है। जाग्रत आत्माओं में एक असाधारण हलचल इन दिनों उठ रही है। उनकी अन्तरात्मा उन्हें पग-पग बेचैन कर रही हैं, ढर्रे का पशु जीवन नहीं जिएँगे, पेट और प्रजनन के लिए-वासना और तृष्णा के लिए जिन्दगी के दिन पूरे करने वाले नरकीटों की पंक्ति में नहीं खड़े रहेंगे, ईश्वर के अरमान और उद्देश्य को निरर्थक नहीं बनने देंगे। लोगों का अनुकरण नहीं करेंगे, उनके लिए स्वतः अनुकरणीय आदर्श बनकर खड़े होंगे। यह आन्तरिक समुद्र मन्थन इन दिनों हर जीवित और जाग्रत आत्मा के अन्दर इतनी तेजी से चल रहा है कि वे सोच नहीं पा रहे कि आखिर यह हो क्या रहा है वे पुराने ही हैं पर भीतर कौन घुस पड़ा जो उन्हें ऊँचा सोचने के लिए ही नहीं, ऊँचा करने के लिए भी विवश, बेचैन कर रहा है। निश्चित रूप से यह ईश्वरीय प्रेरणा का अवतरण है।

युग निर्माण योजना दर्शन, स्वरूप व कार्य पृष्ठ-२.१४

आज का सद्‌चिंतन

महापरिवर्तन जब भी कभी आरंभ होगा, तब उसका स्वरूप एक ही होगा कि विद्या को जीवित-जागृत किया जाए। उसके प्रचार-विस्तार का इतना प्रचंड प्रयास किया जाए कि लंबे समय से छाए हुए कुहासे को हटाया जा सके और उस प्रकाश को उभारा जाए, जो हर वस्तु का यथार्थ स्वरूप दिखाता और किसका, किस प्रकार सहयोग होना चाहिए-यह सिखाता है।

प्राचीनकाल में साक्षरता का, भाषा और लिपि का महत्त्व तो सभी समझते थे और उसे पुरोहित-यजमान मिलजुल कर हर जगह सुचारु रूप से पूरा कर लेते थे। पुरोहितों की आजीविका हेतु शिक्षार्थियों के अभिभावक दान-दक्षिणा के रूप में जो दे दिया करते थे, वही अपरिग्रही, मितव्ययी जीवन जीने वाले ब्राह्मणों के लिए पर्याप्त होती थी। शिक्षा-साक्षरता के लिए कोई विशेष योजना या व्यवस्था नहीं बनानी पड़ती थी।

संजीवनी विद्या का दायित्व ऋषि वर्ग के मनीषी उठाते थे। जो अधिकारी होते थे, उन्हें अपने आश्रमों, गुरुकुलों एवं आरण्यकों में बुलाते थे। उपयुक्त वातावरण में उपयुक्त अभ्युदय की समुचित योजना चलाते थे।

समस्याएँ आज की समाधान कल के पृष्ठ-३४

दिनाँक-३०/०५/२००६

आज का सद्चिंतन

मित्रो ! स्मरण रहे-युग निर्माण का संकल्प महाकाल का है, केवल जानकारी पहुँचाने और आवश्यक व्यवस्था जुटाने का काम शांतिकुंज के संचालकों ने अपने कंधों पर धारण किया है, मौलिक श्रेय तो उसी महाशक्ति का है, जिसने मनुष्य जैसे प्राणी की सीमित शक्ति से किसी भी प्रकार न बन पड़ने वाले कार्यों को करने की प्रेरणा दी है और काम में जुट जाने के लिए आगे धकेल कर बाध्य किया है। वही इस प्रयोजन को पूर्ण भी करेगी, क्योंकि युगपरिवर्तन का नियोजन भी उसी का है।

शांतिकुंज के संचालक प्रायः अस्सी वर्ष के होने जा रहे हैं। उनका शरीर भी मनुष्य-जीवन की मर्यादा के अनुरूप अपने अंतिम चरण में है, फिर नियंता ने उनके जिम्मे एक और भी बड़ा तथा महात्त्वपूर्ण कार्य पहले से ही सुपुर्द कर दिया है, जो कि स्थूल शरीर से नहीं, सूक्ष्म शरीर से ही बन पड़ेगा। वर्तमान शरीर को छोड़ना और नए सूक्ष्म शरीर में प्रवेश करके प्रचंड शक्ति का परिचय देना ऐसा कार्य है, जो सशक्त आत्मा के द्वारा ही बन पड़ सकता है। इतने पर भी किसी को यह आशंका नहीं करनी चाहिए कि निर्धारित 'युगसंधि महापुरश्चरण' में कोई बाधा पड़ेगी। महाकाल ने ही यह संकल्प लिया है और वही इसे समग्र रूप में पूरा कराएगा, फिर उज्ज्वल भविष्य के निर्माण हेतु अगले दस वर्षों तक शांतिकुंज के वर्तमान संचालन की भी आवश्यक व्यवस्था बनाने और तारतम्य बिठाते रहने के लिए भी तो वचनबद्ध हैं।

प्रज्ञावतार की विस्तार प्रक्रिया पृष्ठ-६

दि-०८/०५/२००७

आज का सद्‌चिंतन

जुगनू जब बैठा रहेगा तो उसकी पूँछ चमकेगी नहीं। उसकी चमक तो चलने के साथ ही दृष्टिगोचर होती है। मनुष्य का व्यक्तित्व उसके द्वारा किये जाने वाले कठोर परिश्रम के साथ ही चमकता है।

➢पं.श्रीराम शर्मा आचार्य